

श्री

काव्य विद्या सटीक

तीसरा भाग ।

छन्द वर्णन ।

विभक्त-छन्द भेदोपभेद, मात्रा विचार, शुभाशुभ दृष्ट्यान्तर, सूची,
प्रस्तार नष्ट उद्दिष्ट, गणागण विचार, छन्द नियम, तदु-
परान्त मुख्य २ त्रिविध प्रचलित छन्द-सरल
लक्षण, भाषार्थ, उदाहरण सहित वर्णित हैं

जिसे

सद्यद छेदाशाह, उपनाम शाह कवि,

ग्राम पौहार, लखीम बा डाक घर नवल,

मान कातपर निवासी ने-

अपने परम प्रिय काव्य प्रेमी नवजिवित विद्या दिवीं

के लाभार्थ रच कर

अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छपा कर

प्रकाशित किया ।

सुखि होहिं यहि पढ़ि सब कोऊ ।

ईश्वर कृपा बचन फुर होऊ ॥

प्रथम बार ५०० प्रतियां

मूल्य १ आना

समर्पण ।

१-श्रीयुत विज्ञ गुणज्ञ बुध ! राम चरण पितु रूप ।

नमि सादर दशमी बिजै, भेंटत भेंट अनूप ॥ १ ॥

२-ग्रंथकाव्य शिक्षा मध्ये, भाग तीसरो छन्द ।

होहिं उपस्थित शरण सो, ग्रहण करिय सानन्द ॥ २ ॥

३-यदपि आप जानत सकल, छंद प्रबंध सुपंथ ।

तउ न अजीरण होइ है, यह छोटी सो ग्रंथ ॥ ३ ॥

४-नहिं कवि नहिं कौबिद कछू, नहिं भाषा को ज्ञान ॥

वचन तोतरे बाल के समुद सुनिय दै कान ॥ ४ ॥

५-अधिक काह बिनती करौ, आप अहौ सरवज्ञ ।

है भरोस अपनाय यहि, करिहौ शाह कृतज्ञ ॥ ५ ॥

सेवक (शाह)

काव्य शिक्षा ।

तृतीय भाग-छन्द वर्णन

पाठ ९

छन्द का लक्षण ।

दीक्षा-वरण मत्त यति गति नियम, पद समता अवसान ।

वेद चरण रचना रुचिर, छंद शाह सो जान ॥१॥

भावार्थ-मात्रा, वर्ण, यति, गति का नियम और पदान्त में समता जिस रचना में पाई जाती है उसे छन्द कहते हैं। प्रत्येक छन्द में वेद अर्थात् चार चार पाद वा पद वा चरण होते हैं।

छन्द के भेद ।

दी०-मात्रिक वर्णिक दोय विधि, लौकिक छन्द विख्यात ।

छंद जाति मात्रिक कहत, वर्णिक वृत्त कहात ॥२॥

तिनके पुनि सम, अर्द्ध सम, विषम, शाह त्रय भेद ।

साधारण दंडक उभय, सम के गुनि उपभेद ॥३॥

भा०-छन्द दो भांति के पाये जाते हैं, एक वैदिक, दूसरे लौकिक। वैदिक छन्दों का काम केवल वेदादि अध्ययन करने में पड़ता है, और अन्य समस्त काव्य लौकिक छन्दों में ही पाये जाते हैं। अतएव इस ग्रंथ में लौकिक छन्दों का ही वर्णन किया जाता है।

छन्द दो प्रकार के हैं, मात्रिक और वर्णिक। मात्रिक को जाति वा छन्द और वर्णिक को वृत्त कहते हैं। फिर मात्रिक और वर्णिक के तीन तीन भेद हैं, सम, अर्द्ध सम और विषम। और फिर मात्रिक, वर्णिक सम के दो दो उपभेद हैं, एक साधारण दूसरे दंडक।

दी०-मात्रा मम चहुं पदत में, छंद मात्रिक होय ।

तुल्य वरण चारो चरण, यत् वृत्त है सोय ॥४॥

बहुं चरण सप्त कल वरण, तिहिं सम कहि कविगीत ।

इक तय द्वै चौ पाद सप्त, छंद अर्द्ध सम होत ॥५॥

सप्त नहिं चारों चरण जहैं, विषम जानिये ताहि ।

इक तें वृत्तिस सत्त लौं, कल सधारण आहि ॥६॥

इक तें छविस वरण लौं, वर्ण सधारण मान ।

वृत्तिस छविस तें अधिक, दंडक शाह बखान ॥७॥

भा०—जिस पद्य के चारों चरणों में मात्राओं की संख्या का प्रमाण एक समान हो, वर्ण चाहे जितने हों उसे मात्रिक छन्द कहते हैं, जैसे—दोहा चौपाई, छन्द, सोरठा आदि । और जिस पद्य के चारों चरणों में वर्ण संख्या और उन वर्णों के गुरुत्व लघुत्व का क्रम एक सा मिले उसे वर्ण वृत्त कहते हैं, यथा—नगस्वरूपिणी, भुजंगप्रयात, तोटक, सवैयादि ।

जिस छन्द वा वृत्त के चारों चरणों में मात्रा वा वर्णों की संख्या समान रहती है उसे सम कहते हैं, । और जिसके पहिले, तीसरे अर्थात् विषम चरण एक समान हों, और दूसरे, चौथे अर्थात् सम चरण एक समान हों उसे अर्द्ध सम कहते हैं, । और जिसके चारों चरण बराबर न हों उसे विषम कहते हैं । मात्रिक में प्रति पद ३२ मात्राओं तक के जो छन्द हैं वे साधारण और ३२ मात्राओं से जो अधिक हैं वे दंडक कहाते हैं, और वर्ण वृत्तों में २६ वर्ण तक साधारण और उनसे अधिक वर्ण वाले दंडक कहाते हैं । दंडक अर्थात् दंडकर्ता कहने का प्रयोजन यह है कि इनके पदों के उच्चारण करने में मनुष्यों की सांस भर आती है, यही एक प्रकार का दंड कहने मात्र को है ॥

पाठ २

लघु गुरु मात्रा विचार ।

ह्रस्व वर्ण के उच्चारण करने में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं । यथा—अ, इ, उ, ऋ, क, कि, कु इत्यादि (इसी प्रकार और भी जानो) । मात्राओं की गणना में इनकी एक ही एक संख्या मानी जाती

है । छन्दः शास्त्र में ह्रस्व वर्णों को लघु कहते हैं । उसकी एक मात्रा मानी जाती है । लघु का रूप ऊर्ध्व रेखा (।) द्वारा प्रकाशित किया जाता है । इसके अन्य नाम ल, ला, लो, लौ, इत्यादि हैं ।

दीर्घाक्षर के उच्चारण करने में जो काल लगता है उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं, यथा—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, का, की, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः इत्यादि (इसी प्रकार और भी समझो) । मात्रा-ओं की गणना में इनकी दो २ संख्या मानी जाती है । छन्दः शास्त्र में दीर्घाक्षर को गुरु कहते हैं, उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं । गुरु का रूप वक्र रेखा (ऽ) द्वारा प्रगट किया जाता है, इसके अन्य नाम ग, गा, गो, गौ इत्यादि हैं । गुरु और प्रकारों से भी माने जाते हैं । यथा—

दो०—आदि संयोगी बिन्दु युत, विसर्गादि गुरु होय ।

कहुं पदान्त में कल्पना, करत शाह कवि कोय ।

भा०—संयोगी वर्णों के आदि का लघु वर्ण गुरु होता है, यथा—मत्त, सत्य, धर्म, कर्म इत्यादि, यहां म, स, ध, क, गुरु माने जायेंगे, परन्तु कहीं २ संयोगी के आदि का लघु भी लघु ही माना जाता है, यथा—कन्हैया जुन्हैया आदि यहां क, जु, लघु ही माने जायेंगे, कारण कि क वा जु के उच्चारण में अधिक काल नहीं लगता ।

जिस वर्ण के उपर अनुस्वार हो वह भी गुरु है, यथा—संत, अंग, आदि यहां स, अ, गुरु माने जायेंगे । परंतु यदि अर्द्ध चन्द्र बिन्दी हो तो गुरु न माना जायगा, यथा—तहँ तहँ आदि, यहां, ज, त, लघु ही माने जायेंगे ।

जिस वर्ण के आगे विसर्ग हो वह भी गुरु है, यथा—दुःख, सुःख, इत्यादि यहां दु, सु, गुरु माने जायेंगे ।

संस्कृत में कहीं २ आवश्यकतानुसार पदान्त में लघु को भी गुरु मान लेते हैं, यथा “पद्माक्ष पद्म भव शाह विभीनसासि” यहां अंत्याक्षर “सि” गुरु माना जायगा, कारण कि यहां उसको गुरु मानने की आवश्यकता है । इसी प्रकार भाषा काव्य में पदान्त अथवा यमकालंकार एवं

छन्द की शुद्धता के अर्थ कविलोग यदा कदा व्याकरण की भी उपेक्षा कर निजोक्त संपादित करते हैं, अर्थात् हल् को सस्वर, दीर्घ को ह्रस्व, ह्रस्व को दीर्घ मान लेते हैं, यथा—पद्म की जगह पदम, सीय की जगह सिय और हंस की जगह हंसा इत्यादि (इसी प्रकार और भी जाने)। परंतु ध्यान इस बात का रहे कि जहां लघु वर्ण माना जाता है वहां उसकी एक मात्रा मानी जाती है और जहां गुरु माना जाता है वहां उसकी दो मात्रा मानी जाती हैं। वर्ण का गुरुत्व अथवा लघुत्व उसके उच्चारण पर निर्भर है। यथा—

अर्द्धाली—गुरु कहँ लघु गुरु लघु को पढ़ै। मुख समेत जो मुख सों कहै ॥२॥

भा०—यदि वर्ण गुरु हो और मुख से उसका उच्चारण लघु की भांति होवे तो लघु ही माना जाता है, और यदि वर्ण लघु हो और उच्चारण गुरु का सा होवे तो गुरु ही माना जाता है।

मात्रा को मत्त, मत्ता, कल, कला, भी कहते हैं।

पाठ ३

शुभा शुभ दग्धाक्षर वर्णन ।

कवियों को काव्य करते समय अक्षरों के शुभा शुभ फल पर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

दोहा—यश कस चख धज दक्ष धन, छडग स्वरौ शुभ जान ।

पांच भहर भष दग्ध गनि, चौदा अशुभ बखान ॥१॥

भा०—क, ख, ग, घ, च, छ, ज, ड, द, ध, न, य, श, स, ल, ये पन्द्रह अक्षर और स्वर जिन को संस्कृत में अच् कहते हैं सब शुभ हैं परन्तु कृ ल लृ का प्रयोग भाषा में प्रायः नहीं होता। और ड, भ, ज, ट, ठ, ड, ङ, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष, ह, त्र, क्ष, ये अशुभ हैं। इन २१ अशुभाक्षरों में से भी भाषा कवियों ने भ, भ, र, ष, ह, पांच अक्षर मुख्य चुन लिये हैं, जो अति वर्जनीय हैं और दग्धाक्षर कहलाते हैं।

दो०—धरहु छन्द के आदि नहिं, बरख भहर भष पांच ।

मङ्गल सुर बाची गुरु, धरे न आवै आंच ॥२॥

भा०—पद्य के आदि में झ, भ, र, ष, ह, इन पांच दग्धाक्षरों का रखना महादोष है, यदि रखे तो गुरु कर देवे अथवा सुर वा मङ्गल वाची शब्द रखे ऐसा करने से दग्धाक्षर का दोष मिट जाता है । यथा

दो०—झार खंड किहिं लागि फिरत, कत धावत चहुं धाम ।

शाह क्यों न निज हिय लखै, घट घट बासी राम ॥१॥

इस के आदि में झकार दग्धाक्षर है परन्तु गुरु होने से अदोष है ।

दो०—भरत राम रिपुहन लखन, सीय सहित हनुमान ।

जन्म २ बसि शाह हिय, करत रहिय कल्याण ॥२॥

इस के आदि में भकार दग्धाक्षर देव वाची शब्द के साथ में है अतएव अदूषित है ।

दो०—रघुपति सियपति जगत पति, माया पति भगवान ।

बिनय शाह की सुनव हित, देहु न अंगुरी कान ॥३॥

इसके आदि में रकार दग्धाक्षर है परन्तु देव वाची शब्द के साथ होने से दोष रहित है ।

दो०—षण्मुख के गज मुख गिनत, हंसि २ लोचन मुंड ।

शाह तेउ पग दाबि श्रुत, उनकी नापत मुंड ॥४॥

इसके आदि में षकार दग्धाक्षर है परन्तु देव वाची शब्द के साथ होने से दूषण रहित है ।

दो०—हरि ढूढ़त हिय शाह छिन, छिन ढूढ़त गिरि पति ।

भयो न एकौ ओर को, रजक स्वान की भांति ॥५॥

इसके आदि में हकार दग्धाक्षर है परन्तु सुर वाची हरि शब्द के आदि में होने से निर्दोष है ।

पाठ ४

प्रत्यय वर्णन

दल—प्रत्यय तें प्रगटत विविधि, संख्या छन्द विचार ॥१॥

भा०—जिसके द्वारा नाना प्रकार के छन्दों के विचार और संख्या-
दिक प्रकाशित हों उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।

सम्पूर्ण छन्दः शास्त्र में नव प्रत्यय हैं । उनके नाम ये हैं :—

जयकरी—छु प्रस्तार सूची खँड मेरु । नष्ट उद्दिष्ट मरकटी मेरु ॥

पुनि पाताल पताका जान । ये नव प्रत्यय शाह प्रमान ॥२॥

भा० १—प्रस्तार, २ सूची, ३ पाताल, ४ उद्दिष्ट, ५ नष्ट, ६ मेरु, ७ खँड-
मेरु, ८ पताका और ९ मरकटी ये नव प्रत्यय हैं ।

इन में से प्रत्येक के आदि में मात्रिक वा वर्णिक शब्द संयुक्त
कर मात्रिक वा वर्णिक दोनों प्रकार के प्रत्ययों का बोध कर लेना
चाहिये । परंतु इन नवों में से—

अर्द्धाली—समुक्ति लेहु सूची प्रस्तार । नष्ट उद्दिष्ट मुख्य ये चार ॥३॥

अर्थात्—सूची, प्रस्तार, उद्दिष्ट, नष्ट ये चार प्रत्यय मुख्य हैं । और एक
ही रीति से मात्रिक वर्णिक दोनों प्रकार के सिद्ध होते हैं, अत एव क्रमशः
उन्हें चार प्रत्ययों का वर्णन आगे सूक्ष्मतया किया जाता है ॥ ।

१ सूची

दल—सूची तें प्रस्तार बिन छंद अंक को ज्ञान ॥१॥

भा०—जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के जितने छंद वा वृत्त बन सकते
हैं उनकी संख्या बिना प्रस्तार जान लेने को सूची कहते हैं ।

सूची जानने की रीति ।

अर्द्धाली—सूची कलधुग पछली जोर । दुगुन बरुण धरु अगला और ॥२॥

भा०—पिछले दो कोष्ठों का योग आगे के कोष्ठ में रखते जानेसे
अभीष्ट मात्रिक सूची निकल आती है । और पिछले कोष्ठों का दूना कर
के आगे के कोष्ठ में रखते जानेसे अभीष्ट वर्णसूची सिद्ध होती है ।

परंतु इतना स्मरण अवश्य रहे कि प्रथम आड़ी और ऊर्ध्वरेखा खींच
कर एक अभीष्ट कोष्ठक बनालो । और पहिली आड़ी पंक्ति में १, २, ३, ४, ५, ६
आदि क्रमशः अभीष्ट संख्या लिखो और उसी संख्या के नीचे दूसरी आड़ी
पंक्ति में सूची के अंक लिखो । मात्रिक सूची जानने के लिये पहिले तीन

कोष्ठक इस प्रकार भरो कि पहिले में एक, दूसरे में दो, और तीसरे में तीन का अंक लिखो, फिर चौथे कोष्ठ से अभीष्ट कोष्ठक उक्त नियमानुसार भरलो । और वर्णसूची जानने के लिये पहिले कोष्ठ में दो का अंक लिखो, फिर अभीष्ट कोष्ठक उक्त रीत्यनुसार भरलो ।

उदाहरणार्थ ६ संख्या तक की सूची नीचे लिखी जाती है।

संख्या मात्रा वा वर्ण की	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मात्रिक छन्द संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५
वर्ण वृत्त संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२

इस कोष्ठक से जाना गया कि ६ मात्राओं के १३ छंद और ४ वर्णों के १६ वृत्त बनते हैं । इसी प्रकार और भी जानो ।

२ प्रस्तार ।

द०--सुप्रस्तार ते रूप सब छंद अंक के जान ॥ १ ॥

भा०--जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के जितने भेद हो सकते हैं उन के रूप दर्शाने को मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार कहते हैं ।

प्रस्तार निकालने की रीति यह है--

पद्धटिका--लघु धरौ आदि गुरुतर निशंक । करि नकल दाहिने बास बंक ॥

करि बरण २ कल २ समान । प्रस्तार अंत सब लघु प्रमान ॥

भा०-- आदि गुरु के नीचे लघु लिखो, फिर दाहिनी ओर जितने स्थान खाली हों उनमें वैसेही चिन्ह लिख दो जैसे कि ऊपर हैं, फिर बाईं ओर जितने स्थान खाली हों उनमें गुरु के चिन्ह लिखो । वर्ण प्रस्तार में लघु गुरु का बिचार न करते हुए यह स्मरण रखो कि प्रत्येक भेद में वर्ण समान रहें अधिक न हों । और मात्रिक प्रस्तार में इस बात का ध्यान रखो कि प्रत्येक भेद में पहिले भेद के बराबर मात्रा हों, अधिक न हों, यदि किसी भेद में बाईं ओर गुरु लिखने से एक मात्रा बढ़ती होतो गुरु न लिखकर केवल लघु ही लिखो । जब तक सर्व लघु न आ जावें, तब तक यही रीति करते जाओ, जब सर्व लघु आ जावें तो उसी को अंतिम भेद जानो ॥

परंतु स्मरण रहे कि वर्ण वृत्तों में प्रथम भेद सर्व गुरु का होता है। और मात्रिक छंदों में सप्त कर्तों अर्थात् २, ४, ६, ८, इत्यादि का प्रथम भेद सर्व गुरु का और विषम कर्तों अर्थात् १, ३, ५, ७, इत्यादि में प्रथम भेद इस प्रकार लिखा जाता है कि प्रथम लघु लिखकर फिर उसके आगे (दाहिनी ओर) जितने गुरु अवश्य हों लिखे जायेंगे, जैसे १, १५, १५५, १५५५ इत्यादि ये सब प्रथम भेद हैं ।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण प्रस्तार दिया जाता है ।

मात्रिक प्रस्तार ६ मात्राओं का

१				५	५	५
२			१	१	५	५
३			१	५	१	५
४			५	१	१	५
५		१	१	१	१	५
६			१	५	५	१
७			५	१	५	१
८		१	१	१	५	१
९			५	५	१	१
१०		१	१	५	१	१
११		१	५	१	१	१
१२		५	१	१	१	१
१३	१	१	१	१	१	१

वर्ण प्रस्तार ४ वर्णों का

१	५	५	५	५
२	१	५	५	५
३	५	१	५	५
४	१	१	५	५
५	५	५	१	५
६	१	५	१	५
७	५	१	१	५
८	१	१	१	५
९	५	५	५	१
१०	१	५	५	१
११	५	१	५	१
१२	१	१	५	१
१३	५	५	१	१
१४	१	५	१	१
१५	५	१	१	१
१६	१	१	१	१

इसी प्रकार और भी जानो ।

३ उद्दिष्ट ।

दी०—उद्दिष्टहिं तें जानिये छंद रूप को अंक ॥ १ ॥

भा०—मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार के दिये हुए किसी भी रूप की—भेद संख्या बताने को उद्दिष्ट कहते हैं ।

उद्दिष्ट जानने की रीति यह है ।

दोहा—सो उद्दिष्ट छन्दांक में गुरु अंकिनि करि दूरि ।

वरणअर्द्ध कल गुरु जहां शिर पग सूची पूरि ॥

भा०—सूची के अंकों में से गुरु चिन्हों के ऊपर जितने अङ्क हों उनको जी० कर सम्पूर्ण छन्दांक (जैसे ४ वर्णों का छन्दांक १६ है और ६ मात्राओं का छन्दांक १३ है इसी प्रकार और भी जानो) में घटाओ जो शेष रहे उसी को उत्तर जानो । वर्णोद्दिष्ट में इतना ध्यान रखो कि पूछे हुए रूप के ऊपर सूची के अङ्क आधे २ लिखो अर्थात् २, ४, ८, १६ के बदले १, २, ४, ८, इत्यादि । और मात्रिकोद्दिष्ट में सूची के अङ्क पूरे २ लिखो अर्थात् १, २, ३, ४, ५, १३ इत्यादि, परंतु जहां २ गुरु के चिन्ह हों उनके शिर पर और पगतल अर्थात् ऊपर तले दोनों स्थान में सूची के अंक लिखो और लघु के केवल शिर ही पर लिखो, यह नियम मात्रिकोद्दिष्ट ही में है वर्णोद्दिष्ट में नहीं ।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण उद्दिष्ट दिया जाता है ।

—मात्रिकोद्दिष्ट—

—वर्णोद्दिष्ट—

छे मात्राओं का यह कौनसा भेद है ? । चार वर्णों का यह कौनसा भेद है ।

(५१ ५१)

(५५ ११)

१ ३ ५ १३

प्रक्रिया ५ १ ५ १ = १३ - (१ + ५)

२ ८

प्रक्रिया १ २ ४ ८

५ ५ १ १ = ८

= १३ - ६ = ७

पूरी सूची ८ × २ = १६

∴ उत्तर ७ भेद है

१६ - (१ + २) = १६ - ३ = १३

∴ उत्तर १३ वां भेद है

इसी प्रकार और भी जानो-

४ नष्ट ।

दो०- नष्टहिं तें छन्दोंक को कहत रूप निरशंक ॥ १ ॥

भा०- मात्रिक वा वर्ण प्रस्तार के किसी भी भेद संख्या के रूप बना देने को नष्ट कहते हैं । नष्ट जानने की रीति यह है-

जय०-नष्ट प्रश्न हरि छंदनि अंक । शेष तुल्य करि लिखिये अंक ४
वरण अर्ध कल सूची पूर । गुप्त कर अगिली कल कर दूर ॥ २ ॥

भा०-पूछे हुए अंक को छंदोंक (जैसे ४ वर्णों का छंदोंक १६ और ६ मात्राओं का छंदोंक १३ है ऐसे ही और भी जानों) में से घटाओ, जो शेष रहे उस अंक के बराबर दाहिनी ओर से बाईं ओर की ओर २ अंक घट सकते हैं उन्हीं को गुप्त कर दो और जो अंक रह जायें उन स्थानों को लघु रूप का स्थान समझो । वर्ण नष्ट में सूची के अंक आगे २ लिखो अर्थात् २,४,६,१६ को बदले १,२,४,६, इत्यादि और मात्रिक में कमानुसार पूरी सूची लिखो जैसे १,२,३,४,५,१२ इत्यादि और मात्रिक में इतनी बात का विशेष ध्यान रखो कि जो २ अंक गुप्त हो जायें उनके आगे की एक २ मात्रा मिटा दो ।

परन्तु जितनी मात्रा वा जितने वर्ण के प्रस्तार के जिस भेद का रूप निकालना हो उतनी कल्पित मात्रा वा वर्ण के समान लघु रूप लिख कर ही उनके शीर्ष पर सूची लिखनी चाहिये ।

उदाहरणार्थ एक मात्रिक और एक वर्ण नष्ट लिखा जाता है ।

मात्रिकनष्ट

वर्ण नष्ट

दो मात्राओं में ८ वां भेद कैसा होगा? चार वर्णों में ११ वां भेद कैसा होगा?

१ २ ४ ८

१ २ ३ ४ ८ १३

। । । । = ८ × २ = १६ पूरी सूची

। । । । । । = १३ - ८ = ५

१६ - ११ = ५

। । । । । । पूछा हुआ रूप

। । । । पूछा हुआ रूप

ऐसे ही और भी जानों

पाठ ५

गण लकरण ।

विदित हो कि सात्रिक छन्दों के गण पांच होते हैं, ढगण, ठगण, डगण, ढगण, खगण । परंतु आज कल इन की विशेष आवश्यकता न देख, केवल वर्ष गणों का ही वर्णन किया जाता है ।

तीन २ वर्षों का एक २ गण होता है, ऐसे गण आठ हैं, वे सब नीचे लिखे जाते हैं ।

असंत तिलका—मेा भूमि श्री मिलत नो दिन दुःख कीजै ।

भो बन्धु शाह यश यो जल द्रव्य लीजै ॥

जो सूर्य शोक प्रद-रो अग्निनी जरावै ।

सो वायु देह अस तो नभ शून्य पावै ॥१॥

भा०—इसकी टीका के लिये निम्नांकित कोष्ठक देखिये ।

क्रम संख्या	गण	देवता	सल	रेखाखण्ड	उदाहरण		संकेता- क्षर
					गणक्षरों में	अन्यक्षरों में	
१	मगण	पृथ्वी	श्री	५५५	सप्तम्य	जायसो	स
२	नगण	दिवस	सुख	।।।	नगण	कजल	न
३	भगण	राशि	यश	५।।	भागन	मेहज	भ
४	यगण	जल	धनद	।५५	यगाना	विहारी	य
५	जगण	रवि	शोक	।५।	जगान	सुरारि	ज
६	रगण	अग्नि	जराक	५।५	रागना	राधिका	र
७	सगण	वायु	धन	।।५	सगना	गिरिजा	स
८	तगण	व्योम	शून्य	५५।	तागान	गोपाल	त
	गुरुवर्ष	५	गा	रा	ग
	लघुवर्ष	।	ल	स	ल

छन्दः शास्त्र में “स, न, भ, य, ज, र, म, त, ग, ल” इन्हीं दशाक्षरों द्वारा (जो अष्ट गण और गुरु लघु के सूचक एवं संकेताक्षर हैं) काव्य सम्पादन होता है ।

उपर्युक्त आठों गणों के केवल रूप स्मरणार्थ यह दोहा भी कंठस्थ कर लेना योग्य है ।

दो०—आदि मध्य अरु अन्त लघु, क्रमशः य, र, तामान ।

भ, ज, सा, में गुरु मानिये, म, न, तिहुं गुरु लघु जान ॥ २ ॥

भा०—जिस त्रिवर्णात्मक समुदाय के आदि में मध्य में और अंत में

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

लघु वर्ण हो उसे यथा क्रम “य र त” अर्थात् यगण, रगण, और तगण कहते हैं । वैसेही जिस त्रिवर्णात्मक समूह के आदि में मध्य में और अंत

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

में गुरुवर्ण हो उसे क्रमशः भ, ज, स, अर्थात् भगण, जगण, और सगण कहते हैं । और जिस त्रिवर्णात्मक समूह के तीनों वर्ण गुरु और लघु हों उसे

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

यथा क्रम “म, न” अर्थात् मगण और नगण कहते हैं ।

गण गणना नियम ।

वर्ण वृत्तों में गण की गणना इस प्रकार करनी चाहिये कि आदि से लेकर तीन २ अक्षरों में गण घटित किये जावें, अन्त में जो वर्ण शेष रहें वे गुरु अथवा लघु होंगे ।

शुभाशुभ गण ।

दो०—म, न, भ, य, शुभ ज, र, स, त, अशुभ, शुभ कहि मङ्गल मूल ।

शाह आदि नर काव्य के, अशुभ घरहु नहिं भूल ॥ १ ॥

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

भा०—आठ गणों में से “म न भ य” अर्थात् मगण, नगण, भगण और

१ १ १

१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

यगण ये चार गण शुभ हैं और “ज र स त” अर्थात् जगण, रगण, सगण,

१ १ १

और तगण ये चार गण अशुभ हैं । नर काव्य रचते समय इस बात का अवश्य ध्यान रहे कि छन्द के आदि में कोई अशुभ गण न पड़ने पावे, क्योंकि कुगण पड़ने से छन्द की रोचकता नष्ट हो जाती है । अतएव प्रत्येक छन्द

के चारोंचरणों में से प्रथम चरण के तीन वर्णों में ही चार में से किसी एक शुभ गण का प्रयोग करना उचित है ।

द्विगण विचार ।

यदि दैव संयोग से छन्द के आदि में कोई अशुभ गण पड़ ही जावे तो द्विगण का विचार प्रथम चरण के आदि के छः अक्षरों में ही कर लेना चाहिये, शेष चरणों में इनके विचार की आवश्यकता नहीं ।

दो०—मगण नगण ये मिल हैं, भगण यगण गनि दास ।

उदासीन “जत” जानिये, रस रिपु करत विनास ॥ १ ॥

छप्यय—“मित्र मित्र” सिधि शाह, करत जय “मित्र दास” जुर ।

“मित्र उदासी” हानि, “मित्र रिपु” मित्र नाश फुर ॥

“दास मित्र” मिलि सिद्धि, “दास द्वै” देत हानि करि ।

“दास उदासी” क्लेश पराजय करत “दास अरि ॥

फल अल्प “उदासी मित्र” मिलि, दुःख “उदासी दास” दै ।

“द्वै उदासीन” मिलि अफलप्रद, “उदासीन” रिपु द्वेष मै ॥२॥

दो०—शत्रु मिलि शून्य फल, शत्रु दास प्रिय नाश ।

शत्रु उदासी शंक अति, शत्रु शत्रु मिलि नाश ॥ ३ ॥

यह उपर्युक्त सब विचार केवल नर काव्य के लिये है नकि देव काव्य के लिये । क्योंकि देव काव्य में अशुभ गणों का दोष नहीं माना जाता । अशुभ गण से यह अभिप्राय है कि जगण, रगण, सगण और तगण, जब पूरित शब्द हों, तभी दोष है । यथा—महान, बखान इत्यादि । यदि पूरित शब्द न हों किन्तु पृथक् २ दो शब्दों के संयोग से इन चार में से कोई गण सिद्ध होता हो तो दोष नहीं है । यथा—तुलै न, करै न इत्यादि । ऐसेही और भी जानो ।

गणागण विचार ।

दो०—मत्त छंद गुनि दोष गण, वर्ण वृत्त निरदोष ।

मंगल काव्य सु गान सुर, कलु न दग्ध गण दोष ॥

भा०—गणागण का दोष केवल मात्रिक छंदों में ही माना जाता है वर्ण वृत्तों में नहीं । यदि वर्ण वृत्तों में भी गण का दोष माना जाय तो

जिन वृत्तों की आदि में जगण, रगण, सगण और तगण हैं वे निर्दोष बन ही नहीं सकते। हां ! जहां तक हो सके संगल बाची शब्दों में ही भूषित किये जावें तो और उत्तम है। यदि ऐसा नियम न सध सके तो कोई हानि भी नहीं। परन्तु मात्रिक छन्दों में भी संगल बाची और देव बाची शब्दों तथा देव कथाओं के प्रसंग में दग्धाक्षर वा गणागण का दोष नहीं माना जाता। कहा है एक प्राचीन कवि ने—

दो०—इहां प्रयोजन गण अगण, और द्विगण को काहि ।

एकै गुण रघुबीर गुण, त्रिगुण जपत हैं जाहि ॥

पाठ ६

संख्या सूचक शब्दाः ।

काव्य में जहां कहीं संख्या दर्शाने का काम पड़ता है वहां कवि जन प्रायः संख्या सूचक शब्दों का ही प्रयोग किया करते हैं, अतः वे शब्द संक्षेपतः नीचे लिखे जाते हैं ।

० दो०—व्योम शून्य कहि चन्द्र इक, दोय पक्ष भुज नैन ।

३

अग्नि काल पुनि ताप त्रय, त्रिगुण राम शिव नैन ॥१॥

४

पाद वेद युग चार फल, वरुण अवस्था चार ।

मुख बिरंचि के चार ही, आश्रम चार विचार ॥२॥

५

कन्या इन्द्री शंभु मुख, पांचै कहियतु बान ।

यज्ञ भूत गति पांच ही, पांडव पांचै मान ॥३॥

६

राग शास्त्र अलिपद ऋतू, रस वेदांग छ स्यात ।

९

मुनि सागर स्वर लोक गिरि, अश्व बार सब सात ॥४॥

योग याम बसु सिद्धि पुनि, दिग्गज कहिये आठ ।

अंक भक्ति भूखंड ग्रह, निधि नव करिये पाठ ॥ ५ ॥

दश दिशा अरु दोष दश, रावण के दश भाल ।

नारायण अवतार दश, दश कहियतु दिक्पाल ॥ ६ ॥

सकल सुकवि जन के सते, एकादश शिव मान ।

आभूषण रवि राशि के, द्वादश करत बखान ॥ ७ ॥

परम भागवत किरण नदि, तेरह विश्वहि देव ।

बिद्या मनु चौदह रतन, भुवन षतुर्दश लेख ॥ ८ ॥

तिथि पन्द्रह षोडश कला, संस्कार षंगार ।

द्वै संकेत मिलाय कै, सत्रह करु निरधार ॥ ९ ॥

अठरा व्यसन पुराण कहि, उन्निस द्वै संकेत ।

नख विंशति संख्या लिखी, शाह कबिन के हेत ॥ १० ॥

संख्या संकेतों के बदले उनके पर्यायी शब्द लिखने से भी दोष नहीं है । यथा—चन्द्र के बदले शशि, रवि के बदले सूर्य और इन्द्री के बदले गो इत्यादि ।

पाठ ७

छंद नियम ।

यदि सच पूछा जाय तो छंदों का संचा जिह्वा है अर्थात् जिह्वा के

संचे से ही छन्द बनते हैं और छन्दों की तुला श्रवण हैं। कहा है एक प्राचीन कवि ने—

दं०—तौलत तुल्य रहै न ज्यों, तुला कनक तिल आधु ।

त्योंही छन्दो भंग को, सहि न सकत श्रुति साधु ॥ १ ॥

अर्थात्—जैसे आधा तिल भी सुवर्ण तौलने से तुला तुल्य नहीं रहता वैसीही साधु कर्णों को अति अल्प भी छन्दो भंग सहन नहीं हो सकता । अतएव छन्द रचयिता को उचित है कि वह निम्न लिखित नियमों पर अवश्य ध्यान रखे—

१—किसी भी छन्द वा वृत्त की रचना के पूर्व उसकी ध्वनि अर्थात् चाल अथवा लय का भलीभांति अभ्यास कर लेवे और रच कर प्रत्येक छंद को विशेष कर सवैया, कवित्त, दुंडक इत्यादि को अवश्य दुहरा कर पढ़े, कारण कि उनका सम्पूर्ण आशय चतुर्थ पद वा चतुर्थ पद के उत्तरार्द्ध के आश्रित रहता है, जब तक चतुर्थ पद पढ़ने का समय आता है तब तक प्रथम तीन चरणों का सम्बन्ध ठीक स्मरण नहीं रहता, परन्तु दुहराने से सब आशय भलीभांति समझ में आ जाता है ।

२—दो०—घरहु निरर्थक शब्द नहिं, पूरण हित पद छंद ।

“ईर” पीर सब हरहिंगे, यथा शाह रघुनंद ॥ २ ॥

अर्थात्—पद पूर्णार्थ छन्द में निरर्थक अक्षर वा शब्दों का प्रयोग न करे, यथा—इस दोहे में मात्राओं की पूर्णता के अर्थ ‘ईर’ निरर्थक शब्द का प्रयोग किया गया है । यह निरर्थक दोष है । ऐसेही और भी समझो ।

दो०—अरुपद के अरु चरण सों, बरण मिलत यति भंग ।

शाह यथा श्री राम सी,—ता भजु सहित उमंग ॥ ३ ॥

अर्थात्—यथा संभव यति वा विश्राम परही छंद पद समाप्त करे, अन्य पद के अक्षर अन्य पद से न मिलने पावें । यथा, इस दोहे के दूसरे दल में “सीता” शब्द का “ता” अक्षर दूसरे पद के साथ मिला हुआ है । यह यति भंग वा छन्दो भंग दोष है । ऐसेही और भी जानो ॥

अब हम आगे ३६ प्रकार के उन मुख्य २ छन्दों वा वृत्तों का वर्णन करते हैं, जो आज कल बहुत प्रचलित हैं, और जिनका काम प्रायः भाषा

कविता में विशेष पड़ता है । उनका व्योरा इस भांति है, (मात्रिक) सम,—साधारण ८, दंडक १, अर्द्धसम ४, विषम २, और (वर्णिक) सम-साधारण १९, दंडक २, कुलयोग ३६ ॥

पाठ ८

सम प्रकरणम् ।

तत्रादौ

मात्रिक साधारण ॥

१ तोमर ।

लक्षण—तोमर रबी गल अंत ।

भावार्थ—तोमर छन्द के प्रत्येक पद में (रबी) १२ मात्रा होती हैं । अंत में (गल) गुरु लघु होते हैं । यथा—
उदाहरण—हे राम ! दाया धाम । कीजै दया बसुधाम प्रभु ! दीनबंधु क-
हाय । करुदीन शाह सहाय ॥ १ ॥

२ पट्टिका ।

ल०—पट्टिका बसु बसु जगण अंत ।

भा०—पट्टिका छन्द के प्रत्येक चरण में (बसु बसु) ८, ८ के विश्राम से १६ मात्राएं होती हैं । अंत में जगण होता है । यथा—

उ०—करुणा निधान भगवान् राम । करि कृपा देहु संतत विराम ॥
हे प्रभु ! कहायतू दीन नाथ । करु शाह दीन जन को सनाथ ॥ २ ॥

३ चौपाई ।

ल०—चौपाई षोडश ज,त, अंत न ।

भा०—चौपाई छंद के प्रत्येक पद में (षोडश) १६ मात्राएं होती हैं अंत में (ज,त) जगण अथवा तगण न होना चाहिये—यथा—

उ०—कृपा धाम हे राम ! उदारा । कृपण भयो कस हमरिहिं वारा ॥
सम दरशी जग नाथ कहाई । अनुचर शाह लेहु अपनाई ॥ ३ ॥

सूचना—यदि इस छंद के चारों चरणों में अंत की एक २ मात्रा कम कर दी जावे अर्थात् अंत्याक्षर लघु रहे तो प्रति पद १५ मात्राओं का जय करी नामक छंद होता है । चौपाई आदि जो छंद चार पदों में लिखे जाते हैं उनके आधे अर्थात् दो पदों को अर्द्धाली कहते हैं ॥

४ रोला ।

ल०—रोला छंद विराम शंभु तेरा पर कीजै ।

भा०—रोला छंद के प्रतिपद में (शंभु तेरा) ११, १३ के विश्राम से २४ मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु लघु का कोई नियम नहीं है । यथा—

उ०—हे प्रभु ! आनंदकन्द देहु आनन्द घनेरो । दीनदयाल दयाल होइ दीनहु तन हेरो ॥ प्रणत पुकार तुरंत सुनन हारे भगवाना । अब जनि बैठहु शाहवेर अंगुरी दै काना ॥ ४ ॥

५ नरेन्द्र ।

ल०—छंद नरेन्द्र कला रवि यति करि, बरण अंत गुरु कीजै ।

भा०—नरेन्द्र छंद के प्रतिपद में (कला, रवि) १६, १२ के विश्राम से २८ मात्राएं होती हैं अंत में गुरु होता है ॥ यथा—

उ०—तुम हौ राम घराचर स्वामी, हौं तेरो हौं चरो ।

तुमसों हमसों नाथ औरहू, है, संबंध घनेरो ॥

तुम्हैं दीन जन भावत अतिदय, हौं अतिदीन कहायो ।

शरणागत पालक बिलोकि प्रभु, शरण शाह तब आयो ॥ ५ ॥

६ हरिगीतिका ।

ल०—हरि गीतिका षोडश दुआदश, अंत लघु गुरु दीजिये ।

भा०—हरि गीतिका छंद के प्रतिपद में (षोडश, दुआदश) १६, १२ के विश्राम से २८ मात्राएं होती हैं । अंत में (लघु) लघु, गुरु होते हैं । इसकी ५, १२, १६, २६ वीं मात्राएं सदा लघु रहती हैं ॥ यथा—

उ०—हे राम ! यश धन धाम बहु विश्राम संग विद्वान दे ।

संतान सम्य सुबुद्धि विद्या, स्वस्थता सनमान दे ॥

निज भक्ति कविता शक्ति संजुल, वृद्धि संतत कीजिये ।

औरौ न सांगेउं होउ जोउ सोउ, शाहउख प्रभु दीजिये ॥ ६ ॥

७ चवपैया ।

ल०—साजौ चवपैया, दिशि, बसु, भूषण, अंतसाहिं गुरु लाई ।

भा०—चवपैया छंद के प्रतिपद में (दिशि, बसु, भूषण) १०, ८, १२ के विश्राम से ३० मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु होता है ॥ यथा—

अच्युत अविनाशी, आनंदराशी, अजर अमर अबिकारी ।

अव्यय असुरारी, अधम उधारी, अनुचर आरति हारी ॥

अज अलख अरूपा, अकल अनूपा अनघ अनंत अनामा ।

सच्चित् आनंदा, आनंदकन्दा, करौ शाह उर धामा ॥ ७ ॥

८ त्रिभंगी ।

ल०—ये छंद त्रिभंगी, दिशि बसुबसु रस, रचौ अंत सहं धारि गुरु ।

भा०—त्रिभंगी छंद के प्रतिपद में (दिशि, बसु, बसु, रस) १०, ८, ८, और ६ के विश्राम से ३२ मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु होता है । यथा—

अनवद्य अकाया, अजित अमाया, अगुण अगोचर भेख धरौ ।

अद्वैत अभेदा, अखिल अखेदा, आदि अंत नहिं, देख परौ ॥

अनुचर अघ हरणा, अशरण शरणा, अनवच्छिन्ना नित लसौ ।

सचराचर स्वामी, अन्तर्यामी, सदा शाह के चित्त बसौ ॥ ८ ॥

सू०—यदि इस छंद के प्रतिपद के अंत में आठ २ मात्राएं और बढ़ा दी जावें तो १०, ८, १४ और ८ मात्राओं के विश्राम से प्रतिपद ४० मात्राओं का सदनहर दंडक हो जाता है ।

पाठ ९

वर्ण साधारण ।

१ श्लोक ।

ल०—श्लोक योग लगे षड्ग । अश्व ला सम पाद कौ ॥

भा०—श्लोक के प्रतिपद में (योग) ८ वर्ण होते हैं । (लगे) पांचवां वर्ण लघु और (षड्ग) छठवां वर्ण गुरु होता है । और सम अर्थात् द्वितीय

चतुर्थपदों में (अथवा ला) सातवां वर्ण भी लघु होता है । इसके अतिरिक्त अन्यवर्णों के लिये कोई नियम नहीं है । यथा—

उ०—दीवाना, य दयालिन्यु । शान्तरूप रमापते ! ॥

शाह चित्त बसौ नित्य । विष्णु श्रीकमलापते ! ॥ १ ॥

सू०—इस वृत्त का लक्षण एक पद में पूर्वतया सन्निवेशित न हो सकता था, अतः विषय दो पदों में लिखा गया, पाठक कोई भूल न समझें ।

२ प्रमाणिका ।

ल०—प्रमाणिका जरो लगी ।

। ५ । । ५ ।

भा०—प्रमाणिका वृत्त के प्रतिपद में (जरो लगी) एक जगण, एक रगण,

। ५

एक लघु और एक गुरु होता है । यथा—

उ०—अनादि आदि कारणं । अनेक भक्त तारणं ॥

अनीह शाह श्री निधे ! दयालु होहु श्री बिधे ! ॥ २ ॥

सू०—इसे नगस्वरूपिणी भी कहते हैं ।

३ इन्द्रवज्रा ।

ल०—इन्द्रेन्द्रवज्रा त भुजा जगोगे ।

। ५ । ।

भा०—इन्द्रवज्रा वृत्त के प्रतिपद में (त भुजा जगो गो) दो तगण,

। ५ । । ५

एक जगण और दो गुरु होते हैं । यथा—

उ०—लोकेश लक्ष्मीपति चक्रपाणि । रामेश रामावर श्री अमानी ॥

श्रीनाथ नारायण भक्त प्यारे । ही में बसौ शाह सदा हमारे ॥३॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारो चरणों में आदि का वर्ण लघु कर दिया

। ५ । । ५ । । ५ । । ५

जाय, तो प्रतिपद एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु का उपेन्द्र-वज्रा नामक वृत्त हो जाता है । इन्द्र वज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से १६ वृत्त बनते हैं, विस्तार भयात् वे यहां नहीं लिखे गये, परन्तु प्रत्येक चरण

के आदि में गुरु की जगह इन्द्रवज्रा और लघु की जगह उषेन्द्रवज्रा के पद समझ लेना चाहिये ।

४ रथोद्धता ।

ल०—है रथोद्धतहु रो न रो लगी ।

५ १५

भा०—रथोद्धता वृत्त के प्रतिपद में (रो न रो लगी) एक रगण, एक

१ १ १

५ १ ५

१

५

नगण, एक रगण एक लघु और एक गुरु होता है । यथा—

उ०—भक्त पाल भगवन्त भूपते । राम राघव हरी रघूपते ! ॥

कारुणीक करुणा धरे रहै । बास शाह उर में करे रहै ॥ ४ ॥

५ शालिनी ।

ल०—शालिनी साजौ म तो पक्ष गो गो ।

५ ५ ५

भा०—शालिनी वृत्त के प्रतिपद में (म तो पक्ष गो गो) एक नगण

५ ५ १

५

दो तगण और दो गुरु होते हैं । यथा—

उ०—पद्मी लक्ष्मी कांत व्यालारि गामी ।

राधौ सीता नाथ बैदेहि स्वामी ॥

केशौ दाया सिंधु गोविन्द साधौ ।

हे हे स्वामी ! शाह के काज साधौ ॥ ५ ॥

६ वंशस्थविलम् ।

ल०—बनाय वंशस्थविलं जतो जरो ।

१ ५ १

भा० वंशस्थविलं वृत्त के प्रतिपद में (जतो जरो) एक जगण एक

५ ५ १

१ ५ १

५ १ ५

तगण एक जगण और एक रगण होता है । यथा—

उ०—हरे! मुरारी जन दीन बांधवा । मुकुन्द गोविन्द वृजेन्द्र साधवा ॥

दयालु दामोदर श्याम सांवरे । सुशाह के हीय तुरंत आवरे ॥ ६ ॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों में आदि का वर्ण गुरु कर दिया

५५।

।५।

५।५

जावे तो प्रतिपद दो तगण, एक जगण और एक रगण का इन्द्रवंशा वृत्त होता है ।

७ तोटक ।

ल०—यहि तोटक वृत्त सवेद रचौ ।

।।५

भा०—तोटक वृत्ति के प्रतिपद में (सवेद) चार सगण होते हैं। यथा—

उ०—भगवन्त अनंत रमा रमणं । दुख दारिद दीनन के शमन ॥

करुणा निधि केशव मोद प्रदा । प्रतिपाल करौ जन शाह सदा ॥७॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों के आदि में एकर लघु और रख दिया जावे, और अंत में के गुरु निकाल कर शेष रहे हुये अन्त के लघु

।।।

५।।

५।५

वर्ण गुरु कर दिये जावें तो प्रतिपद एक नगण दो भगण और एक रगण का द्रुतविम्बवित नासक वृत्त हो जाता है ।

८ भुजङ्ग प्रयात ।

ल०—भुजङ्ग प्रयातो य चौ साजि लीजै ।

।५५

भा०—भुजङ्ग प्रयात वृत्त के प्रतिपद में (य चौ) चार यगण होते हैं। यथा—

उ०—अहिल्या तरी मुक्त भै भीलनी की ।

करी बेगिरक्षा दुखी द्रौपदी की ॥

जहां जो पुकारे तहां सुद्धि लीन्हें ।

प्रभो ! शाह की बेर क्यों देर कीन्हें ॥ ८ ॥

९ वसन्ततिलका ।

ल०—साजौ वसन्ततिलका त भ जो ज गो गो ।

भा०—वसन्ततिलका वृत्त के प्रतिपद में (त भ जो ज गो गो) एक

५५।

५।।

।५।

५

तगण, एक भगण, और दो जगण और दो गुरु होते हैं। यथा—

उ०—पद्मान्न पद्म भव शाह विभोनमासि ।

चक्री जगेश कमलेश खगेश गामी ॥

हे ! हे !! दयानिधि प्रभो ! गज मुक्ति कारी ।

संसार जन्मित विपत्ति हरौ हमारी ॥ ९ ॥

१० मालिनी ।

ल०—न जुगुल मय नैना, मालिनी सिद्धि लोका ।

भा०—मालिनी वृत्त के प्रति चरण में (न जुगुल मय नैना) दो

।।।

५५५

।५५

नगण, एक मगण और दो यगण होते हैं (सिद्धिलोका) ८, ७ पर यति होती है यथा—

उ०—भुवन तिहुं बिलासी, लोक बैकुंठ बासी ।

प्रणत दुख बिनाशी, मूर्ति आनन्द राशी ॥

प्रभु ! द्रुत सुधि लीजै, प्रार्थना कान कीजै ।

सब विधि सुख दीजै, शाह कल्याण कीजै ॥ १० ॥

११ नराच ।

ल०—नराच वृत्त साजि लीजिये जरो जरो जगो ।

।५।

भा०—नराच वृत्त के प्रतिपद में (जरो जरो जगो) एक जगण, एक

५।५

।५।

५।५

।५।

५

रगण, एक जगण, एक रगण, एक जगण और एक गुरु होता है । यथा—

उ०—गयंद गीध गौतमी तिया जटायु भीलनी ।

निषाद नीच पातुरै गती मिली अमीलनी ॥

बिलंब ना करौ कछू निजै सुबानि सो धरौ ।

प्रभो ! रमेश बेगि शाह के कलेश को हरौ ॥ ११ ॥

सू०—इसे पंच चासर भी कहते हैं ।

१२ शिखरिणी ।

ल०—शिखरिणी को साजौ ऋतु शिव यमो नोस भलगी ।

भा०—शिखरिणी वृत्त के प्रति पद में (य मो नो स भ ल गो) एक
 १ ५ ५ ५ ५ ५ १ १ १ १ १ ५ ५ १ १ १

यगण, एक सगण, एक नगण, एक सगण, एक भगण, एक लघु और एक
 ५

गुरु होता है। (ऋतु, शिव) ६, ११ पर यति होता है। यथा—

उ०—खरारी कंसारी, तनिक सुनिये शाह बिनती ।

सुखी कीन्हें जेते, करहि तिनकी कौन गिनती ॥

उतै को ना देखो, सुख प्रद इतै को रुख करो ।

करौ नाहीं देरी, प्रभु सब हमारे दुख हरौ ॥ १२ ॥

सू०—यदि इस वृत्त के चारों चरणों में यगण की जगह जगण, सगण
 की जगह सगण, नगण की जगह जगण, और भगण की जगह यगण,

१ ५ १ १ १ ५

रखकर ५, ९ पर यति मानी जावे तो प्रति पद एक जगण, एक सगण,

१ ५ १ १ १ ५ १ ५ ५ १ ५

एक जगण, एक सगण, एक यगण, एक लघु और एक गुरु का पृथ्वी
 वृत्त होता है। और यदि पृथ्वी के चारों चरणों में प्रथम जगण की
 जगह नगण, दूसरे जगण की जगह सगण दूसरे सगण की जगह रगण,
 और यगण की जगह सगण रखकर ६, ४, ९, पर यति मानी जावे तो प्रति

१ १ १ १ १ ५ ५ ५ ५ ५ १ ५ १ १ ५ १

पद एक नगण, एक सगण, एक सगण, एक रगण, एक सगण एक लघु

५

और एक गुरु का हरिणी वृत्त होता है।

१३ मन्दा क्रांता ।

ल०—मन्दाक्रान्ता, युग रस मुनी, मोम नीतो त गो गो ।

भा०—मन्दाक्रान्ता, वृत्त के प्रतिपद में (मो, म नी, तो, त, गो गो)

५ ५ ५ ५ १ १ १ १ १ ५ ५ १ ५

एक सगण, एक सगण एक नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं। (युग,
 रस, मुनी) ४, ६, ९ पर यति होती है ॥ यथा—

उ०—लक्ष्मी स्वामी, कमलज विधे ! विष्णु पद्मी खरारी ।

हे ! दैत्यारी, प्रभु सियपते ! दीन सन्ताप हारी ॥

दाया कीजै, बिनय सुनिये, शाह की हे ! रमेशा ।

केशी मेरे, तुरत सिगरे, काटि दीजै कलेशा ॥ १३ ॥

१४ शार्दूल विक्रीडित ।

ल०—ये शार्दूल विक्रीडितौ रबिमुनी, मो, सो, ज, सी, तो, त, गो ।

भा०—शार्दूल विक्रीडित वृत्त के प्रतिपद में (मो, सो, ज, सी, तो,

५ ५ ५ १ १ ५ १ ५ १ १ १ ५ ५ ५ १ ५

त, गो) एक सगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, दो तगण और एक गुरु होता है । (रबिमुनी) १२, १ पर यति होती है ॥ यथा—

उ०—शांताकार नवीन कंज नयने ! शारंग धारी प्रभो ! ।

विश्वाधार नृसिंह भक्त सुखदा, दीनार्त हारी विभो ! ।

हौं हौं होत निमग्न सिंधु दुख में, कैसे लहौं थाह को ।

स्वामी दौरहु बेगि बांह गहिकै, काढ़ी निजै शाह को ॥ १४ ॥

१५ स्तग्धरा ।

ल०—साजौ ये स्तग्धरा को, गुण मुनि करिकै, मोर भोजोय राजै ।

५ ५ ५

भा०—स्तग्धरा वृत्त के प्रतिपद में (मोर भोजोयराजै) एक सगण,

५ १ ५ ५ १ १ १ १ १ १ ५ ५

एक रगण, एक भगण, एक नगण, और तीन यगण होते हैं । (गुण×मुनि) १, १, १ पर यति होती है ॥ यथा—

उ०—अन्तर्यामी सुरेशा, विरज निरगुणे ! ब्रह्म निर्वाण दाता ।

मायाधारी खरारी, सगुण बपु धरे, भूपते ! दीन त्राता ॥

गोपीप्यारे कन्हैया, मुरलिधर हरे ! कृष्ण कान्हा कन्हाई ।

हे स्वामी ! शाहबांझा, पुरवहु सिगरी , काह देरी लगाई ॥ १५ ॥

॥ पाठ १० ॥

वर्ण साधारणान्तर्गत सवैया वर्णन

दल—सम तुकान्त जिहि वृत्त की ताहि सवैया जान ।

भा०—जिन वृत्तों के तुकान्त अर्थात् चारों चरणों के अंत्याक्षर एक से होते हैं, उन्हें सवैया कहते हैं। सवैयाओं में प्रायः गुरु लघु का क्रम ठीक २ न मिलने के कारण कभी २ पाठकों को भ्रम होता है कि यथार्थ में ये सवैया हैं या कोई विशेष मात्रिक छन्द। प्रथम लिख चुके हैं कि वर्णों का गुरुत्व अथवा लघुत्व केवल उच्चारण पर निर्भर है न कि लिखावट पर। यदि लिखावट पलट दें, तो शब्द ही अशुद्ध और निरर्थक हो जावें। अतएव शब्दों का प्रायः जैसे केतैसे ही रहने देते हैं और प्रसंगानुसार गुरु का उच्चार लघु और लघु का उच्चार गुरु करके इष्ट गण मान लेते हैं, ऐसे प्रसंग विशेष दृष्टिगत होते हैं। परंतु यथा संभव शब्द एवं पद योजना ऐसी होनी चाहिये कि प्रत्येक चरण में गणों के रूप स्पष्ट रूप से दीखपड़ें ॥ सवैया वृत्त कई प्रकार के होते हैं, परंतु उनमें से केवल मुख्य २ भेद नीचे लिखे जाते हैं ॥

१ मत्तगयंद ।

ल०—मत्त गयंद त्रिविंशति अक्षर भो मुनि गो भुज साजि सवैया ।

भा०—मत्त गयंद सवैया के प्रतिपद में (भो मुनि गो भुज) सात

५ । ।

५

भगण और दो गुरु अर्थात् २३ अक्षर होते हैं ॥ यथा—

उ०—कै कलिकाल कराल बिलोक तिलोकपते बिय बानि धरी है ।

कै कहुं दूर पै कीन्ह निवास जो दास पुकार न कान परी है ॥

कै अरु पापिन दीनन तैं अबहुं कमती करनी हमरी है ।

शाह कलेश निवारन काज रमेश ! कहाँ कह देर करी है ॥ १ ॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों में अंत का गुरु वर्ण लघु कर

५ । ।

५

।

दिया जावे, तो प्रतिपद ७ भगण एक गुरु और एक लघु का चकोर नामक सवैया होता है। और यदि अंत का गुरु वर्ण निकाल ही डाला

५ । ।

।

जावे अर्थात् २२ ही अक्षर रखे जावें तो प्रतिपद ७ भगण और एक गुरु का सदिरा सवैया होता है ॥

२ किरीट ।

ल०—वृत्त किरीट बनै अति सुन्दर भो वसु चौबिस आखर धारत ।

५११

भा०—किरीट सबैया के प्रतिपद में (भोवसु) आठ भगण अर्थात् २४ अक्षर होते हैं ॥ यथा—

उ०—स्वामि ! महा पछिताव की बात है राउर आछत हौं दुख पावत ।

नव्य भली रचिकै यश काव्य प्रशंसि तुम्हें नित शाह बुनावत ॥

द्रव्य धरा सुख साज के देत में क्यों उर में अस संजस लावत ।

तू जगदीश्वर भूपति है सम हौहुं कवीश्वर तेरो कहावत ॥ २ ॥

सू०—यदि इस सबैया के चारों चरणों में अन्त का लघु वर्ण गुरु कर

५११

५१५

दिया जावे तो प्रतिपद सात भगण और एक रगण का अलसा नामक सबैया हो जाता है ॥

३ मकरंद ।

ल०—भलो मकरंद हि चौबिस आखर जो मुनियो धरिलेहु बनाई ।

१५१

भा०—मकरंद सबैया के प्रतिपद में (जो मुनियो) सात जगण और १५५

एक यगण अर्थात् २४ अक्षर होते हैं ॥ यथा—

उ०—अघी अति में तुम पातकी पावन हौ यदि तौ जनपाप हरौगे ।

महानहौं दीन में दानि महातुल हौ तब दीनता ताप दरौगे ॥

नियुक्त नहीं कर तूति ही पै कछु तारि हौ तौ यश छाप धरौगे ।

जु पै प्रभु शाह अहौ करुणा कर तौ करुणा तुम आप करौगे ॥ ३ ॥

सू०—यदि इस सबैया के चारों चरणों में अंत का गुरु वर्ण लघु कर

५१५

दिया जावे तो प्रतिपद आठ जगण का साधव नामक सबैया होता है ।

और यदि अंत का गुरु वर्ण निकाल ही डाला जावे अर्थात् २३ ही अक्षर

१५१

१

५

रक्खे जावे तो प्रतिपद ९ जगण एक लघु और एक गुरु का सुमुखी सबैया होता है ॥

४ दुर्मिल ।

ल०—यहि दुर्मिल सो बसु लेहु बनाय पदै प्रति चौबिस आखर है ॥

॥ १५

भा०—दुर्मिल सवैया के प्रतिपद में (सो बसु) आठ सगण अर्थात् २४ अक्षर होते हैं ॥ यथा—

उ०—बहु धून करै नित गाय बजाय गंधर्व औ किन्नर द्वारन में ।

सुर बृन्द अनेक विधी तब नाम जपैं यश भूरि उचारन में ॥

कहु शाह भला किमि कान परै सुनि तूती की नाद नगारन में ।

प्रभु दीन दयाल हूँ देर करी कसदीन विपत्ति बिदारन में ॥ ४ ॥

सू०—यदि इस सवैया के चारों चरणों के अंत में एक एक गुरु और बढ़ा

॥ १५

दिया जावे अर्थात् २५ अक्षर कर दिये जावें तो प्रतिपद ८ सगण और एक

५

गुरु का सुन्दरी सवैया होता है । और यदि अंत में दो लघु बढ़ाये जावें

॥ १५

अर्थात् २६ अक्षर कर दिये जावें, तो प्रतिपद ८ सगण और दो लघु का कुन्दलता नामक सवैया हो जाता है ॥

पाठ ११

समान्तर्गत दंडक प्रकरण ॥

तत्रादौ ।

मात्रिक दंडक ।

१ भूलना ।

ल०—भूलना साजिये राम दिगपाल मुनि अंतमें अवशिष्ट गुरु वर्ण कीजै ।

भा०—भूलना दंडक के प्रतिपद में (राम, × दिगपाल, मुनि) १०, १० १० और ९ के बिश्राम से ३९ मात्राएं होती हैं । अंत में गुरु होता है ॥ यथा

उ०—लिखत लिपि साथ में, ब्रह्म तब हाथ ते ।

नाथ यदि हूँ गयो होय धोखो ।

सुःख के थान में, भूलते दुःख लिखि भर दयो होय मसिरंग चोखो ॥
राम तिहिं लेख पै, ध्यान ना देहु अब, अकर कृत करणि निज बानि धारो ।
सुःख धन धाम दै, शाह बिआम दै कर्म की रेख पै मेख सारो ॥१॥

सू०—यदि इस दंडक की यति ८, १२, ८ और ९ पर मानी जावे तो करखा नारक दंडक होता है ।

वर्ण दंडक ।

वर्ण दंडकों में साम्प्रति कवित्त विशेष प्रसिद्ध हैं अतः आगे उन्हीं का उल्लेख किया जाता है ।

वर्ण दंडकान्तर्गत- कवित्त वर्णन ।

दल-दंडक मिलत तुकान्त सम, मुक्तक कवित बखान ।

भा०—जिन दंडकों के तुकान्त अर्थात् चारों चरणों के अंत्याक्षर एक से होते हैं उन्हें मुक्तक कवित्त कहते हैं । मुक्तक कहने का प्रयोजन यह है कि ये कवियों की गणागणादि के बंधन से मुक्त करने हारे हैं । मुक्तक के प्रति पद में केवल अक्षरों की संख्या का ही प्रमाण रहता है, और अंत में गुरु वा लघु का भी नियम होता है । इसके अतिरिक्त और कोई विशेष नियम नहीं है । परन्तु इतना और स्मरण रहे कि कवित्त में सम प्रयोग अत्यन्त कर्ण प्रिय होते हैं । यदि कहीं विषम प्रयोग आ जावे तो उसी के आगे एक विषम प्रयोग और रख देने से विषमता नष्ट हो कर समता प्राप्त हो जाती है । दो वर्ण के समूह को सम और तीन वर्ण के समूह को विषम प्रयोग कहते हैं ।

कवित्त कई प्रकार के होते हैं परन्तु यहां पर केवल मुख्य मुख्य भेद ही लिखे जाते हैं ।

१ मनहर ।

ल०—मनहर कवित सिंगार तिथि यति मानि,

इकतिस आखरनि अंत गुरु करिये ।

भा०—मनहर कवित्त के प्रति पद में (सिंगार तिथि) १६, १५ के बिआम से ३१ वर्ण होते हैं । अंत का वर्ण गुरु होता है । यथा—

उ०-पतित उधारन भय हौ तारि पापिन को,
 प्रभुता दिखैबो हेतु प्रभु नाम धारे को ।
 दाया करि दीन पै कहाये तुम दीन द्याल,
 दीना नाथ बने हौ सनाथ कै अपारे को ॥
 कीन्हें तें सहाय धाय २ जन दीनन की,
 शाह दीन बंधु मिली पदवी तुम्हारे को ।
 बिपति हरैया अब तबहीं कहैहो राम,
 हरिहौ जबहिं दुःख दारिद हमारे को ॥१॥
 सू०-इसको घनाक्षरी भी कहते हैं ।

२ रूप घनाक्षरी ।

ल०-रूपक घनाक्षरी कवित्त यति सेरा सेरा,
 साजि लेहु बत्तिस बरण लघु धरि अंत ।
 भा०-रूप घनाक्षरी कवित्त के प्रति पद में १६, १६ के बिभ्राम से
 ३२ वर्ण होते हैं । अंत का वर्ण लघु होता है । यथा—
 उ०-पापिन में सुखिया हौं दुखिया हौं दीनन में,
 सकल वृत्तान्त कहौं काहि २ दीनानाथ ।
 आपनो हितैषी जानि जाहि मैं सुनाऊं जाय,
 बिपदा ग्रसित पाऊं ताहि २ दीनानाथ ॥
 धर्म कर्म होन त्योहीं देखि असहाय शाह,
 हा हा नाद सुनि बेगि त्राहि २ दीनानाथ ।
 दीनन के बंधु सुख सिंधु करुणा के धाम,
 आनंद के कंद राम पाहि २ दीनानाथ ॥२॥
 सू०-यदि इस कवित्त के चारों चरणों में अंत के दो दो वर्ण लघु
 रखे जावें तो जलहरण नामक कवित्त होता है, और यदि चारों चरणों
 में आदि से अंत तक सब वर्ण लघु ही रखे जावें तो प्रति पद ३२ लघु
 वर्ण का डमरु कवित्त होता है ॥

इति सम प्रकरण ।

पाठ १२

अर्द्ध सम प्रकरण-तत्रादौ

मात्रिकार्द्धसम ।

१ वरवै ।

ल०—बरवै छंद विषम रबि, सम मुनि गोल ।

भा०—बरवै छंद के विषम अर्थात् प्रथम, तृतीय चरणों में (रबि) बारह २ मात्राएं और सम अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ चरणों में (मुनि) सात सात मात्राएं होती हैं । अंत में (गोल) गुरु, लघु होते हैं । यथा—

उ०—शाह दास के स्वामी, हे रघुराज ! ।

बाहँ गहे की अब तौ राखहु लाज ॥१॥

२ दोहा ।

ल०—दोहा जन विषमनि सरन, सम जत कल किरणेश ।

भा०—दोहा छंद के विषम अर्थात् प्रथम, तृतीय चरणों में (किरण) तेरह तेरह मात्राएं और सम अर्थात् द्वितीय चतुर्थ चरणों में (ईश) ग्यारह ग्यारह मात्राएं होती हैं । विषम चरणों के अंत में (सरन) सगण, रगण

।।५।५।५

अथवा नगण होता है, और सम चरणों के अंत में (जत) जगण अथवा

।।।

।५।

तगण होता है । परन्तु विषम चरणों के आदि में (जन) जगण न होना

५५।

।५।

चाहिये । यथा—

उ०—समरथ सब लायक सबल, हे प्रभु ! करणा भौन ।

शाह दुसह दुख दरन में, तुन्है कठिनता कौन ॥२॥

।५।

सू०—दोहे के आदि में जगण पूरित शब्द का रखना दोष है, परन्तु यदि पृथक् २ दो शब्दों के मिलने से जगण सिद्ध होता हो तो दोष नहीं है ।

३ सौरठा ।

ल०—सौरठ विषमनि ईश, सम तेरा दोहा उलटि ।

पाठ १४

छन्दाभिज्ञ काव्य रचयिता को यह भी जानना आवश्यक है कि कौन २ रसों के लिये कौन २ छन्द अनुकूल वा प्रतिकूल हैं । यद्यपि यह बात अद्यावधि निश्चित नहीं हुई है, कारण कि सर्व कवियों की प्रकृति प्रायः एक सी नहीं होती, तथापि वर्णवृत्तों के विषय में जो कुछ बहुमत से स्थिर हुआ है वह एक कोष्ठक द्वारा नीचे दर्शाया जाता है ॥

संख्या	रस	छन्द जो अनुकूल हैं	प्रतिकूल
१	शृंगार	शार्दूल विक्रीडित, वसन्ततिलका, पृथ्वी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रांता, मालिनी, स्रग्धरा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, रथोद्गता, द्रुतविलम्बितादि ...	पश्यादि
२	हास्य	दोधक, तोटक, भुजङ्गप्रयात इत्यादि ...	पृथ्वीआदि
३	करुणा	मालिनी, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, पुष्पिताग्रादि ...	दोधकादि
४	रौद्र	शार्दूलविक्रीडित, हरिणी, स्रग्धरा, रथोद्गता, अनुष्टुप् आदि ...	शिखरिणी आदि
५	वीर	शार्दूलविक्रीडित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थविलं, शिखरिणी, स्रग्धराआदि ...	प्रहर्षिणी, मालिनी आदि
६	भयानक	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, पश्यादि ...	मालिनी आदि
७	वीरभक्त	शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा, वंशस्थविलं, रथोद्गतादि ...	मन्दाक्रांतादि
८	अद्भुत	शार्दूलविक्रीडित, नन्दिनी, कुसुमविचित्रा, मालिनी, स्वागता, उपचित्र, वसन्ततिलका, इन्द्रवज्रादि ...	शिखरिणी आदि
९	शान्त	शार्दूल विक्रीडित, शिखरिणी, मन्दाक्रांतादि ...	कुसुमविचित्रादि

बिदित होकि यह बिचार केवल वर्णवृत्तों ही के लिये है । मात्रिक सब छंद तथा कवित्त सवैयादि तो सब रसों के लिये अनुकूल हैं । यहां पर यह भी कह देना उचित होगा, कि उपर्युक्त कोष्ठांकित, दोधक, स्वागता, कुसुम बिचित्रादिकों का समावेश चौपाई छंद में समझ कर, और प्रहर्षिणी, नंदिनी, उपचित्र, पुष्पिताग्रा ।

पथ्यादि की हिन्दी भाषा में आवश्यकता न देखकर ही उनका वर्णन इस भाषा प्रधान छोटी सी पुस्तक में नहीं किया गया । शेष सब छंद यथा स्थान में लिख दिये गये हैं ॥

उपर्युक्त ज्ञान प्राप्त होने के साथही इस विषय से अभिज्ञ हो जाना भी उत्तम प्रतीत होता है, कि कौन विषय किस छंद में वर्णित होना चाहिये । यद्यपि इस विषय में भी अभी बहुत कुछ न्यूनता है, तथापि वर्णवृत्तों के लिये बहुसम्मति से जो निश्चय हुआ सो हम पाठकों के भेंट करते हैं । देखिये निम्नांकित कोष्ठक ! ।

संख्या	विषय	उपयुक्त छन्द	संख्या	विषय	उपयुक्त छन्द
१	ऋतु	उपजाति	४	वर्षा, प्र- वास	मन्दा क्रान्ता
२	नीति	वंशस्थ बिलम्ब	५	स्तुति, य- श, शौर्य	शार्दूल विक्रीडित, शिखरिणी
३	चन्द्रोदय	रथोद्धता

प्रगट हो कि यह बिचार केवल वर्णवृत्तों ही के लिये है । मात्रिक सब छन्द तथा कवित्त सवैयादि तो सब रसों के लिये अनुकूल हैं ।

अंत में सर्व सज्जन कवि कोबिद पाठक महाशयों से सविनय निवेदन है कि इस पुस्तक में यदि कहीं कुछ त्रुटि प्रतीत होवे तो कृपया सूचितकर मुझे चिरबाधित करने की कृपा करें ॥ शम् ॥

इति श्री मध्यद्वेदाशाह उपनाम शाहकवि कृते काव्य शिक्षान्तर्गत छंदवर्णननाम तृतीयो भागः ॥ ३ ॥ शुभन्भूयात्-

(विशेष प्रार्थना)

आशा है कि इस तृतीय भाग छंदवर्णन को पढ़कर काव्य प्रेमी सज्जन महाशय काव्यशिक्षा प्रथम भाग (कवि वर्णन) वा द्वितीय भाग (काव्य वर्णन) और चतुर्थ भाग (शब्दार्थ वर्णन) को अवश्य ही पढ़ने की कृपा करेंगे । साथही यह भी विदित होवे कि काव्यशिक्षा नामक ग्रंथ में काव्य की समग्र सामग्री का वर्णन किया गया है, जिन महाशयों को कवि बनने की इच्छा होवे इसे अवश्य अवलोकन करें, यदि एक बार आद्योपांत मनन करने से काव्य निर्माण शक्ति न उत्पन्न होवे तो उपा-लभ पूर्वक पुस्तक का मूल्य लौटाय लेवें ।

यह काव्यशिक्षा ग्रंथ द्वादश भागों में समाप्त हुआ है । सर्व साधारण की सुगमता के हेतु उसके प्रत्येक भाग पृथक् २ मुद्रित हो रहे हैं, और वे यथा समय पाठकों की सेवा में क्रमशः उपस्थित होते रहेंगे ॥

विद्वत्सुअलम् । विनीत-(शाह)

ॐ

गोत्रावली—प्रवराध्यायी

अर्थात्

ब्राह्मण गोत्र सम्बन्धी मात्र के योग्य है

जिसको

पण्डित छेदालाल शुक्ल ब्रह्मचारी उपदेशक ने

(ग्राम दहेली कोश ? सवाई—जहां भगे तिवारी रमई)

संपादनकी

और

संवत् १९४३ में कान्यकुब्जमंडल प्रयागराजने संशोधनकी

यह पुस्तक नीचे लिखे पते पर मिलेगी

उपदेशकोंके पास वा जिला—कानपुर डाकखाना

कठार गोरक्षा पाठशाला ग्राम दहेली में रामरत्न

रामगोपाल शुक्ल के पास मिलेगी

कानपुर

कैलास—यंत्रालय पं० शिवशंकरलालवा० के प्रबंधसे मुद्रित हुई

इस पुस्तकके छपाने का किसी को अधिकार नहीं है।

वेद माष्य भूमिका ।

ब्राह्मणास्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।

उरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत ॥

टीका—इस सृष्टि में जो मुखके सदृश उत्तम है वह ब्राह्मण, जिसमें बल वीर्य अधिक हो अर्थात् बाहू सदृश वह क्षत्री है, जो उरू के समान अनेक स्थानों पर जाके वणिज कर वह वैश्य, और जो पग अर्थात् नीच अंगों के समान सूखेत्वादि गुणवाला हो वह शूद्र है । ऐसी सृष्टि के उत्पन्न करने वाले पूर्ण व्यापक परमात्मा को दंडवत करता हूं । य० अ० ११ मं० ११

प्र०—हमारे पूर्वज लोग कौन थे और क्या पढ़ते थे ?

उ०—ऋषि थे और वेद पढ़ते पढ़ाते थे वह वेद यह हैंः—

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इन चारों वेदों को ऋषि लोग पढ़ते थे और इसी कारण से चारों वेदों के द्विजाति अनेक गोत्रों में प्रकाशित हैं जैसा कि यजुर्वेद के भारद्वाज गोत्र में और भारद्वाज गोत्र के ऋग्वेद, में और इसी गोत्र में सामवेद और अथर्ववेद के द्विजाति भी हैं इसी तरह कश्यप गोत्र में चारों वेदों के द्विजाति हैं संशय का कारण नहीं इस लिये यह गोत्रावली प्रवराध्यायी प्रमाण गुरु चरित्र वा मनुस्मृति अध्याय दूसरा श्लोक १७ से २२ के अनुसार सब गुणज्ञ लोगों के सन्मुख रखता है कि आप पढ़ें और बालकों को पढ़ावे क्योंकि ब्राह्मण जगद् गुरु कहलाते हैं परंतु आपही अपना हाल नहीं जानते अब द्विजाती मात्रको यह जानना उचित है कि गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा, सूत्र, प्रवर, सिखा, पाद, देवता, आदि सब जानना योग्य हैं अब हम चारों वेदों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं अपना वेद बदलने के अर्थ जिसका जौन हो ।

ऋग्वेद—का उपवेद आयुर्वेद, शाकल, वाष्कल, आश्वलायन आदि

१२ भेद हैं यह समग्र हाल गुरु चरित्र के देखने से सूचित होता है । शिखा वाम, पाद वाम, देवता ब्रह्मा, गायत्री छंदः ।

यजुर्वेद—इसके ८६ भेद हैं उपवेद धनुर्वेद, शाखा माध्यंदिनी, वा जसनेयी आदि, सूत्र कात्यायन, शिखा, पाद दाहिन, शिव देवता, त्रिष्टुप् छन्द ।

सामवेद—उपवेद गांधर्व, शाखा कौथुमी, शिखा, पाद वाम, अनुष्टुप् छन्दः, देवता विष्णु ।

अथर्ववेद—का उपवेद मंत्र शास्त्र, शाखा पैप्पल, शिखा, पाद वाम इन्द्र देवता, अनुष्टुप् छंदः ।

शौचक्रिया का मन्त्र ।

उत्तिष्ठन्ति सर्वे देवानां, तिष्ठन्ति महीतले । मल मूत्र करिष्यामि, मम दोषो नदीयते ॥

दत्तन तोड़ने का मन्त्र ।

वंशपती वन वर्धती, पत्र पत्र वनराज । मम हेतु मुख मंजनी, दत्तन दे वन राज ॥

अथ दंतधावन मन्त्र ।

आयुर्बलं यशो वर्चाः, प्रजापति वशूनिच । धर्म संतान वृद्धिः स्यात्, तन्नो देव वनस्पतिः ॥

अथ सूर्याद्य मन्त्र ।

एहि सूर्य सहस्रांशे तेजो राशे जगत्पतेः ॥ अनुकम्पय मां भक्त्या गृहा णार्घ्यं दिवाकर ॥ १ ॥

गोत्रोत्पन्नोहं, वेद, उपवेद, शाखा, सूत, । प्रवर, । शिखा, पाद, देवताम्०

भारद्वाज	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	बार्हस्पत्य	भारद्वाज	दाहिन	दाहिन	शिव
कश्यप	सामवेद	गान्धर्व	कौथुमी	गोभिल	कश्यप	असित	दैवल	वाम	वाम	विष्णु
काश्यप	सामवेद	गान्धर्व	कौथुमी	गोभिल	काश्यप	आवत्सार	नैष्ठुव	वाम	वाम	विष्णु
वत्स	सामवेद	गान्धर्व	कौथुमी	गोभिल	भार्गवच्यवन	अपुवान	जामदग्न्य	वाम	वाम	विष्णु
शांडिल्य	सामवेद	गान्धर्व	कौथुमी	गोभिल	शांडिल्य	असित	दैवल	वाम	वाम	विष्णु
धनंजय	सामवेद	गान्धर्व	कौथुमी	गोभिल	विश्वामित्र	माधुच्छंदस	धनंजय	वाम	वाम	विष्णु
उपमन्यु	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	उपमन्यु	वाशिष्ठ	अभ्रतवसु	दाहिन	दाहिन	शिव
कात्यायन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	कात्यायन	किल	दाहिन	दाहिन	शिव
सांकृत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	सांकृत	सांख्यायन	किल	दाहिन	दाहिन	शिव
गर्ग	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	सैन्य	गर्ग	दाहिन	दाहिन	शिव
गौतम	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	बार्हस्पत्य	भारद्वाजगौतम	अत्रि	दाहिन	शिव
पाराशर	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	पाराशर	वाशिष्ठ	सांकृत	दाहिन	दाहिन	शिव
कौशिक	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अथमर्षण	कौशिक	दाहिन	दाहिन	शिव
कौशिल्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अथमर्षण	माधुच्छंदस	दाहिन	दाहिन	शिव
भार्गव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	चयावन	अल्पवान	दाहिन	दाहिन	शिव

वशिष्ठ	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	वशिष्ठ	इंद्रप्रमदा	भारद्वासि	दाहिन	शिव
अंगिरसि	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	अंगिरस	वार्हस्पत्य	द्रोणाचार्य	दाहिन	शिव
कृष्णात्रि	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	आत्रेय	अर्चिमानस	शवावश्व	दाहिन	शिव
अत्रि	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	अत्रेय	अर्चिमानस	शवावश्व	दाहिन	शिव
कौण्डिन्य	यजुर्वेद	काण्वी	कात्यायन	वशिष्ठ	कौण्डिन्य	मैत्रावरुण	दाहिन	शिव
कपि	यजुर्वेद	काण्वी	कात्यायन	अंगिरस	आमौख	वौरुच	दाहिन	शिव
विष्णुवर्धन	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	अंगिरस	पौरु	कुत्सत्रासदस्य	दाहिन	शिव
नितुदन	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	अंगिरस	पौरु	कुत्सत्रासदस्य	दाहिन	शिव
वाञ्छरूप	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र	अवदल	वाञ्छरूप	दाहिन	शिव
पूर्ण	ऋग्वेद	आश्वलायन	आश्वलायन	विश्वामित्र	देवराज	पूर्ण	वाम	अह्मा
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	अंगिरस	भार्यश्वा	मुद्गल	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	कुशिक	कौशिक	काश	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	सावर्णा	पुलस्ता	पुलह	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	मौनस	भार्गव	बधस	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	असिल	वाशिलु	कौशल	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	वासिल	अत्रि	आर्चिस	दाहिन	शिव
यजुर्वेद	यजुर्वेद	माध्यदिनी	कात्यायन	शौनक	शैव	भावन	दाहिन	शिव

चांद्रायण	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	चांद्रायण	वात्स	वत्स	दाहिन	दाहिन	शिव
वामदेव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वामदेव	माध्यायन	गौतम	दाहिन	दाहिन	शिव
मांडव्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मांडव्य	मांडूक्य	विश्वामित्र	दाहिन	दाहिन	शिव
दालभ्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	दालभ्य	आंगिरस	वार्हस्पत्य	दाहिन	दाहिन	शिव
गौगय	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	गौगय	गर्ग	सांख्यतित	दाहिन	दाहिन	शिव
सिंहल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वासिल	धारणिषु	सारस्वत	दाहिन	दाहिन	शिव
मौकल्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मौकल्य	आंगिरस	वार्हस्पत्य	दाहिन	दाहिन	शिव
वैहल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वैहल	आशिल	बहल	दाहिन	दाहिन	शिव
देवरात	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	देवरात	वैष्ण	रैस्त	दाहिन	दाहिन	शिव
यस्क	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	वैतहव्य	शावतस	दाहिन	दाहिन	शिव
भिन्नयुव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	वाध्राश्व	दिवोदास	दाहिन	दाहिन	शिव
बिद	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	और्व	जामदग्न्य	दाहिन	दाहिन	शिव
वैन्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव	वैन्य	पार्थ	दाहिन	दाहिन	शिव
आयास्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	आयाम्य	गौतम	दाहिन	दाहिन	शिव
शारहत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	गौतम	शारद्वत	दाहिन	दाहिन	शिव
जातूकर्ण	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अत्रि	वशिष्ट	जातूकर्ण	दाहिन	दाहिन	शिव
उद्गाह	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	उद्गाह	वामदेव	वशिष्ट	दाहिन	दाहिन	शिव

हरित	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	अंबरीष	यौवनाश्व	दाहिन	शिव
जामदग्नि	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	जामदग्नि	भृगु भार्गव	वत्सच्यावन	दाहिन	शिव
श्रीश्रवाश्व	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भारद्वाज	विश्वामित्र	औदले	दाहिन	शिव
बृहस्पत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगिरस	बृहस्पत	भारद्वाज	दाहिन	शिव
अग्रस्त्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रस्त्य	आत्रेय	आर्चनानस	दाहिन	शिव
मंगल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	वासुक	मंगल	दाहिन	शिव
तायल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	वासुक	तायल	दाहिन	शिव
मीतल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	वासुक	मीतल	दाहिन	शिव
गोयल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अग्रसेन	वासुक	गोयल	दाहिन	शिव

यह वेदोक्त संकल्प ग्रहण करो

विज्ञापन ॥

विदित हो कि सम्पूर्ण महाशयों से प्रार्थना है कि निज गोत्र सम्बन्धी बातों को पढ़ें और विचारें जिस से अपना धर्म कर्म मालूम हो और स्वः धर्म में तत्पर रहें इस लिये धर्मात्मा जन इस पुस्तक को प्रति वर्ष को ब्राह्मणों को देकर महान् पुण्य के भागी हों ।

गायत्री ।

अ—उ—म—ॐ सूर्यः स्वः । तत्सवितुर्वरे
 ण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोद
 यात् । यजु० अ० ३ मं० ३५

शब्दार्थः ।

व्याख्या

प्राण्य ओं—यह परमेश्वर का मुख्य नाम है.

भूः—जो संपूर्ण देह धारियोंका प्राण दाता तथा प्राणसेभी प्रिय है

भुवः—जो धर्मात्माओं के क्लेश को निवारण कर देता है.

स्वः—जो सर्व व्यापक है.

तत्—उस परमात्मा को.

सविता—जो सर्व जगत् का उत्पादक पालक ह.

वरेण्यम्—जो वरने योग्य ग्रहण करने योग्य है.

भर्गः—जो तेज तेजस्वी तथा तेज स्वरूप है.

देवस्य—देवक जगदीश्वर का.

धीमहि—ध्यान करते हैं स्मरण करते हैं.

धियः—बुद्धि विचार मनोरथ संकल्पादि को

यो—जो सर्वज्ञ सर्व व्यापी सर्व शक्तिमान् सर्वोपरि है.

नः—हमारी उपासकों की.

प्रचोदयात्—परित करे शुद्धकरे अपनी ओर आकृष्ट करे ॥

श्रीगङ्गातल्लसन्दर्भः ।

श्रुति-स्मृति-पुराणप्रभृति-प्रमाण-कदम्बविभूषितः ।

श्रीवृन्दावननिवासि-श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसुतेन
पण्डित दुर्गादत्तशर्मासामवेदिना
विरचितः ।

पण्डित श्रीदेवीमहायशस्मिणा संग्रोधितः ।

अडोरा स्थातियुत-गिरिधारिलालपुत्रेण
बालमुकुन्दशर्माणा मुद्रापयित्वा प्रकाशितः ।

कलिकातानगरे

७५ नं० तुलापट्टीस्थभवने

रामनारायणपालेन

नारायणयन्त्रे

मुद्रितः ।

सम्बन् १८५०

श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः ।

श्रीगङ्गागोपालगुरुचरणार्जुनेभ्यो नमः ।

प्रणम्य श्रीमतीं गङ्गां कल्पान्तकलिगामिनीम् । श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः
क्रियते भ्रान्तिसुत्तये ॥ १ ॥ अथ च, कलेर्दशसहस्रान्ते विष्णुस्थित्यतिमेदि-
नीम् । तद्वै जाङ्गवोतोयं तद्वै ग्रामदेवता ॥ इति सनत्कुमारसंहितास्य-
स्यास्य श्लोकस्य सम्बन्धतात्पर्याभिज्ञाः केचनवाला इतिवदन्ति अस्मिन्नेव
कली पञ्चसहस्रान्दमनु श्रीगङ्गा स्वधामयास्यतीति तदसङ्गतमेव । अत्र
श्लोकेऽष्टाविंशतितमसं ह्यककलिकथनाभावात् तथाच ग्रामदेवानामपि प्रत्य-
कमेवफलदत्वेनाधुनागमनविरोधात् । अपि च प्रत्येककलिपरत्वमस्य वाक्यस्य
यदि स्यात्तर्हि भगीरथादनुजातिषु कलिषु याचाऽऽपत्तिस्त्वेष्यशयिद्यमान-
त्वात् कल्पान्तकलिज्ञापकं वाक्यमेतत् तदुक्तं बृहद्विष्णुपुराणे—पृथिवी
गङ्गाया हीनाभविष्यत्यन्तिमे कली । तदैव विष्णुस्थित्यतिमेदिनीं नरपुंगवेति
अतोऽस्मिन् कली गङ्गायाः स्वधामगमनं नानुसन्धेयम् वेदस्याप्यत्र सदा स्थिति-
ज्ञापकत्वात् अत्र ऋग्वेदसप्तमाष्टकद्वितीयेध्यायेऽष्टादशवर्गानन्तरं विंशति-
ऋगात्मकमिदं परिशिष्टम् । यत्र गङ्गा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती यत्र
सोमेश्वरोदेवस्तत्र सामभृतं कृधोन्द्रायेन्दोपरिस्त्रव इति । एतदर्थश्च । यत्र
यस्मिन् स्थले गङ्गा च अस्ति यमुना च अस्ति प्राची पूर्ववाहिनी सरस्वती च
अस्ति यत्र गङ्गायमुनासरस्वतीसङ्गमोऽस्तीतिभावः तत्र त्वं माम् अभृतं
कृधि कुरु हे इन्दो इन्द्राय परिस्त्रव सोमं देहीति अत्रवर्त्तमानकालक्रिया-
सम्बन्धोऽस्ति अतोऽष्टाविंशतितमेऽस्मिन् कली गङ्गाप्रयाणाङ्गीकारे पञ्चसह-
स्रान्दमन्वपि वेदवाक्यमेतावदेव स्थास्यति तर्हि कथं सर्वदा सत्यस्य वेदस्य
सत्यत्वं भविष्यति किन्तु गतवस्तुनो वर्त्तमानत्ववर्णनेन मिथ्यावादित्वं
लोके वेदेऽपि प्रसिद्धमेवास्ति अतस्तद्देदेऽपि भविष्यत्यतोऽस्मिन् कली गङ्गा-

मस्ति तत्त्वश्रमादरणीयं स्यात् किञ्च तत्र माम् अमृतं कृधि अमरं कुर्वित्यने-
नैव गङ्गायमुनासङ्गमस्थलस्याप्यमरत्वं सूच्यते * तथाऽत्र मन्त्रे गङ्गा च इति
चकारग्रहणं समुच्चयार्थं इति बोध्यं तथैवापरा च ऋग्वेदीयपरिशिष्टश्रुतिः
अष्टमाष्टके तृतीयेऽध्याये षड्वर्गानन्तरमियमेका ऋक् यथा सितासिते
सरिते यत्र सङ्गये तत्राप्लुतासोदिवमुत्प्लवन्ति ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते
जनासोऽमृतं भजन्ते इति । एतदर्थश्च । यत्र स्थले सितासिते सरिते
सङ्गते सिता शुक्लवर्णा गङ्गा असिता कृष्णवर्णा यमुना उभे नद्यो मिलिते
तत्र तयोः सङ्गमे आप्लुतासः कृतस्नानाः जनाः दिवं स्वर्गं उत्प्लवन्ति उत्प-
तन्ति ये च धीराः तन्वं तनुं विसृजन्ति तेजनासः जनाः वैनिश्चयेनामृतं
मोक्षं भजन्ते प्राप्नुवन्तीति अत्रापि उत्प्लवन्ति विसृजन्ति भजन्ते इति वर्त्त-
मानकालक्रियाकथनेन गङ्गायमुनयोः सङ्गमस्य नित्येन भगवता वेदेन नित्यत्वं
प्रतिपाद्यतेऽतस्तावदेव श्रीगङ्गायाः कल्पान्तं भुवि स्थितिविषये वेद एव
प्रमाणम् ननु वेदे वर्त्तमानपरोक्षादिकालस्य क्वचित् क्रियासुनियमो नास्ति
तद्ददत्राप्यनियमोऽस्तु इति चेन्न ॥ यदिडाप्रदेगिनी दिवोगात्रिपथा सरि-
दिति श्रुतेः तथा वांमनपुराणे मानसिकस्नानवर्णने ॥ इडा भागीरथी गङ्गा
पिङ्गला यमुनानदी । तयोर्मध्यगता नाडी सुषुम्णाख्या सरस्वती ॥ १४ ॥
इति श्रुत्यादिप्रतिपादितविराजः पुंसो मुख्यनाडीत्वेन गङ्गाया ग्रहणात्
शताध्यायि प्रयागमाहात्म्येऽपि गङ्गास्त्वै । त्वंमोक्षलक्ष्मीस्त्वमसि प्रभा च
त्वंब्रह्मनाडी वरनाडिकासि । त्वंब्रह्मायासि विचित्रगासि त्वंब्रह्मरूपासि
नमोनमस्ते इति यावद्विराजः स्थितिस्तावद्गङ्गास्थितिः शरीरस्थिती नाडी-
नामपि तत्र स्थितत्वात् अत्र श्रुतौ वर्त्तमानकालक्रियानियमोऽवाधित
एव तेन गङ्गास्थितिरप्यवाधिता तथा चैवं श्रीभागवतस्य मतमपि वर्त्त-
मानकालक्रियया प्रदृश्यते । यथा । पञ्चमस्कन्धे यत्रहवाववीरव्रत औतान-
पादिः परमभागंवतोऽस्मत्कुलदेवताचरणारविन्दोदकमिति या मनुसवन-
मुत्कृष्यमाणभगवद्भक्तियोगेन संक्षिप्यमानान्तर्हृदय औत्कण्ठ्यविवशा मौलि-
तलोचनयुगलकुड्मल-विगलितामलवाष्पकलयाभिव्यज्यमान-रोमपुलककुल-
कोऽधनापि परमादरेण शिरसा विभर्त्ति ॥ अन्यदपितत्रैव । ममच्च इव

सबहुमानमद्यापि जटोजूटेरुहहन्ति ॥ तथा चैवम् ॥ ततोऽनेककोटिसहस्र-
विमानानीकसंकुलदेवयानेनावतरन्तीन्दुमण्डलमाप्लाव्यब्रह्मसदने निपतति
तत्र चतुर्धा भिद्यमाना चतुर्भिर्नाभिर्नदनदीपतिसेवाभिनिविशति इत्यादि
एवं बहुवाक्यत्रन्दैः कल्पान्तकलिपर्यन्तमत्र श्रीगङ्गास्थितौ नास्ति सन्देहावसरः
कल्पान्तकलिं विना श्रीगङ्गाप्रयाणेऽन्यकलिसंख्यां कस्यचनप्रमाणाऽभावात्
बृहद्विष्णुपुराणादिषु स्पष्टोक्तत्वाच्च तथा श्रीगङ्गाचरणैरपि भगीरथं प्रति
कृतप्रतिज्ञत्वाच्च तदुक्तं प्रायश्चित्ततत्त्वे यावद्भरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्यो
दिवि कल्पपादपः । यावत्समुद्रे वडवानलश्च वसामिराजं स्तवचक्रत्वाते इति
तथा सम्बोहनतन्त्रे “संसारसागरोत्तीर्णकारणाय नृणां सदा । श्रीगङ्गा-
द्रवरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्यतिष्ठति” ॥ १ ॥ तथा भारतेऽपि दानधर्मे युधिष्ठिरं
प्रति भीष्मवाक्यम् । तत्स्थानकंब्राह्मणमभीष्टमानैर्गङ्गासदेवात्मवशैरुपास्या
इति अत्रोभयोरपि वाक्ययोः सदा शब्दः कल्पान्तकलिपर्यन्तस्थितिः श्रुतः
श्रीबाल्मीकीयसामायणेऽपि भगीरथं प्रति विरञ्चिवाक्यं सागरस्य जलं
लोके यावत्स्थास्यति पार्थिव । सगरस्यात्मजास्तावत् स्वर्गे स्थास्यन्ति देव-
वदिति । अत्र सागरस्थं गङ्गाजलं ज्ञेयम् अगस्त्यकृतपानमनुश्रीगङ्गायैव कृतं
तत्पूजित्वात् अधुनापि तथा तस्या एव तत्पूजितं कर्तुं त्वाच्च अन्यथा चैवड-
वानलेन क्रियमाणोऽश्विर्न्यूनतां यायात् । उक्तञ्च ब्रह्माण्डपुराणे—“त्रिवि-
क्रमपदोद्भूता ब्रह्माण्डशिखरोद्भवा । परा दिष्णुपदीगङ्गा समुद्राऽऽपूति-
कारिणी” इति । भारते तु । कुम्भजेन कृतसमुद्रपानमनुसागरस्य पूजितः
श्रीगङ्गाया कृता क्रियते चेत्याख्यानं विस्तरेणोक्तम् अतएव कल्पान्तकल्यवधि-
कैव नरदृष्ट्या * गङ्गा स्थितिरिति निश्चीयते । किञ्च । अस्यैव कलेः पूर्वसन्ध्याश-
पञ्चसहस्राब्दमनुगङ्गाप्रयाणाङ्गीकारे सर्वैरेव श्रुतिस्मृतिपुराणादिभिः कलौ
गङ्गाया एव चतुर्वर्गप्रदत्वं प्रतिपाद्यते तत्कथं सङ्गतं स्यादतो नास्त्यत्र कलौ
तथान्येषु च प्रयाणशङ्कापीति बोध्यम् । अथ कलौ श्रीभागीरथ्या एव चतु-
र्वर्गप्रदत्त्ववाक्यानि प्रलिख्यन्ते ॥ तावत्तु शिवपुराणे, नास्ति गङ्गासमं
तीर्थं कलिकल्मषनाशनमिति ॥ स्कान्देऽप्ययं श्लोकः अत्र च कलिकल्मषनाश-
कत्वं प्रयाणे सति कथं सङ्गतं स्यात् अतोऽत्र कलौ न प्रयाणशङ्केति पुनः

पुनः प्रदर्शयते अत्र श्लोके कलिशब्दे नैव प्रयाणाभावः कलिर्दशमहस्मान्ते इति वाक्यस्यापि कल्पान्तस्थितिपरत्वञ्च सूच्यते एवमग्रेऽपि लिख्यमानवाक्येषु बोध्यम् । तथा नारदीये । कली तु परमब्रह्मप्राप्तये सङ्गरं नृणाम् । गङ्गाजलस्य सेवा तु महोपायो महर्षय इति । तथा स्कान्दे काशीखण्डे सप्तविंशध्याये । कृते तु सर्वतीर्थानि लेतायां पुष्करं परम् । दापरे तु कुरुक्षेत्रं कली गङ्गैव केवलम् ॥ १ ॥ ध्यातुं क्लीं मोक्षहेतुस्त्रीतायां तच्च वै तपः । दापरे तु द्वयं यज्ञाः कली गङ्गैव केवलम् ॥ २ ॥ कली कलुषचित्तानां परद्रव्यरतात्मनाम् । विधिहीनक्रियाणाञ्च गतिर्गङ्गाविनानहि ॥ ३ ॥ तत्रैव विष्णुं प्रति शिव-वाक्यं, यज्ञदानतपोहीमजपाः सनियमा यमाः । गङ्गासेवा रजस्तपः न लभन्ते कली हरि ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ वृथा कुलं वृथा विद्या वृथा यज्ञा वृथा तपः । वृथा दानादि तस्यैह कली गङ्गां न यो भजेत् ॥ ५ ॥ मत्स्यपुराणे — ब्रह्मादिदेवलोकाणां मुक्तेश्च प्राप्तये नृणाम् । गङ्गा च परमाहेतुः कलिवासी विशेषतः इति ॥ कौर्म्येऽपि, कली गङ्गैव गङ्गैव कली गङ्गैव केवलम् । कः कली मुक्तिमाप्नोति गङ्गासेवां विना नरः ॥ १ ॥ भारतेऽपि पिरुङ्गप्रकरणे, गङ्गायाञ्च गयायाञ्च पिण्डदानं समं मतम् । विशेषतः कलियुगे गङ्गापिण्डं प्रशस्यते इति ॥ किञ्च । सर्वेषां तीर्थानामपि वासः श्रीगङ्गायां वाप्यगिति ब्रह्माखण्डपुराणे, कली तु सर्वतीर्थानि स्वं स्वं वीर्यं लभयतः । गङ्गायां प्रति मुञ्चन्ति सा तु देवी न कुत्रचित् ॥ १ ॥ तथा, भविष्योत्तरे तिस्रः कोट्योर्ध्वकोटिश्च तीर्थानां वायुरब्रवीत् । सर्वदा कलिकायां तु गङ्गायां नात्र संशय इति । अथ स्कान्दे दर्शनमाहात्म्यम् । विधूतपापा ये मर्त्याः परब्रह्मस्वरूपिणीम् । सहस्रसूर्यप्रतिमां गङ्गां पश्यन्ति ते कली ॥ १ ॥ ब्रह्माखण्डे तु विशेष उक्तः, दृष्ट्वा जन्मकृतं पापं स्मृष्ट्वा जन्मशतस्य च । स्नाता जन्मसहस्राणां हन्ति गङ्गा कली युगे इति । अन्यच्च स्कान्दे, सिद्धयः सिद्धलिङ्गानि स्वर्गलिङ्गान्यनेकशः । प्रासादरत्नखचितानि स्ना-मणिगणांस्तथा ॥ १ ॥ गङ्गाजलान्तस्तिष्ठन्ति कलिकलपभीतितः । अत-एव हि संखेया कली गङ्गेऽसिद्धिदेति ॥ तथा भविष्येऽपि, स्वर्ग-लिङ्गानि दिव्यानि तथा दिव्यौषधानि च । महारत्नानि यान्येव

गङ्गाजलात्स्थितिं निगूढानि सहस्रशः ॥ अतएव सुसंभ्रम्या कलौ
 गङ्गैव केवलम् इति ॥ किं बहुना उक्तवाक्येषु नैकमपि वाक्यमयथा
 अविवर्तयतीत्यतोऽत्र कलौ गङ्गायात्रोत्पादका अज्ञानिन एव अविचारि-
 त्वात् तेषामविचारित्वं त्वयिमप्रकरणे स्पष्टी भविष्यति किञ्च, श्रीगङ्गायाः
 भगवद्विभूतित्वेनापि नास्ति कल्पान्तस्थितौ सन्देह इति प्रतिपाद्यते ।
 गीतायाम्, अश्वत्थास्मि वृक्षाणां श्रीषधीनामहं यवः । इति प्रभृति भग-
 वदुक्ततद्विभूतीनां यत्र यत्र पूर्वं तेनैव तन्निवासः कल्पितस्तत्र तत्रैव लोक-
 चेभहेतवः कल्पान्तं स्थितिर्निःसन्देहैव यथा उच्चैःश्रवो वज्रेन्द्रेणवतादीनां
 स्वर्गे वासः, अश्वत्थादीनां भुवि, अनन्तादीनां पाताले, तथा श्रोतसा-
 मस्त्रिजाङ्गवीति भगवदुक्तविभूतित्वे श्रीगङ्गाया अपि त्रैलोक्ये वासः,
 क्षिती तारयते मर्त्यान् नागांस्तारयते ह्यधः । दिवि तारयतेऽमर्त्यांस्तेन
 लिपयता स्मृता ॥ १ ॥ इति स्कान्दोक्त्या तस्यास्त्रिपथगामित्वात् श्रोतसा-
 मिति पदसाहचर्यत्वाच्चेति किञ्च, वदरिकाशमाद्यारभ्याऽऽप्तसुज्ञानं केवलं
 गङ्गैकाश्रयाणामेव मायापुरीप्रान्तप्रभृतितीर्थानां माहात्म्येषु कलिकल्प-
 नाशकत्वं नित्यत्वं च तेषामुक्तमेव तत्तत्माहात्म्यप्रकरणेषु अत आत्मभूय-
 स्वभयात्तत्तद्वाक्यानि नो लिख्यन्ते तर्हिगङ्गायात्राङ्गीकारेऽत्र कलौ तेषां
 नित्यत्वे कलिपापनाशकत्वे च मिथ्यात्वाऽऽपतिस्तथा पुराणादीनां मिथ्या-
 वादित्वं च स्यात् अतो गङ्गाप्रयागकथनमध्यसंगतमेव पुराणादीनां भग-
 वद्रूपत्वेन सत्यत्वात् तथा कलेरन्ते भावि भगवत्कल्किचरणैः श्रीगङ्गा-
 तटे कृत तपःसमाधित्वात् तत्रैव मुनिभिः कृत गङ्गास्तवनाच्च व्यासोक्त-
 कल्किपुराणे दृतीयोऽंशे जनविंशेऽध्याये विंशद्विंशोक्तौ स्पष्टमेवेतत् यथा
 हिमालयं मुनिगणैराकीर्णं जाङ्गवीजलैः । परिपूर्णं देवगणैः सेवितं मनसः
 प्रियम् ॥ २० ॥ गत्वा विष्णुः सुरगणैर्हृतश्चारु चतुर्भुजः । उषित्वा
 जाङ्गवीतीरे सस्मारात्मानसात्मना ॥ २१ ॥ इत्यादि अथान्यदपि तत्रैव । गङ्गां
 सुत्वा समायाता मुनयः कल्किसन्निधावित्वादि । किं बहुना वेदप्रभृति-
 प्रमाणवन्देन कल्पान्तं कलिं विना सर्वथा श्रीगङ्गायाः स्वधामगमनस्या-
 भाव इति दिक् ।

इति श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे श्रीनन्दकिशोरशास्त्रि-सुत-दुर्गादत्तकवे

नीराकारं निर्विकारं नौमिब्रह्मनिरन्तरम् । येनार्पितो भ्रमः पापि
धीषु गूढार्थवाग्धैः ॥ १ ॥ अथात्र शास्त्रवाक्येषु विरोधः क्व च दृश्यते ।
सोऽप्यस्यतिऽद्य पीत्रेण रामदत्तस्य शास्त्रिणः ॥ २ ॥ अधुना कलेर्दशसह-
स्रान्ते इति श्लोकस्यार्थमेव वस्तुतोऽन्तिमकलिपरं दर्शयितुं तावद्ब्रह्मणोदिन-
प्रमितिरुच्यते । श्रीभगवद्गीतायां, सहस्रयुगपर्यन्तं महर्ष्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तान्तेऽहोरात्रविदो जना इति ॥ अत्र युगशब्देन युगचतु-
ष्टयसहस्रपर्यावर्त्तो बोध्यः । तथा च ब्रह्मणो दिनस्यैव कल्पसंज्ञा यत्र
चतुर्दशमन्वन्तराणि भवन्तीत्यपि ज्ञेयम् । उक्तञ्च श्रीमद्भागवतेऽष्टमस्कन्धे
एतत्कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्त्तितम् । यत्र मन्वन्तराख्याद्वयचतुर्दशपुरा-
विदः ॥ ११ ॥ इति तत्रैव द्वादशस्कन्धेऽपि, चतुयुगसहस्रान्तं ब्रह्मणो-
दिनमुच्यते । सकल्यो यत्र मनवश्चतुर्दशंविशाम्भते ॥ २ ॥ तदन्ते प्रलय-
स्तावान् ब्राह्मी रात्रिरुदाहता । तयो लोका इमे यत्र कल्पन्ते प्रलयाय
वै ॥ ३ ॥ एष नैमित्तिकः प्रोक्तः प्रलयो यत्र विश्वसृक् । श्रुतेऽनुन्तासने
विश्वमात्मसात् कृत्य चात्मभूः ॥ ४ ॥ इति वाक्यैरिदं निष्पन्नं भवति
प्रथमकृतयुगादौ लोकत्रयरचना भवति तथा चान्तिमे कलौ लोकत्रयप्रलयः
तदैव तत्र विश्वसृष्ट्यासदेवानां भूत्यागः संभवतीति पुराणेषु सर्वत्रैव
स्फुटमस्ति तदत्र विस्तरभयान्न प्रदर्शयते । तस्मिन्नेव काले कलेर्दशसहस्रान्ते
इति श्लोकार्थः संघटते पुरोडाशं चतुर्धा करोतीत्यस्याग्नेय उपसंहारवत्
तदन्ते प्रलयस्तावानिति नियमाच्च अतएव श्लोकार्थस्त्वप्ययमेव बुध्यते । यथा
दशसंख्यानं इति धातोर्च्प्रत्यये कृते दश इति सिध्यति तेन दशशब्दवाच्येन
संख्यानेन गणनया सहस्रस्य अन्तो यत्र अत्र मध्यमपदलोपीसमासः ।
कलियुगस्य प्रथमत आरभ्य गणनया सहस्रपर्यावर्त्तस्य अन्तःसमाप्तिर्यत्र
तस्मिन् काले सति यदा योऽन्तःप्रविशन्भूतानि भूतैरत्यखिलाग्रय इति
भागवततृतीयस्कन्धोक्तेः दशति दंष्ट्रयादारयति अन्ति सर्वभूतानीति दशः
कालः दंशदशने इति धातोः मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानमिति कः प्रत्ययः
सहस्रस्य सहस्रपर्यावर्त्तस्य अन्तो यत्र दशंश्चासौ सहस्रान् तच्च दशमहस्रान्तः
कलेः कलियुगस्य सर्वक्षयकारकसहस्रपर्यावर्त्तसमाप्तिविधायके काले जाते
सतीति भावः अन्तिमे कलाविति फलितोऽर्थः यदा तत्र स्थले सूर्यान्तर-

श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भः ।

संवादश्रवणात् रविः स्वसारथिनं तं संबोधयति हे दश ! हे पक्षिन् ! दशः पक्षीविहङ्गम इति हलायुधकोशात् कलीः सहस्रान्ते सति तदा विष्णुः मेदिनीं त्यक्षति तदर्थं विष्णुत्यागकालस्य अर्धं कालं प्राप्य । प्रणष्टे द्वादशादित्ये प्रलये समुपस्थिते । तदा वै प्रलयं यान्तु गङ्गाद्याश्च सरिद्धरा इति पुराणान्तरवाक्यात् तस्मिन्नेव कली इत्येकालप्रमाणं प्राप्य विष्णुर्भुवं त्यक्षति तत्कालस्यार्धप्रमाणं प्राप्य प्रथमतः श्रीगङ्गा मेदिनीं त्यक्षति तदर्थं इत्येकाले गङ्गाभुवं त्यक्षति तत्कालस्यार्धप्रमाणं प्राप्य पूर्वमेव ग्रामदेवताः पृथ्वीं त्यक्षन्ति अन्तिमे कली प्रथमतो ग्रामदेवाः भुवं त्यक्त्वा स्वगम्यस्थानं यास्यन्ति तदनन्तरं श्रीजाङ्गवी यास्यति तदनन्तरं विष्णुरिति फलितं तात्पर्यम् ॥ नन्वत्र विष्णोः वाराहाद्यवतारमूर्तिषु काचनमूर्तिः वा स्वयमेवैतद्ब्रह्माण्डाधिनाथो गृह्यते तथा च पयस्विनी-मन्दाकिनी-सरयूदिरूपेण गंगावद्व्यश्रवणात् का गंगा तथा के च ग्रामदेवा इति ॥ अत्र क्रमेणोच्यते अत्रावताराणामभावादग्रहणम् अतएव विश्वप्रवेशने इति धातोः विष्णुरिति सिद्धौ सत्यां यस्य सत्तया जगत्स्थितं सविष्णुर्ज्ञेयः । यस्माद्विष्टमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः । तस्मात् संप्रोच्यते विष्णुर्विश्वेर्धातोः प्रवेशनादिति ॥ विष्णुपुराणतृतीयांशप्रथमाध्यायवाक्यात् स एवैतद्ब्रह्माण्डाधिपतिराकल्यान्तं जगत्स्थितिकारको महापुरुषोऽत्र गृह्यते एष एव सत्तावान् विष्णुः स्वसत्तया कल्यान्ते मेदिनीं त्यक्षति । तदुक्तं श्रीमद्भागवतपञ्चमस्कन्धे विंशेऽध्याये तेषां स्वविभूतीनां लोकपालानां विविधवीर्यापहङ्गणाय भगवान् परममहापुरुषो महाविभूतिपतिरन्तर्याम्यात्मनो विशुद्धसत्यधर्मज्ञानवैराग्यैश्वर्याद्यष्टमहासिद्धुपलक्षणं विश्वक्सेनादिभिः स्वपार्षदप्रवरैः परिवारितो निजवरायुधोपशोभितैर्भुजदण्डैः संधारयमाणस्तस्मिन् गिरिवरे समन्तात् सकललोकस्थितये आस्ते ॥ ४० ॥ आकल्यमेष वेधंगत एवमात्मयोगमायया विरचितविविधलोकयात्रागोपीयायेत्यर्थः ॥ ४१ ॥ इति वाक्यात् कल्पमध्ये कस्मिन्नपि कली विष्णोर्यात्रा सुतरां निरस्तेति । अथ चेवं भगीरथरथस्तावच्छिन्नप्रवाहत्वं गंगा इति कृतलक्षणवती भागीरथी गृह्यतेऽत्रेति तथा च ग्रामाधिष्ठातृदेवताः स्थितिं च तासां प्रदर्शयितुमन्यासामपि ब्रह्माण्डान्तर्गतवस्त्वधिष्ठातृदेवतानां कार्याधिकारस्थिति-

कालः प्रोच्यते । पाद्मे । यत्र यत्राधिनाथेन नियुक्ताः पालनादिषु । आकाशात्
 प्रवर्तन्ते ता अधिष्ठातृदेवता इति वाक्यान्वर्वासामधिष्ठातृदेवतानां श्रीमहा-
 विष्णोराज्ञया तद्वत् स्वस्वविहितकर्माधिकारतायामाकल्पं जातायां सत्यां
 न कस्यापि वस्तुनीऽधिष्ठातृदेवतायाः स्वाधिकारप्रयुक्तकालात् पूर्वमेव
 स्वगम्यपदयात्रा सम्भवतीति भावः फलितः । ताश्च लोकापाल-देशपाल-
 पर्वतपाल-दुर्गपाल-वनपाल-सन्ध्यापाल-प्रदोषपाल-शुभाशुभ-कर्मफलप्रदप्र-
 भृतिभेदेन बहुविधाः सन्ति ॥ प्रदर्शिताश्च दिङ्मात्रं श्रीमद्भागवते षष्ठस्कन्धे
 षष्ठेऽध्याये धर्मपत्नीवंशवर्णने यथा, भानोस्तु वेद ऋषभ इन्द्रेणस्ततो
 नृप । विद्योत आसील्लंवायास्ततश्च स्तनयित्तवः ॥ ५ ॥ ककुभः संकटस्तस्य
 कीकटस्तनयो यतः । भुवो दुर्गाणि जामेयः स्वर्गो नन्दिस्ततोऽभवत् ॥ ६ ॥
 विश्वे देवास्तु विश्वाया अप्रजांस्तान् प्रचक्षते । साध्योगणस्तु साध्याया
 अर्थसिद्धिस्तु तत्कुतः ॥ ७ ॥ मरुत्वांश्च जयन्तश्च मरुत्वत्यां बभूवतुः । जयन्ती
 वासुदेवांश्च उपेन्द्र इति यं विदुः ॥ ८ ॥ मौहर्त्तिं का देवगणा मुहर्त्तयाश्च
 जज्ञिरे । ये वै फलं प्रयच्छन्ति भूतानां स्वस्वकालजम् ॥ ९ ॥ सङ्कल्पा-
 याश्च सङ्कल्पः कामः सङ्कल्पजः स्मृतः । वसवोऽष्टौवसोः पुत्रास्तेषां नामानि
 मे शृणु ॥ १० ॥ द्रोणः प्राणो ध्रुवोऽर्कोऽग्निर्दीपो वसुविभावसू । द्रोण-
 स्याभिमतेः पत्न्या हर्षशोकभयादयः ॥ ११ ॥ प्राणस्योर्जस्वतीभार्या सह
 आयुः पुरोजवः । ध्रुवस्य भार्या धरणिरसूतविविधाः पुरः ॥ १२ ॥ इत्यादि
 अत्र विविधाः पुर इत्यस्यायमभिप्रायः पुरपत्तननगरग्रामादिभेदेन पुराणां
 बहुत्वे सति तदधिष्ठातृदेवतानामपि विविधत्वम् ॥ ताश्च भूमौ मण्डलपाल-
 चेतपाल-ग्रामदेवीवालदेवीखर्परौदेवीवृद्धादेवीश्मशानीप्रभृतिसंज्ञया प्रसिद्धाः
 एता एवाऽत्र गृह्यन्ते याश्च ग्रामपूजनमारी शान्तिप्रभृतिपद्धतिषु प्रकाशिताः
 याभिर्विना न ग्रामरचना रक्षा च मारीप्रभृत्युपद्रवेभ्यो भवितुमर्हति
 इत्यादि शास्त्राश्रयमज्ञात्वा वृथैव विष्णुपदीप्रयाणेऽधुना कोलाहलः क्रियते
 खपुष्पदर्शनवन्मुखैरिति सर्वथा निश्चीयते शास्त्रवचनैरित्यलम् ॥ ननु गङ्गा-
 स्थितिसूचकवाक्यसमूहेन युक्त्या च सनत्कुमारसंहितास्थंश्लोकतात्पर्यमन्तिम-
 कलिपरं प्रतिपादितं तथापि तत्र मञ्जुलं प्रतिभाति अन्यपुराणादि-
 वाक्यानां गङ्गागमनविधायकानां तत्र संघटनाऽभावात् तानि वाक्यानि च

श्रीवेदानामिदानीं निर्गमाभावात् अतएव निर्गमवाक्यानां तत्सह ग्रामदेव-
वेदादियात्रासूचकवाक्यानामेव गतकल्पीयत्वं स्पष्टमेव । प्रत्यक्षमेवेदानीं
ग्रामदेवानां वेदमन्त्राणां च दत्तफलत्वात् । तथाच बहूनामनुग्रहो न्याय्य
इति शास्त्राचारेणापि स्वल्पानां यात्रावाक्यानां कल्पान्तरे ग्रहणं योग्यम् ।
स्थितिविधायकवाक्यानां बहुत्वात् । अधोक्तमपि बहुत्वं पुनः प्रतन्यते ॥
केदारखण्डे वदरीमाहात्म्ये प्रथमेऽध्याये । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घोरे कलियुगे
नरैः । कर्त्तव्यो वदरीवासः पापिनामपि मुक्तिदः ॥१॥ यत्र साक्षात्सरिच्छेष्टा
गङ्गापापीघनाग्निनी । यत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च विष्णुश्चैव सुरोत्तमाः ॥ २ ॥
गन्धर्वाप्सरसश्चैव किन्नरा गुह्यकास्तथा । प्रमथा यत्तरक्षांसि वसन्ति हरि-
मानसा इति वाक्ये गङ्गावासस्तत्र निरन्तरमुक्तः ॥ तथान्यत्र तत्रैव ॥ अग्नि-
होत्रादिकर्माणि सापायानि कलौ युगे । गङ्गास्नानं हरेर्नाम निरपायमिदं
हयम् ॥ १ ॥ अन्यत्र तत्रैव ॥ ज्ञेयाणां पञ्चकं पृथ्व्यां स्थास्यति प्रवरे कलौ ।
गङ्गाद्वारं स केदारं काशीगङ्गागमस्तथा ॥ गङ्गापि संगता यत्र सागरेण
महामते । गङ्गापि स्थास्यतेऽत्रैव सत्यमेतच्छिवेरितम् इति । स्कान्दे । गङ्गा
मुक्तिप्रदा नित्या सदा ध्येया मनोषिभिः । लोपस्तस्या न वै जातु यतः
सा ब्रह्मरूपिणी ॥ १ ॥ भारते वनपर्वणि पुलस्त्यतीर्थयात्रायाम् । सर्वं कृत-
युगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम् । द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं गङ्गाकलियुगे
स्मृता ॥ १ ॥ गच्छेच्च हि सुराङ्गां ज्ञात्वा विश्वमशाश्वतम् । अदूरे च कलौ
प्राप्ते मुक्तिर्वी वाञ्छिता यदि ॥२॥ तथा कलिरन्ते युगप्रवृत्तये गङ्गाविष्णुभ्यां
देवप्राकव्यतीर्थदानधनधर्मस्थापनं क्रियते इति स्पष्टम् । भविष्ये कलिधर्म-
व्यवहारे प्रथमेऽध्याये । धर्मो विलुप्यते सर्वः सत्यं च प्रलयं गतम् । पृथ्वीमन्द-
फला जाता कुटिला उत्तमा जनाः ॥५॥ धर्मो रसातलमितस्तारितं गङ्गाया
जगत् । प्रच्छिन्नत्वं गता देवा गङ्गाया प्रकटीकृताः ॥१०॥ नास्ति गङ्गासमो
देवो नास्ति गङ्गासमः प्रभुः । प्रच्छन्नपातकैः पापैः स्नानवाञ्छैवमुच्यते ॥११॥
इत्यादि । अतः कलौ । गङ्गातीरे वसेन्नित्यं गङ्गाभूतोयं सदा पिवेत् ।
दीक्षितः सर्वयज्ञेषु सोमपानं दिने दिने ॥ इति गौतमादीन् प्रति व्यास-
वाक्यं पुनस्तत्रैव द्वादशेऽध्याये कलिरन्ते देवानां प्रार्थनया । तदा विष्णुर्भवे-
द्राजादानत्वाग्रे कतेक्षणः । नद्यः सर्वाः प्रकटिता गङ्गाया परमेश्वर ॥ २३ ॥

विष्णुं दामवानर्थानपाङ्गना तथा धनम् । इति तस्मिन्नेवाध्यायेऽपि वैश्व-
 म्यायनवाक्यम्, अप्रार्थना हिजा धन्या धन्यं व्यासवचस्तथा । गङ्गासर्वयुगे
 धन्या पातिव्रत्ये रताः स्त्रिय इति ॥ ४० ॥ तथा सामश्रुतयश्च इरावतीं मधु-
 मतीं पयस्विनीममृतरूपामूर्जस्वतीं त्रिदिवप्रसूतां गङ्गां श्रितासस्त्रिदिवं
 व्रजन्ति ॥ १ ॥ ऋषिजुष्टां विष्णुपदीं पुराणां पुण्यधरां मनसा हि लोके ।
 सर्वात्मना जाह्नवीं ये प्रपन्नास्ते ब्रह्मणः सदनं प्रयान्ति ॥ २ ॥ उस्त्रैर्जुष्टा-
 मिषतीं विश्वरूपामिरावतीं जनयित्रीं गुह्यस्य शिष्टैः सेव्याममृतां ब्रह्मकान्तां
 गङ्गां श्रयेदात्मविशुद्धिकामः ॥ ३ ॥ इति । अर्थश्च ॥ इरावतीं सरस्वतीरूपं
 मधुमतीं सर्वप्रियकरां पयस्विनीं जलरूपां तत्रापि अमृतरूपां विकार-
 रहिताम् ऊर्जस्वतीं बृहद्बलां त्रिदिवप्रसूतां ब्रह्मलोकात् प्रकटीभूतां
 गङ्गां ये श्रितासः गङ्गामाश्रयन्ति ते त्रिदिवं व्रजन्ति ॥ १ ॥ विष्णुपदीं
 विष्णुप्राप्तिकरां ब्रह्मणः सदनं ज्योतिःस्वरूपं ब्रह्म ॥ २ ॥ उस्त्रैः देवैः
 सेवितां इषतीं स्वेच्छावतीं स्वप्रकाशाम् इरावतीं विद्याप्रदाम् अमृताम्
 अपायशून्यां विष्णुकान्ताम् इति ॥ ३ ॥ अववर्त्तमानकालक्रियया नित्यत्वं
 द्योत्यते तथाऽमृताम् इति विशेषण्येन स्फुटमेवाऽऽकल्पं स्थितिरुक्तेति विभा-
 वयन्तु सुधियः । तथाच * ऋग्वेदेऽष्टमाष्टके तृतीयेऽध्याये षष्ठे वर्गे पञ्चमो
 मन्त्रः । इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वतिशतुद्रिस्तोमः स च तापरुण्या
 असिक्तया मरुद्वधे वितस्तयार्जकीये शृणु ह्यासुषोमयेति ॥ ५ ॥ इत्यत्र
 गङ्गायाः सहचरत्वदर्शनात् सर्वाभिः सहैव यावा प्रतिसूच्यते । सहचरत्वं
 यास्कमुनिना स्फुटीकृतं निरुक्ते अ० ८ पा० ३ खं ५ इमं मे गङ्गे यमुने सर-
 स्वति शतुद्रि परुणिस्तोमं आसेवध्वम् असिक्तया च सह मरुद्वधे वितस्तया-
 चाऽऽर्जकीये आशृणुहि सुषोमया चेत्यादि । अत्र सायणभाष्ये प्रतीके
 एवोक्तं तदङ्गभूतास्त्रिभिः प्रधानभूताः समस्तयन्ते इमं मे इति मन्त्रेणेति
 अत्र विराजः पुंसोऽङ्गत्वप्रतिपादनात् विराट् स्थितिपर्यन्तं गङ्गास्थितिरिति
 भाष्यकारमतमित्यलमपि पञ्चवितेन ।

इति श्रीनन्दकिशोरात्मजकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे द्वितीयं प्रकरणम् ।

यस्यास्तत्त्वं न जानन्ति कलिमायाविमोहिताः । समन्तः शास्त्रगर्तेषु नोमि

तां जाङ्गवीं पराम् ॥ १ ॥ अथवेतिथिपत्रेषु गङ्गायुक्तेष्वकारणम् । प्रोच्यते
शास्त्रवचनैः सद्वाक्यैश्च यथा मतिः ॥ २ ॥ ननु यदि निर्गमावधिवाक्यानां
गतकल्पीयत्वं दृढीकृतं तर्हि पूर्वजैः शास्त्रकुशलैस्तिथिपथगामिनीज्ञानपुरःसर-
धर्मावलम्बिभिः कथं न तिथिपत्रेषु श्रीजाङ्गव्यायुक्तेष्वे निषेधः कृत इति चेत्
तत्रोच्यते । तिथिपत्रेषु ज्योतिर्विद्विस्तावदुपोद्घाते एव कृतादीनां लक्षणानि
प्रलिख्यन्ते । तानि तु युगायुः प्रमाणधर्माधर्मविष्णुवतारसंख्यादिरूपाख्येव
तथा गङ्गायुक्तेष्वनमपि कलिलक्षणत्वेनैव विज्ञेयं चेति । तत्र तानि सर्वाख्येव
लक्षणानि तु नहि प्रत्येकयुगचतुष्टयावृत्तौ संघटन्ते किन्तु तेषु कियत्लक्षणानि
प्रतियुगावृत्तौ घटन्ते । कियत्लक्षणानि तु क्वचित् क्वचिदेव । यथा । वाराह-
संख्यकूर्मनृसिंहवामनपरशुरामरामवलभद्रश्रीकृष्णचन्द्रावताराणां कल्पे स-
कृदेवाऽऽविर्भावित्वेऽपि तिथिपत्रेषु कृतादीनां मध्येऽनियमतया कृततदव-
तारगणनात्वेन युगलक्षणमात्रमेव । तथाऽन्ते कलौ गङ्गायात्राभावित्वे
सत्यपि गङ्गायुक्तेष्वस्य कलिलक्षणमात्रत्वेनैव तेषां तात्पर्यमिति । अथाव-
ताराणां सकृदेवाविर्भावे प्रमाणान्युच्यन्ते । कल्पावतारा इत्येते कथिता
वामनादयः । प्रतिकल्पं यतः प्रायःसकृत्प्रादुर्भवन्त्यऽमी ॥ १ ॥ तत्रापि
क्वचित् क्वचिद्विशेषो दृश्यते । यथा श्रीवाराहः । द्विराविरासीत्कल्पेऽस्मिन्नाद्ये
स्वायंभुवान्तरे । घ्राणाद्विधेर्दोषदृष्ट्यै चाक्षुषीये तु नीरतः ॥ १ ॥ मत्स्योऽपि
प्रादुरभवद्भिः कल्पेऽस्मिन् वराहवत् । आदौ स्वायंभुवीयस्य दैत्यं घ्नन्नाऽऽहर-
च्छ्रुतीः ॥ २ ॥ अन्ते तु चाक्षुषीयस्य कृपां सत्यव्रतेऽकरोदिति । श्रीनृसिंहसु
षष्ठेऽन्तरेऽब्धिमथनाद्बृहदेः पूर्वभाविता अतः प्रागेव कूर्मादेर्व्यक्तिं षष्ठेऽन्तरे
गत इति । श्रीकूर्मसु । पाद्मे प्रोक्तं दधे क्षीणीमयमेवार्थितः सुरैः । शास्त्रा-
न्तरे तु भूधारीकल्पादौ प्रकटोऽभवत् । इति द्विराविरासीत् इति कृतयुगा-
वताराः । अथ वामनः । वामनस्त्रिरभिव्यक्तिं कल्पेऽस्मिन् प्रतिपेदिवान्
तत्रादौ दानवेन्द्रस्य वाष्कलेरध्वरं ययौ ॥ १ ॥ ततो वैवस्वतीयेऽस्मिन् धुम्बो-
र्यज्ञमसौ गतः । अदितेः कक्ष्यापाज्जातः सप्तमेऽस्य चतुर्युगे ॥ २ ॥ प्रतिग्रह-
कृते जातास्त्रय एव त्रिविक्रमाः इति । श्रीपरशुरामसु । रेणुका-यमदग्निभ्यां
गौरी व्यक्तिसौ गतः । प्राहुः सप्तदशे केचिद्दहाविंशेऽन्ये चतुर्युगे ॥ १ ॥ श्री-
राघवेन्द्रः । कौशल्यायां दशरथावदूर्वादलद्युतिः । चैतायामाविरभवच्चतु-

विंशे चतुर्थे ॥१॥ तथा हरिवंशे प्रथमपर्वण्येकचत्वारिंशेऽध्याये । चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरःसरः । जज्ञे दशरथस्याथ पुत्रः पद्मायतेक्षणः ॥१२१॥ कृत्वात्मानं महाबाहुश्चतुर्धा प्रभुरीश्वरः । लोके राम इति ख्यातस्तेजसा भास्करोपमः ॥ १२२ ॥ इति वैवस्वतीयेऽस्मिन्नेवेति ज्ञेयं इति त्रेतावताराः । अथ रामकृष्णी त्वष्टाविंशतिमे द्वापरान्ते कृष्णद्वैपायनादनुजाताविति स्पष्टमेव । विष्णुपुराणे पञ्चमेऽंशे त्रयोविंशेऽध्याये । सुचुकुन्दवाक्यं कृष्णं प्रति ॥ पुरा गर्गेण कथितमष्टाविंशतिमे युगे । द्वापरान्ते हरेर्जनयदुवंशे भविष्यति २६ इति द्वापरावतारौ ॥ अथ बुधकल्किनावष्टाविंशतितमे कलावेव केचन चैतौ प्रतिकलौ मन्यन्ते इत्यत्र त्वऽस्वकृतोपयोगित्वात्त्रोच्यते अत्र विशेषव्याख्या जिज्ञासा चेत्तर्हि लघुभागवतामृतं पद्मब्रह्माण्डादितः संगृहीता द्रष्टव्या । किं बहुनाऽवतारादिवद्भागीरथीव्यवस्था च निःसन्देहैव विष्णुपुराणादिषु चरमे कलौ तद्यात्राप्रमाणत्वात् अतएवावतारलेखनवद्गङ्गायुर्मात्रलेखेऽपि नो काचिद्दोषापत्तिरिति तात्पर्यम् । किञ्च अवतारादिगणनावत् केवलं भागीरथ्यायुः कलौ पञ्चसहस्राब्दमितमिति मात्रलेख्ये सत्यपि उक्ततात्पर्या- नभिज्ञैरधुना गङ्गायुर्ज्ञासक्रमस्तु प्रत्यब्दमन्वपरंपरयैव प्रलियते अन्ते कलौ तद्भाविन्नेन वेदादिषु तदऽप्रतिपादनात् । ननु च ज्योतिःशास्त्रमतेन ज्योतिर्विद्धिः पूर्वतोऽधुना पर्यन्तलेखः कृतः क्रियते चेत्यतो नान्वपरंपरा इति चेत् तदप्यसङ्गतम् । सूर्यसिद्धान्तादिसिद्धान्तेषु मकरन्दग्रहलाघवादिकरणग्रन्थेषु वाराहसंहितादिषु च विष्णुपदीयात्तानयनकथनाऽभावात् सिद्धान्ताद्यकथित सोपपत्तिक-जाङ्गवी-यात्रासाधक-गणितान्तरस्याऽद्यावधि-श्रवणस्याप्यभावाच्च नन्वन्वपरंपरयैव बहुकाललेखस्य सदाचारतायां ग्रहणमसु इति चेन्न हद-संगतम् अन्वपरम्परायाः सदाचारताऽभावात् सदाऽऽचरितवेदकुलंपरम्परा-दयविरोधित्वाच्च अथ परम्परात्रयलक्षणानि । वेदवाक्यानुकूलरीत्यनुसरणं वेदपरम्परा । वेदाविरुद्धहितार्थसूत्रकल्पितरीत्यनुसरणं कुलपरम्परा । शास्त्र-विरुद्धस्वमतिकल्पितमार्गानुसरणमन्वपरम्परा । एषा नूनमथाद्या लोकादय-हानिदत्वात् अतस्तिथिपत्रेषु गङ्गायुर्ज्ञासक्रमलेखनमपि नरकप्रदमतौ दूरत-स्तुत्याज्यं विमत्सरैरास्तिकैरिति प्रार्थयामि सुमतीनिति । अथाऽत्रात्यन्त-भ्रमितबुद्धीनामेव दृढबोधाय श्रीजाङ्गव्यायुर्ज्ञासक्रमलेखेऽन्वपरम्परैव कारण-

मित्युक्तमपि पुनः प्रतन्यते तत्रापि कारणत्रयं पूर्वमासीत् । यथा । प्रथमन्तु ।
 कलेर्दशसहस्रान्ति इति । सनत्कुमारसंहितास्य कान्तिं कमाहात्म्याष्टमाध्याय-
 चतुर्विंशस्य श्लोकस्य तथान्यश्लोकानां च सम्बन्धतात्पर्यान्भिन्नत्वेनैवाऽवि-
 चारिभिरुन्मादेनैव गङ्गायुर्द्वासकमोल्लेखः कृत इतीषदृशितमपि पुनः प्रदर्शयते
 तत्राधुना तावत्तद्विचारित्वे भ्रमबाहुल्यदर्शनार्थं युगचतुष्टयावस्थाव्यवस्था
 निरूप्यते श्रीभागवते तृतीयस्कन्धे एकादशेऽध्याये । कृतं देताद्वापरञ्च कलि-
 ञ्चेति चतुर्युगम् । दिव्यैर्द्वादशभिर्वर्षैः सावधानं निरूपितम् ॥ १८ ॥ चत्वारि
 त्रीणि द्वे चैकं कृतादिषु यथाक्रमम् । संख्यातानि सहस्राणि द्विगुणानि शतानि
 च ॥ १९ ॥ इति देवायुः प्रमाणेन युगावस्था नरायुः प्रमाणेन युगावस्था
 ब्रह्मवैवर्ते कृष्णखण्डे षण्णवतितमेऽध्याये । अष्टाविंशतिसहस्राण्यधिकं परि-
 भाणकं । लक्षाणां च सप्तदशनराणां परिकीर्तितम् ॥ ६५ ॥ षण्णवतिसहस्राणि
 लक्षैर्द्वादशभिः सह । नृणां वर्षैर्महाभाग देता प्रोक्तो मनोविभिः ॥ ६६ ॥
 चतुःषष्टिसहस्राणि लक्षैरष्टाभिरेव च । नृणां वर्षैर्द्वापरञ्च कालज्ञैः परि-
 कीर्तितम् ॥ ६८ ॥ द्वौ च त्रिंशत्सहस्राणि चतुर्लक्षप्रमाणकम् । नृणां वर्षैः
 कलियुगं प्राहुर्वेदविदो जनाः ॥ इति तत्रापि पूर्वसंख्यांशयुगपश्चिम-
 संख्यांशभेदेन त्रिधावस्था संख्यांशयोरन्तरेण यः कालः शतसंख्ययोः
 तमेवाहुयुगं तज्ज्ञा यत्र धर्मो विधीयते ॥ इति भागवते तृतीयस्कन्धे
 मैत्रयवचनात् तत्र कलेशु नरायुः प्रमाणेन तावत् षट्त्रिंशत्सहस्राब्द-
 मितः पूर्वसंख्यांशः ततः षष्टिसहस्राधिकत्रिलक्षाब्दमितः कलिः तत-
 स्तदुत्तरसंख्यांश इतिक्रमः । तत्राधुना कलिः पूर्वसंख्यांश एव ततः कलि-
 र्भविष्यतीति हेमाद्रिप्रवृत्तिग्रन्थेषु स्पष्टमेव तत्रैव च पुराणादिसम्भवेन
 युगानां चतुश्चरणवत्त्वं संख्यांशमप्येकीकृत्येति प्रतिपादितं तत्र पूर्वसंख्यांशः
 प्रथमे पादे संगृहीतः उत्तरश्चतुर्थे पादे इति बोध्यम् । एकं च सति अष्ट-
 सहस्रोत्तरैकलक्षाब्दपरिमितः कलेरेकः पादः एवं चत्वारः पादास्तस्येति
 तत्रायपूर्वस्मिन्नेव संख्यांशसहिते प्रथमे पादे संख्यांशपरिमाणवर्षाणामेव मध्ये
 तिधिपत्रेषु चरमकलिलेख्यं गङ्गायुर्द्वासकमलेखनं न सम्भवन्ति सक्त श्लोके
 तथान्येषु च कलिशब्दस्य संख्यांशयोरन्तरेणेति वाक्येन । तथा विष्णुपुराणेषु
 तृतीयेऽध्याये संख्यासंख्यांशयोरन्तर्यः कालो मुनिसत्तम ॥ युगाख्यः स तु

विज्ञेयः कृतत्रेतादिसंज्ञितः । इति पराशरवाक्येन च युगपरत्वात् अतएव
 नैव संध्यांशपरत्वं कलिशब्दस्य शास्त्रोक्तयुगावस्थानियमविरोधात् संध्यांशयो-
 रन्तरेणेति वाक्ये मिथ्यात्वापत्तेरिति । किञ्च हुना इत्याद्याशयतात्पर्यान्-
 भिन्नाः केचनचये मुग्धाः श्लोकार्थे तु कलिशब्दस्य युगपरत्वमुक्तापि भ्रान्त्यैव
 स्वमनीषया कल्पितेऽनर्थे विश्वसिताः अधुना कलेः पूर्वसंध्यांश एव श्रीजा-
 ङ्ग्याः स्वः प्रयाणाऽऽदोनकारणं प्रतिवत्सरं लिखन्ति वदन्ति चैवं तेषां मतेनैव
 तन्मतं निरस्तं इदानीं कलेरप्रवृत्तेरिति एवं च सिद्धान्ते सति तेषां भ्रान्त-
 मतीनां एतत्कलिविषयकारोपितभ्रमार्थेऽपि भ्रमदर्शनात् महदसङ्गतेनाज्ञा-
 नेन तिथिपत्रस्वजाङ्गवीदेव्यायुर्ज्ञासंक्रमलेखाग्रहे जडान्धपरम्पराप्रभावमृते
 किं खलु वाच्यं हीति सहास्यं विभायन्तु सन्तः इति ॥ १ ॥ अथ द्वितीयं
 कारणं महन्मुख्यतमेव प्रलिख्यते केचनचकस्य चिन्नाभक्तस्य स्वदेशाधिप-
 त्यागानुवर्त्तिनस्तदानीं श्रीविष्णुपदभक्तानामपि मोक्षमभीप्समानाः स्वय-
 मपि श्रीजाङ्गवीप्रभावज्ञाः तदविश्वसितानपि प्रत्युत्साहयितुं तान् ससाम
 इत्युक्तवन्तः भोजनाः श्रीब्रह्मद्रवसेवनेन पापिनामपि शीघ्रं मुक्तिर्भवतीत्य-
 स्माहर्ष्यज्ञाः यूयमेव जाङ्ग्याः सविधिस्नानं कृत्वाऽस्मिन्नेव जनुषि मुक्तिर्भावी
 भवतु चेद्यदीह विध्यभावः स्यात्तर्ह्यङ्गामि जनुषि तु नूनमेव वो मुक्तिर्भवि-
 स्यति । नन्वेवं गङ्गामाहात्म्यं तर्हि पुनर्जन्मान्तरे गङ्गाभक्तिस्नानादिकं कृत्वा
 भवन्तरिष्याम इति चेत् तत्तु महदुर्वटं श्रीभागीरथ्या अल्पकालस्थितेर्यत्
 कुत्र लब्धप्रमाणत्वात् अतएव सर्वभावेन गङ्गां शीघ्रं भजत जन्मान्तराणान्तु
 इह कृतपापपुण्यादिभुक्ती सत्यामल्पकालत्वं दुर्विचिन्त्यत्वात् इत्येवं गङ्गा-
 विमुखजनकदम्बप्रोत्साहनपराः कृतोपदेशा घोषाः पुनश्चाल्पकालेनैव गङ्गा-
 स्नानधर्मपरास्तान् क्वचित् क्वचिदालस्य तद्विश्वासायाऽन्येषां च प्रवर्त्तनाय
 श्रीगङ्गानिर्गमावधिवर्षाणामूनकरणं प्रत्यब्दमङ्गीकृत्य तथा तिथिपत्रेषु प्रका-
 शितवन्त इति । तदानीं च महात्मानोऽपि चैतद्विचारं कृतवन्तः । न च धर्मसमो
 बन्धुर्न च धर्मसमं ययः । न च धर्मसमो लाभो नैव धर्मसमं सुखम् ॥ १ ॥
 तस्मादुपार्जयेद्धर्ममवरेणापि कर्मणा । सर्वसिद्धिकरं नित्यं परत्र च गति-
 प्रदम् ॥ २ ॥ इति स्मृतेः । येन केन प्रकारेण यथापि परिभावितम् । धर्मं न
 दूषयेत् प्राज्ञः सेवतां संसेवयेत् सदा ॥ १ ॥ इति नीतिशास्त्रवाक्यादपि तथा

न स्वधर्मात्परो योगी न स्वधर्मात्परं तपः । न स्वधर्मात्परो यज्ञी न
 स्वधर्मात्परं बलम् ॥ १ ॥ तस्मात् संस्थापयेदर्थं न हि धर्मसमः कुहूत् ।
 निर्मूलेनापि मार्गेण वर्धितं वर्धयेत् स्वयम् ॥ २ ॥ इत्यादिपुनस्तद्वचनैश्च इदं
 निष्पन्नं भवति स्वकपोलकल्पितमार्गेण वाऽन्यकल्पितान्यपरस्मरामार्गेणापि
 केनचिदेव स्थापितं तीर्थस्नानदानपूजायज्ञादिरूपं धर्मं अद्वया सेवेत तथा-
 ऽज्ञानऽभ्युपदिश्य संवेदयेत् तेनैव पथासेव्यमानं च धर्मं न विदूषयेत् इति
 स्मृत्याद्याशयादज्यवाचरणं चेदनुक्तं परमार्थमप्यतिरिक्तकल्पितं शङ्कमानाः
 अथच कालेः पञ्चसहस्रान्दान्ते सानुत्तरसहस्रान्तं आपतिते तु श्रीजाङ्गवी-
 तत्वदर्शिनः सन्तोऽप्याप्तं आत्मादिकं दत्त्वा पुनः पञ्चसहस्रान्तस्येवदेशं कति-
 प्यसीत्याशयविषयार्थं तेषामभ्युत्थानां तिथिपक्षगतपक्षोद्देशं ज्ञात्वापि
 श्रीजाङ्गवीतत्वदर्शिनो विवर्धयन्तुः परमार्थप्रवर्तनपूर्वकं ताज्जालीयप्रजाकल्या-
 णाय दीर्घदर्शिनो विवर्धयन्तुः स्वयमपि तत्त्वार्थं स्वीकृतवन्त इति ॥ २ ॥ अथ
 तृतीयं कारणं तु यथाश्रुतं प्रलिख्यते । यथा अद्यभारतवर्षेऽस्वत्पालकपरम-
 धार्मिकशुद्धिप्रकृतिपदवर्ज्यराजधानीसत्तत्त्वप्रकृतिषु वैदिक-धर्मपाल-
 कानां राज्ये कल्पितान्ते यवनराज्यमासीत् तैश्च यादृशीहानिरज्जडमै-
 कर्मणि च कृता तां वक्तुं हृदयदाहपूर्वकं सकम्पञ्च रोमोद्गमयुता भवति तनुः
 तथापि तल्लैतावदेवोच्यते । तत्कृतास्वदेवप्रतिमासन्दिरादिखण्डने सति नः
 पूर्वजान् परावरज्ञान् पण्डितानाह्वय तैर्यवनभूपैर्दृष्टयोक्तं यूयं स्वपूज्या गङ्गा-
 प्रभावं दर्शयत नो चेत्स्नानं त्यजध्वम् अन्यथा चेद्दोषवन्तं करिष्याम इति ।
 अतः सर्वे संसत्प्रसीदन्तश्चैरदौभिरेवात्मादुक्तवचनद्वये स्वेष्टमेकं कुर्वन्तु भवन्तु
 हत्येवं सति देशकालज्ञैः परमापहतैस्तेर्महात्मभिः परस्परं संमन्त्रकृत्वा
 विचारं च गत्वा यवनेशपार्श्वमित्युक्तम् । कलिपञ्चसहस्रान्तमनुगमिष्य-
 ताश्चाद्याः स्वयमेवाऽस्थिरायाः कं प्रभावं दर्शयिष्याम इति । ततश्च । पुनः
 चनकुमार-संहिताकार्तिकमाहात्म्याष्टमाध्याय-चतुर्विंशतितमः श्लोकस्तथैत-
 द्वातीयवाक्यदुक्तलोकहृदयस्य तद्वचनपूर्वकं स्वधर्मरक्षणाय प्रसागत्येन दर्शितः
 ततश्च दृष्ट्वा तद्वचनऽवसिर्वायवनेरुपेक्षापूर्वकमेतदुक्तम् एवं चेत्तर्हि ज्ञातं
 भवत्तज्ज्ञाया गङ्गात्वमऽतो यथेच्छं स्नानं कुरुत किन्तु स्वीयधर्ममार्गप्रचारक-
 तिथिपत्रेषु गङ्गाऽऽयुर्जन्मकरोद्देशं प्रत्येकवत्सरं कुरुत तथाच पिलमादि-

शकाब्दलेखवत्तत्रास्मदीयशकमपि लिखतेति श्रुत्वाऽऽपन्नस्ताः परमकुशलास्ते
विद्वांसः स्वकीयधर्मविरोधिनामपि तेषामुक्तवचनद्वयं तदा स्वधर्मरक्षणार्थं
स्वीचक्रुरिति तत आरभ्य तद्राज्यमन्वयऽन्धपरम्परालेखः प्रवृत्त इति । किञ्च
अत्राविश्वसितैस्तु कीविदैः तद्राज्यसमयस्थितिपत्रेष्वेव श्रीभागैरथ्या आ-
युर्ज्ञासक्रमलेखस्तथा यवनशकोल्लेखश्च नूनं द्रष्टव्यः । पूर्वत आसीदा तत
आरभ्येवेति । अत्र ज्योष्ठपिटव्यैः श्रीमोहनलालशर्मभिस्तु मदग्र एव पूर्व-
कालीययवनराज्यतिथिपत्राणि तत्पूर्वाण्यपि विलोक्यै तन्निश्चयः कृतः श्री-
गङ्गानिर्गमाऽब्दोत्तरकरणं न तु यवनराज्यतः पूर्वमासीत् । इत्यत्राज्ञानां
दृढविश्वासाय सुमतिभिः पुनरपि तथा दृष्ट्वा निश्चयः कारयितव्य इति ।
किञ्चहुना तदारभ्याद्यपर्यन्तमापस्तुतैरपि ज्योतिर्विद्धिः कैश्चित् पण्डितै-
र्विचारं त्यक्त्वाऽन्धपरम्पराग्रस्तैः प्रत्यब्दं श्रीगङ्गायुर्ज्ञासक्रमलेखः क्रियते इत्य-
लम् ॥ १ ॥ इति श्रीरामदत्तात्मज-श्रीनन्दकिशोरमाश्रितसूक्तनि-श्रीगङ्गा-
तत्त्वसन्दर्भे तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

गङ्गापाङ्गादुरङ्गानामङ्गानामपिशोधकाः । अभङ्गानङ्गमङ्गाङ्गभङ्गाङ्गास्त्ये-
जयन्ति हि ॥ १ ॥ अथागमनमम्बायाः पुराणेषु विरुध्यते । काशीरामप्रपीत्रेण
सङ्गतिस्तस्य लिख्यते ॥ २ ॥ ननु च कदा भुवि गङ्गाप्रादुर्भावो जात इति न
निश्चयपदं समायाति । पुराणादिषु तस्य बहुप्रकारेण वर्णनात् । तथाहि
वाल्मीकीयरामायणे तु । भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्यन्दनमास्थितः प्राया-
दग्रे महातेजा गङ्गा तच्चाप्यनुत्तजत् ॥ १३ ॥ इत्यादिसौकेः । ततः सगरा-
त्मजोद्वारे सति विरञ्चिवाक्यम् । प्राप्तोऽसि परमं लोके यशः परममग्नतम् ।
यच्च गङ्गावतरणं त्वयाकृतमरिन्दम ॥ ५१ ॥ अनेन च भवान् प्राप्तो धर्म-
स्यायतनं सहदित्यादिना । गङ्गाप्रादुर्भावः सप्तमेऽस्मिन् वैषल्यतमन्वन्तरे
चतुर्विंशे त्रेतायुगे कपिलाज्ञया भगीरथतपोनिमित्तक आसीदिति । एवं
भागवते नवमस्कन्धे नवमेऽध्यायेऽपि । भगीरथः सराजर्षिर्निन्दे भुवनपाव-
नीम् । यत्र सपितृणां देहा भस्मीभूताः स शेरते ॥ १० ॥ रथेन वायुवेगेन
प्रयान्तमनुधावती । देशान् पुनन्ती निर्दग्धानाऽऽसिञ्चत्सगरात्मजान् ॥ ११ ॥
इति सगरात्मजोद्वारायैव भगीरथकृत एव प्रसिद्धः ॥ अथास्यावरोधक एव

द्वितीयो गङ्गाप्रादुर्भावस्ततो भगीरथात् पूर्वमेव वैवस्वतमन्वन्तर एव सप्तमे
 त्रेतायुगे वल्लेखे त्रिविक्रमचरणजातः श्रूयते । भागवते पञ्चमस्कन्धे सप्त-
 दशेऽध्याये । तत्र भगवतः साक्षाद्यज्ञलिङ्गस्य विष्णोर्विक्रमतो वामपादाङ्गु-
 लानिर्भिन्नोर्ध्वाङ्गुलकटाहविदरेणान्तः प्रविष्टा या बाह्यजलधारा तच्चरणपङ्क-
 जावनेजनारुणकिञ्चलोपरक्षिताऽखिलजगद्वमलापहोपस्पर्शनाऽमला सा-
 खाङ्गमवल्गदीत्यनुपलक्षितवहोऽभिधीयमानाऽतिमहताकालेन युगसाहस्रोप-
 लक्षणेन दिवो सूर्येण्यवततारित्यन्तेन । न च दिवो सूर्येण्यवततारित्यन्तेन विय-
 त्ता ज्ञायते सा भगीरथानयनात् पूर्वे भुविनावततारिते वाच्यम् । पञ्चमस्कन्ध-
 सप्तदशाध्यायवाक्येनैव तस्या भुवि आगमनप्रसिद्धेः । तथाहि । तथैवालक-
 नन्दा दक्षिणेन ब्रह्मसदनाहङ्गनि गिरिकूटान्यतिक्रम्य हेमकूटान्यतिरभसतर-
 रंहसा लुठयन्ती भारतमभिवर्षं दक्षिणस्थादिग्निजलधिभिर्प्रविशति ॥६॥ तथा
 विष्णुपुराणेऽपि विष्णुपादविनिष्क्रान्ता प्लावयन्तीन्दुमण्डलम् । समन्ताद्-
 ब्रह्मणः पुर्यां गङ्गा पतति वै दिवि । सा तत्र पतितः दिक्षुचतुर्धा प्रत्यपद्यत
 सीता चालकनन्दा च चक्षुर्भद्रा च वै क्रमादिति वाक्यवन्देन गङ्गाया भुव्या-
 गमनं च प्रसिद्धम् । एवं च सत्यंस्याप्यवतरणस्य प्रतिबन्धका स्वायंभुव-
 मन्वन्तरे गङ्गास्थितिः श्रूयते । भागवते चतुर्थस्कन्धे पृथुचरिते । गङ्गायमु-
 नयोर्नद्योरन्तरा . क्षेत्तमावसन् आरब्धानेव बुभुजे भोगान् पुण्ड्रजिह्वासया
 इति श्लोकेन पृथुराज्यं तु स्वायंभुवमन्वन्तर एवासीत् तथाच स्वायंभुवेऽन्तरे
 यज्ञ एवेन्द्रो जात इति भागवते प्रथमस्कन्धे तृतीयेऽध्याये । ततः सप्तम
 आकृत्यां रुचेर्यज्ञोऽभ्यजायत । सयामाद्यैः सुरगणैरपात्स्वार्थभुवान्तरम् ॥१२॥
 तथा तत्रैव चतुर्थस्कन्धे प्रथमेऽध्याये । तां कामयानां भगवानुवाहयजुर्षा
 पतिः । तुष्टायां तोषमापन्नो जगत्पदादशात्मजान् ॥ ६ ॥ तुष्टितानामते
 देवा आसन् स्वायंभुवान्तर । मरीचिमिश्रा ऋषयो यज्ञः सुरगणेश्वरः ॥ ८ ॥
 इति वाक्येन । तथाच पृथुकाले यज्ञ एवेन्द्रः इति पृथुचरितेनैवावगम्यते
 यज्ञेन सह तस्य विरोधात् तयोर्विरोधशान्त्यर्थं ब्रह्मवाक्यं च तत्रैव श्रूयते
 न बध्यो भवतामिन्द्रो यज्ञो भगवत्तनुः । यज्जिघांसथ यज्ञेन यस्मैष्टास्तनवः
 सुरा इति श्लोकेन । इत्यतः स्वायंभुवान्तरं यज्ञे इन्द्रेऽपृथुराज्यमतस्तत्र गङ्गाया
 विद्यमानत्वं निःसन्देहमेवेति । अन्यत्र च यस्मिन् यज्ञे महादेवे दक्षस्य

विशेषः समजनि तस्य विश्वसृग्भिः कृतस्य दृष्टस्यान्तेऽतश्चकृत्वात् प्रयागे तेः
 कृतमित्यपि श्रीभागवते चतुर्थस्कन्धे श्रूयते । यथा, प्रादुर्भावावस्थं यत्र
 गङ्गायमुनयान्विता विरजेनात्मना सर्वे स्वं स्वं धाम ययुः सुरा इति । तदपि
 स्वायंभुवमन्वन्तर एवासीदिति गम्यते प्राचीनवर्हिषो राज्ञस्तत्र सत्वात्
 तथाहि । वाता न वान्ति नहि सन्ति दस्यवैः प्राचीनवर्हिर्जीवतिहोशदण्ड
 इति । दक्षयज्ञविध्वंसनायागतेषु रुद्रभटेषु यज्ञस्या ऋत्विगादयस्तत्स्त्रियोऽपि
 वितर्कयामासुः अतो बुध्यते प्राचीनवर्हिः प्रादुर्भावावस्थे राजाऽसीत्
 यज्ञश्च तदानीन्तन इन्द्र आसीत् । तथाच दक्षयज्ञविनाशे भूतादिपीडितान्
 सुरान् प्रति व्रज्जणोवाक्यम् । नाहं न यज्ञो न च यूयमन्ये ये देवताजो
 मुनयश्च तत्त्वम् । विदुः प्रमाणं बलवीर्ययोर्वा यस्यालतन्वस्य क उपायं
 विधत्सेत् इति । अंश टीकायां च स्वामिचरणैः यज्ञस्तदानीन्तन इन्द्र
 आसीदिति लिखितम् । धिक्कुंता । स्वायंभुवेऽन्तरे गङ्गाया विप्लवमादत्त
 सर्वथा निश्चीयते । स्वयं-मनुनैव मा गङ्गां सा लुक्कन् गमः इत्यन्तमाध्यात्मिक-
 चित्ते गङ्गास्नानस्य कथनात् । ऐवमर्थोर्ध्वगतस्यैव सत्त्वदेवताविद्यास्य
 तत्कृतगङ्गाग्रहणाच्च एवं स्वायंभुवमन्वन्तरात्पूर्वमेव दैनन्दिनप्रसवेऽपि गङ्गा-
 स्थितिः श्रीभागवतदृतीयस्कन्धे सनकादीनां श्रीशेषान्विते आचमनसमयान्तरे
 गतमे श्रूयते । स्वर्गुन्मुदाईः राजटाकलादेयसमुद्रस्य गतमे श्रूयते । इति श्रीतैत्तिरीय-
 एवं च सति दैनन्दिनप्रसवे तेषां प्रथमे प्रादुर्भावावस्थे यदि गङ्गायाः
 स्थितिः पृथिव्यामासीत्तर्हि प्रादुर्भावावस्थे दैनन्दिनप्रसवे सति लेतायुगे धर्मे-
 र्यज्ञे उद्भवः किमिति निरूपितः ततोऽपि यन्मात्रद्वारा तत्र स्थितेयं यन्मात्रे
 चतुर्विंशे लेतायुगे भगीरथद्वारा श्रीगङ्गायाः प्रादुर्भावे ते विदिते इति कथं
 सङ्गच्छते । इति सन्देहे जायमाने विताप्यो विनिश्चिने । श्रीगङ्गायाः प्रादु-
 र्भावस्य तावद्भवतः प्रादुर्भाववस्तुत्वेऽपि सन्देहविनिर्मुक्तः, यथा तद्विषये वृत्तः
 पुनर्वर्ण्यते । यथा, भूगोलकवर्णने उपरस्तीपावधमार्गेण यमसु खण्डेषु वराहा-
 द्यवताराः वर्णिताः तेषामवतारास्तत्र तत्रकाले श्रूयन्ते यथा । तत्रावधौ
 उपास्यः श्रीनारायण उपासकाः श्रीभारद्वः तत्रावधौऽपि सप्तशतं ते तेषां
 तारास्तेषां तेषां च उपासकाश्च सन्ति । एवं च सति । आचमनसमयान्तरे
 स्वायंभुवदक्षादेव जातायां मूर्ध्या धर्माक्षरनारायणी पृथिवीदेवावतीर्णः

ततोऽपि पूर्वं स्वायंभुवमन्वन्तरे भरतखण्डे पूज्यत्वेन नरनारायणी स्थितौ भगवदवताराणां देवभीमविलवैकुण्ठेषु स्मृतिभेदेन स्थितत्वं यावत्कल्पाधिकारस्तावन्निश्चितम् । तथाच पाद्मे वैकुण्ठसदने नित्ये निवसन्ति महोज्ज्वलाः अवतारास्तदा तत्र मत्स्यशूर्पादयोऽखिलाः । हानोपादानरहितानैव प्रकृतिजाः क्वचित् । न च पाद्मवचनेन वैकुण्ठपदश्रवणात् भीमोविलश्च वैकुण्ठो न भवतीति वाच्यम् । यत्र यत्र भगवान् साक्षात्तिष्ठति तत्र तत्र वैकुण्ठोऽस्तीत्यभिप्रायात् वैकुण्ठपदस्योपलक्षणत्वाच्च मन्त्रिकेतन्तु निर्गुणमिति भागवतैकादशस्कन्धे भगवद्वाक्याच्च । एवं च सति श्रीगङ्गाया न केवलं त्रिविक्रमचरणोद्भवत्वमङ्गीकर्तव्यं तस्याः सुगुणब्रह्मद्रवत्वात् तच्चरणोद्भवत्वं च केनचिदेतुना श्रीगृसिंहादिवदाविर्भावो मन्तव्यः । भगवतो यथाविर्भावे निमित्तं तद्गङ्गाया अप्याविर्भावे निमित्तं स्वीकर्तव्यम् । तथाच गीतायां परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे इतिवद्गङ्गाया अपि ज्ञातव्यम् । तथाहि यतः कल्पारम्भस्तत एव ब्रह्माण्डरचनासहभूतः भूलोग-खगोलयोः प्रादुर्भावस्तत्सहभूतः भुवि समस्तजुष्टाणां गङ्गायसुनादिनदीनां सुमेरुर्वटिपर्वतानां च प्रादुर्भावो ज्ञेय इति एवं स्थितिरप्याऽऽकल्पान्तं विज्ञेया च अतः स्वायंभुवमन्वन्तरमारभ्य चतुर्ध्रुवमन्वन्तरेषु श्रीगङ्गापि लोके स्थास्यत्येव तथापि केनचिन्निमित्तेन तिरोभावे जाते वैवस्वतमन्वन्तरे त्रिविक्रमचरणादुद्भूता ततस्तु केनचिदेतुना तिरोभावे ह्यऽजातेऽपि कपिलजन्मार्पिणा । ब्राह्मणातिक्रमे दोषो ब्राह्मणनैव हन्यते इति वाक्यानुसारेण ब्राह्मणपराधजं दोषं ब्राह्मणपादोदकसेवनेनैव नश्यतीति प्रख्यापयित्वा श्रीभगवदन्तारवामनब्रह्मर्षिपादोदकेन सगरात्मजोद्धारोऽस्त्वित्यभिप्रायवता च भो राजन् ! विधिकमण्डलुस्थवामनपादशौचजलं गङ्गा-रूपेण यस्यायात्तर्हि तत्पूर्वजोद्धारो भविष्यतीत्यंशुमते नृपायाऽऽज्ञादत्ता इति कपिलज्ञापूर्वके भक्तवत्सला गङ्गा अलकनन्दारूपेण भूमौ स्थितापि भागीरथीति द्वितीयरूपेण प्रसिद्धिं गत्वा पुनरलकनन्दायामेव देवप्रयागे मिलित्वा सगरात्मजासुहृदीर्षुर्वैवस्वतमन्वन्तरे भगीरथद्वारा प्रादुर्भूता इति गम्यते । आगतस्य पुनर्गमनं विना पुनरागमनं न घटते इति नियमात् स्वायंभुवान्तरे तिरोभावे कारणं मन्तव्यम् । अत्र श्रीगङ्गाया आविर्भावतिरोभावौ केवलं मनुष्याणां

दर्शनाऽदर्शनात्मकौ बोध्यौ विराजः पुंसौ माडीरूपेण सदा स्थितत्वात् तथा
चात्र * सप्रमाणिना उपपत्तिलिख्यते जङ्गुना योगवलेन क्रोधात्पीता गङ्गा
पुनरपि वैशाखशुक्लसप्तम्यां तद्वक्षिणकर्णादुद्भूता इति प्रमाणं पुराणादाव-
स्थेव । तथाच ब्राह्मे । वैशाखशुक्लसप्तम्यां जङ्गुना जाङ्गवीपरा । क्रोधात्पीता
पुनस्त्यक्ता कर्णरन्ध्रात्तु दक्षिणादिति । तथाच बाल्मीकीयरामायणेऽपि बाल-
काण्डे । ततो हि यजमानस्य जङ्गोरद्भुतकर्मणः । गङ्गासंज्ञावयासास यज्ञ-
वाटं महात्मनः ॥ २१ ॥ तस्यावलेपनं ज्ञात्वा क्रुद्धो जङ्गुस्तु राघव । अपि-
वत्तु जलं सर्वं गङ्गायाः परमाद्भुतम् ॥ २२ ॥ ततो देवाः सगन्धर्वा ऋषयश्च
सुविस्मिताः । पूजयन्ति महात्मानं जङ्गुं पुरुषसत्तमम् ॥ २३ ॥ गङ्गाञ्चापि
नयन्ति स्म दुहिद्वले महात्मनः ॥ २४ ॥ ततस्तुष्टो महातेजाः श्रीत्राभ्या-
मसृजत्पुनः । तस्याज्जङ्गुसुतागङ्गा प्रोच्यते जाङ्गवीति च ॥ २५ ॥ जगाम च
पुनर्गङ्गा भगीरथरथानुगा । सागरञ्चापि संप्राप्ता सा सरित् प्रवरा तदा ॥ २६ ॥
इतिवत् स्वायंभुवान्तरेऽपि ज्ञेयम् । इत्येवं सिद्धान्ते जायमाने गङ्गाप्रादुर्भावे
तथा भगीरथरथखातनिवासाय श्रीगङ्गयैव कृतप्रतिज्ञत्वाद्भगीरथानयनादनु-
कल्याणं गङ्गास्थितिविषयेऽपि सुधीभिः सन्देहो न कार्य इति ॥ किञ्च ।
नन्वऽत्र कलियुगद्वितीयपादयात्राविधायकवाक्यमपि श्रूयतेऽतः किमिति
भगीरथानयनादनुगङ्गायाचा नेत्युच्यते तथाहि केदारखर्खं सप्तसप्तत्यधिकशत-
तमेऽध्याये गङ्गावासुक्सिंवादे । भगीरथेन कैलाशादानोतास्त्रीह वासुके ।
निमन्वितास्त्रिभूमौ हि पितृणां मुक्तिकारणात् । साम्प्रतं तदवश्यं हि कर्त्तव्यं
भगवन्मया । चरमेऽस्मिन् युगे भूय आगमिष्यामि ते स्थलम् । इदानीं मुञ्च मां
शौघं समुद्रे मे गतिर्मतेति ॥ तथा चापि भगीरथं प्रति गङ्गावाक्यं तत्रैव
श्रूयते । भगीरथमहाप्राज्ञ एवमेव भविष्यति । यावच्चन्द्रग्रहेणाद्याः स्थाय-
न्यस्वरमण्डले ॥ तावत्कीर्त्तिर्महाराज भविता ते त्रिलोकके । नामापि तव च
श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ कलेर्द्वितीयपादे तु गमिष्यामि पुनस्तलमिति ।
एवं च सति । पूर्वं निर्णीताऽन्तिमे कलौ गङ्गायात्रासुतरां निरस्तेव पूर्ववद-
त्वापि कारणश्रवणादिति । अत्रोच्यते । वासुकिं प्रति तु मूर्त्तिदर्शनदायक-
श्रीभागीरथीवरप्रदानाऽभिप्रायोऽस्तीत्यत्र बोध्यम् । कुतः । यस्यामलं दिवि यशः

प्रथितं रक्षायां भूमौ च ते भुवनमङ्गलदिग्वितानं । मन्दाकिनीति दिवि भोग-
वतीति चाधोगङ्गेति चेह चरणाम्बुपुनातिविश्वम् ॥४४॥ इति भागवतदशम-
स्कन्धसप्ततितमाध्यायवाक्यात्पाताले भोगवतीति प्रसिद्धधारायाः सदा विद्य-
मानत्वात् ब्रह्मद्रवस्य पुनः प्रवेशेन सङ्गच्छतेऽतः श्रीब्रह्मवैवर्त्तपुराणे प्रकृतिखण्ड-
नवमेऽध्याये । द्वाधिष्ठातृदेवी या रूपेणा प्रतिमा भुवि । नवयौवनसम्पन्ना-
रत्नाभरणभूषिता इत्यादिश्लोकोक्ता चिद्रवस्यैवानिर्वचनीयाशक्तिर्मूर्त्तिमती-
प्रसिद्धास्ति तस्या एव भक्तेच्छया सर्वत्र दर्शनदानं गमनं च सङ्गच्छते ।
तथाचोक्तं कैश्चिदभियुक्तमहानुभावैः । स्वर्गे भुवि च पाताले द्रवरूपा सदा
स्थिता । तथापि तस्मादन्यत्र चाहता यन्नकर्मणि ॥ भक्तैश्च दर्शनं दातुं
याति मूर्त्तिमती शिवा । तथा लोकत्रये मूर्त्या क्रमात्सन्निहिता भवेदिति ।
ब्रह्मपुराणेऽपि । षष्ठ्यादौ क्षणपक्षे तु भूमौ सन्निहिता भवेत् । यावत् पुन-
रमावास्यादिनानि दशनित्यशः ॥ १ ॥ शुक्लप्रतिपदारभ्य दिनानि दश-
नित्यशः । पाताले सन्निधानं तु करोति स्वयमेव हि ॥ २ ॥ शुक्लैकादशि-
कादीनि गङ्गास्वर्गतरङ्गिणी । पञ्चम्यंतानि सा स्वर्गे सदा सन्निहिता भवे-
दिति । अतएव नागैश्चो गङ्गावरप्रदानं तेषां स्थलं गत्वा मूर्त्तिदर्शनात्मकम-
वेति निश्चीयते । त्वया समयभावेन स्थेयं भारतखण्डके इति भगीरथ-
प्रार्थनानन्तरं भगीरथमहाप्राज्ञ एवमेव भविष्यतीति गङ्गावरप्रदानं दर्शनात् ।
किञ्च । यदि च जलप्रवाहगमनवरदानमेव चेद् गृह्यते तदपि एकांशेन
कविजयदेवसेच्छया तद्वाप्याविर्भावदत्तापि ज्ञेयम् । तथापि नास्त्यत्र
क्षतिरिति । किम्बहुना, द्रवरूपायास्तु भागीरथायात्रा भगीरथपूर्वजो-
द्धारादनु प्रलयकालस्यते कदापि न सम्भवतीति सिद्धान्त इत्यलं विस्तरेण ।

इति श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसूनु-दुर्गादत्तकृते श्रीगङ्गातत्वसन्दर्भे

चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

चिद्रवस्यैव या, शक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता । वन्दे तां जाङ्गवीं दिव्यां
मकरासनसंस्थिताम् ॥१॥ अथ चाक्षय्यरामस्य भीमांसकशिरोमणेः । प्रपौत्र-
पुत्रजेनाम्बा मूर्त्तिर्भेदभ्रमोऽस्यते ॥ २ ॥ ननु च गङ्गायाः सगुणब्रह्मद्रवत्वं
यदुक्तम् । तत्कथं सगुणब्रह्मद्रवतामगादिति तथाच तस्यैवाऽपरासूक्तिः-

अतुर्भुजा मकरवाहना प्रोक्ता शास्त्रेषु श्रूयते च । उत्पुष्तामलपुण्डरीक-
 लचिरा कृष्णेशविधात्मिका कुम्भेष्टाभयतोयजानि दधतीतीताम्बरात्कधृता ।
 हृष्टास्या शशिशीखराऽखिलनदीशोणादिभिः सेविता ध्येया वापविनामिनी
 यकरगा सागौरशीलाधकैरित्यादिभिः श्लोकैः । सा किं निमित्तं जातेति ।
 यदि च भक्तकार्यार्थमेवेति पूर्वमुक्तं गृह्यते तत्तु स्मरणनामोच्चारणादिनैव
 भवितुं शक्यते इति सन्देहे जायमाने अत्रोत्तरः क्रमेणोच्यते । यथा निर्गुणस्य
 परमात्मनः स्वेच्छया * लीलाविनोदाय चिच्छक्तिमुपाश्रित्य निर्विकारसगुण-
 ब्रह्मत्वं प्रतिपाद्यते तथैव स्वेच्छयैव सगुणब्रह्मणो निर्विकार-नीराकारत्वं
 बोध्यम् । तत्तु भक्ताः संसारोऽध्यात्मादितापतप्तानां तापनिवृत्त्यर्थमेव मन्यन्ते ।
 तथाच स्मर्यते । निराकारमुपासन्ते साकारमपि केचन । वयं संसार-
 सन्तप्ता नीराकारमुपासामहे इति । स्कान्देऽपि पार्वतीशिवसंवादेन जगदु-
 द्धारायैव जलाकारत्वं स्पष्टीकृतम् । तथाहि अक्षरं यत्परंब्रह्म यस्मिन् सर्व-
 मिदं ततम् । कथं तज्ज्ञायते लोके किं नाम तद्वदप्रभो ॥१॥ कथं आस्यस्मि
 चरमे युगे विप्रादयः परम् । तेषां भक्तिविहीनानां कथं कलियुगे गतिः ॥२॥
 इति पार्वतीप्रश्ने सति । योऽसौ सनातनोदेवः परात्मा जगदीश्वरः । उवाच
 भक्तिसम्पन्नां सारात्सारतरं प्रभुः ॥ ३ ॥ परात्मा निर्गुणः शान्तो व्यक्तो-
 ऽव्यक्तो निराश्रयः । सर्वात्मा सर्वभूतेशः सत्यानन्दो निरञ्जनः ॥ ४ ॥ एक
 एव हि लोकात्मा सत्त्वादिगुणवर्जितः । तदेव परं ब्रह्म जलात्मा भगवानजः ५
 यत्नाम्बुनि महदेवि आपोरोचितदुर्गमे । ब्रह्माण्डकोटयो यस्मिन्ननन्ता ब्रह्म-
 कोटयः ॥ ६ ॥ उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति जलब्रह्मण्यनेकशः । ब्रह्माण्डं प्रति-
 ब्रह्मादित्रयो देवाः सवासवाः ॥ ७ ॥ इतितद्ब्रह्मविज्ञेयमनन्तं विष्णो-
 मुखम् । तदेव सर्वरूपेण ब्रह्माण्डेषु प्रवर्तते ॥ ८ ॥ यदेतत्परमं ब्रह्मद्रवरूपं
 महेश्वरि । गङ्गाव्यापुण्यतमं पृथिव्या मासकर्णिकम् ॥ ९ ॥ इति अन्यच्च
 तत्रैव काशीखण्डे सप्तविंशोऽध्याये । वह्निःस्थितं जलं यदद्वारिकेशान्तरे
 स्थितम् । तथा ब्रह्माण्डवाह्यस्य परंब्रह्माब्जजाज्ञवी ॥ २० ॥ इति । भारते-
 ऽपि योऽसौ विश्वेश्वरोदेवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः । स एव द्रवरूपेण गङ्गास्थो
 नात्र संशय इति । अथात्र ब्रह्मद्रवोत्पत्तिः प्रकारान्तरेण ब्रह्मैवत्त्वं प्रकृति-

कण्ठे दशमेऽध्याये श्रूयते श्रीराधाकृष्णयोः कार्त्तिक्यां रासमण्डले शिवो
जगाम । एतस्मिन्नन्तरे शम्भुर्ब्रह्मणा प्रेरितो मुहुः । जगौ श्रीकृष्णसङ्गीतं
रासोन्नाससमन्वितम् ॥ १५३ ॥ मूर्च्छां प्रापुः सुराः सर्वे चित्तपुरुषिष्ठा
यथा । क्षणेन चेतनां प्राप्य ददृशू रासमण्डलम् ॥ १५४ ॥ खलं सर्वं जला-
कीर्णं राधाकृष्णविहीनकम् । अत्युच्चै रुरुदुः सर्वे गोपागोप्यः सुरा द्विजाः १५५
ध्यानेन ब्रह्मा बुबुधे सर्वमेवमभीक्षितम् । गतश्च राधया सार्द्धं श्रीकृष्णो
द्रवतामिति ॥ १५६ ॥ ततस्तैरभिष्टुतः सराधः श्रीकृष्णः खदर्शनं च ददा-
विश्यादि तत्र विलसरतोऽस्ति । तथा देवीपुराणेऽपि । शिवसङ्गीतसंयुक्त-
श्रीकृष्णसङ्गीतसंयुक्ताम् । राधाङ्गद्रवसंयुक्तां तां गङ्गां प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ इति ।
तथाचैवं नारदस्तत्प्राप्तोऽपि श्रूयते एकदा नारदः सरस्वत्याः सकाशात्-
जानविद्यामधीत्य हर्षितो मुनिर्ब्रह्मलोकं गत्वा पितरं नत्वावाच श्रूयतां
मदधीतं नादतत्त्वं समीचीनं वाऽसमीचीनमिति श्रुत्वा च मम श्रवणादकाशो
जास्तीति हसन् कृपर्दिनं प्रति प्रेषितः सः शिवमपि तथैवोवाच ततस्तेनापि
विष्णुं प्रति प्रेषितः ततो विष्णुनापि ब्रह्मशिववदुक्ता कृपया गोलोके प्रवेशितः
तत्र चानेकब्रह्माण्डाधिनाथं दृष्ट्वा नत्वा स्वाभिंप्रायं निवेदयित्वा तदाज्ञप्तः सभेदं
राभञ्जिकरं जगौ ततश्च तद्वक्तियन्त्रितश्चिह्ननः कृष्णो द्रवतामगादिति । * एतच्च
कल्पान्तरभेदेनैतदुक्तम् । यदा केनचिद्वेतुना भक्तानां प्रीतये प्रत्यभावेऽपि
भार्कखेयाय दर्शितमायाबलवत्तदपि सत्त्ववतीति नात्र विरोध इति तत्त्वमव-
धेयम् १ अथ चिद्वस्त्वाऽपरामूर्तिः किन्निमित्तं जातैत्यत्रोच्यते कल्पाधिकारिणां
देव-नक्त-वर्ण-भिम्बु-नखादीनां च मूर्तिर्द्वयं भवति । तत्राद्यया तु स्वाधि-
कारस्थले स्थित्वैश्वराज्ञा क्रियते एव तथाप्यवान्तरकार्यविशेषेषु प्रभोरिच्छ-
यैवाऽपरया मूर्त्या तानि क्रियन्ते इति । उक्तञ्च नारदाद्यैः । आद्यामूर्तिस्तु
देवानां स्वीये धाम्नि विराजते । तस्याः सकाशादुत्पन्ना द्वितीया कार्य-
साधिका ॥ १ ॥ कार्यं विधाय तत्पुण्यात् स्वाधिष्ठाने विलीयते । तथापी-
श्वरमूर्त्तीनां नित्यत्वेन विरुध्यते ॥ २ ॥ नित्यत्वाद्वाक् एवास्य कालातीत-
त्वतस्तथा । कालस्यापि नियन्तृत्वात्परत्वात्प्रकृतेरपि ॥ ३ ॥ इत्यादिना यथा
सूर्यादीनां कल्पाधिकारे खे नित्यमूर्त्या स्थितिर्नित्यैव तथापि कार्यविशेषेषु
अति-कश्यपादिग्रहे मूर्तिभेदेन प्राकट्यं श्रूयत एव तथाहि श्रीभागवते

चतुर्थे । सीमोऽभूद्रज्ज्योतिःशेनेति । विवस्वानर्थमापूषेति षष्ठस्कन्धवाक्येन
 च एवञ्च कृतिकादीनि नक्षत्राणीन्दोः पत्रास्तु भारतेति षष्ठस्कन्धवाक्येनैवा-
 ऽश्विन्यादिनक्षत्राणामपि मूर्त्तिद्वयं दृश्यते तथा मेर्वादिपर्वतानामपि पृथुकृत-
 पृथ्वीदोहने । गिरयो हिमवद्वक्ता नानाधातून् स्वसानुषु इति भागवतचतुर्थ-
 स्कन्धेऽस्ति मैनाकेन तु मूर्त्तिमता समुद्रोत्प्लवने हनुमतः स्वशिखरे स्थित्वा
 कपेः सत्कारः कृतः संवादश्च वाल्मीकीय रामायणे प्रसिद्ध एव । एवं समुद्रे-
 णापि मूर्त्तिमता राघवेन्द्रः प्रपूजितः । सिन्धुः शिरस्सर्पं परिगृह्यरूपी
 पादारविन्दमुपगम्य वभाष एतदिति भागवतनवमस्कन्धे दशमाध्यायवाक्येन
 सिन्धोर्मूर्त्तिद्वयं भाति तथैव तत्रैवाष्टमस्कन्धेऽष्टमाध्याये रमाभिषेके । मूर्त्ति-
 मत्यः सरिच्छेष्टा हेमकुक्षैर्जलं शुचि । इति वाक्येन नदीनां च मूर्त्तिभेदः
 प्रसिद्धः । तथा पाञ्चीये भागवतमाहात्म्ये तृतीयेऽध्यायेऽपि । वेदान्तानि च
 वेदाश्च मन्त्रास्तन्त्राः समूर्त्तयः । दशसप्तपुराणानि षट्शास्त्राणि तथाऽऽययुः १५
 गङ्गाद्याः सरितस्तत्र पुष्करादि सरांसि च । क्षेत्राणि च दिशः सर्वा दण्ड-
 कादिवनानि च ॥ १६ ॥ नगादयो ययुस्तत्र देवगन्धर्वकिन्नरा इत्यादि ।
 अन्यत्र च पुराणेषु लेखोऽस्त्यत्र विस्तरभयान्न प्रलिख्यते किंवहुना । यथा ।
 नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीतमावर्त्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः आलिङ्गन-
 स्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहारा इति भागवतदशम-
 स्कन्धवाक्येन श्रीयमुनायाः प्रवाहरूपेण साक्षाद्रज्ज्योतिःशेने श्रीकृष्णलीलासुखं
 प्राप्ताया अपि पुनः द्वारकालीलाविनोदाय । कालिन्दीति समाख्याता
 वसामि यमुनाजले इति कालिन्दीनाममूर्त्त्या तपः कृत्वा पट्टमहिषीषु
 स्थितिर्दृश्यते तथैव सगुणब्रह्मद्रवस्माप्यन्या मूर्त्तिः द्रवाधिष्ठातृत्वेन प्रसिद्धा
 पुनर्वैकुण्ठादिषु । गङ्गा-सरस्वती-लक्ष्मीश्चेतास्तिष्ठः प्रियाहरैरित्यादिवाक्य-
 दर्शनात् तल्लीलाविनोदायैवेति । तथा कार्यविशेषेषु भक्तानां कल्याणाय दृढ-
 विश्वासाय च द्रवरूपेण लोकत्रये व्याप्तापि पुनश्च विष्णुलीलासाहाय्यार्थं विशेष-
 पतितोद्धारार्थं च विष्णुवदवताराणि सैव धत्ते भक्तादीनां शापानुग्रहकारि-
 णीति तत्त्वमवधेयम् । ननु तल्लीलाविनोदायैवेति यदुक्तं तन्न संघटते तस्यास्तद-
 न्यत्रापि रूपान्तरेण प्रवृत्तिदर्शनान् तथाहि वाल्मीकिविरचितश्रीगङ्गाष्टके ।
 मातः शैलमुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि इति वाक्येन पार्वतीसपत्नीत्वेन

शिवस्यापि भार्या गङ्गेति सूच्यते । तथाच कल्किपुराणे द्रौपदीशे । महा-
भिषट्पाङ्गना हिमगिरीशकूटस्तनी सफेनजलहासिनी सितमरालसञ्चारिणी
चललहरि-सत्करावरसंरोज-मालाधरारसोल्लसित-गामिनी जलधिकाभिनी
राजते । इति मुनिभिः कृतगङ्गास्तवीक्ष्यः एवं भागवतप्रथमस्कन्धे एकोनविंशे-
ऽध्याये परीक्षितचरित्रे । इति क्षराजाध्यवसाययुक्तः प्राचीनमूलेषु कुशेषु धीरः ।
उदङ्मुखोदक्षिणकूल आस्ते समुद्रपद्म्याः स्वसुतन्यस्त भार । इति वाक्येन
तथा तत्रैव नवमस्कन्धे विंशेऽध्याये । शलश्च शन्तनोरासीद्गङ्गायां भीष्म आत्म-
वानिति वाक्येन च समुद्रशन्तनुभार्यात्वेन निर्दिष्टेति कष्टपाश इति । अत्र
समाधानं न च वाल्मीकिकृतगङ्गाष्टकोक्त्या शिवभार्या गङ्गेति वाच्यम् ।
तत्र गङ्गातरङ्गाणां शिववामाङ्गस्थिताऽम्बा शृङ्गारचालनकर्तृत्वेन । सपत्न-
शब्दस्य शत्रुतापरत्वात् । अथच । सरसामस्मि सागर इति भगवदुक्त्या-
तद्विभूतित्वे सति गङ्गायाश्च तद्रूपत्वेन नदीरूपायास्तद्भार्यात्वेन ज्ञानिः एवं
च हरिवंशे विष्णुपर्वणि त्रिपञ्चाशत्तमेऽध्याये इन्द्रादिदेवचिरञ्जिसंवादे । भूयश्चैव
मया शतः समुद्रः सह गङ्गाया । सकारणां मतिं कृत्वा युष्माकं हितकाम्यया २३
यस्मात्त्वं राजतुल्येन वपुषा समुपस्थितः । गच्छात्सर्वमहीपालो राजैवत्वं
भविष्यसि ॥ २४ ॥ तत्रापि सहजां लीलां धारयन् स्वेन तेजसा । भविष्यसि
नृणां भर्ता भारतानां कुलोद्बहः ॥ २५ ॥ शान्तोऽसीति मयोक्तस्त्वं यञ्चा-
सितनुतां गतः । सुतनुर्यशसा लोके शन्तनुस्त्वं भविष्यसि ॥ २६ ॥ इयम-
प्यायितापाङ्गी गङ्गा सर्वाङ्गशोभना । रूपिणी च सरिच्छ्रेष्ठा तत्रत्वामुप-
यास्यति ॥ २७ ॥ इति ब्रह्मवाक्येन शन्तनोरपि समुद्रांशेनावतीर्णस्य भार्या
गङ्गांशरूपा जाता इत्यादि सर्वमनवद्यमिति विभायन्तु सुधिय इति शिवम् ।

इति श्रीनन्दकिशोरशास्त्रिसूनुकृते श्रीगङ्गातत्वसन्दर्भे

पञ्चमं प्रकरणं समाप्तम् ।

महिमा राजते यस्याः सदा प्रत्यक्षमेव हि । तथाप्यज्ञानपश्यन्ति वन्दे
तां सूर्यनिस्त्रगाम् ॥ १ ॥ अथ गङ्गाप्रतापानि प्रलिख्यन्ते समासतः ।
ततोऽन्तिमे कलौ यात्रा यथाक्रममुदीर्यते ॥ २ ॥ तत्र तावत्तु सहस्र-
तमेऽन्तिमे कलौ श्रीभागौरधीयात्रां वक्तुम् अधुना पूर्वोक्तश्रुतिसृतिपुराण-

वाक्यकदम्बेष्वपि नूनमविश्वसितानां केषाञ्चिदल्पमतीनां गङ्गाभक्तिप्रवर्त्तन-
पूर्वकमाकल्पमन्वास्थितिदृढनिश्चयाय श्रीजाङ्गवीजलासृते सदा विद्यमानानि
भूमण्डले प्रसिद्धानि लोकोत्तरचमत्कारकारकस्य प्रतापस्य विलक्षणानि
लक्षणानि प्रदर्शयन्ते संगृहीतेः कतिपयैः श्लोकैः । यथा । भूमण्डलस्य पानीया-
विशेषो जाङ्गवीजले धृते जले कृत्यऽभावः प्रथमं लक्षणं विदुः ॥ १ ॥ इति
तु सरितां वाऽन्यत्तुद्रप्रवाहप्रस्रवादीनां सङ्गमस्थलं विहायान्यत्र शुद्धे श्रीगङ्गा
एव बोध्यम् । एवमग्रेऽपि लिख्यमानेषु वाक्येषु व्यवस्था ज्ञेया । चिरं काचस्य
पात्रेषु धृता आपोऽस्त्विति वै । गाङ्गं जलं तु न तथा द्वितीयं लक्षणं विदुः ॥ २ ॥
कूपादिनीरसस्वादु भवत्येव चिरं धृतम् । गाङ्गं जलं तु न तथा यथा पूर्वं
तथा धृतम् ॥ ३ ॥ इति तृतीयं । कुगन्धितं धृतं नीरं चिरं कूपादिसौख्यम् ।
न तथा जाङ्गवीतोयं चतुर्थं लक्षणं त्विदम् ॥ ४ ॥ चिरशब्दोऽत्र बहुदिन-
स्थित्यपेक्षयाऽनुमीयते इति । वर्णान्तरं मलिनतां भवत्येव धृते जले । न
तथा भीषसू तोये पञ्चमं लक्षणं त्विदम् ॥ ५ ॥ धृते जले ह्यर्णनाभि जाला-
क्षतिनिभं मलम् । भवत्येव हि पात्रेषु न कचिज्जाङ्गवीजले ॥ ६ ॥ इति
षष्ठं ॥ तैलविन्दुनिभं लक्ष्म जायते सर्ववारिषु । स्थापितेषु चिरं पात्रे
जाङ्गव्यऽप्यु न कर्हिचित् ॥ ७ ॥ इति सप्तमं । गङ्गानीरप्रवाहस्य प्रकाशो
जायते निशि । कृष्णायां व्योम्नि मेघाब्जे नान्याऽपां स्वादिदर्शनम् ॥ ८ ॥ अयं
भावः कृष्णपञ्चरात्रौ यमले मेघाच्छादितेऽन्यकारणाऽऽदिव्येऽपि गङ्गाप्रवाहस्य
प्रकाशो भवति दर्शनं च । तथान्यनदीप्रवाहस्य न भवतीत्यष्टमं लक्षणम् ॥ ९ ॥
गङ्गाप्रवाहमर्थं तु शुक्लाभार्गाक्षतिर्निशि । दृश्यते साधुभिर्नैव परदाररतैः
खलैः ॥ १० ॥ कृते स्नाने तु गाङ्गेषु लोकांते पापिनोऽपि ताम् । कृष्णरात्रि
निशीथेऽपि गगने जलदाकुले ॥ ११ ॥ इति नवमं । जले वातादिदीपाज्वा-
लभावी जाङ्गवी भवे । स्रष्टुं भिषग्भिरपि वा आयुः शास्त्रे विलोकितम् १०
इति दशमं । अभावे ह्यनुपानस्य गङ्गाङ्गिर्दीयतेऽगदः । ददते तद्गुणं ताश्च
सुटमेतज्जगत्तये ॥ ११ ॥ इत्येकादशं । विधिना सेवनेनैव रोगशान्तिं कृदी-
षधम् । गङ्गातोयं तु सर्वत्र किमन्याऽगदसंशयैः ॥ १२ ॥ अत्र विधिसु पाक-
सिद्धिपानस्नानादिष्वपेक्ष्यते । अथ गाङ्गस्याऽगदत्वे आथर्वणीश्रुतिश्च हिमवतः
प्रस्रवन्ती सिन्धौ समहसङ्गमः । आपोऽहमहं तद्देवीर्हृदन् हृदयोतमेपज-

मिति । एतदर्थश्च । हिमवतः पर्वतात् प्रस्रवन्ती प्रस्रवन्त्याः प्राकट्यं कुर्वन्त्याः
यस्याः सिन्धौ समहसङ्गमः समुद्रेण साकं यस्याः सङ्गमोऽस्तीति भावः । सा
गङ्गा तत् सर्वशास्त्रेषु लोकेषु वा प्रसिद्धाः देवीः प्रकाशमानाः आपः अपः
जलानि मद्यं ददन् ददातु कीदृशा अपः हृद्योतमेषजं हृदयप्रकाशकौषधं
यद्वा हरति गदानि इति हृत् द्योतं प्रसिद्धमेषजमिति द्वादशमं लक्षणम् ।
हरिद्वारात्तु वायव्ये शुद्धे भागीरथाश्रमे । मौक्तिकामं पयो यच्च न स्यात्री-
लीनिभं क्वचित् ॥ १३ ॥ इति त्रयोदशम् । अन्यनद्यादिनौरस्य सङ्गमेन विव-
र्जिते । शुद्धे गङ्गाप्रवाहे तु शैवालं नैव जायते ॥ १४ ॥ इति चतुर्दशम् ।
तद्वदेव हि गाङ्गेये घूकोत्पत्तिर्न जायते । केचिदेतद्धि गृह्णन्ति शुद्धे भागी-
रथाश्रमे ॥ १५ ॥ इति पञ्चदशम् ॥ गङ्गास्नाने कृते पञ्चावर्त्तदो जायते यदि ।
तनौ दुर्गन्धितो न स्यादित्येवं गाङ्गजं महः ॥ १६ ॥ इति तु कृपादिजलेन
पुनः स्नानात्पूर्वमेव ज्ञेयं तथाच स्नाने विधिरपेक्ष्यते इति षोडशम् । गङ्गो-
द्गमस्थानजलं तुलायामपि तोलितम् । सुतप्तस्वर्णखण्डस्य पाततो नैति
हीनताम् ॥ १७ ॥ अत्रैवंविधिः गङ्गोत्तरीयं जलं तुलायां द्वित्रिपलमितं
संतोल्य शुद्धे पात्रे स्थापयेत् ततः सुवर्णमुद्रां वा सुवर्णाङ्गुलीयं वक्त्रौ सुसन्तप्य
पात्रस्थिते तस्मिन्नेव जले पातयेत् ततः स्वर्णमुद्राङ्गुलीयकं वा तु शीतलतां
याति किन्तु तज्जलमुन्मानितं न ज्ञासमेति । एतत्तु मथुरा प्राक् चतुः-
क्रोशस्थेरायुस्थे ग्रामे गुरुकुले विद्याध्ययनसमये श्रीमद्वैष्णवब्रह्मचारिभिः
श्रीहरिनारायणशर्मभिर्मद्गुरुभिरेव केनचिद् ब्राह्मणेनानीतं जलं विधिना
तप्तस्वर्णाङ्गुलीयकपातेन परीक्षितं मया दृष्टम् इति सप्तदशम् । दक्षिणग्रान्त-
देशेषु कास्बोजे जाङ्गलादिषु । भवत्यनन्तनौरस्य पात्रादुद्गमनं मखे ॥ १८ ॥
अत्र गङ्गायात्रा जलानयनविधेरावश्यकताऽस्ति अत्रेयं रीतिः । उक्तदेशेषु गङ्गा-
यज्ञः गङ्गोट इति तद्देशेषु स्यातः तत्रत्यैर्जनैः श्रीगङ्गायां स्नात्वा गृहं गत्वा
च क्रियते तत्र हवनादनु कस्मिंश्चित्कांस्यादिपात्रे सकाचपात्रं गङ्गाजलं स्थाप्य
मन्त्रैः प्राकृतैर्वा श्लोकैर्भागीरथीं सुवन्ति तदा तुष्टा जाङ्गवीकाचपात्राज्जलो-
द्गमनं करोतीति प्रसिद्धमेवैतदित्यष्टादशम् । तृपः शान्तिर्जले पीते भवत्येव
स्फुटं भुवि । गांगस्य पानमात्रे तु क्षुद्राभावः क्षणान्तरम् ॥ १९ ॥ इत्येकोन-
विंशकम् । पीते गङ्गोद्भवे तोये शान्ताबुद्धिस्तु तत्क्षणे । सत्त्वोद्गमश्चित्तशुद्धि-

भवतीति महोद्भुतम् ॥ २० ॥ इति विंशतिः । पीते गांगे तदैवाशु श्रीहरि-
स्मरणं हृदि । स्वाभाविकं प्रजायेतेत्येवं गंगोद्भवं महः ॥ २१ ॥ इत्येकविंशः ।
श्रीकौयुमीय शाखोक्तजाङ्गवीमन्त्रपाठतः । गङ्गातरङ्गोच्छलनं जायते हर्ष-
कारकम् ॥ २१ ॥ तटस्थपाठकस्यान्ति गाङ्गप्रसरणं तथा । अन्यत्रापि हि पाठेन
पात्रादुद्भजनं त्वपाम् ॥ २२ ॥ इति द्वाविंशतिः । चातुर्थिकज्वरान्मुक्तो भवतीति
स्फुटं भुवि ॥ गङ्गाप्रवाहश्चातेति कथमेव न चाद्भुतम् ॥ २१ ॥ अपेक्ष्यते विधिस्त्वऽत्र
गायत्रीजपपूर्वकः । पूर्वं ज्वरागमनतो गाङ्गमध्यस्थितिस्तथा ॥ २३ ॥ इति
त्रयोविंशतिः । प्रत्यहं गाङ्गपानेन सुखगन्धं विनश्यति । तदीषधिमृते
नृणामित्येवं गाङ्गलक्षणम् ॥ २४ ॥ इति चतुर्विंशतिः । अत्रापि विधेराव-
श्यकता, गङ्गाजलेन रचिता पाकसिद्धिर्विलक्षणा । सुखादूरीगरहिता भव-
तीति महो न किम् ॥ २५ ॥ इति पञ्चविंशतिः । प्रेतादिजनिता बाधा
गङ्गास्नानेन नश्यति । ते च प्रीता भवन्तीति यत्र तत्र प्रदृश्यते ॥ २६ ॥ इति
षड्विंशतिः । अत्रापि विधेराग्रह एवमेवाग्रेऽपि बोध्यम् । कृते स्नाने तदै-
विषदामादो जायते तनोः । अधियासनोपमेयः स्यात्तदलौकिकभावतः ॥ २७ ॥
इति सप्तविंशतिः । जित्यं गाङ्गस्य पानेन तथा तद्रेणुलेपनात् । तनोः
कुष्टामयो नूनं क्षीयते नात्र संशयः ॥ २८ ॥ इत्यष्टाविंशतिः । कृपायापः
कमियुता जाङ्गवीजलपाततः । शुध्यन्ति चैतद्गङ्गायास्तेजोलोकोत्तरं न
किम् ॥ २९ ॥ इत्येकोनविंशत् । अत्र नास्ति विधेराग्रहः ॥ गाङ्गेर्गङ्गा-
रजः पिण्डं कृत्वा कण्ठे निबन्धनात् । पिशाची बाधयामुक्तो नितरां जायते
शिशुः ॥ ३० ॥ अत्र मृत्पिण्डकरणं विधिना स्नात्वा सप्रार्थनं सप्तम्यां रवे-
र्दिने । वा कुह्नां चन्द्रदिने मध्याह्ने श्रीविष्णुपदीपूजनानन्तरं विधीयते पुरुष-
सूक्तपाठं वा गङ्गासूक्तपाठं तदा कुर्यात् । इति त्रिंशत् । जन्मान्तरे ब्रह्म-
हत्याकरणात् कच्छपीगदः । जायते चोदरे नृणां गाङ्गपानाद्दिनश्यति ॥ ३१ ॥
इत्येकत्रिंशत् । तथा च खर्प्यरीरोगो नृणां कुक्षौ प्रजायते । गङ्गारजो
भक्षणेन दिग्दिनैः सोऽपि नश्यति ॥ ३२ ॥ रजोभक्षणमत्र प्रातः सायं च
शयनसमये पलाहमितं ज्ञेयम्, इति द्वात्रिंशत् । गङ्गाजलेन मृत्पिण्डं
विधाय स्थापयेद् बुधः । कालान्तरेऽप्यऽशनतो मुखे स्वादुसुगन्धकृत् ॥ ३३ ॥
इति त्रयस्त्रिंशत् । वृक्षेषु यत्र जायेत बन्धात्वं पुष्पबन्धनम् । तच्च नश्यति

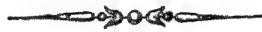
लाङ्गव्या जलसिञ्चनमात्रतः ॥ ३४ ॥ इति चतुस्त्रिंशत्* । किं बहुना इत्या-
द्यनन्तलक्षणप्रतापवत्याः श्रीभागीरथ्याः पयसि यदा उक्तलक्षणाऽभावः
स्यात्तदेव भागीरथ्याः स्वधामगमनम् बोध्यमिति सिद्धान्तः । एतत्त्वेवान्तिमे
कली भविष्यतीत्यपि च विशेषतो दर्शयितुं श्रीगङ्गायात्राकालक्रमः पूर्वत-
एव प्रलिख्यते । अन्तिमे कली तावदेव सार्द्धद्विसहस्राब्दमिति काले सति
ग्रामाधिष्ठातृदेवतागमन आपन्ने ग्रामेषु विग्रहादिविघ्नाः द्रव्यन्ते ततो
ग्रामदेवतानां स्वगम्यपदयात्रा भविष्यति ततश्च ग्रामादिलुण्ठनं वज्रिदाहश्च
पुनः पुनः प्रवर्त्यते तथा जारौप्रभृतिरोगोत्पत्तिश्चेति तस्मिन्नेव काले काशीस्थ-
शिवलिङ्गानां पाताल*यात्रा भविष्यति तदुक्तं सनत्कुमारसंहितोक्तकार्तिक-
माहात्म्ये द्वाविंशेऽध्याये प्राप्ते कलियुगे घोरे श्रीचाचारविवर्जिते तत्त्वसंख्ये-
र्वर्षशतैर्गतैर्देवो महेश्वरः । वाराणसीस्थलिङ्गानि पाताले स हि नेष्यति ॥ ३६ ॥
इति ततश्च काशीलोपकालपर्यन्तं लिङ्गचिह्नमात्रमेव यत्र तत्र स्थास्यति
एवं च सति चतुःसहस्राब्दमिति काले पर्वतस्थादेवताः स्वगम्यस्थलं गमि-
ष्यन्ति इत्यपि तत्रैवोक्तं, चतुर्वर्षसहस्रेषु शैलस्थाः सर्वदेवताः । सत्तां त्यक्त्वा
गमिष्यन्ति मानसञ्च सरोवरम् ॥ ४२ ॥ इति एवं सति पञ्चसहस्राब्दमिति
काले आपन्ने सति भुवि दिव्यन्तरिक्षे च भूकम्पादयस्त्रिविधा उत्पाता
भविष्यन्ति तस्मिन्नेव काले वाराणसी अन्तर्द्धानं गमिष्यति एतदपि तत्रै-
वोक्तं, ततो द्विगुणवर्षैस्तु गङ्गावाराणसी तथा । भविष्यति ह्यदृश्या सा
सत्वरन्तु सुनीश्वर ॥ ३७ ॥ ततो द्विगुणवर्षैरिति ग्रामदेवतायात्राकालाभि-
प्रायेणैवोक्तमिति ज्ञेयं ततश्च, अन्तर्हिता यदा काशी भविष्यति महामुनि ।
नाशः स्वास्तिलिङ्गचिह्नानां निःप्रभा सकला जनाः ॥ ३८ ॥ चतुर्दशेषु दुर्भिक्षं
महामारीसमुद्भवः । गोबध्नापि सर्वत्र मृत्तिकाभस्मसन्निभा ॥ ३९ ॥ तदैव
च । गङ्गाद्वारात्तु या धारापतेर्द्वागीरधाश्रमे । हरिद्वाराच्च वायव्ये नत्स्यालोपो
भविष्यति ॥ ४० ॥ अत्र प्राकृतनदीवत् श्रीगङ्गानाशो न बोध्यः किन्तु विष्णु-
वद्देकुण्डयात्रैवेति ज्ञेयम् उक्तञ्च ब्रह्मवैवर्ते कृष्णजम्बखण्डे कृष्णवाक्यं, स्वयं च
देवैर्वैकुण्डे वेष्टयित्वास्ति सन्ततम् । तस्या विनाशः प्रलये नास्त्येव हि यथा
मम इति । लोमशसंहितायान्तु, गङ्गायात्राकालस्तिथिवारात्मकोप्युक्तः ।

माघमासे सिते पक्षे द्वादश्यां भृगुवासरे । पञ्चपञ्चाशत्तमेऽन्दे गङ्गालोपो भवि-
ष्यति ॥ १ ॥ ततः परं नर्मदायामाहात्म्यं भविता भुवीति ॥ १ ॥ अन्तिमे
कलौ तदानीन्तनमकेशवर्षाभिप्रायेण पञ्चपञ्चाशत्तमेऽन्दे इत्युक्तम् । ये तु
इदानीं वैक्रमशक एव दिक्खसितास्तेऽविचारिणः उपहास्याः अत्र श्लोके वै
क्रमशकरूपस्य कथनाऽभावात् अन्यत्र च । शरैः पञ्चभिश्चाङ्गचन्द्रे मितान्दे
भृगौ माघमासे सिते द्वादशेऽङ्कि । भवेद्यामयुग्मे चतुर्थे च लग्ने यदा स्यात्तदा
देवनद्या विलोप इति । तस्मिन्नेव दिने गोवर्द्धनादीनां यात्रा च पुराणान्तरे
श्रूयते । माघमासे सिते पक्षे एकादश्यां भृगोर्दिने । श्रीमद्गीता च गायत्री-
गोवर्द्धनगिरिस्तथा ॥ १ ॥ गुरुगोविन्दभक्तिश्च तुलसीपूजनं तथा । शालि-
ग्रामः सामगानं गङ्गया सह नश्यति ॥ २ ॥ इति अत्र पूर्वयोर्वाक्ययोर्द्वादशी-
ग्रहणं कृतम् अपरवाक्ये एकादशीग्रहणं न विरुध्यते वैष्णवानां मते पूर्व-
विज्ञाभयादेकादशीव्रतस्य द्वादशीपरत्वं वर्त्ततेऽस्तज्जावेनात्रापि एकादशी-
ग्रहेण द्वादशीग्रहणमिति बोध्यम् । किञ्च यावद्भागीरथीगङ्गा तावद्देवाः कलौ
युगे इति वाक्यात्तदानीमेव वेदा अपि ब्रह्मलोकं प्रयास्यन्ति तदानीं सर्वेषां
मुष्करादितीर्थानां यात्रापि सनत्कुमारसंहितायां कलेर्दशसहस्रान्ते इति
श्लोकाग्रिमे श्लोके निगदिता यावत्तिष्ठति गङ्गा च तावत्तीर्थानि सन्ति च । यदैवा-
ऽदृश्या गङ्गा स्यात् को वाऽस्मत्पापमाहरेत् ॥ २५ ॥ विचार्यैवं सुतीर्थानि गमि-
ष्यन्ति धरातलादिति एवं तदैव श्रीयमुंनायाः प्रतीचीसरस्वतीप्रभृतीनां गङ्गानां
यात्रा च भविष्यति उक्तञ्च पुराणेषु पाद्मादिषु । गङ्गा च यमुना चैव सरयूश्च
सरस्वती । शतभागा चन्द्रभागा रम्या सिन्धुर्महानदी ॥ १ ॥ सर्वास्ताः प्रलयं
यान्ति वर्जयित्वा तु कल्पगामिति । प्रणष्टद्वादशादित्ये प्रलये समुपस्थिते ।
सरितश्च लयं यान्तु गङ्गाद्याश्च सहस्रशः ॥ १ ॥ नर्मदे तिष्ठ देवि त्वं सप्तकल्पानु-
गामिनी इति तदानीन्तने कलावेव गङ्गायात्रामनुनर्मदाया एव माहात्म्य-
प्राधान्यम् अधुना तु सर्वतीर्थवत् स्वशक्त्यनुसारेण तस्या अपीति ज्ञातव्यं तथा
च गङ्गामनुसप्तकल्पपर्यन्तं नर्मदामाहात्म्यप्राधान्यनियमः सप्तकल्पानु-
गामिनीति वाक्येन सूच्यते, अथ तदानीं गङ्गायात्रासूचकलक्षणानि प्रद-
र्श्यन्ते सनत्कुमारसंहितायां भागीरथां गतायान्तु मर्कटीतनुसन्निभाः ।
भविष्यन्ति तदा कीटास्तोयं नीलीनिभं तथा ॥ ४१ ॥ इति अन्यत्र च श्रूयते

सूत्राकारास्तु क्रमयो भविष्यन्ति धृते जले । यदा यास्यति स्वं धाम गङ्गा
त्यक्त्वा महीतलम् ॥१॥ काचपात्रे धृतं तोयं क्रमशो ज्ञासमेष्यति । अस्वादु-
किञ्चित्कालिनं भविष्यति तदा तथा ॥ २ ॥ गङ्गीक्ष्मस्यानजलं तुलायामेव
तोलितम् । तप्तमुद्राप्रपातेन किञ्चिद्वायुमवाप्यति ॥३॥ किञ्च, ततो नदी-
प्रवाहस्तु किञ्चित्कालं घटिष्यते । ततः परं हि खातेन सहितः सोऽपि
नञ्च्यति ॥ ४ ॥ किम्बहुना दैनन्दिनप्रलयकालस्त्रिना मध्ये नास्ति भागी-
रथीयात्रेति शास्त्रसिद्धान्त इति शिवम् । अनेन मन्मुखीत्यत्र व्याख्यानैनाऽपि
तेन तु । जगदात्मा परम्ब्रह्म नीराकारं प्रसीदतु ॥ १ ॥ ऋष्यऽश्विनवभूवर्षे
वैक्रमे तीर्थनायके । माघ्यां पूर्णं तिथ्यामाषि । अदशि ब्रह्मवादिनाम् ॥ २ ॥
श्रीगङ्गायैव कृपया सन्दर्भोऽयं प्रकाशितः । निमित्तमात्रं व्याख्यानेऽत्रोऽप्यहं
हि कृतोऽश्वया ॥३॥ किञ्च, श्रीशारङ्गिष्वकुलाऽजहन्दतरणिः श्रीसासवेदार्थ-
विच्चासीच्छीहरिवंश इत्युत भुवि ख्यातिं गतः पण्डितः । तस्माद्वर्मधुरन्धरः
कविवरो दामोदराख्यो ह्यऽभूत्तत्पुत्रो भगवान् क्षितीन्द्रमुकुटेः संपूजितांग्रिः
कविः ॥४॥ तत्पुत्रोऽच्यराम उज्ज्वलगुणो मीमांसकस्तत्पुत्रो नास्मा देवमणिः
कवीन्द्रतिलकः सद्दीपिकाकारकः । तत्पुत्रः सुलहृषदेवमकरो वेदार्थनिष्ठापरः
काशीराम उवाच यः कविमुदे वेदस्तुतौ दर्पणम् ॥ ५ ॥ तत्पुत्रः कविरामदत्त
उदितो ज्योतिर्विदां भूषणस्तस्मान्नन्दकिशोर उत्तमयशा जातो मदीयः
पिता । दुर्गादत्त इमां पृथगमधिगतः सोऽहं तदङ्गाऽर्चको याचेऽस्मिन् यदि
किञ्चिद्गुणमधिकं तच्छोधयन्तूतमाः ॥६॥ निजं निरञ्जनं नित्यं निर्मलं निरुप-
द्रवम् । चतुर्वर्गचयं चेतुं चेतस्त्रितयचिद्भवम् ॥७॥

इति श्रीवृन्दावननिवासि द्विबेदिनन्दकिशोरशास्त्रिजकृते श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भे

षष्ठप्रकरणम् * समाप्तोऽयं सन्दर्भः ।



मत्पूर्वजानां मधुरीपसंख्ये रायाख्य आसीच्चिरतो निवासः ।

वृन्दावनेऽहन्तु वसामि तत्र सन्दर्भलब्धिर्भवतिच्छुकानाम् ॥ १ ॥

श्रीवृन्दावनवासि श्री नन्दकिशोर शास्त्रिजी के ज्येष्ठपुत्र दुर्गादत्त जीने गङ्गातत्त्वसंदर्भ नाम से जो ग्रन्थ किया है उस का संचेप करता हूँ । इस कलि के ५ हजार वर्ष के बाद गङ्गा न रहेगी । यह समझना ठीक नहीं है क्योंकि कलियुग में गङ्गा कहनेवाले शास्त्रवाक्य किसी कलि की संख्या नहीं कहते हैं इससे जिसमें प्रलय होगा वृद्ध अन्त्यका हजार वां कलि समझना सो बड़े विष्णुपुराण में लिखा है पृथ्वी गङ्गा से हीनअन्ति के कलियुग में होगी । सो यही ऋग्वेद के ७ अष्टक २ अध्याय १८ वर्ग २० वी ० परिशिष्ट श्रुति—और ऋग्वेद के ही ८ अष्टक ३ अ० ६ वर्ग की १ परिशिष्ट श्रुतियों से हमेशा गङ्गास्थिति भूमि पर है यह इस ग्रन्थ में सावित है विद्वान समझ लेंगे । और प्रायश्चित्त तत्व—ग्रन्थ में लिखा है । श्री गङ्गाजीने भगौरथ से प्रतिज्ञा की है जब तक भूमि पर तुलसी पूजो जायगी । और आकाश में वृहस्पति स्वर्ग में कल्पवृक्ष समुद्र में बड़वानल वसेंगे तब तक में तेरे इस रथचक्र के गर्त में वसुंगी ऐसे और भी संमोहन तत्त्व भारतदानधर्म वाङ्मयीनि रामायण ब्रह्माण्ड पुराण के वाक्यों से भूमि पर हमेशा गङ्गाका रहना सूचित है । वे वाक्य इस ग्रन्थ में लिख दिये हैं—और दूसरे प्रकार से भी समझना चाहिये जो अब कलियुग के इस सन्ध्यांश में ही गङ्गा जाती तो कलियुग में पदार्थ चतुष्टय देनेवाली गङ्गा की पुराण क्यों कहते—सो वाक्य शिवपुराण नारदीय स्कन्द काशी-खण्ड मत्स्यपु० भारत ब्रह्माण्ड आदिके बहुत इस ग्रन्थमें लिख दिये हैं और गङ्गा विष्णु विभूति है यह भागवत और गीता में लिखा है तो जिस विभूतिका वास जहां है वह प्रलय तक उसी जगहस्थित है जैसे उच्चैः-श्रवा ऐरावत वज्र आदि स्वर्ग में यव अश्वत्थ आदि भूमि पर अनन्त आदि पाताल में तैसे गङ्गाका भी वासत्रिलोकी में होजैसे ३ लोक में स्थित है और बदरिकाश्रम से लेकर समुद्र तक जो गङ्गा तटके ही आश्रयसे तीर्थ है उनके साहाय्यों में उनकी नित्य और कलिपापनाशक कहा है तो फिर साफ गङ्गाका रहना सावित है और इस कलियुगके अन्त में कल्किभगवान् पृथ्वीके नारको दूर करके गङ्गातट पर तप करेंगे । यह कल्किपुराणके ३ अंश १८ अध्याय में स्पष्ट है फिर गङ्गायात्रा कहना महा अज्ञान है ।

इति श्रीगङ्गातत्व० १ प्रकरण संचेपः ॥ १ ॥

अब और भी यात्रासूचक पुराणवाक्योंका विरोध दूर करते हैं तहां प्रथम—कलेर्दश० इसी श्लोकसे अन्तिम कलियुग स्पष्ट करते हैं इस श्लोक में विष्णुशब्दसे सर्वव्यापीका बोध है सो सिंवाय प्रलयकी पृथ्वीको नहीं छोड़ सक्ता है यह भागवत ५ स्कन्ध २० अध्या० ४०।४१ में गद्यसे स्पष्ट है और सहस्रान्त कलि में प्रलयका नियम होने से जो कलिकी संख्या न कही तो भी कुछ हानि नहीं है और अब ग्राम देवताओं की यात्रा में प्रत्यक्ष ही विरोध है क्योंकि वे ग्रामदेवी बालदेवी बुढ़ियांमाई मसानी आदि नामोंसे प्रसिद्ध है भावानुसार फल भी देते हैं और हर एक छोटे बड़े यज्ञों में क्षेत्रपाल रूपसे पूजे जाते हैं इसीसे और कलियुग में यात्रा स्पष्ट कुलती है इसपर इस ग्रन्थमें बहुत लिखा है और ऐसे वाक्य ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणोंमें भी है उनका भी आशय इसी श्लोक रीतिसे अन्तके कलिपर है किसी कलिकी वे भी संख्या नहीं कहते हैं इसपर इस ग्रन्थमें सिद्धान्त बहुत लिखा है संस्कृतज्ञ देख लेवे और कसरतराय भी मानी जाती है इस से स्थूल बुद्धियोंको गड़गाते रहने में कसरतराय दिखानेको और भी स्कन्दकीदार-खण्ड भविष्य पुराण सामवेद श्रुति ऋग्वेद की श्रुति निरुक्त आदिकी प्रमाण लिख दिये हैं इस ग्रन्थमें देखलो । इति द्वितीय प्रकरणम् ॥ २ ॥

अब तिथिपत्र लिखित गङ्गायात्रा क्रमकारण कहते हैं । जैसे तिथिपत्रोंमें प्रथम ही धर्माधर्म विष्णु अवतार रूप ४ युगोंके लक्षण लिखे जाते हैं परन्तु विष्णु अवतार तो हर एक युगकी आवृत्तिमें हमेशा होते हैं नहीं किन्तु कल्प में १ वखत कोई २ दो वखत होते हैं परन्तु युगके केवल लक्षण अभिप्राय से लिखे जाते हैं ऐसे ही अन्तिम कलि में ही गङ्गायात्रा नियम होनेसे कलि लक्षणमात्र ही गङ्गायात्रा लेख ५००० वर्षमात्र समझना चाहिये और अब जो प्रतिवर्षमें आयु घटाते हैं यह ग्रन्थ परम्परा है क्योंकि जो इसी २८ में कलिमें गङ्गाजानेवाली होती तो और भी किसी वेदांग ज्योतिषके ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त आदि मकरन्द अहलाघव आदि में जरूर ही लेख होता सो है नहीं इस पर इस ग्रन्थमें बहुत सिद्धान्त लिखा है तिसके अन्त में स्थूल जाहिर बात यह है जब औरङ्गजीवनामक यवनेशने हमारे धर्मपर प्रतिमा-खण्डन आदि अत्याचारके समय श्रीगङ्गातट पर स्नानदान आदि धर्मको न

सहकर तिस समयमें प्रसिद्ध पण्डितोंको कैद कर लिया और वोला गंगा-
स्नान छोड़ दो या गंगाका कुछ प्रताप दिखाओ यह सुनके कारागारस्थ
पण्डितोंने एकान्तमें परस्पर सलाह करके ग्रन्थोंमेंसे कलिसंस्थान कहनेवाली
यात्रासूचक प्रमाण दिखाके उक्त स्त्रीच्छका वंचन किया और उक्त अत्या-
चारी उग्रदण्डीके कहनेसे भयग्रस्त पण्डित तिथिपत्रों में गंगा आयु प्रतिवर्ष
घटाने लगे और हिजरी सन तारीख सुहरम ईद आदि का भी लेख
लिखने लगे इसका निश्चय उक्त यवनेश राज्यसे पूर्वके पत्रोंको देखकर कर
लिया है और भी करलो—इति तृतीय*३ प्रकरणम् ।

अब चतुर्थ प्रकरण में गङ्गाजीके भूमिपर आनेका जो पुराणों में
विरोध है वह दूर किया जाता है—तहां प्रथम परस्पर वाक्योंका विरोध
कहते हैं—जैसे वाल्मीकिरामायण बालकाण्ड और विष्णुपुराण श्रीभाग-
वत नवमस्कन्ध आदि में भगीरथ राजा गङ्गाजीको लाये हैं यह प्रसिद्ध है
सो भगीरथ रामचन्द्रका पूर्वज है और रामचन्द्रजी या सात में वैवस्वत
मन्वन्तर के २४ में त्रेता में भये हैं या ते २४ में ही त्रेता में गङ्गाजी आई
यह निश्चित है—या में दूसरा विरोध यह है कि इस सप्तम मन्वन्तरके
सप्तम त्रेतामें बलि दैत्यके यज्ञमें वामनजीके चरणसे गङ्गाजी उत्पन्न हुई है।
ऐसे ही तीसरा विरोध यह है कि प्रथम मन्वन्तर स्वायम्भुव नाम है
उस में भी भूमिपर गङ्गाजीका होना सावित है सो ब्रह्मपुत्र दक्षके साथ
शिवजी से विरोध विश्वसृष्टान के जिस यज्ञ में हुआ है उसी यज्ञका
अवश्यक संज्ञक स्नान यज्ञकर्त्ताओंने गङ्गा में किया है भागवत चतुर्थ-
स्कन्ध में यह लिखा है और वह यज्ञ प्रथम मन्वन्तर में ही भया है
और खास मनु स्मृति में गङ्गास्नान झूठाके वास्ते प्रायश्चित्तविधि में मनु-
जीनेही लिखा है और भी प्रमाण संस्कृत में इस विषय के लिख दिये हैं
तो अब अन्योन्य वाक्यों में विरोधसे गङ्गाके आगमन में महान् सन्देह है
सो नहीं मानना चाहिये—क्योंकि जैसे श्रीविष्णु वाराह नृसिंह आदि
रूपसे जम्बूद्वीपके ८ खण्डन में उपास्यरूपसे सृष्टिकी आदि ते ही स्थित
है तथापि प्रभुने नारायण नृसिंह आदि अवतार भक्तारक्षा धर्म हृदि
आदि विशेष कारण से फिर लिये हैं—ऐसे ही त्रीगङ्गाजी की भी

व्यवस्था समझनी—तिसका खुलासा तात्पर्य यह है—जबसे सृष्टि भई है और जब तक सृष्टि रहैगी तबसे ही गङ्गाजी है और तदन्त तक रहैगी भी—तथापि कालान्तर में किसी कारणसे माहात्मा छिप जानेके सबबसे इस सप्तम वैवस्वत मन्वन्तर में वामन चरण द्वारा प्रकट होके माहात्मा बढ़ाया—तिसके बाद कपिलदेवजी ब्राह्मणावतारके क्रोधाग्निसे भस्म भये सगरपुत्रोंके तारणार्थ वामन ब्राह्मणका चरणोदक चाहिये क्योंकि ब्राह्मणके शापसे मरा ब्राह्मणानुग्रहसे ही तरता है इस स्मृतिशास्त्र वाक्यसिद्धान्तको जतानेके लिये—भगीरथपर प्रसन्न होके भागीरथी दूसरी धारासे प्रकट होके देवप्रयाग में अपने नित्यरूप अलकनन्दा में मिलके सगरपुत्रोंको तार दिया । इस रीतिसे उक्त शास्त्रवाक्यों में कुछ विरोध नहीं है । इस विषय में प्रमाण संस्कृत में लिख दिये हैं—अतएव गङ्गाजीके आनेके विषय में और अब प्रलय तक रहने में कुछ सन्देह न करना चाहिये । यदि कोई सन्देह करे कि केदारखण्ड में लिखा है कि कलियुगके दूसरे चरण में वासुकीनागके लोक में जानेका गङ्गाजीने ही वासुकीको वर दिया है तो जरूर ही उस काल में गङ्गामाहात्मा यहांसे जाता रहेगा । यह भी विचार ठीक नहीं है क्योंकि वासुकीको मूर्तिदर्शन देनेका वर दिया है इस विषयके भी ब्रह्मपुराण आदिके प्रमाण संस्कृतमें इस ग्रन्थमध्य लिखे हैं । इति गङ्गातत्त्वसन्दर्भभाषासंचेपे चतुर्थप्रकरणम् ॥ ४-॥

अब पञ्चम प्रकरण में श्रीगङ्गाजीके स्वरूपका निर्णय कहते हैं—अब कहीं २ शास्त्रों में श्रीगङ्गाजीको सगुण ब्रह्म ही द्रवित हो गंगारूप है यह लिखा है और उसी जलाकारकी शक्ति चतुर्भुजी मकरवाहना लिखी है सो ये दोनों किस कारणसे हुए । यदि कही भक्त कल्याणार्थ हुए तो उस ब्रह्मके स्मरण नामोच्चारण आदिसे ही भक्तरक्षा हो सकती है । इस सन्देहको दूर करते हैं । यथा—जैसे निर्गुण ब्रह्म अपनीही इच्छासे सगुण भया तैसेही स्वेच्छासे निर्विकार जलाकार है । सो भक्त, उसे केवल संसार में अध्यात्म आदि तापोंसे तपोंके तापशान्त्वर्थ ही मानते हैं । सो स्कन्दपुराण में शिव पार्वतीसंवाद से स्पष्ट है और भी प्रमाण भारतके इस ग्रन्थ में लिखे हैं और भक्तेच्छासे भी ब्रह्मको जलाकार होना ब्रह्मवैवर्त्त प्रकृतिखण्ड के १०

अध्याय में स्पष्ट है । रासमण्डल में शिवजीके गानसे श्रीराधाक्षण जलरूप रूप हो गये यह देवीभागवत में भी लिखा है—ऐसेही कहीं २ यह भी लेख है श्रीनारदजीके गानसे भी जलरूप श्रीक्षण गोलोक में भये हैं वह कल्पमेदपर है । विरोध नहीं है अथवा एकही कल्प में दोनों बात घट सकती हैं जैसे प्रलय बिना भी इस मन्वन्तर में मार्कण्डेय मुनिको प्रभुने प्रलय दिखाय दी है तैसे यहां भी विरोध नहीं है । अब चतुर्भुजी मूर्ति होनेका कारण कहते हैं—जैसे कल्पाधिकारि देवताओंके १ मुख्यरूप और दूसरा रूप विशेष कार्यसाधक ईश्वर इच्छासे होते हैं यथा—सूर्य चन्द्रमा आकाश में नित्य मूर्तिसे भ्रमण करते हैं तथापि विशेष कार्यार्थ कक्षप अत्रिके ग्रह में प्रकट होके सूर्यवंश, चन्द्रवंश चलाये हैं सो पुराणों में प्रसिद्ध हैं । तैसे यहां भी समझ लेना चाहिये इस विषय पर इस ग्रन्थ में बहुत प्रमाण द्वारा सिद्धान्त लिख दिया है विद्वान समझ लेंगे या श्रीरों को समझाय देंगे । इति पञ्चमप्रकरणम् ॥ ५ ॥

अब इस प्रकरणमें श्रीगङ्गाजीके प्रत्यक्ष प्रतीप लक्षण कहते हैं, जो कि श्रीगङ्गाजल में मौजूद हैं ।

१ प्रथम चिरकाल भी धरे गङ्गाजलमें कीड़ा नहीं पड़ते हैं १

यह और नीचे लिखे लक्षण अन्य नदी आदिके मिलाप स्थानसे भिन्न गङ्गाजलमें समझने चाहिये ।

२ सीसीमें धरा गङ्गाजल और जलकी रीतिसे स्वतः घटता नहीं है ।

३ चिरकाल धरा भी गङ्गाजल अन्य जलवत् खादुहीन नहीं होता है ।

४ और जलवत् धरा हुआ गङ्गाजलमें दुर्गन्ध नहीं उठता है ।

५ और धरे हुए जलमें रंग पलट जाना और कुछ मलिनता होजाती है सो गङ्गाजल में नहीं होती है ।

६ चिरकाल धरे और जल में ऊपर मकरीका सा जाला पड़ जाता है सो गङ्गाजल में नहीं पड़ता है ।

७ और धरेजलके ऊपर तेलकी सी बूंद पड़ जाती है, सो गङ्गाजल में नहीं पड़ती है ।

८ अंधेरी राति में मेघयुक्त आकाश होने पर भी दूरसे श्रीगङ्गाजीकी धाराका दर्शन होता है ।

- ८ पर्वके दिन और भी कभी २ वीच धारा में सपेद दूधकी सी धारा न्यारी मालूम होती है, परन्तु परस्त्रीगामोश्रीको नहीं दिखती हैं किन्तु गङ्गास्नानके बाद उनको भी उस धाराका दर्शन होता है ।
- १० अन्य जलवत् श्रीगङ्गाजल में वात आदि दोष नहीं है और जो किसी२ को वादीसा मालूम पड़ता है । सो रोगोंकी उखारके बाहर निकालता है । यदि सेवन ही किये चला जाय तो मनुष्यको शुद्ध निरोग कर देता है ।
- ११ औषधिके अनुपानके अभाव में गङ्गाजलसे औषधि दी जाती है । तब गङ्गा जलही उक्त अनुपानका गुण दे देता है ।
- १२ यदि कोई सर्वदा गङ्गाजलसे ही स्नान भोजन पानका नियम करे तो जीवन पर्यन्त रोग देह में नहीं होता है ।
- १३ भागीरथके आयुष्म में जल मोतीके सदृश ही रहता है नीला कभी नहीं पड़ता ।
- १४ श्रीगङ्गाजी में शिवार नहीं होती है ।
- १५ तथा घोवाजीव भी नहीं होते हैं ।
- १६ गङ्गाजलके स्नान करनेके बाद पसीना आने पर पसीना में वास नहीं होती हैं परन्तु विधिसे स्नान करे ।
- १७ गंगोत्तरीके जलकू तोलके उसमें गरम करके मौहर छोड़नेसे भी जलका वजन नहीं घटता है ।
- १८ जांगल (जैपुर) आदि देशोंमें गङ्गायन्त्रमें सीसीसे गंगाजल उमगता है ।
- १९ गंगाजल पीनेसे प्यासके साथ क्षुधा भी निवृत्त थोड़ी देर होजाती है और जलसे नहीं होती किन्तु क्षुधा और लगती है ।
- २० गंगाजल पानसे शान्तबुद्धि सत्वगुणकी प्रकटता कीमल हृदय चक्षु-मात्र हीजाता है यदि विधिसे सेवेगा तो उक्त गुण हमेशा रहेंगे ।
- २१ गंगाजलके आचमनसे ही उस समय स्वतः हरिस्मरण होजाता है ।
- २२ किनारेपर बैठके गङ्गासूक्तके पाठकरतेसे स्वतः गंगाजल उकलता है ।
- २३ विधिसे गंगास्नान करनेसे चातुर्थक ज्वर जाता रहता है ।
- २४ विधिसे हमेशा गंगाजल पीनेसे सुखगम्भीरोग जाता रहता है ।

- २५ गंगाजलसे रची पाकसामग्री ज्यादा स्वाद निरोग होती है ।
 २६ हमेशा अमावास्या आदि पर्वमें गंगास्नान नियमसे प्रेतबाधा दूर होजाती है और कहीं २ प्रेत भी प्रसन्न होकर गंगास्नान मागत हैं ।
 २७ गंगास्नान करनेसे उस समय देहमें सूक्ष्म सुगन्ध निकलती है और जलस्नान से देहमें कुछ दुर्गन्ध निकलती है ।
 २८ गंगाजल स्नान पान भोजन पाक नियमसे और गंगाजलसे गंगारज स्नानके देह में लेप करनेसे कुष्ठरोग दूर होजाता है ।
 २९ कूपजल में कौड़े परजाने पर गंगाजल थोड़ा उसमें छोड़ने से कौड़ा जाते रहते हैं ।
 ३० बिधिसे बनाकर गंगारजकी गोली कण्ठमें बांधनेसे बच्चोंका श्मशान पसली सूखारोग दूर होजाते है ।
 ३१ कच्छपी (ककुई) रोग गंगाजलपानके नियमसे पेटमेंही शान्त होता है ।
 ३२ खर्परी (खपरिया) रोग भी सिर्फ गंगारज के खाने से ही १० दिन में शान्त होजाता है ।
 ३३ गंगाजल में स्नानके मट्टीका गोला कालान्तर में खानेसे खादु सुगन्धि देता है ।
 ३४ गंगाजलके सौच देनेसे वृद्धोंका बन्ध्यारोग जाता है ।

इत्यादि और भी अनन्त लक्षण है ये सब उक्त लक्षण प्रलयकाल के थोड़ेसे दिन पहले अन्तके कलियुग में गंगायात्रा होजाने पर जलमें न रहेंगे उसकाल में गंगाके यात्राका क्रम दिखाते हैं यथा—

अन्त कलिमें २॥ हजारवर्षान्तमें ग्रामदेवता चले जायेंगे तब काशीस्थ शिवलिङ्गकी सत्ता जाती रहेंगी । ४ हजारवर्षान्त में पर्वतस्थ देवता स्वर्गम्यपदको जायेंगे और पांच हजारवर्ष बाद काशीका लोप होजायगा और समस्त भूमिकी सृष्टिका भस्मतुल्य होजायगी तब श्रीगंगाजी बैकुण्ठ पधारेंगी—यात्रामुहूर्त लोमश संज्ञिता आदि में लिखा है उस कालका जो शकेश होगा उस के ५५ में संवत् के माघशुक्ल द्वादशी शुक्रवार मध्याह्न मेघलग्नका है इसी मुहूर्त में श्रीगोवर्द्धन परवत गीताजी गायत्री ईश्वर गुरुभक्ति तुलसी पूजा शालग्राम सामवेद गान पृथ्वीसे चले जायेंगे—तब ही सब तीर्थ भी यमुनादिक पुण्य नदी भी चली जायगी सिर्फ प्रलयतक उस समय खाली नर्मदा रहि जायगी । उसी समयमें गङ्गा की शङ्खधारा के जलमें कौड़ा पड़ने लगेंगे उक्त लक्षण एक भी न मालूम पड़ेगा इससे अब भ्रम दूर करके निरन्तर पतितप्रावनीका स्नान पूजा आदिकरौ शुभम् ।

श्रीदुर्गादत्तानुजरात्रालालकृतः श्रीगङ्गातत्त्वसन्दर्भ भाषासंक्षेपः समाप्तः ।

शुद्धिपत्रम् ।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्टि	पंक्ति
जन्म	जन्म ...	४	२३
साहचर्यत्वाच्च	साहचर्याच्च	५	१३
स्मष्ट	स्मष्ट ...	५	२१
चतुर्युग	चतुर्युग ...	६	१०
सूर्यानरु	सूर्यानूरु ...	६	२८
गङ्गा	गङ्गात्वं ...	७	२६
लल्ललक्षणवती	लक्षणवती ...	७	२६
स्वर्परी	स्वर्परी ...	८	२१
भ्रमन्तः	भ्रमन्तः ...	१२	२८
विंशतिमे	विंशतितमे ...	२४	५
सनत्कुमार	सनत्कुमार ...	१५	२
संसेवयेत्	सेवयेत् ...	१६	२८
सुगुण	सगुण ...	२१	८
त्मकमेवेति	त्मकमेवेति ...	२३	१५
ऽधिष्ठातृ	ऽधिष्ठातृ ...	३१	६

विज्ञापन ।

विदित है कि यह ग्रन्थ डिरागाजिखापुर निवासि श्रीयुत गिरिधारीलाल जी के पुत्र बालमुकुन्द अडोवालकीकाठपालने ग्रन्थकर्ता की आज्ञा लेकर विना मूल्य देने की कृपवाया है सो निम्न लिखित स्थानोंमें स्पष्ट अक्षरोंमें केवल पत्र द्वारा ठिकाना देनेसे मिल सकेगा और ग्रन्थकर्ता की आज्ञासे सब कोई कृप सक्ता है और कृपवाय सक्ता है ।

पुस्तक मिलने का ठिकाना ।

पण्डित श्रीदुर्गादत्तशर्मा
अठखम्भा हन्दावन
जिला मथुरा ।

बालमुकुन्द कम्पनी
नई पवैयापट्टी नम्बर ५१
कलकत्ता ।

अमरकोषनामावली
भाषाअर्थसहित

अर्थात् अकारादिकेक्रमसेहकारपर्यंत
परिउत चक्रपाणिसेकन्दमास्टरनामिल

स्कूल

इलाहाबाद

ने

बाबू रामसहायसाहबहेडकिलार्कदफ्तर

साहबइन्स्पेक्टरबहादुरमदारीसहहेलखराड

कीसहायतासे

और

बाबू जवाहरलालसाहबहेडकिलार्कदफ्तर

साहबइन्स्पेक्टरबहादुरमदारीसइलाहाबादकी

सम्मतिसेपाठकऔरविद्यार्थियोंकेअर्थबनाई

पहलीबार १००० जिल्दों (एकपुस्तककामोल ॥२॥)

मतबअचशमेफैजमेरठमेंछापीगई

सङ्केत इस पुस्तक के ये हैं

पुल्लिंग	=	(पु)
स्त्रीलिंग	=	(स)
नपुंसकलिंग	=	(न)
पुल्लिंगास्त्रीलिंग	=	(पस)
पुल्लिंगनपुंसकलिंग	=	(पन)
पुल्लिंगास्त्रीलिंगनपुंसक		
लिंगजोतीनोंलिंगोंमें है	=	(त्रि) वा (३)
अव्यय	=	(अ)
बहुवचन	=	(बहु०)

इस पुस्तक के बनाने का परिश्रम बाबू रामसाहय साहव और
बाबू जवाहरलाल साहव को ३ भाग वेच दिया गया है

प्रकट हो कि

यह पुस्तक केवल अमरसिंह कृत अमरकोष का भाषा है
और किसी दूसरे कोष के नामों का भाषा नहीं है

श्रीगणेशायनमः

अ	चक्र-व्यवहार	अक्षौहिणी(स) १०००
अंश(३०) भाग	अक्षत(३०) गोलैच	नीकिनी संख्या
अंशु(३०) किरण	अक्षदर्शक(न) न्या	अरं वड(३०) सब
अंशुक(न) वस्त्र	याधशि. पंच	अरवात(३०) सरोवर
अंशुमती(स) सालपरी	अक्षदेवी(३) ज्वारी	अखिल(३०) सब
अंशुभक्ता(स) केला	अक्षर(न) मोक्षादि	अग(३) ब्रह्म
अंस(३०) कन्धा	अक्षरचंचु(३) लेखक	अगद(३) ओषध
अंसल(३०) बलवान्	अक्षरचक्र(३) लेखक	अगदंकार(३) वैद्य
अंहति(स) दान	अक्षरसंस्थान(न) लिखा	अगम(३) ब्रह्म
अंहस्(न) पाप, वेग	अक्षवती(स) जुआ	अगरी(स) विडंल्लक्ष
अंहिति(स) दान	अक्षायकीलक(३)	अगस्त्य(३) मुनि
अंहि(३) चरणा, पदा	गाढीकाकुलावा	अगाध(३) अत्यंतगहरा
अ (अ) अभाव	अक्षाति(स) असहन	अगार(न) मन्दिर
अकरिणा(३) शाप	अक्षि(न) आरव	अगुरु(न) सीसें ब्रह्म
अकूपार(३) समुद्र	अक्षिकूटक(न) हाथी	अग्रायी(स) अग्रिकी प्रिया
अकृष्णकर्मा(३) पुण्या	केनेत्रेकागोलक	अग्नि(३) आग
अक्ष(३०) १६ भागा	अक्षिगत(३) वैकेयेम्य	अग्निकर्ण(३) आगकन
अक्ष(न) तोलविशेष	अक्षिव(न) समुद्रनेन	अग्निचित(३) अग्निका
इंद्रिय-सौंकर	अक्षीव(३) सहजना	सञ्चयकरनेवाला
अक्ष(३) बहेड़ा, रींछ	अक्षीव(न) समुद्रनेन	अग्निज्वाला(स) आगला
पांसा-प्रसन्न-स्फटिक	अक्षुर(३) तालमरवाना	अग्निभू(३) स्वामिकैर्तिक
जुआखिलेनेकांग	अक्षोड(३) पिलुआरुस	अग्निमेध(३) आगिका

अग्निमुखी(स)भिलावा	अघमर्षणा(३)सर्वपाप	अंगारवल्लरी(स)
अग्निशिख(न)केसर	नाशन मन्त्र	कंजाकामेद
अग्निशिखा(स)कलहा	अध्या(स)गाय	अंगारवल्ली(स)भां
रीढस-हार्लैंऔषध	अंक(९)चिह्न-कलंक	अंगारशकटी(स)अंगीठ
अग्नीध्र(९)ऋत्विज	अंकु(९)मृगभेद	अंगीकार(९)स्वीकार
अन्युत्पात(९)धूमकेतु	अंकुर(९)अंरबुआ	अंगीकृत(३)अंगीकार
अग्र(३)मुख्य	अंकुश(९न)आंकुश	किया
अग्र(न)पुर-अधि	अंकोट(९)चिलगोजा	अंगुलि(स)तेलभेद
क-ऊपर	अंक्य(९)मृदंगाभेद	अंगुलिमुद्रा(स)
अग्रज(९)जेठाभाई	अंगा(न)वेदंगा-शरीर	मुहरकीअंगूठी
अग्रजन्मा(९)ब्राह्मण	अंगा(अ)संवोधनार्थक	अंगुली(स)अंगुली
अग्रतःसर(९)अगुआ	अंगद(९न)बाजूबंद	अंगुलीयक(९न)
अग्रतस्(अ)आगा	अंगन(९)आंगन	अंगूठी-मुंदरी
अग्रमांस(न)कलेजा	अंगना(स)उत्तरदिग्ग	अंगुष्ठ(९)अंगूठा
अग्रिमंथ(९)अराणी	जकील्ली-सुनेत्रास्त्री	अंधि(९)चरणा
अग्रिय(९)जेठाभाई	अंगविशेष(९)नाँचवि-	अंधिवल्लिका(स)
अग्रिय(३)मुख्य	शेष	सिंहपुच्छीऔषध
अग्नेदिधिषु(९)देवार	अंगसंसार(९)कुंकुमा-	अगुरु(९न)अगुरु
बिवाहीस्त्रीकुटुम्बिनी	दिसेअंगसंस्कार	कालावा अंगार
कापति	अंगहार(९)नाचविशेष	अचंडी(स)सीधीतौ
अग्नेसर(९)अगुआ	अंगार(९न)अंगार	अचल(९)पहाड़
अघ(न)पाप-दुःख-	अंगारक(९)मंगल	अचला(स)पृथ्वी
व्यसन	अंगारधानिका(स)अंगीठी	अच्युत(९)विष्णु

अर्चि(स)आगज्वाला	अजिनपत्रा(स)चि-	तावाचक-तत्त्वार्थक
अर्चि(सन)प्रकाश	मगादरजीव	अज्कटा(स)आँक्ला
अर्चित(३)पूजाकिया	अजिनयोनि(७)	अरनि(स)धनुषका
अच्युताग्रज(७) व-	मृग-हिरण	किनारा किनारा
लदेव	अजिर(न)आँगन-	अरनी(स)धनुषका
अच्छ(३)निर्मल	विषय-कोष	अरवी(स)वन, जंगल
अच्छभद्र(७)रीछ	अजिह्म(३)सीधा	अरुष(७)अडूसा
अज(७)विषाणवा	अजिह्मग(७)वाण	अरा(स)फिरना
हरवा वकरा	अज्जुका(स)नान्च	अर्या(स)जाना
अजगंधिका(स) व-	करनेकीवेष्या	अरास्या(स)जाना
नतुलसीदृक्षभेद	अज्ज(३)मूढ	अरु(७)अरारी
अजगर(७)सर्प	अज्ञान(न)अविद्या	अराक(३)अधम
अजगव(न)शिवध	अंजित(३)पूजा	अराव्य(३)छोटेना-
अजन्य(न)उत्पात	अंजन(७)पश्चिम	जकारवेत
अजमोदा(स)अजवा	दिशाकादिगज	अरिग(७)गाछी
यनओषध	अंजनकेशी(स)	काकुलावा
अजमृंगी(स)मेठा	पर्वारुक्षविशेष	अरिमा(स)अष्ट
अजस्र(न)लगातार	अजना(स)उत्तरदि-	सिद्धियोंमें १ सिद्धि
अजा(स)बकरी	गजकीस्त्री	अरिण्य(३)अतिथोड
अजाजी(स)जीरा	अंजनावती(स)ई-	अराउ(७)संज्ञान्
अजाजीव(७)गड़ीया	शानदिशाकीस्त्री	सूक्ष्म, थोड़ा
अजित(७)विषाण	अंजलि(७)उंजली	अंड(न)अंडा
अजिन(न)मृगचर्म	अंजसा(अ)शीघ्र-	अंडकोष(७)फोता

अंडज (१) मच्छी, पक्षी	अतिमुक्ता (१) माधवील	अत्यल्प (३) अतिथोडा
अंडज (३) सर्पादि जीव	अतिमुक्तक (१) तेंदुआ	अत्याहित (न) महाभय
अतर (१) पर्वतसे जल	अतिरिक्त (३) अधिक	बड़े साहसका कर्म
गिरने का स्थान	अतिविद्या (स) अतीस	अथवा अथो (अ)
अलस्पृश (३) अथाह	अतिवेल (न) अतिशय	प्रथा-बहुत-मंगल
असी (स) अलसी	अतिशक्तिता (स) अति	अंतर-आरंभ
अति (अ) प्रकर्ष-लंघ-पराक्रम		अदभ (३) अधिक
न. अति. पूजन	अतिशय (१) बहुत	अदर्शन (न) लोप
अतिक्रम (१) निडर-	अतिसर्जन् (न) अतिदा	अदितिनंदन (१) देवता
वीरकी यात्रा	अतिसारकी (३) बहुत	अदृष्ट (३) अन्धा
अतिचर (स) कपिला	हगनेवाला	अदृष्ट (न) अदृष्टफल
पद्माक	अतिशेभन (३) अष्ट	अदृष्टि (स) देहादेवना
अतिच्छत्र (१) जलवृण	अतींद्रिय (३) अप्रत्यक्ष	अद्वा (अ) तत्त्वार्थक
अतिच्छत्रा (स) सौंफ	अतीव (अ) अतिशय	अद्भुत (१) रसविशे-
अतिजवरा (१) शीघ्र	अत्यन्तकोपन (त्रि)	अ-आश्चर्य
चलनेवाला	अतिक्रोधी	अद्भर (३) खवय्या
अतिथि (१) पाहुना	अत्यंतीन (१) वांवार	अद्वा (अ) आज
अतिथिसपर्या (स)	चलनेवाला	अद्भि (१) पहंड-
मनुष्ययज्ञ, महायज्ञ	अत्यय (१) मृत्यु-अ-	अद्भ-सूर्य
अतिनु (३) अतिपैराक	तिक्रम-कष्ट-दोष-	अद्भयवादी (१)
अतिपंथा (१) अक्का मार्ग	दंड	जिनु बां बुध
अतिपात (१) अतिक्रम	अत्यर्थ (न) अतिशय	अधम (३) निरुद्ध
अतिमात्र (न) बहुत	अत्यल्प (३) अतिथोडा	न्यून-निंदित

अधमरी(३) ऋणी	अधीन(३) आधीनमात्र	अध्वर्यु(५) ययुर्वेद
अधर(५) होठ-नीचे	अधीर(३) व्याकुल	वेत्ता-ययुर्वेदज्ञ
काहोठ-हीन	अधीश्वर(५) महाराजा	अनक्षर(न) अवाच्य
अधोरेद्युस्(अ) पूर्वदि	अधुना(अ) अब	अनंता(५) कामदेव
अधिकर्हि(३) भोरेरे	अधृष्ट(३) सलज्ज	अनच्छ(३) गंधाजल
अधिकांग(न) घोड़े	अधोशुक(न) धोती	अनडुह(५) बैल
कीकमरपट्टी	अधोक्षज(५) विष्णु	अनंत(न) आकाश
अधिकार(५) व्यवस्था	अधोभुवन(न) पाताल	नागराजा
स्थापक	अधोमुख(३) नीचा	अनंत(३) विनासीमा
अधिकृत(५) अधिका-	मुखकरनेवाला	विष्णु-शेष-नाग
अधिक्षिप्त(३) निंदित	अध्वक्ष(५) अधिकारी	अनंता(स) श्वही-ज
अधित्यका(स) पहा-	अध्वक्ष(३) प्रत्यक्ष-	वासा-श्यामलता-
डकेऊपरकीधरती	नियुक्त	हार्लो-दूब
अधिप(५) स्वामी	अध्ववसाय(५) ऊसाह	अनन्यज(५) कामदेव
अधिभू(५) पति	अध्यापक(५) पढ़ानेवाला	अनन्यवृत्ति(३) एका-
अधिरोहिणी(स) का-	अध्याहार(५) तर्क	प्रचित
ठकीसीछी	अध्यूढा(स) सौति	अनय(५) व्यसन-
अधिवासन(न) गंध	अध्येषणा(स) विनय	अशुभदेव-विपत्ति
मालादिकाधाररा	अध्वगा(५) पथिक	अनर्थक(न) अर्थशून्य
अधिविन्ना(स) सौति	अध्वनीन(५) पथिक	अनल(५) आठा
अधिप्रयणी(स) चूल्ही	अध्वनं(५) मार्ग	अनवधानता(स)
अधिष्ठान(न) पहिया	अध्वन्या(५) पथिक	भ्रम-भूल
पर-प्रभाव-चढ़ाई	अध्वर(५) यज्ञ	अन्वत(न) लगातार

अनवराध्य(३) मुख्य	अनीकिनी(स) सेना	अनुत्तर(३) नीचा
अनवाअनस(न) गा	चमकीसेनासंख्यासे	दाक्षिण-श्रेष्ठ
अनाकुल(३) स्वस्थ	उगुणीसेनारवेनवाला	अनुपद(३) पीछे(अ)
अनाकू(अ) थोड़ा	अनु(अ) पीछे, सादृश्य	अनुपदीना(स) मोजा
अनागतार्तवा(स)	अनुक(३) कामी	अनुपमा(स) नैर्ऋत
कुरुवड़ीकन्या	अनुकंपा(स) दया	तदिग्गजकीस्त्री
अनादर(५) अपमान	अनुकर्ष(५) रथकेनीचे	अनुप्लव(५) सहायक
अनामय(न) रोगहीन	काकाठ	अनुबंध(५) दोषका
अनामिका(स) अंगुली	अनुकल्प(५) प्रथम	उत्पादन-प्रकृति-प्र-
अनायासकृत(३) सह	विधिसेपीछेकीविधि	त्यय-आगम-विन-
जकियागया	अनुकामीन(५) स्वतं	स्वर-मातापिताआ-
अनारत(न) लगातार	प्रचलनेवाला	दिकी-आज्ञाकारीपुत्र
अनार्य्यत्ति(५) चिर-	अनुकार(५) नकलकरना	प्रकरणसेप्राप्तश्रेष्ठ
यताश्रौषधविशेष	अनुक्रम(५) पीरपाटी	अनुबोध(५) गतगं-
अनाहत(३) नयावस्त्र	अनुक्रोश(५) दया	धकोगंधयुतकरना
अनिमिष(५) देवता, म-	अनुग(अ३) पीछे	अनुभव(५) साक्षात्
छली पुत्र	अनुग्रह(५) अंगीकार	अनुभाव(५) अर्थप्र-
अनिरुद्ध(५) प्रद्युम्नके-	अनुचर(५) सहायक	काशक-प्रकाश-प्र-
अनिल(५) ४८ गंगादे	अनुज(५) छोटाभाई	भाव-ज्ञानकानिश्चय
वता-पवन-	अनुजीवी(५) सेवक	अनुमति(स) कलासे
अनिश(न) लगातार	अनुतर्षण(न) मद्यपीना	हीन पूर्णातिथि
अनीक(५) सेना, समर	अनुताप(५) पछतावा	अनुयोग(५) प्रश्न
अनीकस्था(५) रक्षक	अनुत्तमा(३) मुख्य	अनुरोध(५) अनुकूल

अनुलाप(५)बारवारक हना	अंतर(न)अवकाश अवधि-परिधान-अं	सकाअधिकारी अंतर्वर्त्ती(स)गर्भिणी
अनुवर्त्तन(न)अपुक्कल	तरित-भेद-तादर्थ्य-	अंतर्वर्त्ति(३)शास्त्री
अनुवाक(५)वेदांग	द्विद्-आत्मीय-वि-	अंतावसायि(५)नाऊ
अनुशय(५)चिरकाल	ना-बाहिर-अवसर-	अंतिक(३)पास
कौबेर-पक्षतावा	मध्य-अंतराला-सा	अंतिकतम(३)अति-
अनुष्णा(५)मंद	दृश्य	पास-अतिनिकट
अनुहार(५)नकलकरना	अंतरा(अ)मध्य	अनिका(स)बड़ीव-
अनूक(न)शील,वन्श	अंतराय(५)विघ्न	हिन-चूल्ही
अनूचान(५)अंगस-	अंतराल(न)बीच	अंतिकाश्रय(५)पास
हितवेदपाठी	अंतरिक्ष(न)आकाश	काआश्रय
अनूक(त्रि)सब	अंतरीप(५)जलका	अंतेवासी(५)शिष्य
अनूप(३)जलयुक्तदेश	मध्यतट	विद्यार्थी-चांडाल
अनूरु(५)सूर्यकासारथी	अंतरीय(न)धोतीआदि	अन्य(३)अंत-छोर
अनृजु(त्रि)कपटी	अंतरे(अ)मध्य	अंत्र(न)आंत
अनृत(न)रूठ-रेवती	अंतरेण(अ)वर्जनार्थक	अंदुक(५)लोहेकीहा-
अनेकप(५)हाथी	मध्य-बीच	थीकीबेड़ी
अनेहस(५)समय	अंतर्गत(३)भूला	अंदूक(५)हाथीकीसां
अनोकह(५)वृक्ष	अंतर्हर(न)खिड़का	अंध(३)अंधा,अंधेरा
अंतःपुर(न)रनिबास	अंतर्द्ध(स)छापना	अंधकरिप(५)शिव
अन्त(५)मृत्यु	अंतर्द्धि(५)छांकना	अंधकार(५)अंधेरा
अन्त(५)छोर	अंतर्मना(३)उदास	अंधतमस(न)बहुत-
अंतक(५)यमराज	अंतवशिक(५)रनवा	अंधेरा

अंधसू(न)भात	अपघा(स)नदी	अपदेश(१७)छल-
अंधु(१७)कुआ	अपघन(१७)अंध	पद-चिह्नकाहेतु
अब्ज(न)भात-	अपचय(१७)छीनलेना	अपधस्ता(३)धिकारी
वायागया	अपचायित(३)पूजा-	अपभ्रंश(१७)अपशब्द
अन्य(३)मिन्न	कियागया	अपभ्रंस(१७)अपशब्द
अन्यतर(३)मिन्न	अपचित(३)पूजागया	अपयान(न)भाताना
अन्यतेद्युः(अ)	अपचिता(स)छूय-	अपरस्पर(३)बारबार
परसोंकादिन	पूजादि	रचलना
अन्येद्युः(अ)कल	अपचिति(स)पूजा	अपराजिता(स)विद्या-
कादिन	अपरान्तर(३)मिला	क्रांता-पटसन
अन्वक्ष(अ)पीछे	अपटु(३)रोगी	अपराद्धदृष्टत्क(१७)
अन्वक्र(३)पीछे	अपत्य(न)पुत्रकन्या	निशानसेचूका
अन्वय(१७)वंश	अपघ्ना(स)औरसेल-	अपराध(१७)पाप
अन्ववाय(१७)वंश	ज्जाकरना	अपराह(१७)दिनकाभाग
अन्वाहार्य(न)	अपत्रपिघाउ(३)ल	अपरेद्युः(अ)परसों
मासिकश्राद्धादि	अवंता	अपरणा(स)पार्वती
अन्विष्ट(३)छूटे	अपथ(न)कुमार्ग	अपलाप(१७)छिपाना
अन्वेधरा(स)अ	अपंधा(न)कुमार्ग	अपवर्ग(१७)मोक्ष
दुमेंत्राहाराभक्ति-	अपदंश(१७)मदिरापी	अपवर्जन(न)दान
धर्मादिकारवोजन	नैमंरुचिबढ़नेवालाप	अपवाद(१७)निंदा-
अन्वेधित(३)छूटे	दार्थ	आत्रा-
अपकासी(स)डरना	अपदिश(न)दिशोंक	अपवारणा(न)
अपक्रम(१७)भागान	मध्य-कोरा	छंपना

अपशब्द (१) अपमंश	पहिरेहुया	मेघ - बादल
अपष्टु (३) उलटा	अपूप (१) पुआ	अवभृमु (स) पूर्वदिग्ग
अपसद (१) नीच	अप्याति (१) वरुण	जकीस्त्री
अपसर्प (१) हलकारा	अप्यित (न) अग्नि	अवसराया (न) अवध्य
अपसव्य (३) उलटा - दक्षिणांश	अप्रकांड (१) वृक्षकाष्ठ	अभय (न) उशीर - खस
अपस्कर (१) लछा	अप्रगुण (३) आकुल	अभया (स) हर्ड - हर्
अपस्नात (३) मृतकस्त्रायी	अप्रत्यक्ष (३) नसाम्हने	अभाषण (न) चुप
अपहार (१) छीनलेमा	अप्रहत (३) जंगल	अभिक (३) कामी
अपांठा (१) आंकाकि	अप्रधान (न) अमुख्य	अभिरव्या (स) नाम -
नारा - तिलक - अंगहीन	अप्राय (३) अप्रधान	शोभा - परमा
अपान (१) शरीरस्थप	अप्राय (१) देवजाति	अभियस्त (३) अपराधी
वन - गुहा	अप्राय (स) अपरा	अभियह (१) लड़ाई
अपमार्ग (१) चिरचिरा	अफल (३) अफलवृक्ष	पुकारना करना
अपांपति (१) समुद्र	अकड (न) अर्थशून्य	अभिग्रहण (न) चोरी
अपावत (३) स्वतंत्र	अवडंमुख (३) अप्रिय	अभिज्ञ (३) ज्ञाता
अपासन (न) मारा	काकहनेवाला	अभिधाति (१) शत्रु
अपि (अ) भी - निंदा -	अवला (स) स्त्री	अभिचार (१) हिंसा
समुच्चय - प्रश्न - शंका	अविक्रय (१) समुद्रफेन	अभिजन (१) वंश - कुल - जन्मभूमि
संभावना	अञ्ज (१) चन्द्रमा - शंख - कमल	अभिजात (३) कुली -
अपिगीरी (३) स्तुतिकिया	अब्जयोनि (१) ब्रह्मा	न - परिडत
अपिधान (न) छापना	अब्द (१) वर्ष	अमित (३) समीप
अपिनद्ध (३) किल्लमादि	अब्ज (न) आकाश	अमितः (अ) समीप

अलंकारिणी (३) अलं	अलंकारिणी (३) अलं	अलंकारिणी (३) अलं
कारकरनेवाला	अवकर (९) कूड़ाकरकट	अवतोका (९) पतितगर्भगी
अलंकर्मिणी (३) का-	अवकीर्णी (९) अहम् च	अवदंश (९) मद्यपीनेम
र्यकारी	र्यहीन हुन्ना	रुचिबढनेवाला भोजन
अलंकार (९) गहना	अवकृष्ट (३) निकाला	अवदत्त (९) उजला
अलंकृत (३) गहनेसे युक्त	अवकेशी (३) अफलरुद्ध	अवदात (३) सित, शुद्ध
अलंक्रिया (९) अंगार	अक्कय (९) मोल	पीला
अलैर्क (९) श्वेत आक	अकाणित (३) अपमा-	अवदान (९) सुकर्म
- पातालकुन्ता	नकिया	अवदाण (९) कसी-
अलस (९) मंद	अकृतात (३) जानमाया	अवदाह (९) उशीर
अलात (९) कोयला	अक्रीत (३) निंदित	अवदीर्णी (३) पिघला हुन्ना
अलाबू (९) लौकी	अपवाद	अवद्य (३) अधम
अलि (९) बीड़ी, भौरा	अवग्रह (९) अवर्षा	अवधि (९) सीमा, विल
अलिक (९) माथा	हाथीका माथा	अवधस्त (३) पिसा हुन्ना
अलिंजर (९) मटका	अवग्रह (९) अवर्षा	अवन (९) अघाया
अलिज (९) भौरा	अक्वृणित (३) पिसा	अवनत (३) झँधे मुरव
अलीक (९) अग्रिय मूँठ	अवज्ञा (९) अपमान	अवनाट (९) चिपटीना
अल्प (३) थोड़ा	अवज्ञात (३) अपमान	कवाला
अल्पतनु (९) छोटे तनुका	अवद्य (९) पृथ्वीकापोल	अवनाय (९) गिरना
अल्पमारि (९) चौराई	अवरीट (९) नकचपरा	अवनि (९) धरती
अल्पसास (९) कोटा	अवदु (९) घाँटी	अक्की (९) धरती
सरोवर	अवतंस (९) कर्णफूल	अवतिसेम (९) काँजी
अल्पिष्ट (३) बहुत थोड़ा	शिरोभूषण	अवन्ध्य (३) फलवान रुद्ध

अवधुत(७)घटांतस्तान	अवकयनी(स)बकेनी	अविग्न(७)करोँदा
अवभृष्ट(७)चपरीनाकका	गाय	अवित(३)रक्षित
अवम(३)अधम	अवष्टब्ध(३)निकट	अविद्या(स)अज्ञान
अवमत(३)अपमानकिया	अवसर(७)प्रसंगा	अक्कीत(३)अन्यधी
अवमर्द(७)मिटाना	अवसान(न)अंत	अविरत(न)लगातार
अवमानना(स)अपमान	अवसित(३)समाप्त-जा	अविलंबित(न)शीघ्र
अवमानित(३)अपमान-	नागया	अविस्पष्ट(न)अस्पष्ट
कियाहुआ	अवस्कर(७)विष्टा-	अवीचि(स)नरकभेद
अवयव(७)अंग	भग-लिंग	अवीर(स)विनापति
अवर(न)हार्थीकिपीछेकी	अवस्था(स)विशेषसम-	पुत्रकीस्त्री
जंघाकाभागा	अवहार(७)घड़ियाल	अवेक्षा(स)पदर्थेकी
अवस्ज(७)छोटाआई	अवहित्या(स)कपट	अब्द(७)मेघ-वर्ष
अवर्ति(स)निवृत्ति	अवेहलन(न)अपमान	अब्धि(७)समुद्र
अवरवरी(७)शूद्र	अवाक्(३)ठँगा	अब्धिकफ(७)समुद्रफेन
अवरीगा(३)धिकारकिया	अवाक्पुष्पी(स)सौफ	अव्यक्त(७)विषाड
अवरोध(७)रनिवास	अवाग्र(३)आँधेभुरव	अव्यक्तरसा(७)थोड़ालाल
अवरोह(७)वगदकीजरा	अवाची(स)दक्षिणदिश	अव्यंडा(स)कौंच
अवरी(७)निंदा	अवाध(३)व्याधिरहित	अव्यथा(स)हर्ड, प-
अवलग्न(पुन)शरीरका	अवाच्या(न)अवाक्	दाक-कपिला
अवला(स)जारी	अवार(पुन)इसपार	अव्यय(न)विकारहित
अवलगुज(७)बकुची	अवासस(३)नंगा	अव्यवहित(३)मिला
अवश्य(अ)निश्चय	अवि(स)रजस्वला-	अशनपणी(स)पटसन
अवश्याय(७)ठंड	शैल-मेघ-सूर्य	अशनाया(स)भरव

अशनायित (३) मूखा	अश्वकर्णिक (५) शाल	अविचारी
अशानि (५) वज्र	अश्वत्थ (५) पीपल	असार (५) सेनाका फैलाव
अशित (३) रत्नागया	अश्वमेधीय (५) अश्व	असार (३) निर्वल
अशिष्वी (स) विना	मेधयज्ञका घोड़ा	असि (५) तलवार
अकील्ली	अश्वा (स) घोड़ी	असिक्री (स) बूढ़ी नहो
अशेष (३) सब	अश्वारोह (५) घुड़चढ़ा	अश्व-आज्ञावर्तिनी-अश्व
अशोकरोहिणी (स) कुट्टी	अश्विनी (स) नक्षत्र	रत्नासंस्थिताल्ली
अशोक (५) अशोक	अश्विनीसुत (५) स्व	असित (५) काला
अश्वमर्मा (न) मरक	मर्कावैद्य	असिधावक (५) सिकली
तमरिण	अश्विन (५) स्वर्वाकावे	असिधेनुका (स) कुरी
अश्वमज (न) शिलाजी	अश्वीय (न) घोड़ोंका समूह	असिपुत्री (स) कुरी
अश्वमन् (५) पत्थर	अश्वधा (अ) अश्वकारका	असिहेति (५) मत्स्यधारक
अश्वमन्त (न) चूल्हा	अश्वडसीण (३) तीसरेसे	असु (५० व०) प्राण
अश्वमरी (स) मन्त्रक	नहीं जानाया- संगति	असुधासूत (न) प्राणी
अश्वमसार (५) लोहा	अश्वपद (५) सौना, चौ-	असुर (५) राक्षस
अश्वमन्त (न) लगातार	पड़- मकड़ी	असूक्ष्ण (न) अवज्ञा
अश्वि (स) तड़ादिकी	अश्वीवत (५) घुटना	असूया (स) निंदा
नैक	असह्यत (अ) वांवार	असूधरा (स) त्वचा
अश्वु (न) आँसू	असती (स) छिनार	असूक् (न) लोहू
अश्लील (न) ढीलाक-	असतीसुत (५) कुलटा	असेचनका (३) पद्मसुंदर
रना	कापुत्र	असैम्यस्वर (३) क्रूरवादी
अश्व (५) घोड़ा	असैन (५) विजयसार	अस्त (५) अस्ताचल
अश्वयुज (स) घोड़ी	असमीक्ष्यकारी (३)	पर्वत

अस्त(३) भेजा	अहंकारवत्(३) अभिमानि	हर्त-पितृ दिन
अस्तम्(अ) क्षिपना	अहन्(न) दिन	अहाय(अ) शीघ्रता
अस्ति(अ) होना	अहमहमिका(स) अभि	अप्रा
अस्तिष्क(न) भेजा	अहंश्रुविका(स) हमप-	आ(अ) अंगीकार
अस्तु(अ) होउ	हलेलडेगे	स्मरणा वाक्यस्मृति
अस्त्र(न) शस्त्र	अहम्मति(स) अज्ञा	आकम्पित(३) कंषा
अस्थि(न) हाड	अहर्षति(७) सूर्य	आकर(७) खानि
अस्थिर(३) चंचल	अहर्मुख(न) प्रात	आकर्ष(७) जुआ-
अस्तुटवाकू(३) जोस्य	अहस्कर(७) सूर्य	पांसा-चौपड़-आदि
एनवोले	अहह(अ) अद्भुत-वेद	आकल्प(७) अलं-
अस्मपथ(न) शिलाजी	अर्हिता(३) पूजा	कारकी शोभा
अस्त्र(न) लोहू आँसू	अहार्य(७) पहाड़	आकार(७) खान-
अस्त्रप (७) राक्षस	अहि(७) सर्प, रुद्रासुर	चेष्टित-संकेत-आ
अस्त्र(७) बाल, कोरा	अहिता(७) शत्रु	कृति
अस्तु(न) आँसू	अहिबुद्धिका(७) सर्प	आकारणमि(७) कपट
अस्वच्छंद(३) आधी	पकड़नेवाला	आकाक्षा(स) मनोरथ
अस्वप्ना(७) देवता	अहिभय(न) अपने	आकारणा(स) पुकारना
अस्वर(३) कूरवादी	सहायकसेभय	आकाश(७) अम्बर
अस्वाध्याय(७) वेद	अहिभुज(७) मोर-ग-	आकीर्ण(३) संकुल
भ्यासरीहित	रुड-नौला	आकुल(३) आकुल
अहंयु(३) अभिमानी	अहेरु(स) सतावरी	आक्रीड(७) राज
अहःपति(७) सूर्य	अहो(अ) विस्मय	क्रीड़ाकावाग
अहंकार(७) गर्व	अहोरात्र(७) न ३० मु	आक्रोड(स) भोद

आक्रोशन(न)गाली	आग्राधी(स)आमाकी	कीतेल-गाढीभर
आक्रन्द(७)अतिशब्द	प्रिया- ब्राह्मण	भार
रोया-रसक-दारुण,रा	आग्नीध्र(३)वराणकिया	आच्छादित(न)ढाँ
आक्षारण(स)(न)नि	आग्रह(७)अग्र	पना-वस्त्र
द्राकरना	आग्रहायणीक(७)	आच्छुरितक(न)वल
आक्षारित(३)अपवादी	आग्रहनकामहीना	सहितहाँस
आक्षीव(७)सहजना	आग्रहयणी(स)मृदा-	आजक(न)वकरोँ
आक्षेप(७)निंदा	शिरनक्षत्र	कासमूह
आक्षोटा(७)पित्तुआ	आड्-(अ)अल्प-सी	आजनेय(७)कु-
आक्षोदन(न)शिकार	मा-क्रियायोजक	लीनघोड़ा
आसंडल(७)इन्द्र	आंगिक(३)शरीरऔर	आजि(स)युद्ध-स
आरव(७)चूहा	मनकीचेष्टा	मभूमिभावा
आरुभुक्(७)विलार	आंगिरस(७)वृहस्पति	आजित्त(३)सीधा
आरवेद(७)शिकार	आचमन(न)आचम-	आजीव(७)आजी-
आरव्या(स)जामधेय	आचमा(७)आँड	विका-
आरव्यात(३)कहा	आचार्य(७)वेदकेमं-	आजू(स)भेजना
आरव्यायिका(३)कहानी	वोंकीव्याख्याकरनेवा	आज्ञा(स)आज्ञा
आरांतु(३)पाहुना	ला	आज्य(न)घी
आमास(न)अपराध-	आचार्या(स)वेदके	आटि(स)तीतर
आमा-पाप	मंत्रोक्तार्थकरनेवाली	आंडवर-युद्धकान
आमाम्(न)अपराध	आचार्याणी(स)आ-	गाड़ा-वाजेकाश-
आमार(न)घर	चार्यकीस्त्री	व्द-मत्तहाथियों
आग्र(स)स्वीकार	आचित(७)१०भार-	कीठार्जन

आडि(स) तीतर	रहित पुरुष	आद्य(७) पहिला
आढक(७) तोल है	आत्मगुणा(स) कौंच	आद्यमापक(७) ५
आढकी(स) अहर	आत्मघोष(७) काग	मुंजाकी तोल
आहू(७) धनी	आत्मज(७) पुत्र	आद्यून(३) भवमरा
आणवीन(३) अरगु	आत्मजा(स) पुत्री	आघार(७) बांध
धान्यकारेत	आत्मा(७) चैतन्यपुरुष	आह्वान(७) सिद्धांत
आतंक(७) रोग-ताप-	परिश्रम-धारण-बुद्धि	आधि(७) मनकाहु-
शंका	स्वभाव-ब्रह्म-देह	ख-बंधक-व्यसन
आतंवन(न) दूधमेंजा	आत्मभू(७) कर्मदेव-	चेत-पीडा-आश्रय
वनदेना-तृप्तिकरना के	ब्रह्मा	आधूत(३) कंचा
आततायी(३) मानेके योग्य	आत्मभरि(३) पेटार्थी	आधोरण(७) हाथी-
आतप(७) सूर्यकातेज	आथर्वणा(न) अथर्व-	वान-महावत
आतपत्र(न) छाता	रौंका समूह	आध्यान(न) स्मरण
आतर(७) उतराई	आदर्श(७) शीशा	आनक(७) बड़ानका
आत्रेयी(स) रजस्वला	आदि(७) प्रथम	उ-मेरी-पटह
आतायि(७) चील	आदिकारण(न) पूर्वहेतु	आनकडुंमुमि(७)
आतिथेय(३) अतिथि	आदितेय(७) देवता	वसुदेव
केनिमित्तकर्म	आदित्य(७) देवता, सूर्य	आनत(३) अघोमुख
आतिथ्य(३) अतिथि	हादश १२ गण देवता	आनंद(न) मृदंगादि
केनिमित्तकर्म	आदीनवा(७) क्लेश	बाजा
आतुर(३) रोगी	आहत ३ आदरयुत-५	आनन(न) मुरव
आतोद्य(न) बाजेका भेद	जित	आनंद(७) हर्य
आतगर्व(३) अहंकार-	आदेशु(७) यज्ञाध्यक्ष	आनंदयु(७) हर्य

अनंदन(९)कुशलानंद	नियमसेमिलनायाहो	आभारणा(न)गाहना
आवर्त(९)संग्राम-नां	आपान(न)मदिराकीस	आभार(स)शोभा
चनेकाघर-देशविशेष	भाविशेष	आभाषणा(स)प्रिय-
वाजनपद	आपीड(९)शिरकीमाला	बेलनेबला,मिष्टवादी
आनाय(९)जाल	आपीन(न)धन	आभास्वर(९)गाणदेकाधि
अनाय(९)आवा	आपूपिका(३)पुत्राआ-	आभीर(९)अहीर
आनाह(९)कुबड़ा	दि वमानेवाला	अभीरपल्ली(स)अ-
कब्जा	आपूपिका(न)पुत्रोंका	हीरोंकागांव
आनुपूर्वी(स)अनुक्रम	समूह	आभीरी(स)अहीरी
आंधसिका(३)सोइया	आप्त(३)विश्वासी	अभील(३)पीड़ा
आन्वीक्षिकी(स)न्याय	आप्य(३)जलविकार	आभोग(९)सवप-
आप(स)वे० जल	आप्रच्छन्न(न)कुशला-	दार्थसेपरिपूर्ण
आपका(न)अधपका	नंद	आपगांधि(न)अप-
आपगा(स)नदी	आप्रपद(न)लंबालहंघा	कमांसकीगांधि
आपणा(९)वाजार	आप्रपदीन(३)तथा	आमनस्य(न)पीड़ा
आपशीक(९)साहूकार	आप्तव(९)स्नान	आमिष(न)मांस
आपत्प्राप्त(३)विपत्ती	आप्ताव(९)स्नान	आमिष(९)ग्रहरा
आपदा(स)विपत्ति	आप्तवव्रती(९)वेदव्रत	करना
आपत्(स)विपत्ति	कोपूरकरगुरुकीआ	आमिषाशी(३)मां-
आपन्न(३)विपत्ती	ज्ञाकोपानेवाला	सखानेवाला
आपन्नसला(स)गर्भि-	आवन्ध(९)जोमेकीहसी	आमिक्षा(स)द-
णीस्त्री	आविद्ध(३)टेढ़ा,भेजा	भिद्धमिलाहुआ
आपमित्यक(न)जो	आविध(९)वर्मा	आमुक्ता(३)सनाही

आमोदा(७)हर्ष सुगंध	आरति(स)निवृत्ति	आलंभा(७)सारा
आमोदी(७)मुक्तासुगंध	आरात्र(अ)दूर समीप	आलय(७)घर
आम्(अ)अंगीकार	आराधन(न)साधन	आलबाल(न)थॉक्ला
आम्नाय(७)वेद उक्तोपदेश लाभ-संतोष		आलस्य(७)मंद
आम्न(७)आमकावृक्ष	आराप्ता(७)वाप्ता	आलान(७)रूँटा
आम्नातक(७)आवला	आरालिक(३)सोइया	आलाप(७)प्रियबोल
आम्नेडित(न)देतीनवार	आरव(७)शब्द	आलि(स)पुल
का कहना <u>नमान</u>	आरयव(७)शब्द	पंक्ति, सरवी
आयत(३)लम्बा, आधी	आरेवत(७)अमलत	आलिंग्य(७)मृदंगा
आयतन(न)यज्ञवेदी	आरेष्य(न)गोगरहित	आली(स)सरवी
आयति(स)आनेवाला	आरेह(७)वस्त्रादि	आलीढ(न)धनुष
समय-प्रभाव	कीलंवाई-ओएस्त्री	का-आशन
आयाम(७)वस्त्रकीलंवाई	कीकमरआदि	आलु(स)कंरवा
आयु(न)अवस्था	आरेहण(न)सीढ़ी	आलोक(७)दर्शन
आयुधिक(७)शस्त्रजीवी	आर्तवा(न)स्त्रीकाज	आलोकन(न)देखना
आयुधीय(७)शस्त्रजीवी	आर्तवी(स)रजस्वला	आवपन(न)वर्तन
आयुष्मान्(३)चिंजीवी	आर्द(३)गीला	आवर्त(७)मंवर
आयोधन(स)युद्ध	आर्द्रक(न)अदरक	आवलि(स)पंक्ति
आरकूट(७)पीतल	आर्य(७)श्रेष्ठ, सज्जन	आवसित(३)नाज-
आरवध(७)अमलतास	आर्यवर्त(७)देश	कांठेर
आस्नालक(न)कांजी	आर्यभ्य(७)स्वच्छंद	आवाप(७)थॉक्ला
आरम्भ(७)प्रथमारम्भ	चरिवैल	आवापक(७)पहुँची
आरा(स)शस्त्र	आल(न)हरताल	आवाल(७)थॉक्ला

आवास(३) नंगा	आप्पु(न) शीघ्र	कासमूह
आविल(३) गंधाजल	आप्पु(९स) साठी	आषाढ(९) महीना
आविस(अ) प्रकट	आप्पुग(९) पवन-	ब्रह्मचर्यकादंड
आवुक(९) पिता	वारा-वायु-	आसक्त(३) लीन
आवुत्ता(९) वहनेई	आशुशुद्धी(९) अष्टा	आसन(न) पीठा
आवृत्त(३) नदीआदि	आश्चर्य(न) अद्भुत	ठहरना-हाथीकाकंधा
सेधिराहुन्ना	आश्रम(पुन) ब्रह्मच	आसना(स) आसन
आवृत्त(स) अनुक्रम	रीआदिका स्थान	आसन(३) समीप
आवेकी(स) विधाय	आश्रय(९) आधीन	आसादित(३) पाया
आवेशन(न) शिल्पघर	आश्रयाण(९) अष्टा	आसार(९) मेघधार
आवेशिक(३) पाहुना	आश्रव(९) स्वीकार-	आसुरी(स) राई
आशंसिता(३) कहनेवाला	लेश	आसेचनक(३) बहु-
आशंप्पु(३) तथा	आश्रव(३) आज्ञाकारी	तमुंदर
आशम्(अ) आनंदार्थक	आश्रुत(३) अंगीकृत	आस(अ) कोप, पीड़ा
आश्रय(९) प्रयोजन	आश्रु(न) घोड़ेका स-	आस्कंदन(न) लड़ाई
आशर(९) रक्षस	मूह	आस्कंदित(न) घोड़ेकी
आशा(स) दिशा, बड़ी	काफल	गतिवाचाल
तृषणा	आश्वत्थ(न) पीपल	आश्वयुज(९) कुआर
आशितंवावीन(३) ज-	आश्विन(९) कुआर	आस्तराण(न) हा-
हंपहलेगी ओंनेवाया	आश्विनेय(९) स्तौवैद्य	थीकीमूल
आशी(स) हितकी चाह	आश्वीन(३) घोड़े	आस्था(स) सभा-
ना सूर्यकी दाढ़	का एक दिन का मार्ग	यत्न-प्रयत्न
आशीविष(९) सर्पमध्य	आश्वीय(न) घोड़े	आस्थान(न) सभा
		आस्थानी(स) सभा

निवास स्थान	हीलडेंगे	द्वार (७) जीव
आस्पद (न) स्थान	आहूय (७) नामधेय	द्वार (३) सिन्धु अन्ध
आस्फेदनी (स) वर्मा	आहूा (स) नामधेय	इति (अ) यह हेतु समा
आस्फोत (७) आक	आहूान (न) पुकारना	सि-प्रकरणा-प्रकर्षादि
आस्फोता (स) वेला	इ	इतिहा (अ) वापारिक-उ-
आस्य (न) मुख	इच्छा (स) मनोरथ	पदेश
आस्या (स) आसन	इष्ट (७) तात्कालिक	इतिहास (७) कथा
आसवा (७) अर्कीदि	इव	बत्तरी (स) दिखनारि
आहत (न) असंभावित	इसुगंधा (स) गोखुर	इदानीम् (अ)
आहतलक्षणा (३) गु-	तात्कालिक	अव-इसकाल
एसेप्रसिद्ध	इश्वाकु (स) कर्दवी	इसी समय और
आहव (७) प्याऊ	इड (३) कलनेवाला	अधुना
आहव (७) युद्ध	इडित (७) चिह्नित	इंदि (स) लक्ष्मी
आहवनीय (३) यज्ञकी	इंदी (स) गौंदी	इंदीव (स) लीलकमल
तीन-आमा	इच्छावती (स) धजा	इंदीवरी (स) शतावरी
आहार (७) खाना	इकेवाहनेवाली	इंड (७) चंद्रमा
आहव (७) प्याऊ	इज्जल (७) समुद्र	इंद्र (७) इंद्र, पूर्वादिशा
आहितुंडिक (७)	फल	कास्वामी
सांपकड़नेवाला	इज्याशील (७) वां	इंद्रदु (७) अर्जुनवृक्ष
आहेया (३) सर्पसंबंधी	वारयज्ञकालेवाला	इंद्रयव (३) इद्रजौ
आहो (अ) विकल्पार्थक	इहवा (७) सांड	इंद्रवास्तु (स) इद्राय
आहोपुरुषिका (स)	इडा (स) गौ-धत्ती	इंद्रसप्त (७) ग्रेयाही, सि
हमही पुरुष हैं वा हम	बाराही, बुधकीखी	मालू

इंद्राणी(स) इंद्रकी स्त्री	इष्ट(न) यत्कर्म	इशिता(७) स्वामी
इंद्रायुध(न) इंद्रधनुष	इष्टकापथ(न) उशीर	इश्वर(७) शिव, स्वामी
इंद्रारि(७) असुर	इष्टगंध(७) वड़ासुगंध	इश्वरी(स) पार्वती
इंद्रावस्त्र(७) विष्णु	इष्टार्थयुक्त(त्रि) इ	इषत्(अ) घोड़ा
इंद्रिय(न) गोचर, वीर्य	इष्टार्थमें युक्त	इषा(स) हलकाहल
इंद्रियार्थ(७) इंद्रिय	इष्टि(स) यज्ञ इत्यादि	इषिका(स) हाथीके
इंधन(न) ईंधन	इष्टास(७) धनुष	इष्टोक्त(स) मोलक, सलाइ
इध्म(न) ईंधन	ई खन	इहा(स) मनोरथ
इन(स) सूर्य राजा प्रभु	ईक्ष्वाण(न) आंवसेदे	ईहामत्ता(७) भेड़िया
इमा(७) हाथी	ईक्ष्वाणिका(स) भुभा	उक्त(३) कहा
इभ्य(७) हाथी-धनी	भुभजाननेवाली स्त्री	उक्ति(स) खोलना
इरम्मद्(७) मेघकी ज्योति	ईडिन(३) स्तुतिकिया	उष्मा(७) खैल
इरा(स) मंदिर-पृथ्वी-वा-	ईति(स) उपद्रवादि-	उष्माभद्र(७) खैल
रणी-जल	विदेश	उरवा(स) थालीवा
ईर्वाक(७-स) ककड़ी	ईरा(३) शून्य ऊसर	वदुआ
इला(स) गौ-धरती-वाणी	ईरिन(३) मेजा	उग्र(७) शिव के
उधस्त्री	इर्मान(न) घाव	इर्दस्त्री और स्त्रीसे
इल्बला(स) मृगशिरके-	ईर्घ्या(स) असहन	उत्पन्न
शिरपरकेतारे	इलिता(३) स्तुतिकिया	उग्रगंधा(स) वन
इव(अ) समतार्थक	ईली(स) खंडा-	अजवायनि
इष(७) कुआर	ईशा(७) शिव-ईशा-	उच्च(३) ऊंचा
इषु(७-स) वारण	नदिशका स्वामी	उच्चरा(स) मोथा
इषुधि(७-स) तरकस	ईशान(७) शिव	उच्चंड(३) शीघ्र

उच्चार (५) विष्टा	उक्त (३) मतवाला	उत्तरासंग (५) दुपट्टा
उक्कवत्त (३) श्लोकप्रकार	उक्तं (५) उभय	उत्तरान्ह (अ) आगेकादिन
उक्कसवा (५) इद्रकाधो	उत्कर (५) अन्नकादि	उत्तरिया (५) दुपट्टा
उक्कैय (५) उक्कैय	उत्कर्ष (५) बडाई	उत्तरेय (अ) आगेकादिन
उक्कैय (अ) उक्कैय	उत्कलिका (स) उभय	उत्तरेहि (अ) तथा
उक्कय (५) उक्कय	उत्कार (५) अन्नादि	उत्तान (३) थाह
उक्कय (५) तथा	कानिकालना	उत्तानशया (स) दूधपी-
उक्कित (३) उक्कित	उत्तमाश (५) कुररी	नेवालावच्चा
उक्कित - अभिमाजी-	उत्तमकर (वाली) देना	उत्तमान (न) पौरुष-मन्त्र
उक्कित (५) उक्कित	उत्तंस (५) कर्णफूल	उत्तमन्त - वैठहुआँका
उक्कित (न) मारा	उत्तस (५) कर्नीस्थान	उठना
उक्कित (५) उक्कित	उत्त (३) सूतकोविस्तार	उत्थित (३) उत्पन्न-व-
उक्कित (५) शिला	उत्त (अ) समुच्चय - वि	उत्थिवान् - लमाहुआ
उक्कितिलवा उक्कित	कल्प	उत्पनिता (३) उक्कितेनवाला
उक्कित (न) शिलावीनना	उत्तप्त (न) सूखामांस	उत्पत्तिषु (३) उक्कितेनवाला
उक्कित (५) मुनिर्योकाध	उत्त (३) मीला	उत्पत्ति (स) जन्म
उक्कित (स) नक्षत्र	उत्तम (३) मुख्य	उत्पल (न) फफूला-कूट
उक्कित (५) वेडा	उत्तमणी (३) धनवान्	उत्पलशारि (स) श्याम
उक्कित (न) उक्कित	उत्तमा (स) उत्तमस्त्री	उत्पल - बुचीसर
उत्त (३) विनाह-आवत्त	उत्तमांता (न) शिर	उत्पात (५) उपद्रव
उत्ताहो (अ) विकल्प	उत्तर (न) प्रतिवाक्य	उत्पुल्ल (३) फूलाहुआ
उत्त (३) प्रीतियुत	उत्तर (३) ऊपर-उत्तर	उत्सर्जन (न) दान
उत्त (न) तजओषध	उत्त	उत्सव (५) उत्सव - ऊ-

परकोउठाना-क्रोध	उदन्वा(५) समुद्र	उदुवरणी(सि) जयफल
इच्छा-उत्पत्ति-आनंद	उदपाना(५) कुआ	उदौवेल(न) ओरवली
दकम्बेग	उदय(५) उदयाचल	उद्धत(३) उलटाकिया
उत्सादन(न) उवदन	उदर(न) पेट	उद्गनीया(न) धुएव
उत्साह(५) मनकाबलना	उदर्क(५) आनेवाला स्त्र	
शक्ति	फल	उद्गाढ(न) अतिशय
उत्साहवर्द्धना(५) वीर	उद्वसित(न) घर	बहुत
उत्सुक(३) इष्टार्थयुक्त	उद्विषित(न) मठा-	उद्गात(५) सामवेदस्
उत्तरष्ट(३) त्यागा	जलमिलादधि	उद्गारा(५) डकार
उत्तेघ(५) वृक्षकी उँचा	उदना(५) शरीरस्थ	उद्गीथ(५) सामवेद
ई वेग-देह	पवन	उद्गीर्ण(३) उगाया
उद्गाह(५) डकार	उदार(३) सरलचित्त	उद्गाह(५) विवाह
उदक(न) जल	दाता-महान	उद्ग(५) अन्क
उदक्या(स) राजस्वला	उदासीना(५) शत्रु-	उद्वन(५) कष्टगलने
उदग्र(३) उँचा	मित्रराजाओंसे भिन्न	का आधार
उद्घ(५) शुभ	राजा	उद्घटन(न) रूढ़
उदव(अ) उत्तरदिशा-	उदाहारा(५) उदाहरण	उद्घाना(न) चूल्ही
उत्तरदेश-उत्तरकाल	उदित(३) बंधा-कहा	उद्घात(५) प्रथमारंभ
उदज(५) पशुओंकाल	उदीची(स) उत्तरदिशा	उद्घान(न) बंधन
कारना	उदीच्या(५) पश्चिमस-	उद्यत(३) हुल्पाया
उदधि(५) समुद्र	हितउत्तर	उद्दाल(न) लमेरा
उदन्त(५) वार्ता	उदीच्या(न) नेत्रवाला	उद्दाध(५) मत्ताना
उदन्त्या(स) प्यास	उदुवरा(५) गूलरी	उद्दर्म(५) ऊँसव

उद्भव (५) उत्सव	उद्देहा (५) विकल	उपक्रम (५) ज्ञानकर
उद्घात (५) निर्मदहायी	उन्दुरु (५) मूसा	आरंभकरना, उद्योग
उद्घात (३) उलटा किया	उन्नत (३) ऊंचा	उपायपूर्वक आरंभ-
उद्धार (५) व्याज	उन्नतानत (३) कुका	अपक्रोश (५) निंदा
उद्धृत (३) कूप आदि	हुआ ऊंचा	उपधात (३) अंगीकृत
सेनिकालागया	उन्नयवा उन्नाय	उपगहन (न) लिपटना
उद्भव (५) जन्म	(५) उठाना	उपग्रह (५) बंधुआ
उद्भिज (३) वृक्षादि	उन्नत (५) धतरा	उपग्राह्य (न) दहेजा
उद्भिज्ज (३) वृक्षादि	उन्नत (३) मतवाला	उपघ्न (५) पासका आ
उद्भिद (३) वृक्षादि	उन्नद (३) सिरी	श्रयवा आसरा
उद्भूतम (५) उद्देहा	उन्मदिष्ण (३) सिरी	उपवरित (३) सेवित
उद्यत (३) उकसाया	उन्मना (३) उदास	उपसाय्य (५) आभाधर
उद्यम (५) उद्यम	उन्मथ (५) मारा	उपचित (३) वढ़ा
उद्यान (न) राजकीडा	उन्माथ (५) फंदा	उपचित्रा (स) मूसरी
कावसा-वनभेद	उन्माद (५) भ्रम	उपजाप (५) भेदकरना
उद्युक्त (३) स्वेष्टकेलमा	उन्मादवत (३) सिरी	उपजोष (अ) आनंद
उद्योग (न) उत्साह	उपकंठ (३) समीप	उपज्ञा (स) प्रथमज्ञान
उद्ग (५) जलजीव	उपकारिका (स) डेरा	उपतप्ता (५) संताप
उद्गर्जन (न) उवटन	उपकार्या (स) डेरा	उपताप (५) रोग
उद्गन्त (३) उलटा किया	उपकुंचिका (स) डूला	उपत्यका (स) पर्वतके
उद्गासन (न) मारा	यची कालाजीरा	नीचेकी धरती
उद्वाह (५) विवाह	उपकुल्या (स) बड़ी पीप	उपदा (स) दहेज
उद्देहा (न) सुपरिफल	उपकूप (५) घ्याऊ	उपधा (स) मंत्री आदि

के कार्यको देर बना	उपलब्धि (स) बुद्धि	धान
उपधान (न) त किया	उपलंभ (१) लक्ष्य प्राप्त	उपसर्ग (स) उचि
उपधि (१) कुल	उपला (स) पत्थर, रेत	तसमयपरवैलके
उपनाह (१) वीणा का बंधन	उपवन (न) वन के पा-	पास जाने वाली गौ
उपनिधि (१) धरोहर	स का और वन	उपसर्ग (न) मंडल
उपनियद (स) धर्म, एकांत	उपवर्तन (न) देश	उपस्कर (१) मसाला
उपनिष्कार (न) पुरस्कर्ता	उपवर्ह (१) त किया	उपस्थ (१) भगलिंता
उपन्यास (१) आरम्भ	उपवस्त (न) चांद्राय	उपस्पर्श (१) आचमन
उपपत्ति (१) द्विजरा	रण दिव्रत	उपहार (न) दहेज
उपभृत् (स) स्त्रुवा का भेद	उपवास (१) तथा	उपहूर (न) निर्जन स्थान
उपभोग (१) उपभोग	उपविषा (स) अतीतान	समीप पास
उपमा (स) उपमा	उपवीत (न) दहेनेहा	उपानु (अ) एकान्त
उपमान (न) उपमा	थका जनेऊ	उपाकरण (न) वेदपठन
उपयमवा उपयाम (१)	उपशल्प (न) पड़ोस	उपाकृत (१) यज्ञपशु
विवाह	उपशाय (१) सोनेवाला	उपात्यय (१) अतिक्रम
उपरक्त (१) राहु से स्पर्श	उपश्रुत (१) अलीकृत	उपादान (न) लेना
ग्रस्त	उपसंव्यान (न) धोती	उपाधि (१) धर्मका
उपरक्त (३) कष्टित	उपसर्ग (न) धोवह	उपाधि (१) धर्मका
उपरक्षरा (न) पहरा	उपसंपन्न (३) साउ	उपाध्याय (१) पढ़ा
उपराग (१) ग्रहरा	र-भारगयापशु	निवाला
उपरा (१) विरति	उपसर (१) प्रयस्मान	उपाध्याय (स) पढ़ा
उपल (१) पत्थर	उपसर्ग (१) उत्पात	निवाली स्त्री
अलब्धार्थ (स) कहानी	उपसर्जना (न) अप्र	उपाध्यायानी (स)

पंडितकी स्त्री	उम्य (३) अलसीका	उरुवृक (९) अंड
उपाध्यायी (स) पढ़ाने	रेवत	उर्वरा (स) सवीन्न
वाली स्त्री, पंडितकी स्त्री	उमा (स) पार्वती	उत्तभूमि
उपानह (स) जूता	उमापति (९) शिव	उर्वशी (स) अप्सरा
उपाय (३) उपाय	उरः सूत्रिका (स) मो-	उर्वी (स) पृथ्वी
उपायचतुष्टय (न)	तियोंकीमाला	उलप (९) फैलीलता
सामादमरदंड ३ भेद	उरग (९) सर्प	उलक (९) घुबघू
उपायन (न) देहेज	उरग (९) मेड़ा	उलपी (९) मच्छली
उपावृत (३) घुड़लोदन	उरगाक्ष (९) पमार	उलरवल (न) ओरवली
उपासंगा (९) तरकस	उरुत्र (९) मेड़ा	उलरकलकने गुग्गुल
उपासन (न) सेवा, वाण	उरी (अ) विस्तार-	उल्का (स) तेजसंग्रह
लक्ष्मणासीरचना	अंगीकार किया गया	उल्लुक (न) कोयला
उपासित (३) सेवित	उरव्य (९) वनिया	उल्लाघ ३ रोमारहित
उपाहित (९) उल्कातण	उरुच्छद (९) कवच	उल्लोच (९) शामियाना
उपाहित (३) मिलाया	उरसिल (९) बड़ीछा	उल्लोल ९ हिलकोर
उपेंद्र (९) विष्णु	तीवाला	उल्लव (९) गमजाल
उपादिका (स) पोदीना	उरस (न) छाती	उल्लव (३) स्पष्ट
उपोद्घात (९) उदाहरण	उरस्य (९) स्वपुत्र	उशना (९) शुक्र
उपक्रष्ट (३) बीजवोकर	उरुत्तर (९) बड़ीछाती	उशीर (९) रवस
जुती हुई पृथ्वी	वाला	उषणा (स) बड़ीपीपरि
उभयेद्युस्वा उभयेद्युस्	उरु (३) बड़ा	उषी (९) अकल्याण
(अ) दोनोंदिन	उरुवृक (९) अंड अंड	उषर्वध (९) आग
उज (अ) प्रप्न	उरुवृक (९) तथा	उषस् (न) प्रात

उष (५) लेनीमट्टी	ऊम् (अ) जोधसेकथन	ऊध (५) लेनीमट्टी
उषा (अ) सवेरा	ऊरीकृत (३) मानागया	ऊषा (५) चतुर
उषापति (५) अनिरुद्ध	ऊरी (अ) विस्तार	ऊषाक (५) ग्रीष्मऋतु
उषित (३) चुराया जग	ऊरी (अ) अंगीकार	ऊषोपगम (५) तथा
उष्ट्र (५) ऊँट	ऊरीकृत (३) मानागया	ऊषा (न) मिर्च
उषा (५) ग्रीष्मऋतु	ऊरु (५) सौंथल	ऊषा (स) बड़ीपीपर
उषारश्मि (५) सूर्य	ऊरुस (न) दहानी	ऊषा (३) ऊसकीमूँमि
उषागम (न) गर्मी	ऊरुज (५) वनिया	ऊषवत् (३) तथा
उषाका (स) लक्ष्मी	ऊरुपर्व (५) घुटना	ऊह (५) तर्क
उषाणीष (५) पगड़ी-	ऊर्ज (५) कार्तिक	ऊट
मुकुट	ऊर्जस्विल (५) वली	ऊटव्य (न) धन
ऊषोपगम (५) गर्मी	ऊर्जस्वी (५) वली	ऊटस (न) नक्षत्र-रीस
ऊषक (५) गर्मी	ऊर्णवाम (५) मकड़ी	ऊर्ण-सरिवन
ऊष (५) गर्मी	ऊर्ण (स) ऊन-आ	ऊर्णधा (स) विधा
ऊस्त्र (५) किररा	ऊर्ण-नैर्नैकांतर	ऊर्णधिका (स)
ऊस्त्रा (स) गाय	ऊर्णयु (५) भेड़ा कंबल	ऊर्णवाफल
ऊ	ऊर्णक (५) मटंगा	ऊर्ण (स) वेदमेद
ऊरव्य (५) वनिया	ऊर्णजानु (५) ऊँची	ऊर्णीय (न) तवाकड़ी
ऊरव्य (३) पतासास	ऊर्णवाला	ऊर्णु (३) सीधा
ऊर्णकंठक (३) मंत्रआ-	ऊर्मि (स) लहर	ऊर्ण (न) उधारलेनां
दिमरसा कियवाया	ऊर्मिका (स) अंगूठी	ऊर्ण (न) सत्य, शिला
ऊन (३) सूतकाविन्तार	ऊर्मिमत् (३) टेढा	ऊर्णीया (स) धनकरना
ऊध (न) मलगौन्यादि	ऊर्णक (५) उल्लू	ऊर्णु (५) दोमास-

स्त्रीकास्त्र, वसंतादि	सपढ़नेवाला	एकायन(३) एकाग्रचित्त
ऋतुमती(स) एजस्वला	एकताना(३) एकचित्त	एकायनगत(३) तथा
ऋते(अ) वर्जनार्थक	एकतालपुतुल्यस्वर	एकावली(स) हाजो
ऋतिक(५) वरणकरने	एकदंत(५) गणेश	एकलङ्का हो
वाला-धनसेवाणीय	एकदा(अ) एकसमय	एकाष्टील(५) गुम्मा
ऋद्ध(३) नाजकाढेर	एकधुर(५) एकधुर	एकाष्टीला(५) पाठर
ऋद्धि(स) औषधी	कोलेजाने वालावैल	एड(५) वहर
ऋभु(५) देवता	एकधुसबह(५) तथा	एडक(५) भेड़ा
ऋभुक्षिन्(५) इंद्र	एकधुरीणा(५) तथा	एडगज(५) पमार
ऋष्य(५) हिरण	एकादी(स) मार्ग	एडमूक(३) बंग्लावहर
ऋषभ(५) गानेकास्त्र	एकपिंगा(५) कुंवर	एडक(न) पत्थर वा
ककड़ाभृंगी, वैल, अथ	एकयष्टिका(स) एक	हड्डि आदिकी भीति
के-अर्थमें	लङ्, काहार	एण(५) मृगभेद
ऋषि(५स) ऋषि	एकसर्ग(३) एकाग्रचित्ति	एत(५) घीला
ऋष्टि(५) तलवार	ते अनाकुल	एतर्हि(अ) अब
ऋष्यप्रोक्ता(स) कौंच	एकहायनी(स) एक	एध(५) ईधन
शतमूली	वर्षकी गायकी वखिया	एधस्(न) ईधन
ए	एकाकी(३) अकेला	एधा(स) वछना
एक(३) एक, अकेला,	एकाग्र(३) एकाग्रचित्त	एधित(३) बहुतवड़ा
मुख्य, भिन्न अन्य,	एकाग्र(३) तथा	एनस्(न) पाप
केवल,	एकांत(न) अतिशय	एंड(५) आंड अंड
एकक(३) अकेला	एकाब्दा(स) एकवर्ष	एलावा लुकने एलुआ
एकगुह(५) एकगुहकेपा	की वखिया	एलाविल(५) कुंवर

एलापर्णी(स) एयसेन	ऐवम(अ) वर्तमान	ओष्ट(७) होठ
एवम्(अव) इस्प्रकार	वर्ष	ओ
अंगीकार निश्चय	ओ	ओक्षक(न) बैलें
एव(अ) तुल्यार्थक	ओक(न) घर	का समूह
एषणिका(स) मुनारका	ओक(७) आश्रय	ओचिती(सन) उत्ति
कांटा वातराज्	ओघ(न) पाप, शी-	तभाव
रे	घनृत्यादि-समूह	ओचित्य(सन) तथा
ऐकसारिक(७) चोर	ओघ(७) जलकाके	ओतानपादि(७) ध्रुव
ऐमुद(न) इंगुदीकाफल	ओंकार(७) वेदारंभ	ओदनिक(३) सोइया
ऐगा(३) हिगाकेचमीदि	ओज(न) दीप्त-दीप्ति	ओदीक(३) भुक्मा
ऐगाय(३) तथा	वल	ओपगवक(न) मोस-
ऐतिह्य(न) पांप्पाकेउपदेश	ओडपुष्प(न) गुडहल	मूह
ऐंद्रियकर(३) प्रत्यक्ष	ओतु(७) बिलाउ	ओपयिक(३) न्याय
ऐगवणा(७) इंद्रकाहाधी	ओदन(७) नभात	संयुक्तवस्तु
ऐगवत(७) तथा	ओम(अ) अंगीकार	ओभ्रक(न) ऊंरोका
ओरपूर्वदिशाकादिछाज	ओमीनि(३) अलसी	समूह
नारंगी	कारेवत	ओरस(७) अपनेसेउ-
ऐगवती(स) विजली	ओष(७) जलाना	तन्मपुत्र
ऐलविला(७) कुवेर	ओषधि(स) फल-	ओरस्या(७) तथा
ऐला(स) वडीइलायची	पाकांतदृष्ट-अन्नमा	ओईदेहिक(३) मर
ऐलेय(न) एलुआ	त्र	नेकेलियेदान
ऐश्वर्य्य(न) सिद्धि-वि	ओषधी(स) तथा	ओर्व(७) वडवानल
भूति	ओषधीश(७) चंद्रमा	अग्नि

औशीर (७) चमारदंड-	कंक (७) प्वेतचील	कंचुकी (७) नपुंसक
औशीर (न) उशीर	कंकटक (७) कवच	एनवसकासेवक
औशीर (३) शयन, आसन	कंकण (७) कड़ावा	कटक (७) न) पर्वतका
औषध (न) औषधमात्र	करभूषण	वीच, गहुंची, कंकण,
औष्टक (न) ऊंरोंकासमूह	कंकतिका (स) कंगी	राजा, चूतड़ चक्र
क	कंकाल (७) हाडकापिंज	करकिफल (७) कटहल
कं (न) शिर- पानी	कंगु (स) कंगुनी	कस्य (स) कंधनी
कंस (७) न) कंसेकापात्र	कच (७) वार	कट (७) कमर, हाथी
कंसारति (७) विषम	कचरा (७) केश	कागाल- वेश
क (७) पवन, ब्रह्मा, सूर्य,	कचर (३) मैलीवस्तु	कटभी (स) मालकंगी
ककुद (७) न) प्राधान्य- रा-	कचित (अ) प्रमार्थ	कट्दरा (स) कटुकी
जचिहू- वेलकाभ्रं	कच्छ (७) बहुजलयु-	कटभगा (स) आकाश
ककुद्वती (स) कमरं	कटेश- नूनटस- व	वेलि
ककुंदर (न) चूतड़ोंकागठ	ककाकिनारा	कटास (७) आंवाँके
ककुम् (स) दिशा	कज्ज (३) जलकाकिना	किनारे सेदेखना
ककुम (७) वीणाकीमछी	कच्छप (७) कछुआ	कटाह (७) कड़ाह
तोंवी- अर्जुनटस	कच्छी (स) कछुई- बी	कटि (स) कमर- हाथी
कवकोलक (न) कवाकवीनी	रामकाभेद	कागाल- चटाई
कवरुट (३) कठिन	कच्छु (३) वसायु-	कटिप्रेथ (७) स्त्रीका
कक्ष (७) कावुलण, लता	करवाज	कटिस्थमांसपिंड-
कक्ष्या (स) हाथीकीकमर	कच्छु (स) रवाज	कटिल्लक (७) करेला
वांधनेकीरस्सी- घरआ	कंचक (७) कंचुली	कटु (७) मधुआदि-
दिकेभीतरकेधर- कंधनी	घोड़ेकावरवतर	कटुकी- रस-

कटु(न) अकार्य	कंठा(३) गला	कावनाहुआपात्र
कटु(३) अहंकार तीक्ष्ण	कंठभूषा(स) कंठा	कनिष्ठ(९) छेरीभाई
कटुतुंबी(स) कटुतुंबी	कंडू(स) बुजलाना	कनिष्ठ(३) बालक अल्प
कटुरोहिणी(स) कटुकी	कंडूया(स) तथा	कनिष्ठा(स) छेरीअंगुली
कटुफल(९) कायफल	कंडूरा(स) कौंच	कनीनिका(स) आरवकी
कटुंग(९) अल्ल	कंडोलवीणा(स) नीचवी	पुतली
कठिंजर(९) ववई-प	कटूण(न) सुगंधिततृण	कनीयस्वा कनीयान्(३)
रुस	कथा(स) प्रबंधकल्पना	अतिशययुवा-अतिशयधोडा
कठिन(३) कठिन	कटुध्वा(९) कुमार्ग	कंथा(स) कथरी
कठोर(३) कठिन	कटुम्बक(न) समूह	कन्द(९) जिमीकंद
कंडंग(९) भूसा	कटुम्बक(९) सरसों	कंदर(९) वनाईगुफा
कडम्ब(९) सागकंद	कदरा(९) श्वेतकथा	कंदराल(९) वडीहर् पिलुआ
कडा(९) पीला	कदर्य(३) कृपण	कंदर्य(९) कामदेव
कण(९) थोड़ा-अति	कदली(स) केला, मछ	कंदली(स) मृगमेद
सूक्ष्म-अन्नकाअंश	कदचित्(अ) किसीकाल	कंदुक(९) गंद
कण(स) पीप, जीरा	कडुणा(न) थोड़ागर्म	कन्दू(३) भट्टीवाभार
कणिका(स) आरणी	कडु(९) पीला	कंधरा(स) गला
कणिका(९) वाली	कटुदा(३) कटुवादी	कन्यकाजात(९) कन्या
कणिय(३) बहुतथोड़ा	कनका(९) धर्रा	कापुत्र
कंठका(३) सुईकीनोक	कनक(न) सोना	कन्या(स) कुआरी
छेराशत्रु-रेमरवड़ा	कनकाध्यक्षा(९) सोने	कपट(९) न) छल
होना	काअधिकारी	कपर्द(९) महादेवकी
कंठकारिका(स) भरक	कनकालुका(स) सोने	जरा ओंकप्समूह

कपर्दी(७) शिव	कफोणि(७स) कुहनी	काकंकरा
कपाट(३) किवाड़	कबन्ध(न) जल	कम्बुग्रीवा(स) तीनरेखा
कपाल(७न) कपार	कबन्ध(७न) मूड़कटा	सहितगला
कपालमृत(७) शिव	कमठ(७) कछुआ	कम्ब(३) कामी
कपि(७) वानर	कमठी(७) कछुई	कर(७) किरण, राजभा
कपिकच्छु(स) कौंच	कमंडलु(७न) ऋषिप	भेट-हाथ-बलि
कपित्थ(७) कैथ	त्रवाकमंडलुवाकर	काक(७) अनार-कम
कपिल(७) पीला	कमन(३) कामी	उलु-ओला
कपिला(स) आग्नेयदि	कमल(न) जल-पुष्प	करका(७स) ओला
गगजकी स्त्री, कालीसी	विशेष-पद्म	करकरी(स) कर वा
सौं-गगानधूरि	कमल(७) मृग	करज(७) कंजा
कपिवल्ली(स) छोटी	कमला(स) लक्ष्मी	कस्ज(न) गंधविशेष
पीपरीवागजपीपरी	कमलासन(७) ब्रह्मा	करंजक(७) कंजुआ
कपिशा(७) वानरसम्राट	कमलोत्तरा(न) कुसुम	करट(७) काठा हाथीका
कपीतन(७) अमला-	कमिता(३) कामी	गाल
गजहड-कालीसीसौं	कम्(अ) पानी, माथा	करण(७) शरद्वह्नी और
कपोत(७) कबूतर	कम्प(७) कंपना	विशेषसे उत्पन्न-क्रिया
कपोतपालिका(स) कबू-	कम्प(३) कंपनेवाला	की सिद्धिमें उपकारक-
तर आदिका घर	कम्पन(३) तथा	रित-गान-इंद्रिय-क-
कपोतांघ्रि(स) पमार	कम्बल(७) कंबल, दुपट्टा	रुमीदि
कपोल(७) गाल	कम्बि(स) करछी	करंड(७) पिटारा
कफ(७) कफ	कम्बु(७न) शंख	करतोया(स) नदी
कफी(३) कफवाला	कम्बु(७) हाथवा पांव-	करपत्र(न) आरा

करणल(प्र)तलवार	करिम(प्रन)उपला	करविहन(न)कुंडल
करणलिका(स)खाड़ा	करुणा(स)सविशेष	करिका(स)ठेठी-
करा(प्र)मणिवंधरेवासे	दया-अण	करिभूषण-हाथीकी
कनिष्ठप्रंगुलीकेमूलाक	कोरु(प्रस)करकैंदा	संडकाआवा-कम
काभारा	कोरु(प्र)हाथी	लकाबीज
कस्तूबाण(न)कंकरा	कीरा(स)हथिनी	करिकार(प्र)कनेर
कर्मईक(प्र)ककरोँदा	कोरटी(स)खोपंडी	करिणिया(प्र)त्रिथों
करम्म(प्र)दहीपुक्तसत्त	कर्क(प्र)श्वेतभोड़ा	कास्थ
कररुह(प्र)नख	कर्कटी(स)ककड़ी	कोरेजिपा(प्र)चुगिल
कखीर(प्र)कनडल	कर्कटका(प्र)कैंकड़ा	कर्तरी(स)कलानी
करणाया(स)अंगुली	कर्कषू(प्रस)वेर	कर्दम(प्र)कींचड़
करणीकरा(प्र)हाथीकीसूड़	कर्करी(स)गठारी	कर्पटा(प्र)फटाकपड़ा
सेनिकलमजल	कर्करेडु(प्रस)ककेटा	कर्परी(स)रसोत
करहाटा(प्र)कमलकीजड़	कर्कम(प्र)कपीला	कर्पर(प्र)कपाल
काहरेक(प्र)मैनफल	कर्कश(प्र)साहसिक-	कर्पासी(प्रस)कपास
कराल(प्र)अवेदंगका, ऊँचा	करोँडनहींचिकना	कर्पर(प्रन)कपूर
करिगर्जित(प्र)हथियेकाबोल	कर्कीर(प्र)कुमेड़ा	कर्बुरा(प्र)एहस
करिणी(स)हथिनी	कर्कुरा(प्र)कचूर	कर्बुरा(न)सौना
करिन(प्र)हाथी	कर्ण(प्र)कान	कर्बुरा(प्र)कचूर-आ-
करिपिपली(स)वडीभीपर	करजिलौका(स)	माहलही
करिशक्क(प्र)हाथीकाक्का	कानसलाई-कानस	कर्म(प्र)कलेवाला
कोर(प्र)करील-चंद	जूर	कर्मक(प्र)मजूर
करीर(प्रन)सकाअंडुआ	करिया(प्र)मलाह	कर्मकार(प्र)वेतनी

कर्मक्षम (३) कार्यकारी	अपवाद	कलाय (७) मर
कर्मठ (३) प्रकामकर	कलंव (७) वारा-साग	कलि (७) युद्ध
नेवाला	कीटंडी	कलि (७) कलियुग
कर्मिया (स) मजदूरी	कलत्र (न) करि-स्त्री	कलिका (स) कली
कर्मि (७) दांस	कलधौत (न) चाँदी, सौना	कलिंग (३) इंद्रजो-खु-
कर्मिंदी (७) सन्यासी	कलभ (७) हाथीकाबच्चा	ककवळैया पक्षी
कर्मशील (३) कामयुक्त	कलम (७) दिनमें होने	कलिदुम (७) वंहेड़ा
कर्मशर (३) प्रकाम	वाला अन्न-सागी	कलिमारक (७) काँटेदा
करनेवाला	कलवी (न) करेला	रंज
कर्मसचिव (७) देखाय	कलरव (७) कबूतर	कलल (७) गर्मजाल
कर्मि (७) दांस	कलल (३) घड़ा	कलिल (३) बुरा प्रवेश
कर्मिद्वय (न) लिंगादि	कलविक (७) चिड़ा	कलुष (न) पाप, गंधाजल
कर्पट (७) कपड़ा	कलश (३) गगरा	कलेवर (न) शरीर
कर्पूर (७) पीला	कलशि (स) सिंहपुच्छी	कल्क (७) विष्ट-पाप-
कर्ष (७) र्दमाया	कलहंस (७) वत्तक	दंभ-हाथीदांत-घीतेल
कर्षक (३) खेती करनेवा	कलह (७) युद्ध	आदिका अवशेष
कर्षफल (७) वंहेड़ा	कला (स) चंद्रमंडलका	कल्पना (स) हाथीका तै-
कर्ष (७) जीविका-टप	सेलहवां भाग-३० कान	यप्रकरना
लेकी आग	रा-शिल्प-कालभेद	कल्पवृक्ष (७) वृक्ष
कर्ष (स) खेती नदी	कलाद (७) मुनार	कल्पांत (७) प्रलय
कल (७) मधुरस्वर	कलानिधि (७) चंद्रमा	कल्मष (न) पाप
कलकल (७) भाषित	कलाप (७) भ्रमण-मे	कल्माष (७) चित्रविविध
कलंक (७) चिन्ह-दोष	रकी शिवा	कल्प (न) प्रात-समय-

विशेष, प्रलय,	केयोठय	काकोला (९) विषभेद
कल्प (९) विधि, न्याय	कष (९) कसौटी	काकभेद
कल्पश्रेष्ठारहित-उपा	कषाय (९) रस-कटा	काक्षी (स) अरहर
यसेयुक्त	कष्ट (३) पीड़ा, महावन	काच (९) काँच क्रींका-
कल्या (स) कल्याणक	कस्तूरी (स) मृगभेद	नेत्ररोग
कल्पान (न) मंगल	कटू (९) बगला	काचस्थली (स) पाठर
कल्लोल (९) हिलकोर	का	काचित (३) क्रींकेमधरा
कल्हार (न) सेतकमल	काक (९) कौआ	कांचन (९) जागकेसर
कवच (९) कक्च	काकचिंची (स) घुँघुँची	कांचन (न) सौना
कवल (९) कौर	काकतिंदुक (९) कडुआ	कांचनाहूय (९) तथा
कवरी (स) बवई-बालों	तिंदुआ	कांचनी (स) हलदी
की पटियाँ-हीराकीफर्ती	काकआन्वी (स) काकजंघा	काञ्जिकल (स) कांजी
कवि (९) श्रुत, पंडित	काकमुद्रा (स) वनमूँठा	काञ्ची (स) स्त्रियोंकीकंध
कविका (स) लगाम	काकली (स) सूक्ष्मस्वर	काण्ड (९) नरई दंड
कवोद्या (न) घोड़ाघर्म	काकांभी (स) काकजंघा	काण्ड (९) निंदित, क्री
कव्य (न) पितृ-अन्न	काकिनी (स) पाणकाष्ठ	अवसर-जल
कशा (स) चाबुक	काकु (स) शेकादिसेवो-	काण्ड (न) वाण
कशर्ह (३) वेतमानेकेयो	लना	कांडएष्ट (९) शस्त्रजीवी
कशिपु (९) अचूकना	काकुद (न) तालु	कांडवत् (९) केवलवाणधा
कशेरुका (स) रीछि	काकेडु (९) कटुतेडुआ	कांडाल (९) उला
कश्मल (न) मूर्च्छा	काकोडुवरिका (स) क-	कांडीर (९) केवलवाण
कश्य (न) घोड़ोंकामध्य	दूमीरिष्ट	काण्डेसु (९) मालमरवाना
भावा-मदिरा-चेतमाने	काकोदर (९) सर्प	कांडोल (९) शेकरा कूपरा

कातर (३) व्याकुल	कापोतांजन (न) सुमी	शीर-प्रजापतितीर्थ
कात्यायनी (स) पार्वती	काम (७) कामदेव	अनामिका कनिष्ठिका
आधीवृद्धीविधवा	इच्छा	अंगुलियों कामूल
कादंबरी (स) मदिरा	कामगामी (७) यथेष्ट	कारण (न) हेनु
कादंबिनी (स) मेघमाला	चलनेवाला	कारण (स) पीडा
कानन (न) वन	कामन (३) कामी	कारणिक (३) परीक्षा
कानीन (७) कन्याकापुत्र	कामिनी (स) स्त्री-	करनेवाला [स्त्री]
कान्त (३) सुंदर	वृक्षकावँदा	कारंउवा (७) हरियलप
कांतालक (७) गूलवृक्ष	कामुक (३) कामी	कारवी (स) अजमोद
कांता (स) स्त्री	कामुका (स) धनादि	सौफ-कालाजीरा-
कान्तार (७) कठिनमार्ग	कि-चाहनेवालीनारी	हींगकीपत्ती
वडावन [डा]	कामुकी (स) मैथुनके	कारवेल्ल (७) करेला
कान्तारक (७) कालापै	चाहनेवालीस्त्री	कारम्भा (स) फूलप्रियं-
कांति (स) शोभा-इच्छा	कांफिल्ला (७) कमीला	श-ककुनी
कादम्ब (७) वत्तक	काम्वल (३) कंवलादिव	कारा (स) जेलरवाना
कांदविक (३) पुत्रा-आ-	रुसेम (७) हुआपदार्थ	कारिका (स) नर्ककाले
दिवनानेवाला	कामविक (७) भनिहार	श-वृत्ति-विवरणा-
कांदिशिक (३) डराहुआ	काम्वोज (७) काम्वोज	श्लोक-कविता-शि-
काद्रवेय (७) साँप	देशकाघोडा	ल्पादि [मूह]
कापथ (७) कुमारी	कांवेजी (स) मँगांमैथी	कारिष (न) उपलौकाम
कापोत (न) कवूतरोका	काम्यदान (न) तुलाप-	कारु (७) क्रोरा-आदि
समूह	रुषादिकादान	कारुणिक (३) दयालु
कापोत (७) सज्जी	काया (७) वीणाकास्वरूप	कारुण्य (न) करुणा

कारेतर (७) मदिआका	कालकूटा (७) विषमात्र	कालीयक (७) पीतचंदन
फूल	कालखंड (न) कलेजा	कालेयक (७) दारुहलदी
कार्तस्वर (न) सौना	कालधर्म (७) भृत्य	काल्यक (७) कचूर
कार्तांतिका (७) ज्योतिष	कालपृष्ठ (७) राजाकरा	काल्या (स) उचितसमय
कार्तिका (७) कार्तिक	काधनुष	परदेवकेपसजनेवलीमो
कार्तिकिक (७) तथा	कालमेघिका (स) भांगरा	कावचिक (न) कवचधा
कार्तिकिया (७) स्वामिका	कालानिसेतवातिधारा	रियोकासमूह -
र्तिक	कालमेघी (स) वकुची	कावेरी (स) नदीविशेष
कार्पास (३) कपासकाव	कालश्रेय (न) मठा	काव्य (७) श्रुक्
कार्मा (३) सदकाममें	कालसूत्र (न) नरकभेद	काश (७) कांस
लगा रहने ला	कालस्कंध (७) तेंदुआ	काश्मर्य (७) रवमारी
कार्मणा (न) औषधी	तमाल	काश्मरी (स) तथा
केमूलोंसे उचाटना	काला (स) नील-निसेत	काश्मीर (७) पुष्करमूल
दिकर्म	काला कालाजीरा	काश्मीरजन्मा (न) केसर
कार्मुक (न) धनुष	कालागुरु (न) अंगार	काश्यपि (७) रविकासारी
कार्पापा (७) रुपया	कालानुसार्य (न) शिला	काश्यपी (स) भूमि
कार्यिक (७) रुपया	जीत-पीला-चन्दन	काष्ठ (न) काठ
कार्य्य (७) शाल	कालायस (न) लोहा	काष्ठ (स) दिशा
काल (७) यमराज	कालिका (स) मेघसमूह	काष्ठा (स) १८ आँख
समय - काला	देवी	केपलक
कालक (७) लहसना	कालिंदी (स) यमुना	काष्ठकुदाल (७) काठकी
दिचिह्नितपुरुष	कालिंदीभेदन (७) कलेदेवी	काष्ठतश् (७) वछई
कालकंठक (७) काग	काली (स) पार्वती	काष्ठा (स) बडाई - मय्या

काष्टं ववाहिनी (स) डोंगी	किराव (न) मदिरा-	किलिंजक (७) वोरा
काष्ठीला (स) केला	कावीज आरी	किल्विष (न) पाप आ
कास (७) खांसी	कितव (७) धतरा जु-	पराध
कासमर्द (७) रोगभेद	किन्नर (७) देवजाति-	किशेर (७) वक्केड़ा
कासर (७) बड़ाताल भैंसा	कुवेर के इत	किष्कु (७) हाथ-विल-
कासार (७) बड़माल	किन्नरेश (७) कुवेर	किसलय (७) नवीन
किम (अ) प्रच्छन्ना-नि-	किमु (अ) विकल्प	पत्ता
दा करना-विकल्प	किमुत (अ) अतिशय	कीकस (न) हाड
किंशरु (७) तीकुर	विकल्पार्थ	कीचक (७) कजनेवाला
किंशुक (७) ठाँक	किम्पवान (३) रूपरा	कीनाशा (७) यमराज-
कि (अ) अतिशयार्थक	किम्पुष्पा (७) किन्नर	छोटा
किकिदिवि (७) नीलकंठ	किम्बदंती (स) लोक	कीनाशा (३) खेती करने
किंकर (७) दास	की उड़ती हुई खबर	वाला - खुद्र
किकिनी (स) कंधनी	किर (७) शूकर	कीर (७) तोता
किंजुलक (७) कैचुआ	किरण (७) किरण	कीर्ति (स) यश
जलके ऊपर के कीड़े	किरात (७) म्लेक्षजाति	कील (स) आठकी
किंजल्क (७) कमल-	किराततिल (७) चौरा	कीलक (७) रंवूटा
कीधूलि	किरीट (न) मुकुट	कीलाल (न) पानी
किटि (७) सुन्नर	किर्मीर (७) चित्रविचित्र	कीलाल (स) लोहू
किंचित (अ) थोड़ा	किल (अ) वार्ता-सं-	कीलित (३) बंधुआ
किट्ट (न) मैल	भावना-निश्चय	कीशा (७) बंदर
किरण (७) घावकाचि-	किलास (न) सीपरोठा	कीशपर्णी (स) चिरचिटा
किरीही (स) चिरचिटा	किलासी (३) सीपवाला	कु (स) धरती

कु(आ)पाप-निंद-थोड़ा	कुंजराशन(९)पीप	कुणप(९)निर्जीव
कुकर(९)टूटा-लुंजा	कुंजल(ल)कांजी	कुणि(९)रन वृक्ष
कुकुंदर(न)चूतड़कागाढा	कुट(९न)गगारा	टूटा-लुंजा
कुकूल(न)कीलसेभराग-	कुट(९)वृक्ष	कुंठ(३)आलसी
ढा- म	कुटज(९)कुडावृक्ष	कुंड(न)वदुआ
कुकूल(९)भूसीकीआ	कुटनटा(९)आल	कुंड(९)जारप्रजो
कुकुट(९)मुर्गा	कुटच्छट(न)भोथा	यातिकेजीवतमेंहो
कुकुभ(९)वनमुर्गा	कुटिल(३)टेड़ा	कुंडी(स)कमंडलु
कुकुर(न)कुरेण्धा	कुटुंगाका(९)वृक्षल-	कुंडल(न)कुंडल
कुकुर(९)कुत्ता	ताकासमूह	कुंडली(९)सर्पमात्र
कुक्षि(९)पेट	कुटुंबव्याहत(९)	कुतप(९न)प्राद्ध-
कुक्षिभारि(३)पेटार्थी	कुटुंबकापालक	कालविशेष-दिन
कुंकुम(न)कुंकुमा	कुटुंबिनी(स)पति-	काट्टेभारा
कुचंदन(न)लालचंदन	पुत्रपुतस्त्री	कुतप(९)मृगारोम
कुच(९)चूची	कुट्टनी(स)कुट्टिनी	काकपड़ा
कुचर(३)दोषवादी	कुट्टिम(न९)भीत	कुतुक(न)रेवेल
कुचाग्र(न)कुचोंकेआ	कुठर(९)रवंभा	कुतुप(९)कुप्पी
गेकाभारा	कुठार(९स)कुठारी	कुत(स)कुप्पा
कुज(९)मंगल	कुठेरक(९)ववड्या	कुतहल(न)रेवेल
कुंचित(३)टेड़ा	कुडव(९)तोलभेद	कुत्सा(स)निंदा
कुंज(९न)कुंज हाथीका	कुडल(९न)फूल-	कुत्सित(३)अधम
दांत-सघनवन	तीहुईकली	कुथ(९)कुश-हा-
कुंजर(९)हाथीश्रेष्ठार्थ	कुड्य(न)भीति	धीकीमूल

कुदाल (९) कचनारि	कुमुदिनी (स) फफुला	गुलवांसा
कुनटी (स) मैनाशिल	कुमुद्वत (३) फफुला	कुरुविंद (९) मोथा
कुनाशक (९) जवासा	कादेश दिनी	कुरुविस्त (९) सौने की
कुन्त (९) भाला	कुमुद्वती (स) कजो-	पलभरनोल विशेष
कुंतल (९) वाल	कुम्वा (स) टट्टी	कुल (न) सजातीय समू-
कुंद (९) पल्लक - रु	कुम्भा (९) गूगुल -	ह - कुल - वंश
क्षविशेष शिक	हाथी के शिरका मांस	कुलक (९) कटु तेंदुआ
कुंदुरु (३) पलाक का	पिंड	परवर - शिल्पियों के कु-
कुंदुरकी (स) सल्लिम	कुम्भ (३) गारा घड़ा	ल में प्रधान
मिश्री	कुम्भकार (९) कुम्हार	कुलटा (स) छिनार स्त्री
कुपूय (३) अधस	कुम्भसंभव (९) अवाति	कुलत्तिका (स) सुरमा
कुप्य (न) तम्प्रादिक मु	कुम्भिका (स) कमल	कुलपालिका (स) कुलवं-
द्रा - पैसा - रुपया	कुम्भी (स) काँयफल	ती स्त्री कुल में प्रधान
कुञ्ज (९) कुवड़ा	कुम्भीर (९) जाका	कुलश्रेष्ठी (९) शिल्पियों के
कुमार (३) स्वामिका	कुम्भा (९) हिरन	कुलसंभव (९) कुलीन
र्तिक - राजपुत्र	कुम्भक (९) दहने अं	कुलस्त्री (स) कुलीनस्त्री
कुमारक (९) वरना वृक्ष	काका धायल भट्टा	कुलाय (९) घोंसला
कुमारी (स) घीगुआर	कुरर (९) जीव विशेष	कुलाल (९) कुम्हार
कुमारी - कुआरी	कुरवक (९) लालपि	कुलाली (स) कालासुरमा
कुमुद (९) नैर्ऋति दि	यावांसा - लालगुला	कुलिश (न) कज्ज - हीरा
शाकादि ठमाज - फफुला	वांसा - लालकटया	कुली (स) भटकटाई
कुमुदवाधव (९) चंद्रमा	कुरुटका (९) पीला	कुलीन (९) सज्जन - कु-
कुमुदिका (स) काँयफल	पियावांसा - पीला	लीन घोड़ा

कुलीर (७) कैकड़ा	कुम्मांडक (७) कुमेड़ा	काअग्रभागा
कुल्माष (७) कुलधी	कुसीद (न) व्याज	कूटि (७ स) सभा
कुल्माष (न) कांजी	कुसीदिक (३) व्याजले	कूटक (न) हलकारा
कुल्या (न) हाड़	नेवाला	हलका फारा
कुल्या (स) नहर	कुसुम (न) फूल	कूटयंत्र (न) फंद
कुवल (न) वेरकाफल	कुसुमांजन (न) अंजन	कूटशाल्मलि (७ स)
कुवलय (न) फफुला	कुसुमेष्ट (७) कामदेव	कालासेमर
कुवाद (३) दोषवादी	कुसुम (न) कुसुम-कु	कूटस्थ (३) स्थिर
कुवेणी (स) कंडिया	सुमकाफल	कूप (७) कुन्ना
कुविंद (७) कोरिया	कुसुम (७) कमंडलु	कूपका (७) गाढा मतल
कुवेर (७) इंद्रकामंडारी	कुसुति (स) कपट	कूर्च (पुन) मोहोंकावीच
उत्तरदिशाकास्वामी	कुस्तुंबरु (न) धनियाँ	कूर्वशीर्ष (७) जीरा
कुवेराक्षी (स) पाठुरि	कुहना (स) दंभी	कूर्चिका (स) दही दूध
कुवेरक (७) तनरुक्ष	कुहर (न) पोलमात्र	मिलापदार्थ
कुश (पुन) डाम-जल	कुहू (स) अभावस	कूर्दन (न) लीला
कुशल (न) कल्याण	कूकुट (७) अलंकृत	कूर्पर (७ स) कुहनी
पूर्णता-क्षेम-पुण्य-	कन्याकादेनाला	कूर्पासका (पुन) चोली
शिक्षित	कूट (पुन) पहाड़की	कूर्न (७) कडुन्ना
कुशल (३) ज्ञाता	चोटी-ठेसनाजन्ना	कूला (न) तीर
कुशी (स) कसी	दिका-निश्चलमाया	कूवर (७) गाढीके
कुशीलव (७) कायक	मृगावांधनेकेयंन	जुयेकाकाठ
कुशेशय (न) कमल	कपट-कूट-समूह	कूकरा (७) तीतर
कुष्ट (न) फूट सेतकोठ	लोहेकाधन-हल	कूकलास (७) मिर्गट

कुकवाकु (५) मुर्गा	कृत्रिम (न) वनायाहु	कृषीवल (३) रेवती
कृकाटिका (स) घांटी	कृत्रिम धूपक (५) नान	करनेवाला
कृकू (३) पीडा, आचार	प्रकार की सुगंधकर-	कृष्ट (३) जुते रेवत
कृत (न) शतयुग-किया	नेवाली धूप	कृष्टि (५) पंडित
हुआ	कृत्स्न (५) सब	कृष्ण (५) विष्णु-पक्ष
कृतक (न) खारीनेन	कृपणा (५) कृपणी	भेद-काला-मिस्व
कृतपुंख (५) तीरंदाज	कृपा (स) करुणा	कृष्णपाकफल (५)
कृतमाल (५) अमलता	कृपाणा (५) तलवार	करोँदा
कृतमुख (३) ज्ञाता	कृपाणी (स) कतरनी	कृष्णफला (स) वकुची
कृतलक्षणा (३) गुणी	कृपालु (३) दयालु	कृष्णभेदी (स) कटुकी
कृतसापत्निका (स)	कृपीटयोनि (५) आग	कृष्णाला (स) धुँधुची
सौति	कृमि (५) कीड़ा	कृष्णवर्मा (५) आग
कृतहस्त (५) तीरंदाज	कृमिकोशेत्थ (३)	कृष्णचंता (स) पाठरि
कृतांत (५) यमराज-मि	कृमिघ्रा (५) वायुविडंब	कृष्णसार (५) मृगभेद
द्वान्त-पूर्वजन्मकृतकर्म	कृष्ण (३) थोड़ा	कृष्णलोहित (५) धू-
कृती (५) पंडित	कृष्णानु (५) आग	मलारंग
कृती (३) ज्ञाता	कृष्णचुरेता (५) शिव	कृष्णा (स) बड़ीपीपर
कृत (३) कटा	कृष्णश्री (५) नट	कृष्णिका (स) राई
कृत्ति (स) मृगचर्म	कृषि (स) रेवती	केकर (५) कुंजा
कृत्तिवास (५) शिव	कृषिक (३) रेवतीक	केका (स) मोरकीवाणी
कृत्य (३) कर्मकेयोमय	नेवाला	केकी (५) मोर
कृत्या (स) क्रिया-कर्म	कृषिक (५) हल	केतकी (५) कैथ
देवता		केतन (न) कंडा-न्योता

कार्यादि - ध्वजा	कैटय (१) कैयफल	खड्गारिकीनोक-बड़ाई
केतु (१) ग्रहभेद फलाका	कैतव (न) कपट जुआ	आश्रय-करोड़
केदार (१) व्यवहार पदार्थ	कैदारक (न) भेत्त समूह	कोटिवर्षा (स) शाक
केदार (१) रेवत	कैदासिक (न) तथा	कोटिश (१) मुमारी
केनियात्तक (१) पतवार	कैदार्थ (न) तथा	कोट्ट (१) कोट
केयूर (१) कज्जूवृंद	कैरव (न) फफुला	कोट्टार (१) कोट
केलि (१) स) क्रीडा	कैलास (१) कुवेकास्थान	कोठ (१) कोठी
केवल (३) निश्चित, एक	कैवर्त (१) धीमर	कोठा (१) बीलादिके
केवल - सर्व	कैवल्य (न) मोक्ष	वज्रनेकादंड-खड्ग-
केश (न) नेत्रवाला	कैवर्त्तिसिस्तक (न) मोथा	दिकीनोक
केश (१) बाल	कैशिक (न) बालेंका मुंड	कोदंड (न) धनुष
केशपाशी (स) चोटी	कैश्य (न) तथा	कोद्रवा (१) कोदों
केशर (१) कमलकी	कोका (१) मोड़िया चक्र	कोष (१) क्रोध
धूरि- नागकेसरि	चकरी पक्षी	कोषना (स) कोथिनी स्त्री
केशव (१) विष्णु, अच्छे	कोकनद (न) कमल	कोपी (३) कोधी
बालवाला [टिया]	कोकनदच्छवि (१)	कोमल (३) कोमल
केशवेश (१) बालेंकी प-	लालजातिका कमल	कोयष्टिक (१) गिटहरी
केशिक (१) अच्छे केशवा	कोकिल (१) कोयल	कोरक (१) कली
केशिनी (स) शंखवाहुली	कोकिलाक्ष (१) तालम	कोरवी (स) इलायची
केशी (१) अच्छे केशवा	खाना	कोरइष (१) कोदों
केसर (१) मोरश्री नागकेस	कोटर (१) खेरवला	कोल (१) वेड़ा
केसरी (१) सिंह	कोरवी (स) नंती स्त्री	कोल (न) खेर, शरकर
कैटभजित (१) विष्णु	कोटि (स) धनुषकाकि	कोलक (न) कवावचीनी

कोलदल(न)ककूंदन	कोयटक्ष(९)व७ई	वाद, पशु, सर्प, पक्षियोंकायु
कोलंवका(९)वीणा	कोयटिक(९)कसाई	कोलेयक(९)कुत्ता
कोलवल्ली(स)गज- पीपरि	कोराप(९)राक्षस	कोशिक(९)गुगुल-इंद्र-
कोला(स)बड़ीपीपरि	कोतुक(न)रेवल	उल्लूक सर्पग्राहीविश्वामित्र
कोलाहल(९)बड़ाशब्द	कोतुहल(न)रेवल	नौला
कोलि(प्रस)वेर	कोद्वीरा(३)कोदेका	कोशेय(३)रेखमकावनाव
कोविद(९)पंडित	रेवत	कोस्तुभ(९)लक्ष्मीपतिकी
कोविदार(९)कचनारि	कोतिका(९)भालावाला	मरिा
कोशा(९)चाँदीकेमुद्रा	कोंती(स)गमानधूरि	क्रकच(९)आए
वनेअनवने	कोपीन(न)अकार्य	क्रकर(९)करील तीतर
कोशाफल(न)कवाव	गुह्य	क्रतु(९)यज्ञ
कोष(९)अंडा, कली	कोमुदी(स)चाँदनी	क्रतुध्वंसी(९)शिव
मयान-धनसमूह, द्रव्य	कोमोदकी(स)लक्ष्मी	क्रतुभुज(९)देवता
कोषातकी(स)तुई	कोलटिनेय(९)भिरव	क्रथन(न)मारा
कोषी(३)क्रोधी	रिनीकापुत्र	क्रंदन(न)वीरेंकानिंदापू-
कोष(९)पेटकेभीतरका	कोलटेय(९)कुलटा-	र्वकपुकारना- रोना
कोठा-कुठिला-घरका	कापुत्र भिरवारीनीका	क्रंदित(न)रोना
वीच	पुत्र	क्रम(९)विधि
कोषा(न)थोड़ागाम	कोलटेर(९)कुलटाका	क्रमका(९)लाललोध-तूत
कोष्कुटिक(३)दूरसे	कालथीना(३)कुलथी-	सुपारी
देखनेवाला	कारवेत	क्रमेलक(९)ऊँट
कोक्षेयक(९)तलवार	कोलीन(न)लोकाप-	क्रमविक्रयक(९)साहूकार
		क्रमक(९)लेनेवाला

क्रय्य(३)वेचनेकेयेयवस्तु	फल	कारण(७)वीणादिका
क्रय्य(न)मांस	क्रोष्टु(७)स्यारवृण	वद
क्रव्याद(७)गदस	क्रोष्टुविन्ना(स)सिंहपुच्छी	काथोद्व(न)सेत
क्रायक(७)लेनेवाला	क्रौंच(७)ठेक	क्षणा(७)३०कला उत्स
क्रिमिज(न)अगार	क्रौंचदारणा(७)स्वामि	व चुपचापहरना-समय
क्रिया(स)करनेवाला-	कार्तिक	विशेष-मुहूर्तमात्रका
क्रांस्त्र, प्रायश्चित्त, शिष्टा	क्रम(७) ग्लानि	बाह्रबांभाभा
पूजन विचार उपाय कर्म	क्रमथ(७) ग्लानि	क्षणादा(स)रानि
चेष्टा चिकित्सा	क्रिन्ना(३)गीला	क्षानन(न)भारा
क्रियावत्(३)कार्यकरनेवा	क्रिन्नाक्ष(३)चुंधा	क्षानप्रभा(स)विजली
क्रीडा(स)लीला	क्रिणित(३)लेखित	क्षतज(न)लोहू
कुड्(७)ठेक	क्रिष्ट(न)असंभवकथन	क्षतव्रत(७)प्रह्लादचर्यहीन
कुष्ट(न)रेना	क्रिष्ट(३)कष्टित	क्षत्ता(७)रथवान्-क्षत्री
कुध(स)क्रोध	क्रीतक(न)मुलहेठी	कीस्त्रीऔरैवैश्यसेउ-
कूर(३)हिंसक, कठिन	क्रीतिक(स)जील	तान्न-डेवाढीदार
निर्दय	क्रीव(७)हिजड़ा	क्षति(स)क्षय-वास-
क्रेतव्य(३)लेनेकेयेयव	क्रीव(३)अविक्रम	पृथ्वी
क्रेय(३) तथा	क्रिष्ट(७)कष्ट	क्षत्रिय(७)क्षत्री-ठाकुर
क्रोड(७)शरकर	क्रोम(न)तिल	क्षत्रिया(स)ठाकुरानी
क्रोधा(७)कोप	क्षणा(७)वीणादिका	क्षत्रियाणी(स)तथा
क्रोधन(३)क्रौधी	शब्द-शब्द	क्षत्रिया(स)क्षत्रीकीस्त्री
क्रोशयुक्ता(न)दोकोश	क्षुरान(न)तथा	क्षपा(स)रानि
क्रोष्टी(स)कालांगठा-	क्षयित(३)अच्छापक	क्षपाकर(७)चंद्रमा

क्षमा(१)योग्यशक्ति	क्षीर(न)जल दूध	क्षुधामिजन(१)राई
क्षम(३)हित लि	क्षीरविहति(स)दही	क्षित(३)भूखा
क्षमा(स)धरती सहनशील	दूधमिलाहुआपदार्थ	क्षुध(स)भूख
क्षमाभृत्(१)पहाड़ राज	क्षीरविदारी(स)प्रेत	क्षुप(१)कोटावृक्ष
क्षमिता(३)सहनशील	गंगाफल	क्षुमा(स)असली
क्षमी(३)सहनशील	क्षीरमुला(स)काला	क्षुरका(१)तिलक
क्षय(१)प्रलय क्यूही हानि	गंगाफल क्षी	क्षुरि(१)नाई
घर न्यून	क्षीरव्यितनया(स)ल	क्षुल्लक(१)नीच
क्षव(१)कींक राई	क्षीरवी(स)दुधिया	क्षुल्लक(३)कोटाथेड़ा
क्षवधु(१)रवांसी	क्षीरिका(स)खिरनी	क्षेत्र(न)खेत-खी-श-
क्षान्ता(३)सहनशील	क्षीरेद(१)समुद्रमेद	क्षीर-तीर्थ
क्षान्त(३)क्षमायुक्त	क्षीव(३)मतवाला	क्षेत्र(१)चैतन्य-आ-
क्षान्ति(स)सहनशील	क्षुत(न)कींक	क्षमा-प्रवीणा [नेवाला]
क्षार(१)कांच	क्षुत्(स)कींक	क्षेत्रजीव(३)खेतीकर
क्षारका(१)नवीनकली	क्षुद्र(३)कपरा क्रूर	क्षेपण(न)फेकना
क्षारमृत्तिका(स)लोनीमट्टी	अधम-अल्प	क्षेपण(स)गनावकाडोंड
क्षारित(३)अपवारी	क्षुद्रघटिका(स)कंधनी	क्षेपिष्ट(३)अतिशयशीघ्र
क्षिति(स)धरती	क्षुद्रशंख(१)कोटाशंख	क्षेत्र(न)खेतसमूह
क्षिप्त(३)भेजा	क्षुद्रा(स)भटकाई-	क्षेम(न)कल्याण-रा-
क्षिपा(स)फेंकना	हीनग्री-नटी-वैश्या	क्षसीरक्ष
क्षिप्रु(३)निकालनेवाला	मधुमकरवी	क्षोद(१)चून [हु]
क्षिप्र(न)शीघ्र	क्षुद्राउमत्स्यसंघात	क्षोदिष्ट(३)अतिशयशु
क्षिया(स)हानि	(१)कोटीमकुली	क्षोणी(स)धरती

क्षौम(न)धासफूलकेवनेक पडे	तलवार खडी(१)खेडा	खर्व(१)वामन लघु खर्व(२)कोरा
क्षौम(पन)अगरी ऐशमीक	खंड(५न)भाभा	खल(३)दुष्ट
क्षौद्र(न)सहत	खंडिक(१)अमर	खलप्र(३)मौडू
क्षुण्णता(३)तीखा	खंडपाशु(१)शिव	खलिनी(स) खल-
क्ष्मा(स)धरती	खदिरा(१)कत्या	हानोंकासमूह
क्ष्माभृत्(१)पर्वत	खदिरी(स)गुलखेरा	खलीन(५न)लगाभ
क्ष्वेड(१)विषमात्र	खद्योत(१)जुगनू	खलु(अ)निषेध-वा-
क्ष्वेडा(स)सिंहकपार्जन	खनि(स)कानि	क्यालंकार-जानने
वीरेंकागर्जन-वासकीश-	खनित्र(न)कसी	कीइच्छा-स्तुति
लाका-विष	खपुरा(१)सुपारी	खल्या(स)खलहानों
क्ष्वेडिन(१)वीरशब्द	खर(न)बहुतार्म	कासमूह
ख	खर(१)गधा	खात(न)चौकोनगा
ख(न)आकाश-शून्य-इं	खरण(१)तीखीनाक	खदित(३)खायमाया
द्वियादि	खरणस(१) तथा	खारी(स)तोलभेद
ख्या(१)पक्षीवाण सूर्य	खाध्या(स)वडुईआ	खारीक(३)जिसखेत
खगोष्पर(१)गरुड	खमंजरी(स)चिक्कि	मेंखारीभरवोयाजाय
खजाका(स)करछी	खा(स)बंदाल, देवताइ	खारीवाप(१)तथा
खज्जो(१)लकड़ा	खाश्वा(स)अजमोद	खिला(३)जंगल
खज्जन(१)कौडीलाममो-	खर्ज(स)खजुआला	खुर(१)ककूदन-घो-
खज्जरीट(१) तथा	खर्जर(१)खजूर	डिंकीटाप
खड्ग(स)खार	खर्जरी(स) तथा	कचाला
खड्ग(१)शस्त्रविशेषगोंड	खर्जरी(न)चांदी	खुरास(१)लंबीना-
		खेट(३)अधम

खेय(न) खाई	सेनावाला, शिवसेवक	गंडूया(स) जलादि-
खेला(स) लीला	गणक(७) ज्येतिथी-	सेमुरवपूर्ण
खोड(७) लंगड़ा	गणनीय(३) भाननेकेयो	गतनासिक(७) नकटा
ख्यात(न) तालाव	गणराज(७) गणेश	गति(७) चाल
ख्यात(३) प्रसिद्ध	गणरात्रि(न) रात्रिसमूह	गद(७) रोठा
ख्यातगर्हनी(३) निर्दित	गणरूप(७) आक	गदा(स) लाठी
ख्याति(स) प्रसिद्धता	गणहासक(७) राक्षसी-	गद्य(न) विना कंद
ग	रक्ष	कीभाषा
गठान(न) आकाश	गणधिप(७) गणेश	गत्री(स) बाढी
गंगा(स) गंगानदी	गणिका(स) जूही-वे-	गंध(७) विषय
गंगाधर(७) शिव	श्या गीष्ट	गंधक(७) गंधक
गज(७) हाथी	गणिकारिका(स) आ-	गंधकुटी(स) ताली
गजता(स) हाथियोंका	गणित(३) गिनना	सपत्र उठाना
गजबंधनी(स) गजवं-	गणेश(३) गननेकेयो	गंधन(न) ऊपरको
धनशाला प्रमित्री	गंड(७) गाल-हाथी-	हिंसा- सूचना
गजभक्ष्या(स) सालि-	कागाल	गंधनाकुली(स) स-
गजास्त(७) गणेश	गंडक(७) गंडा	नाय
गंजा(स) मदिराघर	गंडकाली(स) गुलवेरा	गंधफली(स) फूल
गंडक(७) मछलीभेद	गंडशैल(७) भारिपथर	प्रियंगु- ककुनी-
गंडु(७) कुवड़ा	गंडाली(स) दूव	चमेलीकी कली
गंडुल(७) कुवड़ा	गंडीर(७) गंडदुबी	गंधमादन(न) पर्व-
गण(७) समूह-गु-	गंडूपद(७) कैचुआ	तकाभेद
लमकीसेनासेगुनी	गंडूपदी(स) तथा	गंधमूली(स) कचूर

गंधरस (७) गंधकास	गंधर (३) अतिशय भारी	गंधोपातिनी (स) निना
गंधर्व (७) देवजाति नाम	गंधी (७) वंदाल देवता	गंधयवैलकेपास जाने
विशेष मृगभेद घोडा-	गहड़ा (७) जीवविशेष	बाली गौ । तृण
गणजन्मकेवीचस्थित	गरुडध्वज (७) विषय	गर्भुत्त (स) नलादय
प्राणी-दिव्यगान	गरुडाग्रज (७) सूर्यका	गर्ब (७) अहंकार
गंधर्वहस्तक (७) अंड	सारथी	गर्हण (न) निंदा
गंधवह (७) पवन	गरुत् (७) पंख	गर्ह्य (३) अधम
गंधवहा (स) नाक	गरुत्मा (७) गरुड पक्षी	गर्हवादी (३) कटुवादी
गंधवाह (७) पवन दिन	गर्गरी (स) गगरी	गल (७) कंठ
गंधसार (७) सामान्य चं	गर्जित (न) मेघका गर्जन	गलकम्बल (७) वैलेके
गंधाप्रमती (स) गालपरी	गर्जित (७) उपकतामद	गलेकालटकाहुआचम
गंधाप्रमत्त (७) गंधक	हाथी	पोल
गंधिनी (स) तालीसप्त	गर्त (७) सृष्टीका	गलित (३) चुआ
गंधोत्तम (स) मंदिरा	गर्भ (७) गधा	गलेदृष्ट (७) घोड़ेके ग
गंधोली (स) वर्	गर्दभांड (७) गजहरड	लेका वीचका भाग
गमस्ति (७) किरण	गर्दन (३) लोभी	गल्या (स) गलेका समूह
गंभीर (३) गहरा	गर्भ (७) गर्भ, पेट-गर्भ	गवय (७) मृगभेद
गम (७) यात्रा	स्थजीव वस्तु	गवल (न) भैंसका सीता
गमन (न) यात्रा	गर्भक (७) शिके वीचकी	गवांन्रज (७) गौओका मुंड
गम्भारी (स) रवभारी औ	माला	गवाक्ष (७) कुरोरवा
गंधविशेष	गर्भगार (न) घरका वीच	गवाक्षी (स) फूट फल
गम्य (३) पालेके योग्य	गर्भशय (७) गर्भजाल	गवीश्वर (७) गोत्वामी
गाल (न) विषमत्र	गर्भिणी (स) गामिन	गवेदु (स) चैना अन्न

गवेधुका (स) चैना	गांधार (५) गानस्वर	गीष्यति (५) गृहस्पति
गवेधरण (स) श्राद्धमंत्राह	गायत्री (स) कथा	गुग्गुलु (५) गूगुल
गभक्ति-धर्मादिकारो-	गारुत्मन् (५) मणि	गुच्छक (५) फूलोकागुच्छा
जाना	गार्भेय (न) गभिनि	गुडा (५) गैद मीठा
गवेधित (३) ढूँडा	गैका समूह	गुडपुष्प (५) महुआ
गव्य (३) गौत्रोकादधिदूध	गार्हपत्य (५) यज्ञामि	गुडफल (५) पिलुआ
गव्या (स) गौत्रोका मुंड	गालव (५) लोध	गुडा (स) सेंहुड
गव्यूति (५) दोकोश	गिरि (५) पहाड़	गुडूची (स) गिलेय
गहन (न) वन	गिरि (स) निगलना	गुण (५) धनुषकी प्रत्यं
गहन (३) दुःप्रवेश	गिरिकरी (स) विषा	गुल्ला-रस्सी-रसगंध
गहूर (न) विनावनार्गुफा	क्राता औषध	सतेगुणादि-श्वेतादि-
दंभ-खोह-कंदरा	गिरिका (स) चूही	संधिविग्रहादि-गच्छा
गांगेय (न) सौना-कसेरु	गिरिज (न) भोडल	गुण (३) सोईदर-पत्ता
गांगेरुकी (स) कंगी	शिलान्जीत	हार
गाढ (न) अतिशय	गिरिमल्लिका (स) कु-	गुणवृक्षक (५) मस्तूल
गारिष्क्य (न) वेश्याओंका	गिरिश (५) शिव	गुणित (३) गुणा
गाण्डेय (३) गननेकेयोमय	गिरीश (५) शिव	गुंडित (३) धूलिलगा
गांडिव (५) न) अर्जुनकाधनु	गिर (स) सरस्वती	गुत्स (५) हारभेद
गांडीव (५) न) तथा	गिलित (३) खाया	गुत्सार्ह (५) हारभेद
गात्र (न) अंग-हाथीकी	गीत (न) गान	गुद (न) गुदा, हगनी
जंघाका अंगोका भाग	गीर्ण (३) अंगीकृत	गुन्द्र (५) शरकंडा
गात्रावुलेपनी (स) चोया	गीर्ण (स) निगलना	गुन्द्रा (स) फूलप्रियंगु-
गानं (न) गान-राग	गीर्णरा (५) देवता	ककनी-नागरमोथा

गुंजा (स) घुंघुंची	गुंजन (७) लहसन	गौरय (न) शिलाजीत
गुप्त (३) क्षिपा रक्षित	गुधु (३) लेप्पी	गोवागौ (७) वैल
गुप्ति (स) युफा	गुध (७) गीध	गोकंटक (७) गोरवुरु
गुराण (न) उद्यम	गुधसी (स) वातरोषभेद	गोकरा (७) मठाभेद-
गुरु (७) बृहस्पति पिता	गुष्टि (स) बिलाईकंद	अंगुठासे अनामिकात-
गुर्विणी (स) गर्भिणी	गुह (न) घर	क का भागजो फैला वमें है
गुल्फ (७) गोंठ	गुह (७) व० घर स्त्री	गोकरी (स) मूर्वा
गुल्म (७) दूँठ तिल्ली	गुहगोधिका (स) क्षिपकली	गोकुल (न) गौआंकास
सेनामुरवकी सेनासे ३	गुहपति (७) मोदी	मूह
गुणी सेना रवनेवाला	गुहयालु (३) लेनेवाला	गोसुरक (७) गोखरु
गुल्मिनी (स) फैलीलता	गुहयूग (न) धूनी	गोचर (७) इंद्रिय
गुवाक (७) सुपारी	गुहागम (७) धरकेपास	गोजिहू (स) गोभी
गुह (७) स्वामिकार्तिक	काबाग लीघरकी	गोडुम्बा (स) फूँट
गुहा (स) विनावनईगुफा	गुहावग्रहणी (स) दिह-	गोंड (७) नाभि, जातिभेद
सिंहपुच्छी ग	गुही (स) ब्रह्मचारीआदि	गोत्र (७) पहाड़
गुहा (न) एकांत भा लिं	गुहीता (३) लेनेवाला	गोत्र (न) वंश नाम गोत्रादि
गुहक (७) देवजाति	गुहक (७) गुहासत्तप-	गोत्रभिद (७) इंद्र
गुहाकेभर (७) कुवेर	क्षीमृदा त्र	गोत्रा (स) धरती गोत्रो-
गुह (३) क्षिपा	गुहक (३) आधीनमा-	का समूह
गुहपाद (७) सूर्य	गुंडुक (७) तकिआ, गेंद	गोदारन (न) हल
गुहपुरुष (७) हलकार	गुहा (७) घर	गोदुह (७) अहीर
गुह (न) विष्ट	गुहिक (३) धनुविशेष	गोधन (न) गोआंकास
गुह (३) हगाहुआ	गुहिक (न) सेना गेस्त	गोधा (स) न) धनुषकामें दम

गोधापदी (स) हंसपदी	गोमी (५) गोस्वामी	गोस्थानक (न) गो
गोधि (५) माथा	गोरस (५) मठा	ग्रीकास्थान/लकी
गोधिका (स) गोह	गोर्द (न) भेजा	गौतम (५) वौद्धमत
गोधिकात्मज (५) गो-	गोलक (स) पतिकेमे	गोधार (५) गोहकाव-
हकावचा	परज्याकर्मसेपुत्रहो	चा/कारवेत
गोधूम (५) गौहूँ	गोला (स) मलशिल	गोधूमीना (३) गौहूँ
गोनर्द (न) माथा	गोली (५) पाछरिलोध	गोधेय (५) गोहका
गोलस (५) छेरासर्प	गोलोमी (स) वच ज्वेत-	वचा
गोप (५) ग्वहुतसेगौर्वोंमें	दूव जयामांसी	गोधेर (५) तथा
गोमाध्यक्ष-अहीर-गोध	गोवर्हीनी (स) ककुनी, फू	गो (स) गाय-स्वर्वा-
रस-दूधदुहनेवाला-	लप्रियेगु	वाण-पशु, वीण, हीर
गोषपति	गोविंद (५) विष्णु-गो	दिश, नेत्र-किरण
गोपनि (५) सौंड	ग्रीकेस्थानकापति	पृथ्वी
गोपानसी (स) कुज्जा	गोशीर्ष (न) चंदनभेद	गो (सन) जल
गोपायित (३) रक्षित	गोषु (न) गौग्रीकाघर	गोर (५) ज्वेत, पीला,
गोपाल (५) अहीर	गोष्ठी (स) सभा	गोर (३) लाल, सित,
गोपी (स) प्रयामलता	गोष्ठीन (न) गौग्रीका	पीत/बड़ीकन्या
गोपुर (न) नगरकाफाटक	पहिलास्थान	गौरी (स) पार्वती, कुरु
गोथा-द्वारमात्र	गोष्यद (न) गौग्रीका	ग्रंथि (५) गौह
गोप्यक (५) दास	घर-रवुरादिकोंकामान	ग्रंथिक (न) पिपरामूख
गोमान् (५) गौकास्वामी	गोसरथ (५) अहीर	ग्रंथित (३) गठियाया
गोमय (५) गोवर	गोस्तन (५) हारकाभेद	ग्रंथिपर्णी (न) ककरोंध
गोमायु (५) स्यार	गोस्तनी (स) द्वाख	ग्रंथिल (५) हीस, करील

ग्रस्त(न) असंपूर्ण उच्चरित	ग्रीवा(स) गला	घनरस(५) जल
वचन खायागया	ग्रीष्मा(७) ऋतुभेद	घनसार(७) कपूर
ग्रह(५) ग्रहण, लेना, आ	ग्रीवैयक(न) कंठी कंठा	घनाघन(७) इंद्र-हिं
ग्रहविशेष, नवग्रह,	ग्रस्त(३) खाया	साकारी-मत्तहाथी,
ग्रहणीरूक्(स) संग्रहणी	ग्रह(७) वाजी	वर्षाकरनेवाला, वर्ष
ग्रहपति(पु) सूर्य	ग्रान(३) रोमासेदुर्वित	घर्म(७) पसीना, घाम
ग्रहीता(३) लेनेवाला	ग्रासु(३) तथा	घस्मर(३) खानेवाला
ग्राम(७) गाँव	ग्लौ(७) चंद्रमा	घस(७) दिन
ग्रैमणी(७) नार्ई	घ	घारा(स) घाँटी
ग्रामणी(३) श्रेष्ठ मुख्य	घट(७) गमारा घड़ा	घांटिक(७) घंटेवाला
ग्रामतक्षा(७) वळई	घटना(स) हाथियोंकी	घान(७) सारा
ग्रामता(स) गार्वोंका समूह	पंक्ति	घातुक(३) हत्थारा
ग्रामाधीन(७) वळई	घटा(स) तथा	घास(७) घास
ग्रामांत(७) ग्रामके पास	घटीयंत्र(न) रहट	घुरिका(स) पाँवकी भाँ
कीभूमि	घंटापथा(७) राजमार्ग	घुण(७) घुन
ग्रामीणा(स) नील	घंटापारलि(पुस) का-	घूर्णित(३) घूमनेवाला
ग्राम्य(न) ठीला करना	लीपाळी	घृणा(स) करुणा-
ग्राम्य(न) सुआर	घरावा(स) सन	घिनाना-निंदा-
ग्राम्यधर्म(७) मैथुन	घन(७) मेघ-मध्यम	घृणि(७) किरण
ग्राव(७) पहाड़ पत्थर	नृत्यादि-मुद्गर-कठि	घत(न) घी पानी
ग्रास(७) कौर	नता-आकार-निंतर	घृष्टि(७) शरकर
ग्राही(७) कैथ	घन(३) प्रतिमा, सघन	घोटका(७) घोड़ा
ग्राह(७) घड़ियाल, लेना	घन(न) कांसा आदिका	घोणा(स) ज्वाक
	वाजा	

घोरी (७) प्रकर	चक्रवाक (७) चक्रवाच ^{कवी}	चंडातक (७) लहर्घा
घोंटा (स) बेरकाफल-	चक्रवाल (७) घेरा-	चंडाल (७) चंडाल-ब्राह्म
मुपारी	चक्रवाकेचारेओरकाप- ^{हड}	चण्डीओरशूद्रसेजात
घोर (न) डर	चक्रांग (७) हंस	चंडालिका (स) जीविका
घोष (७) अहीरेकागां-	चक्रांगी (स) कटुकी	चंडाल्यवल्लकी (स) तथा
घोषक (७) सेतफूलकी-	चक्रा (७) सांपमात्र	चतुःशाल (न) चौक
घोषणा (स) घोकना	चक्रावत (७) गाधा	चतुर (७) पद
घ्राण (न) नाक-संघा	चक्रोरक (७) चक्रोर	चतुर्हायाणी (स) धर्मकीमो
घ्राणतर्पण (७) बड़ासुगंध	चक्षुःस्त्रवस् (७) सूर्य	चतुर्गुल (७) अमलतास
घ्रात (३) संघा	चक्षुष्य (७) सुरमा	चतुरानन (७) ब्रह्मा
च	चक्षुष्या (७) कालासुर- ^{मा}	चतुर्भद्र (न) सर्वधर्मसंयुक्त
च (अ) इकट्ठा-समा-	चक्षुस (न) आरव	चतुर्भुज (७) विष्णु
हार-इतरेतयेभा-पाद-	चंचल (३) चंचल	चतुर्वर्ती (७) धर्म, अर्थ, काम
प्ररण	चंचला (स) विजली	चतुष्पथ (न) चौराहा
चक्र (न) जलकानिकल-	चंचु (७) अंड, चैंच (स)	चत्स (न) आंगन-यज्ञका
ना-चक्रवाचकवी (७)	चटक (७) चिड़ा	चैंतर
पहिया-सेना-राज्य (न)	चटका (७) चिड़ीकीबिची	चन (अ) असंपूर्ण
चक्रकारक (न) गंधद्रव्य	चटिकाशिरस (न) पिप- ^{एम् ७०}	चंदन (७) चंदन
चक्रपाणि (७) विष्णु	चराक (७) चना	चंद्र (७) चंद-कमीला
चक्रमर्दक (७) यमारुक्ष	चराड (३) अतिकोधी	चंद्रक (७) मोरपाखेचिह्न
चक्रला (स) चक्रमोथा	चंडा (स) राक्षसीवृक्ष	चंद्रमाभा (स) नदी
चक्रवर्ती (७) महाराजाधि- ^{राज}	चंडिका (स) पार्वती	चंद्रमस (७) चंद्रमा
चक्रवर्तिनी (स) चक्रवर्त	चंडात (७) कनैल	चंद्रवाला (स) बड़ी इलायची

चंद्रशेखर (५) शिव	चरम (३) अंत	चलित (न) चली सेना
चंद्रहास (५) तलवार	चरमक्षमाभृत् (५) अ-	चलित (३) कंपा
चंद्रिका (स) चांदनी	स्तान्चलपर्वत	चविका (स) चाव वा
चपला (न) शीघ्र-पारा (५)	चराचर (३) चलनेवा	पीपर कीलकड़ी
दोषादिबिनिविचारेमाने	चरिषा (३) चलनेवाला	चयक (पुन) मदिगपा
कोउद्यत (३)	चरु (५) यज्ञकीरवीर	नकावर्त्तन
चपला (स) विजली-बड़ी	चर्चरी (स) ताली	चघाम (५) यज्ञस्थंभ
चपेरा (५) फैली अंगुली स	चर्चा (स) विचार-चंद	चाक्रिक (५) घंटेवाला
हितहाथ	नादिकालेपन	चांगोरी (स) चूक
चमार (५) मृगभेद	चर्मकषा (स) सोया	चाटकेर (५) चिड़ाका
चमरिक (५) कचनार	चर्मकार (५) चमार	चांडाल (५) चांडाल
चमस (पुन) यज्ञपात्र	चर्मन् (न) ढाल	चांडालवृत्रकी (स)
चमसी (स) तथा	चर्मप्रभेदिका (स) च-	नीचवीराणा
चम्र (स) सेना-शतनाकी	मारकान्चाकू	चांडालिका (स) तथा
सेनासंख्यासे ३ गुरी से	चर्मप्रसेविका (स)	चाराकीन (३) चनेका
नावाला	चर्मी (५) भोजपत्र-	चातक (५) पपीहा
चमरु (५) मृगभेद	ढालवाला	चाप (पुन) धनुष
चंपक (५) चमेली	चर्या (स) ध्यानी	चमर (न) चमर
चय (५) रवाई-समूह	चर्वित (३) चावगाया	चामीकर (न) सेना
चर (५) हलकारा	चल (३) चंचल	चाम्येय (५) चम्पा-
चरका (पुन) वैद्यककाग्रंथ	चलदल (५) पीपर	चमेली-नागकेसरि
चरणा (पुन) पाँव	चलन (३) कोंपेवाला	चार (५) हलकार-
चरणायुध (५) मुर्गा	चलान्चल (३) तथा	बांधना

चारही (स) कपिला, पद्म	चित्रक (५) अंड-चीता	चिलिचिम (५) जल
चारण (५) कथक	चित्रक (न) तिलक	चरणचारीमच्छली
चारु (३) सुंदर	चित्रकर (५) रंगासाज	चिवुक (न) ठोढ़ी
चार्विक्य (न) चंदनादिका	चित्रकृत (५) तेंदूररुक्ष	चिह्न (न) कलंक
चर्मण (न) समूहचर्मिका	चित्रतंडुला (स) बाधुविडंग	चीन (५) अगभेद
चालनी (स) चलनी	चित्रपणी (स) सिंहपुच्छी	चीर (न) वस्त्र
चाष (५) नीलकंठ	चित्रभानु (५) आग, सूर्य	चीरी (स) कींगुर
चिकित्सक (३) वैद्य	चित्रशिखंडिन (५) बृहस्पति	चीवर (न) मुनिवस्त्र
चिकित्सा (स) रोगका उप	चित्रशिखंडी (५) सप्तर्षि	चक्र (५) अमलवेती
चिकुर (५) बाल-विनादे	चित्रा (स) मूसकराणी-	चक्र (५) चूक
चिकिचारेमारेकोउद्यत	मूसरी - फूटफल	चक्रिका (स) चूक
चिकुरा (३) चिकना	चिंता (स) स्मरण	चुल्ल (३) चुंधा
चिंचा (स) अमिली	चिपिटक (५) चिउरा	चुल्लि (स) चूल्हा
चित (स) बुद्धि-अण्ण (अ)	चिरक्रिय (३) छिलंगा	चूचुक (न) कुचुके
चिता (स) चिता	चिरंटी (स) युवाविवाहिता	अमोकाभाषा
चिति (स) चिता	रूपीपिताकेघररहनेवाली	चूडा (स) मोरशिखा
चित्त (न) मन	चिंतन (३) पुराना	चूडामणि (५) चोटीकी मणि
चित्तविभ्रम (५) भ्रम	चिरात्राय (अ) बड़ासम	चूडाला (स) वज्रमोथा
चित्तसमुन्नति (स) प्रतिष्ठा	चिरविल्व (५) कंजारुक्ष	चूत (५) आमकारुक्ष
चित्ताभोग (५) सुखतत्पर	चिरसूत (स) बकेनीगौ	चूरी (न) चून, चूरा
चित्या (स) चिता	चिरस्य (अ) बड़ासमय	चूरीकुंतल (५) टेढ़वा
चित्र (५) चित्रविवित्र	चिराय (अ) तथा	लवाला
आश्चर्य-आलेख्य	चिल्ल (३) चुंधा	चूरी (स) परविशेष

मूल		
चुलिका (स) हाथीकाकर्णी	छगलंग्री (स) विधारा	छांदस (७) वेदस
चूया (स) हाथीकेकमर	छत्र (न) छाता	छया (स) सूर्यकी स्त्री,
वांधनेकीरस्सी	छत्रा (स) सौंफ-जल	कांति-प्रतिविंब, अनातप
चेत (अ) पक्षांतर	तरा-धनियां	क्षित (३) कटा
चेटक (७) दास	छत्राकी (स) सनाथ	क्षिद्र (न) छेदागया
चेतस (न) मन	छद (७) पत्ता-पंरव	क्षिद्रित (३) तथा
चेतकी (स) हरड़, हर	छदन (७) पत्ता	क्षिन्न (३) कटा
चेतन (७) जीव	छदिस (स) छाना	क्षिन्नरुहा (स) गुर्व
चेतना (स) बुद्धि	छद्म (न) छल	छुरिका (स) छुरी
चेल (न) कपड़ा आधम	छंद (७) अभिप्राय-	छेक (७) घरेलु पक्षी
चैत्य (न) यज्ञवेदी	आधीन	छेदन (न) कारना
चैत्र (७) चैत्रमास	छंदस (न) गायत्रीछं	ज म (३)
चैत्रय (न) कुवेरका नाम	दादि, पद्य, अभिलाष	जमात् (न) लोक, जंम
चैत्रिक (७) चैत्रमास	छन्न (३) एकांत, ठगा	जमाती (स) जमात्-
चोच (न) तज	छमी (स) कूट-शमी	लोक-छंदभेद-पृथ्वी
चोर (७) चोरी	छल (न) धोखा	जन
चोली (७) चोली	छवि (स) प्रेमा	जमात्पारा (न) पवन
चौर (७) चोर	छगा (७) वकरा	जमाल (७) गुड़, आ-
चौरिका (स) चोरी	छगी (स) वकरी	दिकी कठिवा मदिग
चौर्या (न) चोरी	छात (७) लरा, कटा	जमध (३) रवायागया
च्युत (३) चुया, टपका	छात्रसिंह (७) शिष्य	जग्धि (स) भोजन
छ	छादन (न) ठाँकना	जघन (न) स्त्रीकी ना-
छगलक (७) बकरा	छादित (३) ठँका	मिवापेड

जघनेफला(स)कटूमरि	जघुरी(न)हंसली	जम्पती(७)स्त्रीपुरुष-
जघन्य(३)अंत-अधम	जन(७)नवासाधिकारी	जप(७)वेदाभ्यास
जघन्यज(७)छेराभाईशूद्र	जनि(स)उत्पत्ति	जम्बाल(७)कीचड़
जंगम(३)चलेनेवाला	जनी(स)चकवत	जम्बु(न)जामुनकाफल
जंगमेतर(३)वृक्षादि	जनक(७)पिता	जम्बुक(७)स्यार
जंघा(स)जोंघ	जनंगम(७)चांडाल/ह	जम्बू(स)जामुनकाफल
जंघाकारिक(७)हलकारा	जनता(स)जनेकासमू	जम्भ(७)जमीरी
जंघाल(७)शीघ्रचलेनेवाला	जनन(न)जन्म,वंश	जम्भमेदी(७)इन्द्र
जरा(स)वृक्षमूल-जरा-	जननी(स)माता	जम्भल(७)जमीरी
लिपटनेवाल/कासमूह	जनपद(७)जनवास	जम्भीर(७)जमीरी-दे
जराजट(७)शिवकीजराश्री	जनयित्री(स)माता	जय(७न)आणी जीति
जराभांसी(स)श्रावधभेद	जनभुक्ति(स)लोकप्रवृ	जयन(न)जीत
जरिला(स)जराभांसी	जनार्दन(७)विष्णु	जयंत(७)इंद्रकापुत्र
जटुल(७)लहसनवाला	जनाश्रय(७)मंडफ	जयंती(स)जूही नवास
जठर(७-न)पेट-कठिन(३)	जनी(स)पुत्रवद्	जाया(स)तथा
वृद्ध(३)मूर्ख	जनुस(न)जन्म	जय्या(७)जीतनेकोसमर्थ
जड(३)ठंडुपर्यायवाची-	जन्तु(७)जीव	जराण(७)जीरा
जडा(स)कौंच	जंतुफल(७)गूलरि	जरत(७)बूढ़ापुरुष
जनु(न)लारव	जन्म(न)उत्पत्ति	जद्धव(७)बूढ़ावैल
जनुक(न)हैंडा	जन्मी(७)जन्म	जरा(स)बुढ़ापा
जनुका(स)विमगादर	जन्या(७)वरकामित्र	जरायु(७)गर्भजाल
जनुका(स)चकवत	जन्या(न)लडाई,निंदित	जरायुज(३)मनुष्यपशु
जंतुका(स)चकवत	कद(३)	आदि
जंतुका(स)चकवत	जन्मु(७)जीव	

जल(न)पानी	जहुतनया(स)गंगा	जाबूनद(न)सौना
जलज(प)जलमहुआ	जागर(प)कवच	जायक(न)पीतंबदन
जलजंतु(प)जलजीव	जगार(स)जगाना	जाया(स)विवाहितास्त्री
जलधर(प)मेघ	जगारिता(३)जगनेवाला	जायाजीव(प)जट
जलानधि(प)समुद्र	जगारुक्त(३)तथा	जायापती(प)स्त्रीपुरुष
जलनिर्गम(प)नालीनल	जगार्या(स)जगाना	जायु(प)औषध
जलमीली(स)सिवार	जांगुलिक(प)विषेय	जार(प)दिनार
जलप्राय(३)जलयुक्तदेश	जाधिक(प)हलकार	जारज(प)औसैउत्पन्न
जलमुक्(प)मेघ	जारलि(सन)मरुआ	जाल(न)नामविशेष
जलबाल(प)जलसाँप	जात(न)जाति	समूह-सन्कीरसी-
जलश्रुक्ति(स)घोंघा	जातवेद(प)अग्नि	करोका,अधफुलीकली
जलाधार(प)जलस्थान	जातरूप(न)सौना	जालक(न)नईकली
जलोच्छ्वास(प)नहर	जातापत्या(स)प्रसूता	जालिक(प)जालबनने
जलोका(स)जौंक	जाति(स)चमेली,जन्म- जाति	वाला [३]
जलोका(बहु)सजौंक	जातिफल(न)जंयफल	जाल्म(प)नीच,अविच-
जलफि(३)अवाक्यकाकह नेवाला	जातीकोश(न)तथा	जाली(स)चचेडा
जलिप्त(३)कहा	जातु(अ)किसीकाल	जिंमी(स)मज्जीठ
जब (५)वेगवेगी	जातोक्ष(प)कलोरेवैल	जिघत्सु(३)भूखा
जवन(प)वेड़ेवेगकाघोड़ा	जानु(प)नघटना	जितर(प)जीतनेवाला
वेगी(न)वेग	जगाल(प)भडरिया	जिन(प)जिनबाबुध
जवनिका(स)कनात	जगता(प)दामाद	जिष(प)इंद्र-जीतने
जवापथ(न)गुडहल	जगि(स)वहन,कुलवधू	वस्त्रा [गादर]
जवाधिक(प)वेड़ेवेगकाघो	जाकवा(न)जामुनकाफल	जिनपत्रा(स)चिम-

जिह्वा (३) ग्रेहा, आलसी	जीविका (स) दन्ति	ज्ञाता (३) जाननेवाला
जिह्वा (५) सर्पमात्र	जीवितकाल (५) आयुर्दी	ज्ञातेय (न) गोत्रसमूह
जिह्वा (स) जीव	जुगुप्सा (स) निन्दा	ज्ञान (न) मोक्षकी बुद्धि
जीना (५) वृद्धा पुरुष	जुगा (५) विधारा	ज्ञानी (५) ज्योतिषी
जीमूता (५) मेघ-देवता	जुहू (स) सुवाकाभेद	ज्या (स) पृथ्वी-धनुषकी
पर्वत-विंदाल	जृति (स) वेठा	प्रत्यंचा-चिल्ला
जीरका (५) जीरा	जृर्ति (स) ज्वर	ज्याघातवाराणा (स न)
जीर्ण (५) वृद्धा पुरुष	जृम्भ (३) जम्हाई	दास्ताना
जीर्णवस्त्र (न) पुराना वस्त्र	जृम्भा (न) जम्हाई	ज्यानि (स) जीर्ण
जीर्णि (स) पुराना	जिता (५) जीतनेवाला	ज्यायस्वाज्यायान्
जीव (५) बृहस्पति, प्राणि	जिमन (न) रवाना	(५) अतिवृद्धा पुरुष-
जीवक (५) विजयसार, जी	जिय (५) जीतनेके योग्य	स्तुतिके योग्य
जीवजीव (५) पक्षी विशेष	जैत्र (५) जीतनेवाला	ज्येष्ठा (३) बड़ा भाई, अयु
जीवन (न) जल, जीविका	जैवातक (५) मृन्दमा-	ज्येष्ठा (५) ज्येष्ठकामहीना
जीवनी (स) रत्नज्योति	जैव्य (अ) अवस्थावाला (३) कु	ज्योतिर्गंगा (५) जुगनू
जीवनीया (स) तथा	जैवाका (न) अगुरु	ज्योतिष्मती (स) मालका
जीवनौषध (न) जीना	जोष (अ) चुपचाप, सुख	ज्योतिस् (न) प्रकाश-
जीवन्तिका (स) अमरवेल	ज्ञ (५) पंडित-बुध	नक्षत्र-दृष्टि
छिलोय-गुर्च, विंदाल	ज्ञपित (३) जानागया	ज्योत्स्ना (स) चान्दनी
जीवन्ती (स) रत्नज्योति	ज्ञप्त (३) जानागया	ज्योत्स्नी (स) चान्दनी-
जीवा (स) तथा	ज्ञप्ति (स) बुद्धि	रात्रि-चंचेडा / की
जीवातु (५ न) जीना	ज्ञातसिद्धांत (५) ज्योति	ज्योतिषिक (५) ज्योति-
जीवन्तक (५) चिड़ीमार	ज्ञाति (५) जातिजन	ज्वर (५) ज्वर, ताप

ज्वलन(७) अग्नि	डमरु(७) राजा	तंडुलीय(७) चौराई
ज्वाल(७) स) आगकी ज्वा	डमर(७) नगर	ततर(अ) हेतु
ऊ	डहु(७) बड़हल	तत(न) वीरणा का शब्द
ऊटा(स) भूमि, माँवला	डिंडीम(७) बाजेका भेद	तत्काल(७) वर्तमान समय
ऊरामना(स) तथा	डिम्ब(७) लूटना	तत्क्रिय(३) विनाम जूरी
ऊरिति(अ) शीघ्रता वाचक	डिम्बा(७) बच्चा-भूर्व	लिये काम करने वाला
ऊर्जर(७) ऊर्जा-बाजेका	डिम्बा(स) दूधपीने वाला	तत्पत्री(स) हीमकी पत्ती
ऊर(७) ऊर्जा	डुंडुम(७) निर्विष साप	तत्पर(३) लीन
ऊल्लरी(स) मालर	ढ	तत्व(न) देर से नम्र
ऊष(७) भच्छी	ढका(स) ढोल	ततः(अ) हेतु
ऊषा(स) बहुप्रकार की मि-	ढकिका(३) आठक भर	तथर(अ) तै से
ऊदल(७) काली पाठरि	जिसरे तमें बोया जाय	तथागत(७) जिन, बुध
ऊवुक(७) काऊ	त	तथ्य(न) सत्य
ऊंटी(स) पियावांसा	तक्र(न) मठा	तदा(अ) तिस समय
ऊल्लिका(स) ऊँगर	तक्षक(७) सर्प, बूढ़	तदात्व(न) वर्तमान समय
ऊरुका(स) ऊँगर	तक्षा(७) बूढ़	तदानीं(अ) तिस काल
ट	तट(३) तीर	तनपा(स) दूधपीने वाले
टंक(७) टांकी	तरिनी(स) नदी	वालक
टिट्टिमका(७) टिटहरी	तडागा(७) नाला व	तनय(७) पुत्र
टीका(स) व्याख्या	तडिज(स) बिजली	तनया(स) पुत्री
टुंडुका(७) सरि वन आलू	तडितकर(७) मेघ	तनु(स) देह थोड़ा-वि
ड	तंडक(७) उत्पात	खला(३) खाल
डमर(७) लूटना	तंडुल(७) धान विडंगा	डुंडु(न) कक्क

तनू (स) शरीर	तमा (७) अंधेरा - राहु	तस (न) मांस
तनूला (३) थोड़ा किया	तमस (न) राहु तमोगु-	तस्वी (७) वेणी शूर (३)
तनूपात (७) आठा	ए अंधेरा	तरि (स) नाव
तनूरुह (न) पंख, बाल	तमस्विनी (स) रात्रि	तरु (७) वृक्ष
(७ न)	तमल (७) वृक्ष विशेष	तरुणा (७) युवा पुरुष
तनु (७) सूत	तमालपत्र (न) तिलक	तरुणी (स) ज्वान स्त्री
तनुवाय (७) मकरी	तमिस्र (न) अंधेरा	तर्क्य (७) ऊह तर्क
कोरी	तमिस्रा (स) रात्रि	तर्कारी (स) रवासन
तनुभा (७) सखों	तमी (स) रात्रि	तर्जनी (स) अंगुली अग्र-
तंत्र (न) प्रधान - सिद्ध	तमोनुद (७) चंद्र-आ	ठाके पास की
तंत्रक (३) नूतन वस्त्र	ठा-सूर्य	तर्णाक (७) नया वस्त्र
तंत्रिका (स) मिलोय	तस्सु (७) चीता	तर्द (७ स) काठकी कस्की
तंद्री (स) आलस्य-निद्रा	तंठा (७) लहर	तर्पण (न) पितृयज्ञ-महा
तपःलेश सह (७) तप-	तंमिनी (स) नदी	यज्ञ-अघाया
स्याकेलेशको सहना	तरणा (न) गद्दी मूल	तर्मी (न) यज्ञ संभका
तप (७) ग्रीष्म ऋतु-रू-	तरिणी (स) ज्ञाव	तला (स न) धनुषादस्तान
च्छत्रादि (न) कर्म (न)	तरिणी (७) सूर्य-धी	तल (न) नीचे सरूप (न ७)
तपस (७) आह्मास	गुवार	तलिन् (३) बिरला अल्प
तपन (७) सूर्य-नक्षत्र	तरणाय (न) उतराई	तल्प (७ न) शाय्या -
तपनीय (न) सौना	तरल (७) हार के बीच	अरारी, स्त्री
तपस्य (७) फागुन मास	कीमरी, चंचल (३)	तल्लज (७) शुभ
तपस्वी (७) तपसी	तरला (स) लप्सी	तर्ष (७) मनोरथ प्यास
तपस्विनी (स) जयामां-	तस् (न) वेला, पाकसी	तष्ट (३) थोड़ा किया

तस्कर (७) चोर	तार्क्ष्य (७) गरुड़ घोड़ा	तिथिरि (७) तीतर
तांडव (७-४) नाँचना	तार्क्ष्यशैल (४) रसोत	तिथि (७) तिथि
तात (७) पिता	ताल (७) तालदेना	तिनिश (७) तेंदुआ
तांत्रिक (७) शास्त्री	तृक्षविशेष-अग्रग	तिंतिडी (स) अभिली
तापस (७) तपसी	सेमध्यमातकका	तिंतिडीक (न) चूक
तापसतरु (७) गोंदनी-प	भाग हरताल (न)	तिंदुका (७) तेंदुआ
तापिच्छ (७) तमालवृक्ष	तालपत्र (न) टेढी	तिमि (७) मच्छली
तामरस (न) कमल	तालपरी (स) तालीस	तिमिंताल (७) जल
ताम्रली (स) आंवला	ताम्रमूलिका (स) भूस	चस्जीवमात्र
तामसी (स) आंधीरात	तालचुंतक (न) पंखा	तिमित (३) गीला
ताम्रक (न) तावाँ	तालंक (७) बलदेव	तिमिर (न) अंधेरा
ताम्रकरी (स) पश्चिम	ताली (स) आबला-	तिरस (अ) छिपना-
दिग्गजकीस्त्री	तालभेद	टेढीगति-टेढा
ताम्रकुट्टक (७) ठेरा	तालु (न) तालुआ	तिरस्कराणी (स) कना
ताम्रचूड (७) मुर्गी	तम्र (अ) संपूर्ण-अव	तिरस्त्रिया (स) अप्पना
तांबूलवल्ली (स) पान	धि-मान-अवधारण	तिरीट (७) लोधा
ताम्रवूली (स) पान	तिक्त (७) रस	तिरोधान (न) छापना
तार (७) अक्षर-अच्छा	तिक्तक (७) पर वर	तिरोहित (३) छिपा
तारकजित (७) स्वामिका	तिक्तशक (७) वरनावृक्ष	तिर्यक् (३) मिरछाजा
तार्किक कीपतली	तिठमा (न) अतिउषा	नेवाला
तारका (स) नक्षत्र-आंव	तित ३ (७) चलनी	तिल (३) तिलकावेत
तारा (स) नक्षत्र	तितिक्षा (स) सहना	तिलक (७) तिलक
तारुण्य (न) तरुणाई	तितिष्ठ (३) सहनशील	तिलवाला तिल (न)

कालानोन (न)	तुंगी (स) बंवई	तुरुष्क (७) लोहवान
तिलकालक (७) तिलवाला	तुच्छ (३) खाली	तुला (स) १०० पलकी
तिलपणी (स) स्तब्ध	तुंड (न) मुख	तोलविशेष १६
तिलपिंज (७) निष्कलतिल	तुंडिकेरी (स) कपास	तुलकोटि (७) पायजे
तिलपेज (७) तथा	तुंडि (३) टुंडवाला	तुल्य (३) समान
तिलित्स (७) छेरासाँप	तुंडिल (३) तथा	तुल्यपान (न) साथ
तिल (३) तिल	तुल्य (न) रसोत	पीना
तिल्व (७) लोध	तुल्या (स) नील-इला	तुवर (७) न) रस
तिथ्य (७) पुष्यनक्षत्र-क	तुल्यांजन (न) दूतिया	तुष (७) बेहड़ा भूसी
तिथ्यफला (स) आंवला	तुंद (न) पेट	तुषार (७) ठंड-ठंडप
तीक्ष्ण (न) बहुतर्मा	तुंदपरिमृज (७) आल	र्यायी (३) वित्त
लोहा-विष-युद्ध-तेज-	तुंदिक (७) बड़ापेटवाला	तुषित (७) गारादे
तेजस्पर्श (३)	तुंदिल (७) तथा	तुषीका (३) चुपाहना
तीक्ष्णमांधक (७) सहजना	तुन्न (७) तूनवृक्ष	तुषींशील (३) तथा
तीर (न) किनारा	तुन्नवाय (७) दर्जी	तुहिन (न) ठंड
तीर्थ (न) कृपादिजलाश-	तुवरिका (स) आहर	तूरा (७) तरकस
शास्त्र-ऋषियोंसेसे-	तुंवी (स) लोकी	तूरी (स) तरकस
वित्तजल-गुरु	तुमुल (७) न) वीरेंका	तूरीर (७) तथा
तीव्र (न) अतिबहुत	तुखा (७) घोड़ा	तूरी (न) शीघ्र
तीव्रवेदना (स) पीड़ा	तुखा (७) घोड़ा	तूलिका (स) सलाई
तु (अ) भेद-पादपूरणा	तुखाम्मा (७) घोड़ा	तूल (न) तूत रुई (७)
निष्प्रय	तुखावदन (७) किन्नर	तूषीकां (अ) चु
तुंगा (७) नागकेसरि ३	तुसाहा (७) इन्द्र	पचापरहना

तूष्णीं(अ) चुपचाप	निमन(न) कली	त्रय(न) पतलादही
तृण(न) तृण	तृजसावर्त्तनी(स) घड़ि-	त्रयी(स) वेदसमूह
तृणदुम(७) रज्जुमेद	तृतिर(न) तीतरेकागुंड	त्रस(३) चलेनवाला
तृणधान्य(न) मुनिअन्न	तृलपार्णिक(न) चंदनभेद	त्रसर(७) नरीजुलाहे
तृणध्वज(७) वांस	तृलपयिका(स) चमगाद	त्रस्तु(३) उगथा
तृणराज(७) तालरक्ष	तृलीन(३) तिलैकारेका	त्राण(३) रक्षित, रक्षा
तृणशून्य(न) वेला	तृष(७) पौषमास	त्रात(३) रक्षित
तृणया(स) घूरा	तृक(न) पुत्र, कन्या	त्रायन्ती(स) विलापिनी
तृतीयाकृत(३) तीनवार	तृकक(७) पपीहा	त्रायमाण(स) चिणयते
जुतेरेवेत	तृकन(७) हरितजव	का फल
तृतीयाप्रकृति(स) नपुं	तृत्र(न) पैनाजिससे	त्रास(७) डर
तृप्त(३) हर्षित	तृदन(न) वैनेकेहाक	त्रिक(न) पीठकेपांससे
तृप्ति(स) अघाया	निकापैना	त्रिचेका भाग
तृष(स) प्यास	तृमर(पुन) गुर्ज	त्रिकुत(७) त्रिकूटप
तृष्णाकृ(३) लोभी	तृय(न) जल	त्रिकु(न) सौंठि मि-
तृष्णा(स) वांछा-पिपा	तृयपिप्यली(स) जल	स्व, पीपरी
तेजन(७) वांस	तृरण(पुन) धरकाफरक	त्रिका(स) चौरवटा
तेजनक(७) शरकंडा	तृर्यत्रिक(न) नाच, बाजा	त्रिकूट(७) पर्वत
तेजनी(स) भूर्वा	त्यक्त(३) त्यागा	त्रिरवट्ट(न) श्रवण
तेजित(३) तीरवा	त्यक्त(३) त्यागा	त्रिरवट्टी(स) श्रया
तेज(न) वीर्य-प्रभाव	त्याग(७) दान	त्रिगुणाकृत(३) तीन
दीप्ति-बल	त्रपा(स) लज्जा	वारके जुतेरेवेत
तेम(७) मीलाकरना	त्रप(न) राँगा	त्रितक्ष(सन) तीनब-
		त्रितक्षी(७) तीनब

त्रिदश (७) देवता	त्रिहल्या (३) तीनवार के जु	त्वष्टा (७) बुद्धि-विश्वक-
त्रिदशालय (७) स्वर्ग	तेरेवेत	मौर्मा-सूर्य
त्रिदिव (७) स्वर्ग	त्रिहायणी (स) श्वर्ष की	त्व (३) भिन्न
त्रिदिवेश (७) देवता	त्रुटि (स) इलायची-सम	त्रिषांपति (७) सूर्य
त्रिपथगा (स) गंगा	य-थोड़ा-संदेह	त्रिष (स) तेज शोभा
त्रिपटा (स) निसेत-	त्रुटी (स) तथा	त्सरु (७) तलवार की मूठ
गजराती इलायची	त्र्युषण (न) सौंठि मिर्च	द
त्रिपुरांतक (७) शिव	पीपर का मिला पदार्थ	दंश (७) डांस-मच्छर
त्रिफला (स) हर्द, बहे	त्रेता (स) तीनों अग्नि-	दंशन (न) काकद
डा, आंवला	योंकानाम-दूसरा युग	दंशी (स) मसाजीव
त्रिमंडी (स) श्वेत तिधा-	त्रोटि (स) चोच	दंशित (३) मंत्रादि से क्षित
निसेत	त्र्यम्बक (७) शिव	दंशी (७) शूकर
त्रियामा (स) रात्रि	त्र्यवक सरव (७) कुवेर	दक्ष (७) चतुर
त्रिलोचन (७) शिव	त्वक्षीरा (स) वंशलोचन	दक्षिणा (३) उदार
त्रिवर्ग (७) धर्म, अर्थ, काम	त्वक्षपत्र (न) तज	दक्षिणास्थ (७) गृथवान
काम, क्षय स्थान वृद्धि	त्वक्तार (७) बांस	दक्षिणाग्नि (७) यज्ञाग्नि
त्रिविष्टप (न) स्वर्ग	त्वच् (स) वक्कल-चाम	दक्षिणार्ह (३) दक्षिणा के
त्रिविक्रम (७) विष्णु	त्वच (न) तज	योमय
त्रिवृत (स) निसेत वा	त्वचिसार (७) बांस	दक्षिणीय (३) तथा
श्वेत तिधार	त्वरा (७) स वेग	दक्षिणोर्मा (७) दहने अंग
त्रिवृता (स) तथा	त्वरित (न) शीघ्र	मेघावचालक मृग
त्रिसीत्य (३) तीनवार के	त्वरीतोदित (न) धमका	दाघ (३) जरा
त्रिष्रोतस (स) गंगा	त्वष्ट (३) थोड़ा किया	दधिक (स) जला अन्न

दंड(७) सूर्यकेपासका	दंती(७) हाथी-	दर्बकर(७) सूर्य
ग्रह-लाठीसेदंडदेना	दंतशूक(७) सूर्यमात्र	दर्श(७) अमावसवा
आदि(७-न)	दम्भ(३) थोड़ा नि	अमवसकेदिनकायज्ञ
दंडधर(७) यमराज	दम(७) दंड इन्द्रियजी	दर्शक(७) हारपाल
दंडनीति(स) न्याय	दमण(७) इन्द्रियजीत	दर्शन(न) देवना
दंडविष्कम्भ(७) रवंभा	दमित(३) तथा	दल(न) पत्ता नि
दंडाहत(न) मठा	दमुनस(७) आना	दव(७) वन वनकीआ
ददुष्ट(७) पमार	दम्पती(७) स्त्रीपुरुष	दवीष्ट(३) अतिदूर
ददुगा(३) दादवाला	दंभ(७) ठग छल	दवीयस(३) तथा
ददुरोगी(३) दादवाला	दंभोलि(७) वज्र	दशन(७-न) दांत
दधित्य(७) कैथ	दम्य(७) तरावकुड़ा	दशनवासस(न) होठ
दधिफल(७) कैथ	दया(स) कृपा	दशकल(७) जिन बुध
दधिशक्तु(७-बहु) दही	दयालु(३) कृपालु	दशमी(७) अतिबूढ़
सेमिलाहुआसन्त	दयित(३) प्यारा	दशमीस्थ(७) अति-
दनुज(७) असुर	दा(७-न) भय गद्गु	बूढ़-क्षीणरोमा
दन्त(७) दांत	दात(स) स्नेहजाति	दशा(७-स-बहु)
दन्तधावन(७) कथा	दरिद्र(३) दीन	दस्त्रकीगोट-अवस्था
दंतभाग(७) हाथीकेआ	दरी(स) खनाईहुईगुफा	दस्यु(७) चोर शत्रु
मेकादंतभाग	दरु(७) मेंडक	दस्त(७) स्पर्शकवैद्य
दंतशठ(७) कैथ/जभीरी	दर्पक(७) कामदेव	दहन(७) आग
दंतशठ(स) चूक	दर्पणा(७-न) शीशा	दाक्षाय्य(७) मीध
दंतावल(७) हाथी	दर्भ(७) डाम	दाक्षायिणी(स) द-
दंतिका(स) जयपाल-व	दर्वी(स) करछी	दक्षकीकन्या

दाक्षिराय(३) दक्षिणादेने	दारु(न.पु) काठ-देव	दिनांत(न) सांम
केयोम्य	दारुणा(न) डर ^{दारु} _{हि}	दिवस(पुन) दिन
दाडिम(७) अनार ^{जि}	दारुहरिद्रा(स) दारुहल	दिवस्पाती(७) इंद्र
दाडिमपुष्पक(७) लालकं	दारुहस्तक(७) काठकी	दिव(स) स्वर्ग, आकाश
दांडपाता(स) लाठीकागि	करछी ^{राजीव}	दिवा(अ) दिनार्थक
दात्यूह(७) कालाकाग	दार्वाघाट(७) कठफो	दिवाकर(७) सूर्य
दात्र(न) हंसिया	दार्विका(स) गोभी-रोसे	दिवाकीर्ति(७) नाईवा
दात(३) कटा ^{मद}	दार्वी(स) दारुहलदी	नाउ-चांडाल
दान(न) त्याग-हाथीका	दाविक(३) देविकासेउ- त्यन्न	दिविषद्(७) देवता
दानव(७) असुर	दाशपुर(न) मोथा ^आ	दिवौकस(७) देवता-
दानवारि(७) देवता	दास(७) धीवर-रहलु-	चातक/नारीकाशक
दानशेंड(३) अतिदानी	दासी(स) कालेफूलकी	दिव्य(न) नेत्रवालावा
दांत(७) तपस्याकेलेश	दासेय(७) दास	दिव्योमपादक(३) देवता
कासहना-इंद्रियजीत(३)	दासेर(७) दास	दिश(स) दिशा ^{हि}
दान्ति(स) इंद्रियजीत	दिगम्बर(३) नंगा	दिश्य(३) दिशामेंहोने
दापित(३) अहंकाररहित	दिग्ध(३) विषकेभरेवान	दिष्ट(पुन) समयभाष्य
दाम्नी(स) डोरी	-चंदनादिलगाहुआ	दिष्टा(अ) आनंद
दामोदर(७) विषगु	दित(३) कटा	दिष्टात(७) मृत्यु
दाम्भिक(३) छली	दितिसुत(७) असुर	दीक्षित(७) यज्ञमेंशि
दायाद(७) सुत-बांधव	दिधिषु(७) दोवारविवा	क्षाकरनेवाला
दारा(स) बहु० स्त्री	हीस्त्रीकापति	दीदिवि(७) मात
दाद(७) विषभेद	दीधिषू(७) तथा	दीधित(स) किररा
दारित(३) फाड़ा	दिन(न) दिवस	दीन(३) दरिद्री

दीनार (७) निष्कमान	दुरध्व (७) कुमारी	दुष्कृत (न) पाप
दीप (७) दीवा	दुलि (स) ककुबी	दुष्टु (आ) निंदा
दीपक (७) अजवायन-	दुरालभा (स) जवासा	दुष्पत्र (७) वृक्षभेद
मोकीचोरी - प्रकाश	दुरित (न) पाप	दुष्प (न) डेर तंबू
दीप्ति (स) तेज	दुरोदर (७) जुआरी-	दुहिता (स) पुत्री
दीप्य (७) अजभेद	वाजी - जुआ (न)	दुहितुः पति (७) दम्भाद
दीर्घ (३) लंबा	दुर्ग (न) गढ	दूत (७) दूत
दीर्घकोशिक (स) जौंक	दुर्गत (३) दरिद्र	दूती (स) दूती
दीर्घदर्शी (७) पंडित	दुर्गति (स) नरक	दूत्य (न) दूतका काम
दीर्घष्ट (७) सूर्यमात्र	दुर्गंध (७) वुरागंध	दून (३) तपा
दीर्घवृन्त (७) अरलू	दुर्गसंचर (७) कोरमगी	दूर (३) दूर
दीर्घस्तत्र (३) ठिलंगा	दुर्गा (स) पार्वती	दूरदर्शी (७) पंडित
दीर्घिका (स) वावड़ी	दुर्जन (३) दुष्ट	दूर्वा (स) दूव
दुःख (३) पीड़ा	दुर्दिन (न) मेघसे	दूषा (न) बहु वस्त्रका
दुःप्रधर्षणी (स) वेंदान	दुर्निक (न) ववसीर	दूषिका (स) कींचड
दुष्मम् (अ) निंद्य	दुर्नम (७) जौंकभेद	दृढ (न) अतिशय
दुःस्पर्श (७) जवासा	दुर्बल (७) लरा	वहुत कठिन (३)
दुःस्पर्श (स) भटकटाई	दुर्मना (३) उदास	समर्थ (३) मोटा (३)
दुकूल (न) रेशमकेरुपड़ा	दुर्मुख (३) अप्रियकह	दृढबंधि (३) वड़मि-
दुग्ध (न) दूध	दुर्वण (न) चाँदी	लापी
दुग्धिका (स) दुधिया	दुर्विध (३) दरिद्र	दृति (७) मप्रक
दुदुम (७) हराप्याज	दुर्हृद (७) शत्रु	दृढ (३) गुधियाया
दुंदुभि (७) नगारा - अक्ष (स)	दुश्चयवन (७) इंद्र	दृश (स) आँख ज्ञान

दृष्ट(स)पथर	देवभूय(न)देवमैमिल	देव(न)भाय-देव-
दृष्ट(न)दृष्टफल	देवमातृक(३)वर्षापा-	तार्थअर्थात्अंगुलिये
दृष्टरजस(स)प्रथम	लितदेश	काआगा
दृष्टा(१)गर्तकीदिशास्त्र-	देव(१)देव	देवज्ञ(१)ज्योतिषी
उदाहरण	देवल(१)पंडा	देवज्ञा(स)पंडितास्त्री
दृष्टि(स)आरव-ज्ञान-	देवसभा(स)देवतैकी	देवता(१)देवता देव
देव(१)राजा	देवाजीव(१)पुजारी	दिन
देवकुसुम(न)लौंग	देवाजीवी(१)तथा	दोला(स)नील-डो
देवकीनंदन(१)विषा	देवी(स)बड़ीरानी-पि	दोषज्ञ(१)वैद्य-पंडित
देववात(न)विनाबनाई	उरणाक	दोषा(अ)रात्रि
गफा	देव(१)देव	दोषैकदृष्ट(३)केवलदो
देववातक(न)सरोवर	देव(१)देवता	देसबादोः(१)वाँह
देवघृत्(३)देवपूजक	दिश(१)देश	दोहवा(१)मनोरथ
देवच्छा(१)१००लड-	दिशरूप(न)न्याय	दोहदवती(स)गर्भिणी
काहार	देवसायुज्य(न)देव	कीअभिलाष
देवजगधक(न)सुगंध	देह(१)न)शरीर	द्युः(अ)आकाश
देवता(स)देवता	देहली(स)झोड़ी	द्युति(स)शेभा,तेज
देवताड(१)वन्दाल	देतेय(१)असुर	द्युमाणि(१)सूर्य
देवदारु(१)वृक्षभेद	देत्य(१)असुर	द्युम्न(न)धन
देवदूत(३)पूजक	देत्यगुप्त(१)भृगु	द्युत(१)जुआ
देवन(१)पांशा-देव(न)	देत्या(स)तालीसफ	द्युतकारक(१)फड़वा
देववल्लभा(१)जामाके	देत्यारि(१)विषाड	द्युतकृत(१)जुआरी
सरि	देद्य(न)वस्त्रकील	द्यो(स)स्वर्ग

द्योत (७) सूर्यकोतेज	दुवय (न) तोलनाप	द्वास्थ (७) द्वारपाल
द्रव (७) क्रीडा भागना	दुहिण (७) ब्रह्मा	द्वास्थित (७) तथा
द्रवती (स) मूसा कारणी	द्रोण (७) तोलभेद	द्विगुणकृत (३) दोवार
मूसरी धन बल	काम-द्रोणाचार्य	जुतेरेवेत ह्यण पक्षी
द्रविण (न) पराक्रमी	द्रोणकाक (७) डोम	द्विज (७) पक्षी-दंत-ब्रा
द्रविणंतरस (न) पाक	काठा दूधकीगौ	द्विजएज (७) चंद्रमा
द्रव्य (न) धन-सुंदर	द्रोणक्षीण (स) १० सेर	द्विजा (स) गगनधूरि रेणु
जीव-पृथ्वीआदि	द्रोणदुघा (स) तथा	द्विजाति (७) ब्राह्मण
द्राक् (अ) शीघ्र	द्रोणी (स) डोंगी, नील	द्विजिदू (७) सर्प-चुगल
द्राक्षा (स) दारव	द्रोहचिंतन (न) द्रोही	द्वितीया (स) विवाहितास्त्री
द्राघिष्ट (३) अतिप्रय	द्रोणिक (३) द्रोणमा	द्वितायाकृत (३) दोवार
द्राव (७) भागना	वजिसरेवेतमेंवोया	जुतेरेवेत
द्राविडक (७) कचूर	जाय लिह	द्विप (७) हाथी
द्रु (७) वृक्ष	द्रुद्ध (न) जोड़ा-क	द्विपाद्य (७) दूनादंड
द्रुकिलिम (न) देवद	द्रुयातिग (७) व्या-	द्विरद (७) हाथी
द्रुघण (७) मुद्गर	सादिन्नृषि	द्विरेफ (७) भौरा
द्रुण (७) बीछी	द्रुदशंगुल (७) वि	द्विवर्षा (स) दोवर्षकी
द्रुत (न) शीघ्र-पिघ	द्रुदशगुल (७) सूर्य	द्विष (७) वैरी
ला (३) पिछला (३)	द्रुपर (७) संशय-	द्विषत (७) शत्रु
द्रुता (३) रसीला	युग	द्विष्टाश (अ) आनंदार्थ
द्रुम (७) वृक्ष	द्वार (स) द्वार	द्विहल्य (३) दोवारजु-
द्रुमामय (७) लारव	द्वार (न) द्वार	तारवेत-दोहलोंसेजु
द्रुमोत्पल (७) कनेर	द्वारपाल (७) पौलि	तारवेत

द्विहायनी (स) २ वर्ष की ली	धनुर्मध्य (न) चापकी मू	धर्मपत्तन (न) मिर्च
द्वीप (५-न) टापू	धनुष्यर (५) चिरोंजी	धर्मराज (५) जिनवावुध
द्वीपवती (स) नदी	धनुष्मान (५) चापधारी	यमराज-युधिष्ठिर
द्वीपी (५) सिंह	धनुस (५-न) कमान	धर्मसंहिता (स) स्मृति
द्वेष (५) शत्रु	धन्य (३) भाग्यवान्	धर्मिणी (स) छिनारि
द्वेष्य (३) चैके योग्य	धन्याक (न) धनियां	धवा (५) दुलहा-कथा
द्विध (न) बलवान् के साथ मेल	धन्यान् (न) कांजी	मनुष्य-पति
द्विप (३) व्याघ्र के चाम से मेल	धन्वयास (५) जवासा	धवल (५) श्वेत
हुआरथ	धन्वन् (५) मरुभूमि-ध	धवला (स) चित्रविक्रि
द्विमातुर (५) गणेश	नुष (न)	धातकी (स) आवला
द्विष्ट (न) तामा	धमन (५) नरकुल	धातु (५) पहाड़ से उत्पन्न
ध	धमनी (स) परिवार नाडी	वस्तु-श्लेष्मादि-रसर
धर (५) तराजू	धम्मिल (५) बालों का बूझातादि-महाभूत-महाभू	
धन (न) द्रव्य	धर (५) पहाड़	तों के गुणों धादि-इंद्रि
धनंजय (५) आग	धरणि (स) धरती	यादि-मनःशिलादि
धनद (५) कुबेर	धरा (स) धरती	शब्दयोनि अर्थात् भू-स
धनहरी (स) रक्षसी-रु	धरित्री (स) धरती	त्तादि
धनाधिप (५) कुबेर	धर्म (५-न) पुण्य-वेदवि	धात (५) ब्रह्मा
धनी (५) धनवान्	धि-यमराज-न्याय	धातुप्रधिका (स) आ
धन्वी (५) धनुषधारी	स्वभाव-आचार-अ	धर्त्री (स) उपमाता-ध
धनिष्ठा (स) नक्षत्र विशेष	मृतपीनेवाला	रती-आमलेकारक्ष
धनु (५) धनुष	धर्मचिंता (स) धर्मकी उ	धाना (स) बहु-वैरी
धनुर्द्वर (५) धनुधारी	धर्मध्वजी (५) ठा	धानुष्क (५) धनुषधारी

धान्य(न)सामान्यअन्न	धीमत्(पु)परिडत	धूम्या(स)धुआँकासमूह
धान्याह्न(न)कौंजी	धीमती(स)बुद्धिवानी	धूम्याट(पु)बुटकबैठ्या
धाम(न)गृह-देह-प्रभाव	धीर(न)केसरी-पंडितपु	धूम(पु)धूमिल
धामार्गव(पु)विरचि	धीवरा(पु)मल्लाह	धूर्जटि(पु)शिव
धाया(स)आमजल	धीशक्ति(स)बुद्धिकीश	धूर्ता(पु)धतरा-जुआरी
नेकीऋच	धीसचिव(पु)मंजी	धूले(स)धूरी
धारण(न)वाहन	धुत(३२)कपाहुआ	धूसरा(पु)ककुसेत
धारणा(स)मर्यादा	धुनी(स)नदी	धृति(स)धारण-धैर्य
धार(स)घोड़ेकेपाँव	धुंधर(पु)बलवानवैल	धृष्ट(३२)ढीठ
कीचाल	धुरवाधूः(स)धुरी	धृष्टाडिव्यात(३२)ढीठ
धारधर(पु)मेघ	धुरीण(पु)बलवानवैल	धृष्टाज(३२)ढीठ
धारसंपात(पु)मेघ	धुर्य(पु)तथा	धृष्टि(पु)किरण
धर्तारष्ट्र(पु)वनतीतर	धुर्वह(पु)तथा	धेनु(स)स्वरितकीव्याहीगौ
धादनी(स)रिंहफुट्टी	धुवित्र(न)मृगतर्मसर	धेनुका(स)हिथिनी-नश्वी
धिकू(त्र)निंद	धुस्तर(पु)धतरा	धेनुष्या(स)गिरेधरीगौ
धिकृत(३)धिकारी	धू(स)धुरी	धेनुक(न)धेनुआँकासमूह
धिषाध(न)स्थान	धूत(३२)त्यागा	धैवत(पु)मानविद्याकास्वर
नक्षत्र-आग	धूपायित(३२)तपाया	धैतकौशेय(न)रेणमीधु-
धिषणा(पु)गृहस्पति	धूपित(३२)तथा	येवस्त्र
धिषणा(स)बुद्धि	धूमकेतु(पु)आग-धु	धौरेय(पु)बलवानवैल
धिषाकू(३२)ढीठ	ममयीतरा	धौतरिक(न)घोड़ेकीगाति
धी(स)बुद्धि	धूमयोनि(पु)मेघ	ध्याम(न)सुगंधतरा
धींद्रिय(न)संवेद्रिय	धूमल(पु)मैला	ध्वज(पुन)कंडा

ध्वजिनी (स) सेना	नख (ल) ककूदन	देशमें नदी उत्पन्न हो
ध्वनि (७) शब्द	नौ (७) न	नदीसर्ज (७) अर्जुनवृक्ष
ध्वनित (३) वाजाहुआ	नखर (७) नख	ननादा (स) ननद
ध्वस्त (३) चुआहुआ	नगा (७) पर्वत	ननु (अ) प्रश्न-अवधारण
ध्वंक्ष (७) कठा-बगला	नगौकस् (७) पक्षी	अनुज्ञा-अनुनय-आ-
पक्षी	नग्न (३) नंगा	मंत्रण-विरोधोक्ति
ध्वान (७) शब्द	नग्नहू (७) सुरावीज	नन्दक (७) लक्ष्मीपति
ध्वान्त (७) नः धेरा	नगरी (स) नगर	कारवड्ड
ध्रुव (७) नमविशेष-शा	नमिका (स) ककुवड़ी	नंदन (ल) इंदकावाला
खापत्राहितवृक्ष-नित्य	कन्या-नंगी	नंदिवृक्ष (७) तूनवृक्ष
३) नक्षत्रभेद-निश्चित	नरन (ल) नाचना	नंद्यावर्ती (७) गृहभेद
ध्रुवा (स) सालपर्णी-सु	नट (७) सरिवन	नपुंसक (ल) ७) हिजरा
वाकभेद	अरलू-नट	नघ्नी (स) नातिन
न	नटी (स) पवार	नक्षी (स) चमकीरस्सी
नकुलेश (स) सनाय	नड (७) नरसर	नग (ल) आकाश (आवन
नक्त (अग्रत	नडसंहति (७) नरिका	मास (७)
नक्तक (७) फटावस्त्र-सु	नडसा (स) तथा	नमसंगम (७) पक्षी
नक्तमाल (७) करंजुआ	नडवत् (३) नसलका	नमस्या (७) भाद्रपदभास
नक्रा (७) नाका	नडुल (३) तथा	नमस्वत् (७) पक्षी
नक्षत्र (ल) तारा	नत (३) टेढा	नमसित (३) पूजा
नक्षत्रमाला (स) २७ मो	नतनासिक (७) चपटी	नमस (अ) नमस्कार
तिर्योकाहार	नदी (स) नदी	नमस्कारी (स) गुलवेरा
नक्षत्रेश (७) तंद्रमा	नदिमास्त्रका (३) निस	नमस्या (स) पूजा

नमस्त्रि॥ ३० पूजा	नवमालिका (स) वर्षा	नागर (न) सौंठ - नगर
नमुचिसूदन (७) इंद्र	कीवेलि कीव्याईगो	मोथा - कसेरू
नय (७) नीति	नवसूतिका (स) तरित	नागरांठा (७) नारंगी
नयन (न) आंरव	नवांवर (न) नयावस्त्र	नागालोक (७) पाताल
नर (७) मनुष्य	नवीन (३) नया	नागवला (स) ककही
नरक (७) स्थानविशेष	नवोद्भूत (न) भक्तजन	नागवल्ली (स) पान
नरवाहन (७) कुवेर	नव्य (३) नया	नागसंभव (न) सेंदुर
नर्तकी (स) नाचनेवाली	नष्ट (२) दुष्पाहुआ	नागांतक (७) गारुड
नर्तन (न) नाचना	नष्टचेतना (स) मूर्ख	नास (न) नाचना
नर्मदा (न) नदीविशेष	नष्टाग्नि (७) आत्मनष्ट	नाडिधम (७) मुनार
नर्म (न) त्रीडा	नेष्टुदुकला (स) अमाव	नाडी (स) नाडी नरई
नल (न) तरा	नविशेष	घड़ी - समय - दृष्टा
नलकूवर (७) कुवेरकापु	नस्तित (७) वैल	नाडीत्राण (७) नहसूर
नलद (न) रवस	नस्योत (७) तथा	नाथवत् (३) परंत्री
नलमीन (७) जलतरा	ना (अ) नहीं	नाद (७) शब्द
रीमछली	नाक (७) स्वर्ग	नादेयी (स) जलवेत -
नलिन (न) कमल	नाकु (७) वल्मीक	नारंगी - रवांसन - भू
नलिनी (स) कमलजी	नाकुली (स) सनाय	मिजामुन
नली (स) पमार	नागा (७) सांप - हाथी	नाना (अ) अनेक -
नल्व (७) ४०० हाथ	सीसा (न) श्रेष्ठार्थक	उभयार्थक - वर्जनार्थक
नव (३) नया	नागकेसर (७) नम्रके	नानारूप (३) नाना
नवदल (न) नवीनपत्र	नार शिल	प्रकार
नवलीत (न) भक्तजन	नागजिहिका (स) नैज	नादीकर (३) आशि

षूसेस्तुतिकर्ता	नालं(न.)कमलदंड	निःश्रयस्(न.)नोष्ठा
नांदीवादी(३)तथा	नाई	निःश्रमं(अ.)निंद्य
नापित(७)नाई	नाबिक(७)पतवार	निःसुरा(न.)निकल-
नाभि(स)गाढ़ीकीहलकड़नेवाला		निकद्वार
ह्रस्व(७)सुख्य	नाव्य(३)नावके	निःस्व(त्रि)दीर्घ
नाम(अ)प्रसिद्धकी-	द्वारजानेकेयोग्य	निकट(३)पास
धसत्तरूपका-अं-	जल	निकर(७)समूह
गीकार, निंद	नाश(७)नाश	निकर्षण(न.)अच्छा
नामन्(न)नाम	नास्त्य(७)स्वर्गविद्य	स्थान
नामधेय(न.)तथा	नासा(स)चौखटके	निकष(७)कसौटी
नाय(७)नीति	ऊपरकाकाठ, नाक	निकषा(अ.)समीप
नायक(७)स्वामी	नासिका(स)नाक	निकषात्मज(७)
नाक(७)नरक, प्रेत	नास्तिकता(स)मि	राष्ट्रस
नागच(७)लोहमय	प्याज्ञान	निकाम(न)चाद
वारा	निःकासित(३)नि	निकाय(७)धर्मिक
नारची(स)सुनाका	कास्ताइआ	लिंगासमूह
कांटा	निःप्रम(३)विनातेज	निकाय्य(७)घर
नाण्यण(७)बिष्णु	निःशलाक(३)एकंत	निकाय्य(७)तथा
नाण्यणी(स)प्रातः	निःशेष(३)सद	निकार(७)अपका
वीर	निःशोध(३)मल	निकालना, अन्न
नारीकेर(७)नीयल रहित		दिका
नारी(स)स्त्री	निःश्रेणी(स)काठ	निकारण(न)मो
नाल(७)कमलदंड कीसीढ़ी		निकञ्जक(७)तोल

विशेष	वेद और वान्याँ	अतिशय बहूत
निकुञ्ज (७) नकुञ्ज	पन	नित्य (न) लगातार
निकम्भ (७) जम्भ	निगाद (७) कह	सदैव (३)
पास, बज्रदंती	ना, बोलना	निदाघ (७) पसीना
निकारम्ब (न) सम्भ	निगार (७) खाना	मीठ्ठा - अटु
ह, कुंड	निगाल (७) धोड़े	निदात (न) आ
निकत (३) निकाल	किगलि	दिकाररा
हुआ, कपटी	(निग्रह (७) नमा	निदग्ध (३) बढ़ा
निकृति (स) छल	नना	निदिग्धिका (स)
नितम्ब (७) खोका	निध (७) बरकर	भटकटाई
चूला	वृक्ष जमे हुये	निदिश (७) आश
निकृष्ट (३) अधम	निधस (७) खाना	निद्रा (स) नींद
निकेतन (न) धर	निध्र (३) आधी	निद्राग (३) सोया
निकोचक (७) चि	जभाव	निद्रालु (३) सो
नमोजा	निचाल (७) समुद्र	नेवाला
निकारा (७) वीरागा	निं ल (३) पदी	निधत (७) न) मू
आदिकाशब्द	निज (३) अपना	तु, कल
निकारा (७) तथा	नित्य	निधि (७) भंडार
निविल (३) सब	नितु वतक (७)	निधवन (न) मै
निगड (७) न) हाथी	नितु वस्थ (७) नि	पुन
की साँकार	तम्बक मट्टा	निध्यात (न) दे
निगद (७) कहना	नितु खिनी (स) खी	खना
निगाय (७) नगर	नित्यांत (न)	निजद (स) प्रवृ

निनाद (७) शब्द	नियुत (न) संख्याभेद	फालसा
निंदा (स) बुरा कहना	नियुद्ध (न) बाहुयुद्ध	निर्ग्रथन (न) मारा
निप (७) न घड़ा	नियोज्य (७) दास	निर्घोष (७) शब्द
निपठ (७) पढ़ना	निरंतर (३) सघन	निर्जर (७) देवता
निपाठ (७) पढ़ना	निर्य (७) नरक	निर्जितेंद्रियग्राम (७)
निपान (न) प्याऊ	निर्खल (३) अबाध	जितेंद्रिय
निपात (न) गिरना	निरर्थक (३) व्यर्थ	निर्कर (७) कर्ना
निपुण (३) ज्ञाता	निरवग्रह (३) स्वतंत्र	निर्णय (७) निश्चय
निर्वहण (न) मारा	निरसन (न) निरादर	निरिक्ति (३) मलरहित
निभ (३) सदृश	निरस्त (न) धमकाया	निर्णैजक (७) घोवी
निभृत (३) विनीत	फेंके गये बाणा (३) नि-	निर्देश (७) आज्ञा
निमित्त (न) हेतु-विह्व	रादर किया हुआ (३)	निबंधन (न) वीणा का बंधन
निमेष (७) पलकपात	निराकारिण (३) नि-	धन
निम्न (३) गहरा	कालनेवाला	निरुत्त (३) घिरा हुआ
निम्नगा (स) गहरा	निराकृत (३) निरादर	निमिर (न) बहुत
निम्ब (३) गहरा, नीम	निराकृति (७) वेदभ्या	निर्मद (७) विना मदका
निम्बतरु (७) जीव	सहित- निरादर (स)	हाथी निसर्प
नियति (स) भाग्य	निरामय (३) अरोमा	निर्मुक्त (७) कैचुली ही-
नियंता (७) रथवान	निरीष (न) हलकाफा	निर्मोक्त (७) कैचुली
नियम (७) स्वीकार-	निर (अ) निषेध	निर्याण (न) हाथी का
प्रत-कर्मविशेष-लेन	निर्द्वैति (स) अलक्ष्मी	देवना
देन निवाला	निर्गुंडी (स) म्योड़ी-	निर्यीतन (न) वैशुद्धि
नियामक (७) रवेव	सिंभाल-हरसिंगर	दहन-धरोहर-लोहदेव

निर्योद्ग (७) द्वार-शिरोभूषण	निषाप (५) पितरों के	निषाद (७) मानेका
काढ़ा हुआ रस-रबूटी	लिये दान	स्वर-चांडाल
निर्वपन (न) दान	निर्वीत (न) कंठ में मा-	निषादी (७)
निर्वर्णन (न) देखना	लाकार जनेऊ [रा	निषूदन (न) मारा
निर्वहण (न) न्नाटक संधि	निर्वीत (३) गोट-किन	निष्क (७-न) १०८
निर्वीण (न) मोक्ष-बुद्धि	निवेश (७) सेना निवास	कर्षभरसौना-सौ-
निर्वीत (३) पक्करहित	निशा (स) रात्रि	नेका क्रांती काम-
निर्विद (७) निंदा	निशान्त (न) घर	हना-पलमान्न तो-
निर्वपन (न) मगह-आं	निशापति (७) चंद्रमा	ल-दीनार
निर्वार्य (३) दुःख में भी-आ	निषाण (न) मर	निष्कला (स) विना
नंदं सकार्यकर्ता	निषाद (स) हलदी	रजवाली स्त्री
निर्वसिन (न) माण्डुआ	निषित (३) तीखा	निष्कासित (३) नि-
निर्वृत्त (३) सिद्धजन	निषीय (७) आधी रात	निष्कुर (७) घर के
निर्वेश (७) वेतन-बदला	निषाथिनी (स) रात	पास का वडा / ची
निर्विधन (न) छेद-पोल	निश्चय (७) निर्णय	निष्कुरि (स) डूलाय
निर्वीर (७) युक्तिसे शस्त्रा-	निषंगा (७) तरकस	निष्कुर (७) खोखला
दिनिकालना	निषंगी (७-न) धनु-	निष्क्रमा (७) बुद्धि की
निर्वीरी (७) बहुत दूजाने	पधारी	शक्ति
वाला सुगंध	निषद्या (स) बाजार	निष्ठा (स) न्नाटक की
निलय (७) घर	निषहर (७) कीचड़	संधि-सिद्धि-नाश
निवह (७) समूह	निषध (७) पर्वतों	निष्ठान (न) कढ़ी
निवात (३) निवास-वायु	कामेद विशेष-	निष्ठीवन (न) धूकना
रहित-बरतार		निष्ठव (७) धूकना

निष्ठुर(न) कर्कशकह-	निहूव(७) क्षिपाना	फालसा
ना- कठिन(३)	निह्राद(७) शब्द	नीलिनी(स) नील
निष्ठूत(३) भेजा	नीकाश(३) सदृश	नीली(स) नील
निष्णात(३) ज्ञाता	नीच(७) नीच	नीवाक(७) धनादि
निष्पक्व(३) अच्छाप	नीच(३) छेरा	कासंग्रह न्न
क्वा	नीचैस्(अ) थोड़ा	नीवार(७) मुनिअ-
निषन्न(३) सिद्ध	नीउ(७.न) घोंसला	नीवी(स) मूलधन
निध्याव(३) अन्नादि	नीडोद्भव(७) पसी	स्त्रीकेकमरमेंकीवस्त्र
प्रवृत्तकरना ति	नीध्र(न) घरछाने	कीगाँठि विस
निष्प्रभ(७) विनाक्रा-	केसमीपकीभीति	नीचत्(७.स) जन-
निष्प्रवाणि(३) नयावस्त्र	नीप(७) कदंब	नीशार(७) रजाई
निस्सृष्ट(३) फेंका रूप	नीर(न) जल	नीहार(७) हिम
निस्सर्ग(७) स्वभाव-स्व	नील(७) काला	नु(अ) पूछना-वि
निस्तर्हण(न) भारना	नीलकंठ(७) मोर-	कल्पार्थक
निस्तल(३) गोल	शिव- कीडा	नुति(स) स्तुति
निस्त्रिंश(७) तलवार	नीलंगु(७) छेरा	नुत्त(३) भेजा
निस्त्राव(७) माँड़	नीललोहित(७)	नुन्न(३) भेजा
निस्वन(७) शब्द	महादेव- शिव	नूतन(३) नया
निस्वान(७) शब्द	नीला(स) मकवी	नूतन(३) नया
निहनन(न) मारना	नीलांबर(७) वलदेव	नूद(७) तूत
निहाका(स) मोह	नीलांबुजन्मा(न)	नून(अ) तर्क-
निहिंसन(न) भारना	नीलकमल गार	अर्थनिश्चय
निहीन(७) नीच	नीलिका(स) हंस	नूपर(७.न)

बिक्रिया-पंयजेव	नैर्ऋतिदिशकापति	पक्कण(५-न)जंगलियो
नृत्य(न)नाचना	नैष्किक(५)खजोची	कागांव
नृप(५) राजा	नैस्त्रिंशिक(५)तलवार	पक्क(३२)पका
नृपलक्ष्म(५)राजाका	काधारणकरेवाला	पक्ष(५)१५दिनगत-पंरव
नृपासन(न)राजमाही	नो(अ)अभाव-नहीं	केशसमूह-धनुषकापंरव
नृशंस(३)हिंसक	नौ(स)नाववानौका	सहाय द्वार
नेत्र(न)आंख-जस	नौकादंड(५)डोंड	पक्षदा(न)द्वारकेपासका
वस्त्र	न्यक्ष(३)संपूर्ण-अध	पक्षति(स)पड़वातिथि
नेत्रम्बु(न)आंसू	न्यग्रोध(५)वरखद-वा	पंरवकीमूलवाजड
नेता(५)पति	मअर्थात्वेमा	पक्षद्वार(न)द्वारकेपास
नेदिष्ट(३)अतिपास	न्यग्रोधी(स)सूसरी	काद्वार वगल
नेपथ्य(न)संभाकाधर	न्यकु(५)भृगभेद	पक्षभाग(५)हाथीकी
नेमि(स)भाहीकीहा	न्यक्(३)छोटा	पक्षमूल(न)पंरवकीजड
ल-कृपकाचौरचरा	न्यस्त(३)फेंका	पक्षांत(स)अभावसन्त्रो
नैकभेद(३)अनेकप्र	न्याद(५)खाना	रपौरमासी
कार	न्याय(५)न्याय	पक्षिणी(स)पूर्वदिन
नैमम(५)बनियांन	न्याय्य(३)न्यायसे	औरपरदिनसेयुक्तरात्रि
नैचिकी(स)उत्तमगौ	न्यास(५)धरोहर	पक्षी(५)पक्षी
नैपाली(स)मलाशि	न्युडुव(५)सम्भवेद	पक्षमा(न)पलक-केस
लनैपालदेशकी	काओंकार	र-वडेसक्षमस्ततकाभाग
नैमेय(५)लेनदेन	न्युज(३)कुवड़ा	पंक(५-न)पाप,कीचड़
नैयग्रोध(न)वड़काफ	न्यून(३)निंद	पांकिल(३)कीचड़से
नैर्ऋत(५)एक्षस	प	युक्तदेश

पंक्ति(स) दशवांछंद-	प्यर-छाना-वमन	परिगत(३) स्तुतिकिया
पंति-श्रेणी-कतार	नेत्ररोग-समूह(सन)	परितव्य(३) लेनेकी वस्तु
पंकेरुह(न) कमल	पटलप्रांत(५) धर	पंड(५) हिजड़ा
पंग(५) पंगुला लिदी	छादनेका सामान	पंडित(५) विद्वान्
पचम्पचा(स) दारुह-	पटवासक(५) वकुचा	पराय(३) लेनेकी वस्तु
पचा(स) पकाना	पटह(५) वड़ानगा-	परायवीथिका(स) हाट
पंचजन(५) पुरुष	रा-जुगाऊनगारा(५)	पराया(स) मालकगुनी
पंचता(स) मृत्यु	पटु(५) परवर-चतुर	परायाजीव(५) साहूकार
पंचदशी(स) अमा-पूर्णिमा	दक्ष(३) तीक्ष्ण(३)	पतंग(५) पक्षी
पंचम(५) गानविद्या-	नीरोग(३)	पत्(५) पौंव
कास्वर	पटोल(५) परवर	पतंगा(५) टीड़ी-पक्षी
पंचलक्षण(न) पुराण	पटोलिका(स) चवेड़ा	पतंगिका(स) लघुमकरी
पंचशर(५) कामदेव	पट्ट(५) काठकापटा	पतत्र(न) पंख
पंचशाख(५) हाथ	पट्टिकारव्य(५) लाल	पतर्(५) पक्षी
पंचगुल(५) अंडरक्ष	लोघ धि	पतत्रि(५) पक्षी
पंचास्य(५) सिंह	पट्टिन्(५) लाललो	पतत्री(५) पक्षी
पंजर(न) पिंजरा	पट्टिश(५) पीठा	पतग्रह(५) पीकदूध
पंजिका(स) शेषपदकी	परा(५) पैसा-वेतन	पतयालु(३) गिरनेवाला
पट(५) अच्छावस्त्र	जुआ-नौकरी-	पतझा(स) कंडा
पटच्चर(न) पुरानावस्त्र	मूल-धन दि	पतकी(५) ध्वजधारक
चोर-	पगाव(५) वाजेकाभे	पत्ति(५) पैदल-जाना
पटल(न) धरकाद	परा(स) वाजी	सेनाभेद वालीस्त्री
नेकेपासकीभीति-छा	परायित(३) स्तुतिकि	पतिवर(स) आपवरने

पतव्रता(स) सतीस्त्री	वस्तु-सुवंत-तिडंत	पद्मी(७) हाथी
पतिव्रती(स) मुहनिनि	पद्मा(७) पैदल	पद्मिनी(स) कमलनी
पत्तन(न) नगर	पदवी(स) मार्ग	पद्म(न) श्लोक
पति(७) भर्ता-स्वामी	पदाजि(७) पैदल	पद्मा(स) मार्ग
पतिसंहति(स) पैदलों	पदाति(७) पैदल	पद्धति(स) मार्ग
कासमूह बाण	पदातिका(७) पैदल	पनस(७) कटहल
पत्री(७) वाज-पक्षी	पदिक(७) पैदल	पनायित(३) स्तुतिकिया
पत्नी(स) विवाहितास्त्री	पद्म(७) पैदल	पनित(३) तथा
पत्र(न) पंख-वाहन	पद्धति(स) सड़क	पन्न(३) चुआ
पत्ता-चिट्ठी	पद्म(न) संख्याका	पन्नमा(७) सर्पमात्र
पत्रपरशु(७) रेती/ना	भेद-कमल	पन्नमाश्रम(७) मरुड
पत्रपाण्या(स) वंदीवै	पद्मक(न) हाथीकी	पय(न) पानी-दूध
पत्रय(७) पक्षी	पद्मचारिणी(स) प	पयस्य(न) घी-आदि
पत्रलेखा(स) तिलकभे	द्माक-कपिला	प्याट(न) संबोधनार्थक
पत्रांग(न) पतंगवृक्ष	पद्मनाभ(७) विष्णु	पयोधर(७) कुच-भेघ
पत्रांगुलि(स) तिलकभेद	पद्मपत्र(न) फुलसूत्र	वाट धिकवाला
पत्रोर्ण(न) धोयेहुयेरे	पद्मरमा(७) मारि	परशत(३) १०० सेअ-
शमीवस्त्र	पद्मा(स) लक्ष्मी-	पर(७) शत्रु-दूर(३)
पंधान(७) मार्ग	भंगार-कपिला-प	अनामा(३) उत्तम(३)
पथिक(७) चलनेवाला	द्माक	पस्नात(७) परसेपैदा
पथ्या(स) हर्ड	पद्माकर(७) तलाव	परंतत्र(३) पराधीन
पद(न) उद्यम-रक्षा	पद्माट(७) पमार	परपिंडाद(३) पान्नजीवी
स्थान-चिट्ठ-पाँव-	पद्मालया(स) लक्ष्मी	परभृत(७) कोयल

परभृत् (७) काठा	पराभूत (३) हारा	परिचय (७) संग्रह
परमं (अ) अंगीकार	परायण (३) आसंठा	परिचर (७) सेनार-
परमा (स) शोभा	वक्त्र	क्षक
परमान्न (न) खीर	परारि (अ) तीसरा वर्ष	परिचर्या (स) सेवा
परमेष्ठी (७) ब्रह्मा	परार्द्र (३) मुख्य	परिचाय्य (७) अग्नि-
परम्पराक (न) यज्ञका	पराम्न (न) मारा	कास्थान
परवत् (३) परतंत्र	परासु (३) मृतक	परिचारक (७) दास
परशु (७) स) फ़रसा	परास्कंदि (७) चोर	परिणत (३) पका
परश्वध (७) तथा	पराह (अ) परसों	परिणय (७) विवाह
परश्वस (अ) परसों	परिकर (७) पर्यंक-	परिणाम (७) अंत
परस्परपराहत (न) अ	परि वार	परिणाय (७) नर्द्ध
संभव कहना	परिकर्म (न) कुंकुमा-	काचलना
पराक्रम (७) उपाय-	दिसे अंग संस्कार	परिणाह (७) वस्त्र
पराक्रमी	परिक्रम (७) खेल	की चौड़ाई-छोल
पराठा (७) फूलकी धूर	में पावसे चलना	परितप्त (अ) चारों
ठांधचूरी-ग्रहण-धूर	परिक्रिया (स) परि वार	ओर किरना
पराउत्तरव (३) विमुख	परिक्षिप्त (३) धिरा	परित्राण (न) रक्षा
पराचित (७) परपुत्र	परिगता (स) रवाई	परिदान (न) लेन देन
पराचीन (३) विमुख	परिग्रह (७) स्त्री-प-	परिदेवन (न) रोना
पराजय (७) हारा	रिजन-स्वीकार-	परिधान (न) धोती
पराजित (३) हारा	मूलधन-शाप	परिधि (७) मंडल
पराधीन (३) परतंत्र	परिध (७) मादा, अ	यज्ञकी वृक्षशारवा
परान्न (३) पाया अन्न	परिघातन (७) तथा	परिधिस्था (७) सेना

रसक	न	परिवृत्त (१) स्वामी	परिस्तुता (४) मंदिर
परिपरा (१०) मूलध		परिवेता (१) वह छोट	परीक्षक (३) पारवी
परिपंथिन् (१) शत्रु		भाई जो बड़े भाई के	परीवर्त (१) लेने देन
परिपारी (४) अनुक्रम		विवाह विना विवाह करे	परीवाद (१) निंदा
परिपूर्णा (४) परिपूर्णा		परिवेष (१) मंडल	परीवाप (१) ठका
परिपेलव (४) मोथा		परिव्याध (१) कनेर	परीवाह (१) वाहा
परिप्लव (३) चंचल		परिव्राज (१) सन्यासी	परीवार (१) पटम-
परिवर्ह (१) राजा के यो-		परिषद् (४) सभा	डप- सर्वत्र बोना
व्यवस्तु- धन- परिच्छेद		परिस्कार (१) गहना	जलस्थिति- जंभा
परिमव (१) अपमान		परिस्कृत (३) अलंका	म- खड्ग का मया
परिभाव (१) तथा		रयुत	न- सहायक
परिभाषण (४) रिक्ताना		परिखंडा (१) लिपटना	परीष्टि (४) श्राद्ध
परिभूत (३) अपमान किया		परिसर (१) नदी वा	में ब्राह्मण भक्ति
परिमल (१) सुगंध- मस-		पर्वत के पास की भूमि	परीसार (१) सब
लना- मीजना		परिसर्प (१) परिवार	ओर फैला
परिरम्भा (१) लिपटना		परिसर्प (४) चारों ओर	परीहास (१) क्रीड़ा
परिवर्जन (४) मारा		रसे फैला	परुत (अ) पूर्वगत
परिवादनी (४) वीणा भेद		परिस्कंद (१) परपत्र	वर्ष वा पार साल
परिवापित (३) मुंडा हुआ		परिस्तोम (१) हाथी	परुष (४) कर्कश
परिविति (१) वह बड़ा भा-		कीरस्सी	कहना
ई जिसका विवाह न हुआ		परिस्पंद (१) माला	परुषी (४) गाँठ
हो ओर छोटे भाई का हो		आदिका वनाना	पेत (३) मतक
मया हो		परिस्तु (४) मंदिर	पेतगद (१) यम

पेरुवि(अ)परदिन	पर्व(न)गौठ-क्षरा	पवमान(७)पवन
पेरुका(स)बहुतवच्चादेनेवा	तिथिभेद	पवि(७)वज्र
लीगो	पर्वसंधि(७)पूरणिअ	पवित्र(न)कुशा,पूतत्रे
पेरुधित(७)परपुत्र	मावसकीसंधि	पक्कि(न)सुतरी
पेरुगणी(स)चिमगादी	पुरुका(स)पंसली	पशु(७)पशुजाति
पकरी(७)पाकर	पल(न)४कर्ववा४	पशुपति(७)शिव
पर्जननी(स)दाहलदी	तोलकीतोल-पलमा	पशुप्रेरा(न)पशुप्रे
पर्जन्य(७)मेघ-इंद्र	सांस ^{ला} तभीवनानेवा	काललकारिना
परी(न)पत्ता-ढाँक	पलंगड(७)गजअर्थ	पशुरज्जु(स)डोरी
परीशला(स)मुनियेकाघर	पलंकवा(स)गोरवुरू	पश्चात्(अ)पश्चिम
परीशा(७)बबई	पल्ल(न)मंस	दिशा-चामवाचर्म
पर्यंक(७)रवाट	पलांडु(७)प्याज	पश्चात्ताप(७)पकृताव
पर्यंतन(न)फिरना	पलाल(७)प्यार	पश्चिम(३)अंत
पर्यंतमू(स)नदीपहाडके	पलाशी(७)वृक्ष	पांशु(७)धूरि
पर्यय(७)अतिक्रम	पालिक्री(स)बूढीस्त्री	पांशुला(स)किनार
पर्यवस्था(स)विगाड	पलित(७)अतिबुढ़ाप	पाक(७)वच्चा-पका
पर्याप्त(न)चाह	पल्यंक(७)रवाट	पाकल(न)कूट
पर्याप्ति(स)रक्षाकरना	पल्लव(७)नयापत्ता	पाकशासन(७)इंद्र
पर्याय(७)परिपार्टी-क्रम	पल्लव(७)ग्लघुताल	पाकशासनि(७)इ-
पर्युद्वन(न)उधारलेना	पव(७)अन्नादकाकार	इकापुत्र
पर्यवण(स)श्राद्धमेंविप्र	पवन(७)वायु	पाकरथान(न)रसो-
भक्ति	पवन(न)अन्नादिकाका	ईकाघर
पर्वत(७)पहाड	पवनाशन(७)सर्प	पाक्य(न)खाशिनो

जवारवार (७)	पांडुकंवलिन (३) श्वेतपी-	पादंछाद (न) विक्रिया
पांचजन्य (७) लक्ष्मीप	लाकंवल पाला	पांयजेव
तिका शंख	पांडुर (७) उज्जला-श्वेत	पादुका (स) जूती
पांचालिका (स) गुडिया	पाताल (न) अधोलोक	पादू (स) जूता
पाटल (७) श्वेतलाल, सदी	वडवानल आग	पादूकत (७) चमार
पाटला (स) पुष्प, पाठर	पातुक (३) शिलेवाला	पाद्य (३) पाँव धोनेका
पाटलि (७ स) पाठरि	पात्र (न) पाल्शौरस	जल / पानकी सभा
पाठ (७) महायज्ञ-विधि	पाकरावीच-स्तुवादि	पानमोष्टिका (स) मदि
सेवेदादिपठन-ब्रह्मय-	कयन्नपात्र-वर्तन (७)	पानपात्र (न) मदि
ज्ञ-पठना	(न) योग्य-रथ	पानिकापात्र
पात्र (स) पाठरि	पाथ (न) जल	पानभाजन (७ न)
पाठिन (७) चीता	पाद (७) पर्वतके पासका	थाली-कटोरा
पाठनि (७) बहुदंतवा	पर्वत-पाँव-चौधार्ई	पानीय (न) जल
पाटू (अ) संबोधनार्थक	किरण / पायजेव	पानीयशालिका (स)
पाणि (७) हाथ	पादकटक (७) विक्रिया	प्याऊ
पाणिगृहीती (स) विवा	पादग्रहण (न) प्रणाम	पान्ध (७) अधिक
हितास्त्री	पादप (७) ब्रह्म	पाप (न) पाप-हिस
पाणिघा (७) तालीबजा	पादस्फोट (७) दिवाई	क (३) पाठरि
नेवाला	पादात (न) पैदलोंकास	पापचेली (स) पाठा
पाणिपीडन (न) विवाह	मूह / गाड़ी	पापान (७) पाप
पाणिवाद (७) तालीव-	पादाग्र (न) पाँवकी अ	पामर (७) नीच (न)
जानेवाला	पादातिता (७) पैदल	पाम (न) खज-पा
पांडु (७) श्वेतपीला	पादबंधन (न) चौपाये	मायुक्तखज (३)

पाप्मा (स) रवाज	पारित्या (स) वेंना	पाष्णि (७) एड़ी
पायस (७) देवदारु धूपवा	पारिपात्रक (७) पर्वतो	पाष्णिग्राह (७) अपने
तापीनकातेल	काभेद	राज्यसेपीछेकाराजा
पायु (७) गुदा	पारिपार्श्वक (७) स्त-	पालंका (स) पलंक
पाय्य (न) तोल नाप	र्यकेचारेओकरहने	पालघ्न (न) जलतृण
पार (न) नदीकाउसपार	बाले	पालाश (७) हरा
पारद (७) न) पारा	पारिप्लव (३) चंचल	पालि (स) खड्गदिकी
पारम्पर्योपदेश (७) परंप	पारिभद्र (७) जीव	नोक-गोद-पंक्ति
राकाउपदेश	पारिभद्रक (७) देवदारु	कोण निसेत
पायस (७) न) रवीर	पारिभाव्य (न) कूट	पालिंधी (स) तिधारा
पारशव (७) शर्दसेब्राह्म	पारिषद (७) शिवदास	पावक (७) आग
पारश्वधिक (७) फारसाधा	पारिहार्य (७) पहुँची	पाश (७) केशसमूह
रक सिउत्र	पारुष्य (न) कठोर	पाशक (७) पाशा
पारस्त्रैगोय (७) पारस्त्री	पार्थिव (७) राजा	पाशी (७) वरुण
पायण (न) साकल्यवच	पार्वती (स) शिवस्त्री	पाशुपत (७) गुम्मा-
पासीक (७) फारसिदेश	पार्वतीनंदन (७) स्वा-	अगस्त्य
काघोड़ा	मिकार्तिक	पाशुपाल्य (न) रेवती
पारावत (७) कवूतर	पार्श्व (७) न) वगल-	पावंड (७) पारवंडी
पारावतांधि (स) मालका	पार्श्वोकासमूह	पाषाण (७) पत्थर
पारावार (७) समुद्र	पार्श्वभद्रा (७) हाथी	पाषाणदारण (७)
पाराशरी (७) सन्यासी	की वगल	टांकी
पारिकांक्षी (७) तपसी	पार्श्वस्थित्वापार्श्व	पाश्र्वात्य (३) अंत
पारिजातक (७) कल्पवृक्ष	स्थिति (न) पंसली	पाप्रय (न) पाशोंका

समूह	पिट (७) कूपरा	पिटसन्निभ (१२) पिट
पिक (७) कोथल	पिटक (३) फोड़ा, पिटारी	तुल्य
पिंगा (७) पीला	पिठर (७) बटलोई -	पित्त (७) पित्त
पिंगाल (७) सूर्यकापरी	पिठर (न) मोथा	पित्तसत् (७) पक्षी
पाण्डकग्रह - पीला	पिंड (न) लोहा - ठां	पिधान (न) ठांकना
पिंगाला (स) दक्षिणदिग	पिंडक (७) लोहवान	पिनद्ध (२) वरवरबद्ध
गजकीस्त्री	पिंडिका (स) गाढी -	पिनाक (७) शिवचाप
पिचिंड (७) पेट	कीहाल	त्रिशूल (७) धूलि
पिचिंडवत् (७) बाजार	पिंडीतक (७) मेनफल	कीवर्षा
पिचिंडिल (७) बड़ा पेटवा	पियाक (७) लोहवा	पिनाकी (७) शिव
पिचु (७) रुई	न - खुल - पीना	पिपासा (स) ध्याम
पिचुभई (७) नीमवृक्ष	पितरौ (७) मातापिता	पिपीलिका (स) चीटी
पिचुल (७) काऊ	पितामह (७) ब्रह्मा -	पिथल (७) पीपरी
पिचुट (न) रंग	पिताकावापवादाद	पिथली (स) बड़ी पीपरी
पिच्छ (न) मोरलायंद	पिता (७) वाप	पिथलीमूल (न) पिपरा
पिच्छा (स) हेमकागोंद	पित्तदल (न) पितरौ	मूत्र
पिच्छल (३) पीले भो	केलिये दल	लामनुष्य
जनवा व्यंजन	पितपत्ति (७) यमराज	पिहू (७) लहसुनवा -
पिच्छिला (स) सीसों	दक्षिणदिशाकापति	पियाल (७) चिरोँजी
पिच्छिला (स) सेमर	पित्तपित्त (७) दाद	पिल्ल (७) चील
पिञ्ज (७) मार	पित्तप्रसू (स) गोधूलि	पिल्ल (२) चुंधा
पिंजर (न) हरताल	पित्तकन (न) शसल	पिङ्गा (७) पीजा
पिंजल (७) अकुलानीसे	पित्तव्या (७) पिताकाभा	पिशच (७) देवजाति
		पिशित (न) मांस

पिभुन(न)कुंकुम,के-	पीयूष(न)अमृत-वे-	पुंडर्य(न)गुलाव
सरि दुष्ट(३)सूचक(३)	वसी वा गिजरी	पुंड्र(७)गौडा-गन्ना
पिभुना(स)पिंडाशाक	पिलु(७)पिलुआवृक्ष	पुंड्रक(७)माघवीलता
पिष्टक(७)पुत्रा-वरा	हाथी-वारा-पुष्प	पुण्य(न)धर्मसुंदर३
पिष्टपक्व(न)तवा	पिलुपर्णी(स)भूर्वा-	पुण्यका(न)उपवासादि
पिष्टात(७)वकुचा	पुंडरु	विहितव्रत
पीठ(न)पीठा	पीवर(३)मोरा	पुण्यजन(७)राक्षस
पीडन(न)पदार्थेकान	पीवरस्तनी(स)मोटथ	पुण्यजनेश्वर(७)कुबेर
पीडा(स)दुख	पीवी(३)मोरा	पुण्यवान्(३)भाष्यवान्
पीत(७)पीला	पुष्पली(स)किन्नारि	पुण्यभूमी(७)विंध्याच
पीतक(न)हरताल	पुक्कस(७)चंडाल	लन्त्रोरहिमालयपर्वत
पीतदारु(न)देवदारु	पुंख(७)वारणकाभाग	कीवीचकी भूमि
पीतदु(७)दारुहलदी	पुंख(अ)श्रेष्ठार्थक	पुत्तिका(स)छोटीमकली
पीतिन(७)आमलावृक्ष	पुच्छ(७)पूँछ	पुत्र(७)सुत
पीतिन(न)कुंकुमकेसर	पुञ्ज(७)अन्नादिका	पुत्री(स)कन्या
पीतिसालक(७)विजैसार	पुटभेद(७)जलकानि	पुत्री(७)कन्यापुत्र
पीति(स)हलदी	कलना	पुत्रिका(स)गुड़िया
पीतम्बर(७)विष्णु	पुटभेदन(न)नत्तार	पुनःपुनः(अ)वारंवार
पीति(७)घोड़ा	पुटी(३)मईकापात्र	पुनः(अ)दूसरा-भेद
पीन(३)मोटा	पुंडरीक(७)आग्नेयदिश	निश्चय
पीनस(७)नाककारोटा	फादिगज-आघ्र-प्रे	पुनर्नवा(स)विसरव
पीनोद्धी(स)मोटथनवा	तकमल	पुनर्भव(७)नरव
लीगौ	पुंडरीकाक्ष(७)विष्णु	पुनर्भू(स)दोवारविवाहीस्त्री

हाथीके शूकके पास	पोतवणिक (७) म	सादृश्य
कामांस	ल्लाह / रिवैद्या	प्रकाश (७) तेज-
पेटक (७) पिटारी	पोतवाह (७) नाव	अतिप्रसिद्ध (३)
पेटा (स) पिटारी	पोता धान (७) लघु	प्रकीर्णक (न) चमर
पेटी (३) पिटारी	मच्छी नतिनी (स)	प्रकीर्ण (७) कंटेदार
पेलव (३) विरला	पौत्री (७) सुआर	कंजा
पेशल (७) चतुर-सुंदर	पौर (न) सुगंधतरा	प्रकृति (स) स्वभाव
(३) दक्ष (३)	पौस्त्य (३) पूर्व	संसिद्धि-राज्यके
पेशी (स) अंडा	पौरुष (३) पुरुषभाव	अंगाराजादि-भ्रा
पैर (३) पकामांस	पौरोगव (३) रसोई	लिंघा
पैतलसेय (७) बुआका	कामालिक	प्रकोष्ठ (७) कुहनी
पैतलसीय (७) तथा	पौर्णमास (७) पूर्ण	सेमणिवंधरेखा
पैत्र (७) पितृदिन-पितृ	मासीके दिन कायत्र	तकका भाग
तीर्थ-अर्थात् अग्रंदा	पौर्णमासी (स) पूनो	प्रक्रम (७) उद्योग
औरतर्जनी अंगुलीके	पौलस्त्य (७) कुवेर	प्रक्रिया (स) व्यवस्था
वीचका भाग	पौलि (७) अधपका	स्थायक
पौवांड (७) विकलांगी	हुआ अन्न	प्रकृण (७) वीणा
पोटवाल (७) नरकुल-	पौष (७) पौषमास	आदिकाशब्द
कांस लक्षण का	पौष्य क (न) अंजन	प्रकारा (७) तथा
पोटा (स) पुरुषस्त्रीके	प्रकांड (पन) अक्ख	प्रक्षेप (७) लेह
पोत (७) वच्चा-पीनिकापा	वृक्षका भाग	मयवारा
त्रिहलकीनोक	प्रकाम (न) चाह	प्रमांड (७) कुहनीसे
पोत्र (न) सुआरका मुख	प्रकार (७) भेद-	वगलतकका भाग

प्रातजानुक (७) टेढी जांघवाला	प्रजावी (७) वेढी प्रजा (स) बुद्धि-संतति	प्रजन (३) पुराना प्रजन (७) फली-अंगु-
प्रगल्भ (३) बुद्धिवान	प्रजा	स्तेका हाथ ति
प्रगाढ (न) आपर्ण दुःख	प्रजप्ता (स) प्रस्तास्त्री	प्रतानिनी (स) फैलील
प्रगुणा (३) सीधा	प्रजायति (७) प्रहसा	प्रताप (७) प्रभाव
प्रगो (अ) प्रभात	प्रजावती (स) भोजाई	प्रतापस् (७) प्रवेत अर्क
प्रग्रह (७) वंधुआ-तरा	प्रज्ञा (स) बुद्धिमती	प्रति (अ) प्रतिनिधि-दी-
जकासूत-अप्तादि	प्रज्ञान (न) बुद्धि-चिन्ह	प्ता-लक्षणा-प्रयोग
कीरस्सी	प्रज्जु (७) टेढी जांघका	प्रतिकर्मन् (न) नेपथ्य
प्रग्राह (७) तथा-मूढ	प्रडीन (न) उडना	प्रतिकूल (३) उलटा
प्रग्रीव (७) नगोरवा	प्रगाथ (७) प्रेम-विश्वा	प्रतिकृति (स) प्रतिविंव
प्रग्र (३) मुख्य	मौमाना	प्रतिजागर (७) प्रार्थना
प्रघण (७) चौपार वा बह	प्रगाव (७) आँकार	देखना
प्रक्क (न) चलीहुई सेना	प्रगाह (७) प्रीति का शब्द	प्रतिज्ञात (३) अंगीकृत
प्रचलायित (३) घूमनेवाला	प्रगाली (स) पतनाला	प्रतिज्ञान (न) स्वीकार
प्रचक्र (७) अमलवेत	प्रगाधि (७) हकारकर	प्रतिदान (न) फेर देना
प्रचुर (३) अधिक	नेवाला-प्रार्थना-चार	प्रतिध्वान (७) प्रतिशब्द
प्रचेतस (७) वरुणा	प्रगाहित (३) प्रस	प्रतिपत् (स) पडवातिथि
प्रचोदनी (स) भटकटाई	प्रगाति (७) यज्ञाप्रविशे	बुद्धि
प्रच्छदपट (७) पर्दा	य-रसाउरि (३)	प्रतिपन्न (३) जाना
प्रच्छन्न (न) रिबडकी	प्रगत (३) स्तुतिक्रिया	प्रतिपादन (न) दान
प्रच्छर्दिका (स) उलटी	प्रणय (३) वशी	प्रतिबद्ध (३) दृष्टमनका
प्रजन (७) प्रथमगर्भ	प्रन (३) पुराना	प्रतिबंध (७) कार्यकारो

प्रतिविंव(न) प्रतिच्छाया	पौष्कलाभागा-हाथ	प्रत्यक्षश्रेणी(स) मूसाक
प्रतिभया(न) डर	राखी (७-न)	रणीवामूसरी-जयपाल
प्रतिभान्वित(३२) बुद्धिवा	प्रतिसीरा(स) कनात	वज्रदंती
प्रतिभू(७) गबाह	प्रतिहत(३) गूटेमनका	प्रत्यक्ष(३) साम्हना
प्रतिभा(स) प्रतिविंव	प्रतिहास(७) कनेल	प्रत्यग्र(३) प्रत्यक्ष
प्रतिमान(न) हाथीकेदां	प्रतीका(७) अंग-विंग	प्रत्यंत(७) म्लेक्षर
तोंकाबीच-प्रतिविंव	प्रतीकार(७) वैरमिटाना	प्रत्यंतपर्वत(७) पर्वत
प्रतिमुक्त(३) वपुराधारक	प्रतीकाश(३) सदृश	केपासकापर्वत-केद-
प्रतियत्न(७) वांका-अ	प्रतीची(स) पश्चिम	शब्द
उकूल विंव	प्रतीक्ष्य(३) पूज्य	प्रत्यय(३) नया-अधीन
प्रतियातना(स) प्रति	प्रतीत(३) प्रसिद्ध	सौमंद-ज्ञान-विश्वास
प्रतिरोधि(७) चेरा	प्रतीपदर्शिनी(स) वि-	हेतु
प्रतिवाक्य(न) उत्तर	शेषस्त्री	प्रत्ययित(३) विश्वासी
प्रतिविद्या(स) अतीस	प्रतीर(न) गट	प्रत्यर्था(७) शत्रु
प्रतिशासन(न) सेवकों	प्रतीहार(७) द्वार-द्वार	प्रत्यवसित(३) खायाभा
कामेजना	प्रतीहारी(स) डोढीदा	प्रत्यारख्यात(३) निरादर
प्रतिश्याय(७) पीनसरोवर	रिन् मार्ग	कियाहुआ
प्रतिश्रय(७) सभा-अश्र	प्रतीली(स) भीतरका	प्रत्यारख्यान(न) निराद
प्रतिश्रव(७) स्वीकार	प्रत्न(३) पुराना	प्रत्यादिष्ट(३) निरादर
प्रतिश्रुत्(स) प्रतिशब्द	प्रत्यक्(अ) पश्चिमदि	कियाहुआ
प्रतिष्ठम्भ(७) कार्यकारो	शा-पश्चिमदेश-पश्चि	प्रत्यादेश(७) निरादर
कना	मकाल	प्रत्यालीढ(न) धनुष
प्रतिसर(७) सेनाका	प्रत्यक्षणी(स) चिचि	कास्थान

प्रत्यासार (७) किलेकापी- प्रत्याहार (७) लेना प्रत्युत्क्रम (७) युद्धका प्रत्युष (७) प्रात प्रत्युषस (न) प्रात- वि ध	प्रधि (७) गाढीकीहाल प्रपंच (७) विपरीत-बड़ ई-ठगना प्रपद (न) पाँवकीच्छा प्रपा (स) पौशला प्रपात (७) पर्वतसेजल निकलनेकास्थान प्रपितामह (७) परदादा प्रपुनाड (७) पर्वारुक्ष प्रपौंडरिक (न) गुलाव प्रफुल्ल (३) विकसित प्रबंधकल्पना (स) कथा प्रवत्स (७) वीणादिवा जेकादंड, मंगा (७) न अंकुर (७) न प्रबोधन (व) मातंगंध कोषांत युतकरना प्रभंजन (७) पवन प्रभव (७) जन्म-हेतु गोमुरवपर्वत प्रभा (स) गतेज भाकर (७) स्तूर्य प्रभात (न) प्रात	प्रभाव (७) शक्ति, प्रताप प्रभिन्न (७) भ्रसुआहा प्रभु (७) पति प्रभूत (३) अधिक प्रभृष्टक (न) शिरसेचो टीतककीमाला प्रमथ (७) शिवसेवक प्रमथन (न) मारा प्रमथाधिप (७) शैव प्रमद (७) हर्ष प्रमदवन (न) एनियों काबाठा प्रमदा (स) स्त्री प्रमना (३) हर्षित प्रमा (स) सच्चाज्ञान प्रमाणा (न) हेतु-मर्याद घटदर्शन-प्रमाणा-ज्ञा प्रमाद (७) भ्रम-भूल प्रमातमह (७) पराना प्रमापण (न) मारा प्रमिति (स) सच्चाज्ञान प्रमीत (३) मृतक प्रमीला (स) आलस्य
--	--	---

मुख(३) मुख	पवाह(७) वहना	प्रपवाह(७) परिहारी
प्रमुदित(३) हर्षित	प्रवापण(न) मारा	प्रपौही(स) प्रथमभा
प्रमोद(७) हर्ष	प्रवाहिका(स) संग्रह-	भतगौ
प्रमोह(७) हर्ष	णी प्रसिद्ध	प्रसन्न(३) निर्मल
प्रयत(७) पवित्र	प्रविरव्याति(स) अति	प्रसन्नता(स) निर्मलता
प्रयत्न(३) प्री-आदि	प्रविदारण(न) लड़ाई	प्रसन्ना(स) मदिरा
प्रयाम(७) धनादिका	प्रविश्लेष(७) खड़ावियो	प्रसभ(न) हठ
संग्रह विज्ञाव	ग	प्रसर (७) घावका
प्रयोगार्थ(७) युद्धका	प्रवीणा(३) अज्ञा	फैलना विस्तार
प्रलंबघ्न(७) कलदेव	प्रवृत्ति(स) वार्त्ता-व	प्रसरण(न) सेनाका
प्रलया(७) क्षय-मूर्क	प्रवृद्ध(३) बहुतवला	प्रसव(७) जन्म-फल
प्रलाप(७) वकना	हुआ-फैला	पुद्ग-उत्पत्ति
प्रवण(३) पृथ्वीका	प्रवेक(३) मुख्य	प्रसवबंधन(न) मुच्छा
क्रमसे उतासवलाव	प्रवेणि(स) वेणी	प्रसव्य(३) उलटा
प्रवयस(७) वृद्धा पुरुष	प्रवेणी(स) हाथीकी	प्रसह्य(अ) हठ
प्रवर्ह(३) मुख्य	मूल	प्रसाद(७) प्रसन्न-अ
प्रवहिका(स) पहेली	प्रवेष्ट(७) वाँह	नग्रह-काव्यगुरा
प्रवह(७) बाहर जाना	प्रव्यक्त(३) स्पष्ट	प्रसाधन(न) नेपथ्य
प्रवहण(न) स्त्रियोंका	प्रश्न(७) प्रँकना	प्रसाधनी(स) कंठी
रथ विद्यादिकादान	प्रप्रय(७) प्रेम	प्रसाधित(३) अलंकार
प्रवारण(न) तुलापुरु	प्रप्रवण(७) रुनी	युत
प्रवाल(७) बीणादंड	कास्थान	प्रसारी(३) जानेवाला
प्रवासन(न) मारा	प्रप्रित(३) नम्र	प्रसारिणी(स) आकाश

प्रसित(३)लीन	प्रस्थपुष्य(७)देना	प्राचीना(स)पाठा
प्रमिद(स)वाँघना	मरुआ	प्राचीनावीत(न)वाम
प्रसिद्ध(३)विरव्यात	प्रस्थान(न)यात्रा	हाथकाजनेऊ
भूषित	उड़ी	प्राचीर(न)धिरा
प्रसू(स)माता-घो	प्रस्फोटन(न)सूय	प्राच्य(७)पूर्वसहितद-
प्रसूता(स)सौरिस्त्री	प्रस्ताव(७)मृत	प्राजन(न)हँकनेकापैना
प्रसूति(स)जन्म	प्रहर(७)पहर	प्राजिता(७)गाढीवान
प्रसूतिका(स)सौकि	प्रहरा(न)शस्त्र	प्राज्ञ(७)पंडित
स्त्री	प्रहस्त(७)फैलीअंगु	प्राज्ञा(स)अतिबुद्धिवाती
प्रसूतिज(३)पीडा	लीसहितहाथ	प्राज्ञी(स)अतिबुद्धिवाती
प्रसून(न)फूल	प्रहिर(७)कूप	प्राज्य(३)अधिक
प्रसूता(स)सौरिस्त्री	प्रहेलिका(स)पहेली	प्राड-विवाक(७)पंच-प्र
प्रसूत(७)हार्योका	प्रहृन्न(३)हर्षित	प्राणा(७)शरीरकापवन
निउडाकरना-फैला	प्रांशु(३)ऊँचा	प्राणमी-प्राणा-मांघरस
(३)	प्राकू(अ)भूतकाल	प्राणी(७)जीव
प्रसूता(स)जाँघ	पूर्वदिश-पूर्वदेश	प्राणिद्यूत(न)जीवोकी
प्रसेव(७)थैली	प्रकार(७)घेरा	प्रातर(अ)प्रभात
प्रसेवक(७)वीणाकी	प्राकृत(७)नीच	प्रातिहारक(७)इंद्रजाली
तोवी	प्राववंश(७)सामग्री	प्राथमकलिक(७)नया-
प्रस्तर(७)पत्थर	किधरसेपूर्वगृह	विद्यार्थी
प्रस्ताव(७)प्रसंगा	प्राग्रहर(३)मुख्य	प्रार्थित(३)माँगा
प्रस्थ(७)न)पर्वतका	प्राधार(७)धीआदि	प्रादुर(अ)नाम प्रकाश
तट-तोलभेद(७)	काटपकना	प्रकट
	प्राची(स)पूर्वदिशा	

प्रादेशा (७) अंगुलीसेतज	प्रावृत (३) गोट	प्रांवा (स) दोला डोली
नी अंगुलीतकका भाग	प्रावृष्ट (स) वर्षात्रु	प्रांखित (३) कंपा
प्रादेशन (न) दान	प्रावृषायणी (स) कौंच	प्रांत (३) मृतक - परेत
प्राध्वन (अ) अनुकूलता	प्रास (७) साँठा	प्रांत्य (अ) जन्मांतर
प्रांत (७) न) धरकानेकी	प्रासंठा (७) रथकाजु	प्राेम (न) प्रिय
समीपकीभीत दिष्ट	प्रासंम्य (७) बैलभेद	प्राेमन् (७) प्रेम
प्रांतर (न) दूर और शून्य	प्रासाद (७) राजधर	प्राेष्ट (३) अतिशय प्रिय
प्राज्ञ (३) पाया	प्रासिका (७) भालावाला	प्राेय (७) आजाकरना
प्राप्तपंचत्व (३) मृतक	प्राहू (७) दिनकाभाग	मर्दनवाल्केश
प्राप्तरूप (३) पंडित - मनो	प्रिय (७) पति, प्यारा (३)	प्राेध्या (७) दास
हर	प्रिया (स) स्त्री	प्राेक्षणा (न) यज्ञपशु
प्राप्ति (स) उदय - लाभ	प्रियक (७) कदम्ब	प्राेना - जलसे कींरा
प्राप्य (३) मिलनेकेयो-	विजेशार - ककनी -	देना पशु
प्राभृत (न) भेट	फूलप्रियंगु - मृगभेद	प्राेक्षित (३) आराहुआ
प्राय (७) सन्यासभेद	प्रियंगु (स) ककुनी -	प्राेथ (७) न) घोड़ा की
वहुधा - अन्तगमन	फूलप्रियंगु	नाक द्रपदनक्षत्र
प्राय्य (३) मुख्य	प्रियता (स) प्रेम	प्राेष्ठपदा (स) पूर्वाभा
प्रायस (अ) बहुताई	प्रियंवद (३) प्यारवोल	प्राेष्टी (७) सञ्चेतम -
प्रालम्ब (न) लंबीमाल	प्रीणन (न) अघाया	छली
प्रांलंबिका (स) सौनेकी	प्रीत (३) हर्षित	प्राेष्टपदा (७) भादों
लंबीकंठी	प्रीति (स) हर्ष	प्राेष्ठपदा (स) पूर्वा
प्रालेय (न) हिम	प्राष्ट (३) जरा	भाद्रपदनक्षत्र
प्रावार (७) दुपट्टा	प्राेक्षा (स) बुद्धि - ना	प्राेठ (३) बहुतबढ़ा

प्लवाम (५) वानर- मैंडक	फल (न) फल-ठा- ल-फारा-व्याज	फाल (३) कपासकाव- नावस्त्र-हल (५) न
प्लव (५) पाकरवृक्ष	लाम	फाल्गुन (५) फागुन
प्लव (५) वेड़ा-मोथा	फलक (५) न ठाल	फाल्गुनिक (५) तथा
(न) हरियलपक्षी-चंडा ल	फलकपाणि (५) ठा-	फुल्ल (३) फूलाहुआपुष्प
प्लवगा (५) वानर-मैंडक	लवाला ला	फेन (५) समुद्रफेन
सारथी	फलत्रिक (न) निफ	फेनिल (५) रीठा-वेर
प्लवंगा (५) वानर	फलपूर (५) देजोरा	फेरव (५) स्यार
प्लाक्ष (न) पिलरवन-	नीवू लाचक्ष	फेरु (५) स्यार
वृक्ष-राजहर्डि	फलवत (३) फलवा-	फेला (स) गंठा व
लीहन् (५) तिल्लीका	फलाध्यक्ष (न) गि	वद्ध (३) वंधाहुआ
लीहशत्रु (५) लालकं- जा	रनी कनी फूलप्रियंगु-क	वध (५) मारा
भुत (न) घोंडेकीचाल	फली (३) सफलवृक्ष	वधिर (५) वहरा ग्य
भुष्ट (३) जर	फलिन (३) तथा	वधोद्यत (३) मारनेकेयो-
झौष (५) जलाना	फलिनी (स) फूलप्रि	वध्य (३) तथा
प्सात (३) खायागया	यंगु-कंगुनी-हालों	बंधक (न) धरोहर
फ	फलेग्राहि (३) फलवा	बंधकी (स) छिनारि
फंजिका (स) भांगरा	लाचक्ष	बंधन (न) बांधना ना
फराण (५) स) फरा	फलेरुहा (स) पाठर	बंधनालया (५) जेलखा
फटा (५) स) फरा	फल्गु (स) कटूमर	बंधस्तम्भ (५) रवूटा
फाणिजक (५) देनाम	निर्वल (३)	बंधु (५) भाई
रुआ	फाणित (न) राव	बंधुजीवक (५) दुपहरिआ
फाणि (५) सूर्य	फांट (३) सहजकिया	बंधुता (स) बंधुसमूह

वंधुर(३) मुकाहुआऊं	वला(स) रवाहरी	वलेय(७) गाधा
बंधुल(७) कुलपुत्र	वलात्कार(७) हठ	वलेयशक(७) भाँगा
बंधूक(७) दोपहिरिआ	वलाराति(७) इंद्र	वाल्य(७) वालकामन
वन्ध्य(३) अफलरक्ष	वलिध्वंसी(७) विष्णु	वाहुलेय(७) स्वामिका
वन्ध्या(स) वॉक-वांग	वलिसद्मा(न) पाताल	वर्तिक
वभ्रु(७) वडानौला-	वलीवर्द(७) वेल	वीभ्रस(३) डर
विषउ-पीला(३)	वा(अ) उपमा-विक	वक्का(३) कलेजा
वहिर्मुख(७) देवता	वाराण(७) वाराणसुर	वुद्ध(७) जिनवाउध
वल(७) वलदेव-सेना	वाराण / लकीहिंदी	जानाया(३)
(न) पराक्रमी(न)	वाराण(७-स) कले	वहि(स) प्रज्ञा
वलज(न) रवेत-नगा	वाधा(स) पीडी	वुद्ध(७) वल
काद्वार	वांधकिनेय(७) कुल	वध(७) अरु-चंडित
वलदेव(७) कृष्णभ्राता	वाकापुत्र	वधित(३) जानाया
वलजा(स) उत्तमस्त्री	वांधव(७) गोतीभाई	वभ्रसा(स) भूरव
वलभद्र(७) वलदेवजी	वाल(न) जेनवाला-	वभ्रक्षित(३) भूरवा
वलभद्रिका(स) त्रायमा	वालक(७) वाल(७)	वुस(न) भूस
वलमी(स) छज्जा	बछेड़ा-भूरव(३)	वृंदारक(३) देका
वलधित(न) नदी-आदि	लडका(३)	वृंदिष्ट(३) अतिशय
सेधिराहुआ	वालधामिणी(स)	वोधकर(७) सुतिआ
वलवत्(अ) अतिशय	प्रथमगाभनगौ	दिसेगजाओकोजगा
वलवान्(७) पुष्टि-वल	वालतनय(७) कल्या	ना
बाला	वाधना	वाधि(७) वालनयत
वलविन्यास(७) किला	वृद्ध	वोधिदुम(७) पीपल
		प्रह्वारी(७) प्रह्वारी

ब्रह्मराय (७) गूत	ठकी अंजली	भगंदर (७) व्याधि भेद
ब्रह्मत्व (न) ब्रह्मपन	ब्रह्मासन (न) आसन	भगवत् (७) जिन वा बुध
ब्रह्मदत्ता (स) अजवायन	विशेष भांगरा	भगिनी (स) वहिन
ब्रह्मदारु (न) गूत	ब्राह्मणयष्टिका (स)	भंगा (७) लहर
ब्रह्मा (न) ७ ब्रह्म-वेद	ब्राह्मण (७) विप्र	भंगा (स) भंग भिद
तत्व - तपस्या	ब्राह्मणी (स) भंगार	भंगी (स) कुटिलताका
ब्रह्मन् (७) ब्रह्मा-विप्र	ब्राह्मी (स) सप्तमाता	भंग्य (३) भंग के वेत
प्रजापति	सरस्वती-त्रौषधी	भजमान (३) न्याय से
ब्रह्मपुत्र (७) विष भेद	ब्राह्म (७) ब्रह्माकादि	युक्तवस्तु
ब्रह्मभूय (न) ब्रह्ममें	ब्रह्मतीर्थ अर्थात् अंग	भट (७) जोधा
मिलना	गकी बल्ल	भट्टि (३) शूल पर भुने
ब्रह्मवर्चस् (न) सदाच	ब्राह्म्यं (न) तथा	भट्टारक (७) राजा-भे
रत्रौ वेदभ्यासफल	भ (न) नक्षत्र	टाकी (स) वेगन
ब्रह्मबंधु (३) निंदित-	भक्त (न) भात	भट्टिनी (स) वडीरानी
आज्ञा	भक्षक (३) खानेवाला	सेत्रौर रानी
ब्रह्मविंदु (७) अंजली	भक्षित (३) खाया गया	भंडाकी (स) वनभरा
सेवापठने के समय	भक्ष्यकार (३) पुत्रा	भंडिल (७) सिरस
मुख से निकला बुंद	आदिका बनानेवाला	भंडी (स) भांगरा
ब्रह्मसायुज्य (न) ब्रह्म	भगा (न) योनि (श्री)	भद्र (न) कल्याण-वैल
भंग मिलना	कामना-महात्म्य	भद्रकुम्भ (७) शूकलश
ब्रह्मस्त्र (७) अनिरुद्ध	वीर्य-यत्न-सूर्य	भद्रदारु (७) देवदारु
ब्रह्मांजलि (७) वेदपा	कीर्ति	भद्रपणी (स) खमारी
ठके आदि में शांति पा		भद्रमुक्त (७) नाराज

भद्रयव(३)इंद्रजव	भल्ल(५)रीछ	भागिनिय(५)भांजा
भद्रवला(स)आकाश	भल्लातकी(३)	भागीरथी(स)गंगा
वेलि चिंदन	भिलावा	भाग्य(न)दैव-शुभा
भद्रप्री(स)सामान्य	भल्लुक(५)रीछ	शुभकर्म
भद्रासन(न)राजगद्दी	भव(५)शिव-जन्म	भाजन(न)पात्र
भय(न)उर	भवन(न)घर	भांड(न)पात्र-घोड़ेका
भयंकर(न)उर	भवानी(स)पार्वती	गहना-वनियेकामूलध
भयद्रुत(३)इराहुआ	भविक(न)कल्यारा	भाद्र(५)भादों
भयानक(५)रसविशेष	भविता(३)होगा	भाद्रपद(५)भादों
उर	भविष्य(३)होनेकी	भाद्रपदा(स)उत्तरभा
भर(५)बहुत	इच्छावाला	भानु(५)सूर्य,किरण
भरण(न)देतन	भयक(५)कुत्ता	भामिनी(स)क्रोधिनीस्त्री
भराय(न)देतन	भस्त्रा(स)धौंकनी	भार(५)२०तुलाभर
भरायभक्त(३)वेतनी	भस्मांधिनी(स)गंगा	भारत(न)वर्ष-लोक
भरत(५)नट	नधरि सिसे	भारती(स)सरस्वती
भरद्वाज(५)लवा	भस्मगर्भा(स)काली	भारद्वाजी(स)कपास
भर्ग(५)शिव	भस्म(५)भस्म-ऐश्वर्य	भारयष्टि(स)बहंगी
भर्त्ता(५)पति पुत्र	भार(स)तेज	भारवाह(५)बोकिल
भर्त्तदारक(५)राज	भारा(५)अंश-वैद्य	भारिक(५)तथा
भर्त्तदारिका(स)राज	भाराधेय(न)भार्य	भार्गव(५)शुक्र
कन्या	राजभारा(५)पुत्र	भार्गी(स)भांगरा
भर्त्सन(न)डराना	भारीन(३)भांगका	भार्गवी(स)दूब
भर्म(न)सौनावेतन		भार्या(स)विवाहिता

भाय्यपत्नी (७) स्त्री पु	भित्त (२) भाठा	भूठा वा जूठा
रुध	भिति (स) भीति	भुस (३) रेणु-दूरा
भाल्लक (पु) रीछ	भिदा (स) फूटना	भुज (५) स) वाह
भाव (७) पंडित-मन	भिदुर (न) वज्र	भुजठा (७) स) र्थ
काविकार-सत्त्व-स्ता	भिदिपाल (७) गदा	भुजंठा भुक् (७) मोर
स्वभाव-अभिप्राय	भिन्न (३) और विदार	भुजंठाम (७) स) र्थ
चेष्टा-आत्मा-स्वरू	भियज (३) वैद्य	भुजंगाक्षी (स) सनाय
प-जन्म ^{पाया} _{दाय}	भिस्मा (स) भात	भुजशिर (न) कंधा
भावित (३) छौं का प	भिस्सटा (स) जलान्त्र	भुजांतर (न) गोद
भाकिनी (स) स्त्री	भिस्सा (स) भात	भुजिष्य (७) दास
भावुक (न) कल्याण	भी (स) डर	भुवन (न) जल-जग
भाश्र (स) तेज-	भीति (स) डर	भूत (७) देवजाति-पा-
भाया (स) सास्वती	भीम (७) शिव-डर	यागया-न्याय (न)
भाषित (न) बोलना	भीरु (स) नारी-डर	पृथिव्यादिपंचतत्त्व
कहा (३)	पोक (३)	(न) सत्य-जंतु (न)
भाष्य (न) विवरण	भीरुक (३) डरपोका	गतकाल (न) सदृश (न)
भास (स) तेज	भीरुपत्नी (स) सतावर	भू (स) पृथ्वी सी
भास्कर (७) सूर्य	भीलुक (३) डरपोक	भूतकेश (७) जयामां-
भास्वत (७) सूर्य	भीषण (न) डर	भूतवास (७) बहेड़ा
भिस्मा (स) भीरवमा	भीष्म (न) डर	भूतवेशी (स) श्वेतफू
गना-सेवा-वेतन	भीष्मसू (स) गंगा	लकाहर शृंगार
भिदु (७) सन्यासी	भुक्त (३) रवायागया	भूतावास (७) बहेड़ा
भिदुकी (स) भिरवा	भुक्तसमुज्जित (न)	भूतान्ता (७) ब्रह्मा, देह

भूति(स)सिद्धि-ऐश्वर्य	भूषण(३)होनेकी-	भैरव(न)भोरकाकुंड
वेतन-भस्म	इच्छावाला	भैरव(न)डर
भूतिक(न)विद्यता-नृणा	भूतारण(न)जल	भैरव(न)औषध
गंध-कुकुरमुता	भूंगा(न)तज-रुक्क	भोगा(५)स्त्रीकिसुख
भूतेश(५)शिव	बैठिया-भौरा	आदि-हाथी-घोड़ा
भूयार(५)सुआर	भूंगारज(५)भंगार	आदिकिसुख-सर्प-
भूदेव(५)ब्राह्मण	भूंगार(५)स्वर्णरचित	काफरा-शरीर
भूनिंव(५)किरम्यता	पात्र	भोगाकी(स)सर्पकी
भूषा(५)राजा	भूंगारी(स)कींगुर	नदी-नगरी
भूषी(४)वेला	भूगु(५)पर्वतसेजल	भोगी(५)सर्पमान
भूभूत(५)पहाड़-राजा	निकलनेकास्थान	भोगिनी(स)रानी
भूमि(स)पृथ्वी	भूतक(५)भजदूर	भोजन(न)खाना
भूमिजंबुका(स)नारंगी-	भूति(स)वेतन	भोग(न)संबोधनार्थ
भूमिपृथ्वी(५)वनियाँ	भूतिभुक्(५)भजदूर	भोग(५)भंगाल
भूयस(३)अधिक	भूत्य(५)दास	भौरिक(५)सैनिका
भूरि(३)अधिक-सैना	भूत्या(स)वेतन	भूतंश(५)गिरना
(५)चंद्र(५)	भूश(न)वारंवार	भूकुंश(५)नाचनेवा
भूरिफेना(स)सेयारुक्ष	भूक(५)भेड़क	भूकुरि(स)भौरहैटो
भूरिमाय(५)स्यार	भूकी(स)भेड़की	कारना
भूहडा(स)हाथीभुंडा	भेद(५)भेदकरना	भूकुटी(स)तथा
भूर्ज(५)भोजपत्र	भेदित(३)फाटा	भूम(५)भ्रंति, नली
भूषा(स)भूंगार	भेरी(स)नगारावात	नल-भूम
भूषित(३)अलंकायन	भैरव(न)औषध	भूम(५)भौरा

भ्रमरक (७) ललाटपरमुके	मकरंद (७) पुष्परस	मणि (७) रत्नशिखेव
भ्रमि (स) भ्रम	मकुट (न) मुकुट	मणि (७) मण्डक
भ्रष्ट (३) टपकाहुआ	मकूलक (७) जयफल	मणिबंध (७) मणि-
भ्राजिष (३) अलंकारादिसे	वज्रदंती	मालारेखा / का आगा
भ्रातृ (७) बहनभाई	मख (७) यज्ञ	मंड (७) मंड - मंड
भ्रातृज (७) भतीजा	मक्षिका (स) मकवीमंडन (न) गहना-भूष	
भ्रातृजाया (स) भौजाई	ममाध (७) यज्ञाया	मोमुत्र छकको
भ्रातृभगिना (७) भाईबहन	मंसु (अ) शीघ्र	
भ्रातृव्य (७) भतीजा-शत्रु	मंगल (७) मंगल	मंड (७) मंड
भ्रात्रीय (७) भतीजा	मंगल्यक (७) मसूर	मंडल (७) मंगल
भ्रांति (स) भ्रम	मंगल्या (स) मंगल	मंडल (७) मंडल
भ्राष्ट (७) भ्रूजनेकारवपरा	मगधा (७) इंद्र	मंडल (न)
भ्रुकुंश (७) नाचनेवालापुरुष	मर्चिका (स) मर्चक	मंडल (७) मंडल
भ्रुकुटि (स) भौहैंटेढीकना	मंजु (७) मंजु	मंडलाग्र (७) तलवार
भ्रुण (७) गर्भ	मंचा (७) मंच	मंडलेन्द्र (७) मंडल
भ्रू (स) भौह	मंजरी (स) मंजरी	मंडहारक (७) मंडल
भ्रुकुंस (७) नाचनेवालापु	मंजिष्ठा (स) मंजिष्ठा	मंडित (३) अलंकारयु
भ्रुकुटि (स) भौहैंटेढीकना	मंजीर (७) मंजीर	त
भ्रूण (७) गर्भ - बालक	मंजु (३) सुंदर	मंडूक (७) मंडूक
भ्रूय (७) अन्याय	मंजुल (३) सुंदर	मंडूकपर्णी (७) मंडूक
म	मंजूषा (स) पिटारी	मंडूकपर्णी (स) मंडूक
मकर (७) जलजीव	मठ (७) शिष्यधर	मंडूर (७) लोहमैल
मकरध्वज (७) कामदेव	मंडू (७) वजेकाभेद	मंठाज (७) हाथी

मत्तलिका (स) शुभ	मज्ज (७) हारिलपक्षी	मधुवार (७) मदिरा
मति (स) बुद्धि	मज्जुर (७) मच्छली	मीनेका समय
मत्त (७) मत्वाला हाथी	मद्य (न) मदिरा	मधुव्रत (७) भौरा
हर्षित (३२) स्त्री	मधु (७) चैत्रमास-र	मधुशिखर (७) ग्ला
मत्तकाशिनी (स) उत्तम	त्वज्जोति (स) सहत (न)	लफूलका सहजना
मत्स्य (७) मच्छली	महुआकी मदिरा (न)	मधुश्रेणी (स) मूर्वा
मत्सर (७) परसंपतिको	मदिरा (न) पुष्पस (न)	मधुषील (७) महुआ
नंदेरवस्के (मत्सरसेयु-	मधुकर (७) भौरा	मधुच्छिष्ट (न) मोम
क्त (३२)	मधुक्रम (७) मदिराघा	मधूक (७) महुआ
मत्स्यंडी (स) राव या	मधुद्रुम (७) महुआ	मधूलक (७) तथा
मत्स्याधानी (स) कंडि-	मधुप (७) भौरा	मधूलिका (स) मूर्वा
मत्स्यपिता (स) कुटकी	मधुपर्णिका (स) नील	मधुन (न) मुलहेठी
मत्स्यवेधन (न) वंसी	मधुपर्णी (स) मिलेय	मध्य (न) बीच-श
मत्स्याक्षी (स) ब्राह्मी	मधुमक्षिका (स) मकरी	रीका बीच (पुन)
मधित (न) मठाभेद	मधुयष्टिका (स) मुल	न्याय (३२) विशेष
मद (७) हाथी का मद-आ	हेठी	मध्यदेश (७) देश
मदकल (७) मद्यहाथी	मधुर (७) मीठारस-	मध्यम (७) माने
मदन (७) कामदेव-मै	स्वादु (३२) प्रिय (३२)	कास्वर-देशभेद
फल-धतरा / निकाधर	मधुरक (७) जीरा	शरीरका बीच (पुन)
मदस्थान (न) मदिरापी	मधुरसा (स) दारु-शु	मध्यमा (स) प्रथम
मदिरा (स) मदिरा	मधुरा (स) सौंफ	जखला-बीच
मदिरामृह (न) मदिरा	मधुरिप (७) विष्ट	की-अंगुली
मदेकट (७) मद्यहाथी	मधुलिप (७) भौरा	मध्याह्न (७) सं-

ध्याकाल-मध्याह्नका	मनु(७)अपराध	मन्या(स)गलेकी
ल कीमदिरा	मंत्रज(७)शक्ति	पिछलीनस
मध्वासव(७)महुआ	मंत्री(७)सचिव	मन्यु(७)शोक-दीनता
मनःशिला(स)मल	मंथ(७)रई	यत्त-क्रोध चय
सिलऔषध	मंथा(७)रई	मन्वंतर(न)७१दिव्य
मनसिज(७)कामदेव	मंथदंडक(७)रई	मपष्टक(७)वनमूढा
मनस्(न)चित्त	मंथनी(स)मथानी	मपष्टक(७)तथा
मनस्कार(७)सुखमें	मंथूर(७)मंदगामी	मय(७)ऊंट
तत्परमन कि	मंथान(७)रई	मयु(७)किन्नर
मनाक्(आ)सुखार्थ	मंद(७)भूर्वअल्प	मयूरव(७)किरण-शो
मनित(३)जाना	मंदगामी(७)धीरे	मयूर(७)अजमोदमो
मनीषा(स)वुद्धि	चलनेवाला	मयूरक(७)बिरचिरा-
मनीषी(७)पंडित	मंदाकिनी(स)आका	तृतीया (न)
मनुज(७)मनुष्य	मंदाक्ष(न)लज्जा	मरकत(न)मणि
मनुष्य(७)पुरुष	मंदार(७)कल्यारक्ष	मरणा(न)मृत्यु
मनुष्यधर्मन्(७)कुवेर	नींव-आक	मरिचि(न)मिरच
मनोगप्ता(स)मनसिल	मंदिर(न)घर	मरिचि(७)किरण
मनोजव(३)पितृसम	मंदुरा(स)घुड़साल	मरिचिका(स)मृगतृषण
मनोह(३)सुंदर	मंदोष्ण(ल)थोडाग-	मरु(७)मरुभूमि वा-
मनोरथ(७)इच्छा	रम	रेतलीभूमि-निर्जल
मनोरम(३)सुंदर/का	मंद्र(७)गंभीरशब्द	देश-पर्वत
मनोहत(३)टूटेमन	मन्मथ(७)कामदेव	मरुत(७)पवन-वा-
मनोहा(स)मनसिल	कैथारक्ष	ययदिशाकास्वामी-

देवता	मलिनी(स)रजस्वला	महाकुल(७)सृज्जन
मरुलर(७)इंद्र	मलिम्लुच(७)चोर	महंगा(७)ऊंट
मरुन्माला(स)शाक	मलीमस(३)मैलीवस्तु	महाजाली(स)तुरई
मरुवक(७)मैनफल	मल्ल(७)पैलवान	महादेव(७)शिव
देनामरुन्मा	मल्लिक(७)हंसभेद	महाधन(न)बड़ाधन
मर्कट(७)वानर	मल्लिका(स)वेला	महानस(पुन)रसोइकी
मर्कटक(७)मकड़ी	वाहंसविशेष	धर श्री
मर्कटी(स)कौच-कं	मसी(स)कज्जल	महामात्र(७)सुरम्यमं-
जायदक्षकामेद	मसूर(७)अन्नभेद	महायज्ञ(७)यज्ञभेद
मर्त्य(७)मनुष्य	मसूरविदला(स)का	महारजत(न)सौना
मर्दन(न)अंगमूर्तिना	लनिसेतवातिधारा	महारजन(न)कुसुम
मर्दल(७)वाजेकामेद	मसूरा(३)विकना	महारराय(न)बड़ाजाल
मर्म(न)हड्डियोंकीसंधि	मस्कर(७)वांस	महारजिक(७)गण
मर्मर(७)खड़बड़ाना	मस्करी(७)सन्नासी	देवता २२० द्व
मर्मसूक्ष्ममर्मस्थ	मस्तक(पुन)शिर	महारौरव(७)नरकभे
(३) मर्मभेदी	मस्तिष्क(न)गूदा	महाशय(३)उदार
मर्यादा(स)मर्यादा	मस्तु(न)दहीकाजल	महाशूरी(स)अहीरी
मल(पुन)मैल-पाप	मह(७)उत्सव	महाप्रेता(स)स्वतंगा-
मलकविष्टा	वस्तु	महत(३)बड़ा, एवढाफल
मलदूषित(३)मैली	महती(स)नारदकी	महासहा(स)सेवती
मलपू(स)कटुवर	वीरण-सुभायी	कौटेदार-गुलावांस
मलयज(पुन)चंदन	महस(न)उत्सव	मैगा-मैथी-करसैया
मलिन(३)मैला	महाकंद(७)लहसन	महासेना(७)स्वामिका

निक	का(स)नर्मिलक(७)मेल	मोडनि(३)मूंगरेवत
महिका	स्त्रियोकीकंधमेष(७)मेढावभेडा	मोन(न)चुप
महिला	कापतला	मोरजिक(७)मृदंग
यंगु	मेह	वजानेवाला
वती	गति(७)मेघक्रांति	मोलि(३)शिरवा-कि
मि	प्य(न)जल	मैत्रावरुणि(७)अगस्ति
म	तादानुलासी(७)मोर	मैत्री(स)मिताई
म	नामन्(७)मोथा	मैत्र्य(स)न)मिताई
म	निर्धोष(न)मेघकाग	मैथुन(न)रतिकरना
म	आला(स)मेघपंक्ति	मैरय(न)मदिरा
धवाहन(७)इंद्र	मोक्ष(७)मुक्ति-का	मैहूर्त(७)ज्योतिषी
चक(७)काला-मोरपंख	लीपाठरि	मैल्लिष्ट(न)अस्पष्ट
चिह्न	मोघ(३)घर्थ	मैल्लिष्टदेश(७)देशभेद
च(७)लिंग-भेडा	मोचक(७)सहजना	मैल्लिष्टमुरव(न)तावा
म(न)चर्वी	मोचा(स)सेमर-के	य
क(७)गडकामदिरा	ला	यक्तती(न)कलेजा
दिनी(स)धरती	मोद(न)आनंद	यक्ष(७)कुवेरदेवजा
मेदुर(३)मेघ-चिक्कन	मोदक(७)न)लड्डु	यक्षकईम(७)महा
मेधा(स)धारणावतीव	मोरट(न)ऊखकीजि	सुगंधकीधूप
दि वंधनदंड	मोरटा(स)मूर्वा	यक्षधूप(७)राल
मेधि(७)मेढीवापश्रु	मोषक(७)चोर	यक्षराट्(७)कुवेर
मेध्य(३)पवित्र	मोह(७)मूर्ख	यक्षमा(७)क्षयीरोग
मेरु(७)सुमेरुपर्वत	मौक्तिक(न)मोती	यजुस(न)वेदभेद

यज्ञः (७) यज्ञ, यज्ञ सूत्र	यम (७) यमराज	यशः पटह (७) डोल
दक्षिण हाथ का जनेऊ	नित्य कर्म-संयम	यष्टा (७) यज्ञाध्यक्ष
यज्ञांग (७) गूलर वृक्ष	यमराज (७) यम	यष्टि (स) लाठी
यज्ञिय (३) यज्ञ की वस्तु	यमुना (स) नदी	यष्टिमधुका (स) मुल्हे
यज्वा (७) विधि से यज्ञ की	यमुना भ्राता (७) यम	यष्टीक (७) लाठी धारक
यज्ञ (अ) कारणा	ययु (७) अश्वमेध	याग (७) यज्ञ
यतः (अ) कारणा	यज्ञ का घोड़ा	याचनक (३) याचक
यती (७) जितेंद्रिय	यव (७) जौ	याचना (स) मांगना
यतिन् (७) जितेंद्रिय	यवका (३) जौ अन्न	याचित (न) जो मांगने
यत्नान (न) मदकरना	यवक्षार (७) जवा खा	से मिले सेमिला
यथा (अ) तुल्यतार्थक	यवन (७) बड़े बेग का	याचितक (न) मांगने
यथातथ्य (अ) सत्य	घोड़ा	यांचा (स) मांगना
यथाजात (३) मूर्ख	यवफला (७) चाँस	याजक (७) यज्ञक
यथापथं (अ) यथायोग	यवस (७) घास	यातना (स) पीड़ा
यथायथं (अ) सत्य-	यवागूर (स) लप्सी	यातयास (३) पुराना
यथायोग्य	यवाग्रज (७) जवा	राचकर त्याग किया
यथार्हवर्ग (७) हलका	रवार जवायन	यातु (न) राक्षस
यथास्वम् (अ) यथासो	यवानिका (स) अ	यानुधान (७) राक्षस
यय	यवास (७) जवासा	यातर (स) देउरानी जि
यथेप्सित (न) चाह	यवीय (७) डेरा भा	गानी / कल्ला-गमन
यदि (अ) पक्षी	यव्य (३) जौ के योग्य	यात्रा (स) प्रस्थान-नि
यदृच्छा (स) स्वतंत्रता	खेत	यादः पति (७) समुद्र
यंता (७) रथवान	यशस् (न) कीर्ति	यादस् (न) जलजीव

यादसांपति(७) वरुणा	आदिकाजुआ(७)	यूथनाथ(७) मुख्यहाथी
यान(न) बमन-बाह	शतयुगादि(न)	यूथिका(स) जूही
यानमुख(न) धुरा	युगकीलक(७) हल	यूप(७) तूत
याय्य(३) अधम	कीसैल	यूपक(७) पुन्ना
याय्ययान(न) पालकी	युगांधर(७) रथके	यूपकरक(७) यज्ञस्तंभ
याम्ययान(न) तथा	ज्येकाकाठ	यूपाग्र(न) यज्ञस्तंभकाशिर
याम(७) प्रहर, संयम	युगापत्रक(७) कच	योकत्र(न) ज्योतीकीरस्सी
यामिनी(स) रात	युगापद्(७) एकसमय	योमा(७) शास्त्रवांधना-उ
यामुन(न) सुरमा	युगापार्श्वता(७) नि	पाय-ध्यान-संगति
यायजूक(७) वारंवार	कालनेकाकाठ, जेत	युक्ति
यज्ञकरने बाला	नेके योग्य	योषोष्ट(न) सीसा
याव(७) लारव	युगल(न) दो	योम्य(न) ज्ञरुद्धिऔष
यावक(७) कुरथी	युग्म(न) दो	योजन(न) ४ कोश
यावत्(७) संपूर्ण-अ	युग्म(न) वाहन-	योजनबल्ली(स) भांगरा
वधि-मान-अवधार	युगाकाले जाना	योत्र(न) ज्योतीकीरस्सी
रा	वैल	योध(७) योधा
यावना(७) लोहवान	युद्ध(न) लड़ाई	योधसंराव(७) वीरोंका
याष्टीक(७) लट्ठधारी	यत्(स) युद्ध	निंदापूर्वक पुकारना
यास(७) जबासा	युवति(स) जवानस्त्री	योधा(७) योधा
युक्त(३) न्यायसे युक्त	युवा(७) युवापुरुष	योनि(७) स-स्त्री की भा
वस्तु	युवाज(७) राजपुत्र	योषा(स) नारी
युक्तरसां(स) रायसेने	यूथ(७) जंतुओं	योषित(स) नारी
युग(न) दो-गाड़ी	कास्मूह	योतव(न) तोल माप

यौवन (न) ज्वानी	रंगाजीव (७) रंगसाज	रथकार (७) करणी स्त्री
र	रचना (स) बनाना	औरमाहिष्यसे उत्पन्न
रहस्र (न) वेग	रजक (७) धोबी	बढई / हेका पदी
रक्त (७) लाल-लो	रज्ज (न) चाँदी-हार	रथगति (स) रथकालो
ह (न) कुंकुमकेसरि	(३) सौना (३) श्वेत (३)	रथदु (७) तेँदुआरुक्ष
(न) नीलादिरंग (३)	रजनी (स) रात, ^ह	रथीठा (७) चकवा चकवी
स्तक (७) दुपहरिया	रजनीमुख (न) रातका	लछा (न) पहिया (न)
स्तचंदन (न) पतंगा	रज (न) रजोमुगा-धू	रथिक (७) रथवाला
स्तपा (स) जौंक	रि-स्त्रीकारज ^{हि}	रथी (७) रथपावैठकरल
स्तफला (स) कुँदुरु	रजस्वला (स) रजवा	इनेवाला। रथवाला
स्तसंधक (न) स्तपत्र	रज्जु (स) रस्सी ^न	रथिर (७) रथवाला
स्तसेरुह (न) लाल	रज्जन (न) लालचंद	रथ्य (७) रथकाघोड़ा
कमल	रंजनी (स) नील ^(७)	रथ्या (स) भीतरकामार्गी
स्तांग (७) कमीला ^ल	राग (७) युद्ध (शब्द)	रथसमूह
स्तोत्पल (न) लालकम	रागसंकुल (न) वीरें	रद (७) दाँत
रक्षस्र (न) देवजाति, रा	कागर्जना	रदन (७) दाँत
क्षस ^{मूह}	रंडा (स) मूसली	रदनच्छद (७) दाँत
रक्षकट्या (७) रथसे	रत (न) मैथुन	रन्ध्र (न) पोल
रक्षित (३) स्वयम्	रतिपति (७) कामदेव	रभस (७) हर्ष
रक्षिवर्ग (७) रक्षार	रत्न (न) रत्नमात्र	रमणी (स) स्त्री
रक्षणा (७) रक्षा	रत्नसानु (७) पर्वत	रमा (स) लक्ष्मी
रंकु (७) मृगभेद	रत्नाकर (७) समुद्र	रंभा (स) केला
रंग (न) रँग	रथ (७) वेत, रथ	रथ (७) वेग

	ति	कले
रल्लक (७) कंबल	रहस्य (३) रकातकीव	राजवला (८) आकाश
रव (७) शब्द	रका (८) कलासहित	राजवीजित् (७) राजवंश
रवण (३) शब्दकानेव	रूमासी	राजवृक्ष (७) अमलतास
रवि (७) सूर्य	राक्षस (७) राक्षस	राजसदन (८) राजघर
राक्षि (७) किरण-रसी	राक्षसी (८) वृक्षभेद	राजसभा (८) राजसभा
रस (७) विषय, पाण, गंध	राक्षा (८) लारव	राजसूय (८) यज्ञभेद
रस-श्रृंगादि विषय	रांकव (३) भृगरोमसे	राजहंस (७) चैत्रचरन
वीर्य-गुण-रस-द्रव	वनावस्त्र	लालचेतवर्किकाहंस
रसगर्भ (८) रसोत	राज (७) राजा	राजादन (७-८) बिरौजी
रसज्ञा (८) जीव-जीम	राजक (८) राजाओं	रिवरनी
रसना (८) जिह्वाजीम	राजन (७) राजा-चंद्र	राजार्ह (८) अग्रह
स्त्रियोंकी कंधनी	क्षत्री-राजारिष्ट (८)	राजि (८) निरंतरपंक्ति
रसवती (८) रसोईका घर	क्षेम-अश्रुम श्रुम	राजका (८) राई
रसा (८) रस-पृथ्वी-पा-	राजन्य (७) क्षत्री	राजिल (७) विषरहितस
ठरि-सालिनिमित्री	राजपृष्ट (८) राजाकान	राजीव (७) मछली
रसंजन (८) रसोत	काधनुष	राजीव (८) कमल
रसातल (८) पाताल	राजन्यक (८) क्षत्रि	राज्यांग (८) राज्यके
रसाले (७) आम, ऊख	राजन्वत् (३) नीतिम	अंग
रसाला (८) चटनी	नृराजासेयुक्तदेश	रात्रि (८) रात
रसित (८) मेघकावर्जिन	राजराज (७) कुवेर	रात्रिचर (७) राक्षस
रसोनक (७) लहसुन	राजवंश्य (७) राजवंश	रात्रिचर (७) राक्षस
रहस्य (८) एकांत	राजवत् (३) राजकी	राक्षंत (७) सिद्धंत
रह (८) एकांत	आशासेयुक्तदेश	राक्ष (७) वैष्णवर

राधा (स) विशगरवा	शिति (स) पीतल-प्रचार	शिव
राम (७) वलदेव-भृग	रूपकना	रुद्राणी (स) पार्वती
भेद-नीला (३) काला	रितिपुष्प (न) अंजन	रुधिर (न) लोह
(३) स्मरणीय (३) श्वेत (३)	रुक्प्रतिक्रिया (स) औ	रुरु (७) मृगभेद
रामठ (न) हींग	रुधका उपाय	रुष (स) क्रोध
रामा (स) स्त्री	रुक्म (न) सौना	रुहा (स) दूव
राम्भ (७) वासकाव्रह्म	रुक्मकारक (७) सुनार	रूप (न) विषय
राशि (७) स) समूह-अ	रुक्ष (३) अप्रेम-अ	रूपाजीवा (स) वैष्ण
नादिकोठर-मेघादिल	विकृण	रूप्य (न) ताँवा चाँदी
गन	रुग्म (३) दूटा	केमेलकारुपया
राष्ट्र (न) देश उपद्रव	रुच (स) तेज	चाँदी, अक्की चाँदी
राष्ट्रिका (स) भटकराई	रुचक (७) एरंड-विजो	रूपाध्यक्ष (७) रूप
राष्ट्रिय (७) राजाकासाला	रुचि (स) तेज-क्रोध	योंका अधिकारी
रास्म (७) गधा	कीइच्छा-आशक्त	रुषित (३) धूरिलगा
रास्ना (स) रायसेन-सना	किरणादि	रेचित (न) घोड़ाकी
राहु (७) ग्रहविशेष	रुचिर (३) सुंदर	चाल
रिक्तक (३) रीता	रुच्य (३) सुंदर	रेरा (७) स) धूरि
रिक्थ (न) धन	रुज (स) रोम	रेणुका (स) गगन
रिंगण (न) गिरना	रुजा (स) रोम	धूरि
रिपु (७) वैरी	रुत (न) पक्षियोंका श-	रेतसी (न) वीर्य
रिष्टि (७) कलवार	रुदित (न) रोना	रेवती रमणा (७) व-
रीठा (स) अपमान	रुद्ध (३) नदी आदिसे	लभद्र
रीण (३) वहता हुआ	रुद्र (७) गणदेवता ११	रेफ (३) अधम

रू अक्षर (७) कुत्	रोष (७) क्रोध	लक्ष्मी (स) लक्ष्मी-अ
सित (३)	रोहित (न) सीधा इंद्र	द्विऔषधि-संपति
रेवा (स) नर्मदा	लाल (७) मक्कली-मृ	लक्ष्मीवत्वालक्ष्मीवान
रेवारा (७) धन सौना	गभेद / लालकंजा	(३) श्रीमान् / ना
रोक (न) पोल	रोहितक (७) रुहेली	लक्ष्य (न) कुल-निशा-
रोग (७) व्याधि	रोहिताश्व (७) आग	लगुड (७) लाठी / च्य
रोगहारिन् (३) वैद्य	रोहिन् (७) रुहेली-	लम्प (न) राशियों काम
रोचना (७) कालसेम	लालकंजा / उर (३)	लम्पों का उदय
रोक्नी (स) निसोत-	रोद्र (७) न रसविशेष	लग्नक (७) मध्यस्थ
कबीला-श्रेयतिधारा	रौमक (न) सामर	लघु (न) शीघ्र-पिंडर
रोचिषणु (३) अलंकार	रोरव (७) नरकभेद	शाक-इष्ट (३) अल्प (३)
से अतिशोभित	रोहिणी (स) गाय	लघुलय (न) उसीर
रोक्मि (न) तेज	रोहिणेय (७) बलदेव	लंका (स) रावणा की पुरी
रोदन (न) आंस्त्र	बुध / रा-मृगभेद	लंकोपिका (स) पिंडरशाक
रोदनी (स) जवासा	रोहिष (न) सुगंधत	लज्जा (स) लाज
रोदस (न) भूमि-स्व	ल	लज्जाशील (३) लोक
रोध (न) तीर	लकुच (७) बडहल	मैलाजशील
रोष (७) वारा	लक्षणा (न) कलंक	लज्जित (३) लज्जित
रोमन् (न) वारवा	लक्ष (न) निशाना	लट्वा (स) चिड़ा
रोमन्य (७) रौं क्याना	लक्ष्म (न) चिह्न-	लता (स) बेलि-शारका
रोमर्हण (न) रोम	प्रधान वान्	ऊपरको गईलता-फूल
खडा होना	लक्ष्मणा (३) लक्ष्मी	प्रियंगु-ककुनी-पिंडर
रोमांच (७) रोमरवड	लक्ष्मणा (स) सारसि	कशाक-मालकागुनी

लार्क (७) हरायाज	सविशेष काटना	लालसा (स) चाहना
लपन (न) मुरव	लद (७) धोड़ा, अन	लाला (स) लार
लपित (न) वोलना	लबंम (न) लेंग / सि	लालाट (न) हाथीका
लब्ध (३) पाया	लवण (७) मधुरादि	लालपट्टिक (३) स्वामी
लब्धवर्ण (७) पंडित	लवणोद (७) समुद्रभेद	के कार्यको असमर्थ
लब्धविज्ञ (७) गुरुसे	लवन (७) काटना	लाव (७) लवापक्षी
आशालब्ध	लवित्र (न) हंसिया	लासिका (स) नाचने
लभ्य (३) न्यायसेधु	लशुन (न) लहसन	वाली स्त्री
लवस्तु	लस्तक (७) धनुषका	लास्य (न) नाचना
लम्बन (न) लंबीकंठी	लाक्षा (स) लारव	लिकुच (७) बडहल
लम्बोदर (७) गणेश	लाक्षाप्रसादन (७)	लिक्षा (स) परिमाण
लय (७) तालमिलान	लाललोध	लिरित (न) लिखा
ललना (स) स्त्री	लंगाल (न) हल	लिंम (न) चिह्न
ललंतिका (स) लंबी	लंगालदंड (७) हल	लिंगवृत्ति (७) ठग
कंठी	लंगालपद्मति (स) कूंड	लिपि (स) लिखा
ललाट (न) माथा	लंगालिनी (स) कलहा	लिपिकार (७) लेखक
ललाटिका (स) वंदी	री / सी - नारियल	लित (३) चंदनादि
ललाम (न) पुच्छ	लंगाली (स) जलपीप	लमा - खायागया
तिलक - अश्व - आ	लंगूल (न) पूंछ	लिप्तक (३) विषकेम
भूषण - प्राधान्य	लाजा (७) बहू) धान	रे वारा
ध्वजा	कीमाला	लिप्सा (स) मनोरथ
ललाटतक	लांकन (न) कलंक	लिवि (स) लिखा
ललामक (न) सिरसे	लाम (७) व्याज	लीला (स) स्त्रियों
ललित (न) स्त्रियोंका	लामज्जक (न) उशीर	

कारसविशेष-क्रीडा-	लोकलोक(५) पृथ्वी	लोह(४) सेतचील
विलास-क्रिया	केवारेणोरकालोक	लोहप्रतिमा(स) लोहे
लुठित(३) घोड़ेकालो	लेकेश(५) ब्रह्मा	कीमर्ति / बोलताहो
लुब्ध(३) लेभी	लोचन(न) आँख	लोहल(३) जोष्यष्टन
लुब्धक(५) व्याधा	लोचमस्तक(५) अ	लोहाभिहार(३) श
लुलाप(५) भैंसा	जमोद	स्त्राजन हू(न)
लूता(स) मकरी	लोध्र(५) लोध	लोहित(५) लाल, लो
लून(३) कटाहुआ	लोपामुद्रा(स) अग	लोहितक(५) पप्रराग
लूम(न) पूँछ	स्तिकीस्त्री द्व्य	मणि / कुमकेसर
लोख(५) देवता	लोभ्र(न) चोरीका	लोहितचंदन(न) कुं-
लोखक(५) लिखनेवा	लोमन्(न) वाल	लोहितांग(५) मंगल
लोखर्षभ(५) इंद्र	लोमशा(स) जयामां	लोह(न) सबधातु
लोखा(स) लीला-नि	सी औषध	ल्यु(५) प्रत्ययभेद
रंतरपंक्ति	लोमहर्षण(न) रोमा	व / जोत्र
लिप(५) खाना	वलीहोना	वंश(५) वंश, कुल
लिपक(५) राज	लोमल(३) चंचल-ट	वंशिक(न) अगुरु
लिश(५) थोड़ा	लोलाप(३) अतिलोभी	वंशरोचना(स) वंश-
लिष्ट(५) ठेला	लोत्तम(३) तथा	लोचन / वहल
लोक(५) जगत्-स्व	लोष्ट(५) न ठेला	वंहिष्ट(३) अतिशय
लोकजित्(५) जिन बुध	लोष्टभेदन(५) मुगरी	वक(५) गुम्मा-अ
लोकमाता(स) लक्ष्मी	लोह(न) अगुरु	गाक्षपनृक्ष, वगुला
लोकायत(न) चर्वाकश	लोह(५) न लोहा	वकुल(५) मोरप्री
स्त्रविशेष	लोहकारक(५) लुहा	वक्र(३) टेढा

वक्तव्य (३) निंद्य आधनि	वटक (७) वड़ा, वरा	वत्सादनी (स) गिलोय
वक्ता (३) बोलनेवाला	वडमी (स) धरनि	वद (३) बोलनेवाला
वक्त्र (ज) मुख	वडवा (स) घोड़ी	वदन (न) मुख
वहल (ल) रूढ़ाती	वड़वानल (७) समु-	वदर (न) वेरकाफल
वंक्षरा (७) टिहनी	वूकेभीतरकी आग	वदरा (स) कपास-दि
वंग (ज) राँगा	वडिश (न) वंशी	लार्कंद-रूई
वचा (स) वचन	वड़ (३) फैला-वड़ा	वदरी (७ स) वेर
वचन (न) बोलना	वरिगभाव (७) वनिया	वदान्य (३) अतिदानी
वचस् (न) बोलना	वरिक् (७) साहूकार	वदावद (३) बोलनेवा
वचनेस्थित (३) आत्रा	वरिज (७) तथा / पन	वधू (स) पिंडारकशाक
वज्र (७ न) हीरा, शस्त्र	वरिज्या (स) वनियां	वन (न) जल-जंगल
वज्रदु (७) सेहंड	वत् (अ) भाँति	वनतिक्तिका (स) पाठा
वज्रनिर्धोष (७) विजली	वत् (अ) खेद-दया	वनप्रिय (७) कोयल
कावर्जन	संतोष-विस्मय-आ	वनमक्षिका (स) डांस
वज्र (७) अतिलिपुषी	मंत्ररा	वग्माली (७) विष्णु
वज्रिन् (७) ईंद्र (३)	वत्स (न) क्ताती-व-	वनमुद्र (७) वनमृंग
वंचका (७) स्याद, छली	वूडा (७) वर्ष (न)	वनशृंगार (७) गोरवृ
वंचित (३) ठगाहुआ	वत्सक (७) कुड़ा	वनसमूह (७) वनों
वंजुल (७) तेंदुआरक्ष	वत्सतर (७) तरागव	कासमुदाय / फल
वेत-अशोक	वत्सनाम (७) विषभेद	वनस्पति (७) विनाप
वंटक (७) भाग	वत्सर (७) दोअयन,	वनिता (स) डरनेवा
वट (७) वरगद	वर्ष	लील्ली-वड़ी प्यारी
वटी (३) रस्सी	वत्सल (३) स्नेही	ल्ली-ल्लीमात्र

वनीयक (३) याचक	वयस्था (स) आँमल	वराशि (पुन) मोटावल
वनौकस (७) वंद	हर्ड-ब्राह्मी-काको	वरह (७) झुकर
वंदा (स) अमरवेलिली	य-प्रिय	वरि वसित (३) सेवित
वंदारु (३) वंदनाकर	वयस्य (७) समानव	वरिवस्या (स) सेवा
नेवाला	वयस्या (स) सहेली	वरिवस्यित (३) सेवित
वंदी (७) यशगायक	वर (न) कुंकुमकेसर	वरिष्ठ (न) ताँवा श्रेष्ठ
वधू (स) स्त्री-पुत्र	वरदान (७) श्रेष्ठ (३)	वरी (स) शतवरी
वहू-स्त्रीमात्र	योडाप्रिय (न)	वरीयस्वावरीयान (३)
वंधूक (७) दुपहरिया	वरहा (स) हंसिनी-	अतिशयवडा-ज्येष्ठ श्रेष्ठ
वंधकी (स) छिनारि	मिरी (७-स-)	वरुण (७) जलकादेवता
वंधूकपुष्पा (७) बिज	वरण (७) घेर, वरना	पश्चिमादिशाकास्वामी
यसार	ह वरंड (७) भुरवरोडा	वरनाष्ट्र
वन्या (स) वनसमू	वरत्रा (स) हाथीकेक	वरुणात्मजा (स) अदिरा
वपा (स) छेद, चर्वी	मर बांधनेकी रस्सी-	वरुण्य (७) रयकालोहे-
वप्र (पुन) खाई-खेत	चामकी रस्सी	कापरदा
वपु (न) अंग	वरद (३) वरदानदेने	वरुषिनी (स) सेना
वभ्र (७) वडाँनौला	वरवर्णिनी (स) उत्तम	वेरय (३) मुख्य
वमथु (७) उलटा	स्त्री-हलदी	वर्कर (७) वकरा
श्रृंङ्गसेनिकलाजल	वरांग (न) मस्तक-	वर्गा (७) वृंदभेद-स-
वमि (स) उलटी	वरांकाक (न) तज	जातीयप्राणी वा अत्रा-
वय (न) रवठा-वा	वराटक (७) कमल	राणिकासमूह वा समूह
ल्यादि अवस्था	रस्सी	स्त्री
वयस्थ (७) युवानर	वारोहा (स) उत्तम	वर्च (न) तेज-विश
		वर्चस्क (पुन) विश

वर्ण (५) ब्राह्मणादयः	वर्द्धमान (५) एरंड	वर्धन्यल (५) ओला
हृषीकीकूल, शुक्ल	वर्द्धमानक (५) सखा	वर्धन्य (५) अंग-प्रमा
पीतादि-स्तुतिवर्ण	वर्द्धिष्णु (३) वर्द्धनेवा	वर्ह (५) पत्ता-मोरका
अक्षर (५) न	वर्द्धी (स) चामकी	पच्छ
वर्णिक (५) चोया	रस्सी	वर्हिस् (५) अग्नि-मोर
वर्णित (३) स्तुतिकिया	वर्वरण (स) मकवी	वर्ही (५) मोर
वर्णिन (५) ब्रह्मचारी	वर्म (न) कवच	वल (न) सेना-मुटाई
वर्त्तक (५) वेदेर-घोड़े	वर्मित (३) मंत्रादिसे	समर्थ-काक-वल्देव
कारुण-वत्तक	रक्षित वल्लीस्त्री	वलक्ष (५) ज्वेत
वर्त्तन (३) वर्त्तनेवाला	वर्था (स) आपकने	वल्देव (५) वलिराम
वर्त्तन (न) जीविका	वर्थ्य (३) मुख्य	वलय (५) कंवाण-व-
वर्त्तनि (स) मार्ग	वर्वर (५) भांगरा	लयित (३) नदीआदि
वर्त्ति (स) चोया	वर्वरा (स) ववई-व	सेधिरा भेद
वर्त्तिका (स) वेदेर	नतुलसी	वलाका (स) वगुलेका
वर्त्तिष्णु (३) वर्त्तनेकी	वर्ध (न) वर्धा-मेघ	वलाहक (५) मेघ
इच्छाकरनेवाला	कावरसना-जंझू	वलिन (५) सिमटेचाम
वर्तुल (न) गोल	पकारखंड (वर्ष (५) न	वलि (५) महायज्ञ-भूत
वर्त्म (न) मार्ग-मेत्रो	वर्षवर (५) नपुंसक	यज्ञ-कर-राजभाग
कीवरेनियां	वर्षा (स) अस्तुविशेष	पूजा-त्रिदली (स)
वर्द्धक (५) भांगरा	वर्षस् (५) मेड़क	वलिपुष्ट (५) काग
वर्द्धकि (५) वर्द्ध	वर्षावर्षी (स) मेड़की	वलिभ (५) सिमटेचाम
वर्द्धन (३) वर्द्धनेवाला	वर्षायस (५) अतिदु	वाला
कारुणा (म)	जा	वलिभुज (५) काग

वलि (७) कुंजा	पितरों के अर्थहविदा	वस्त्र (न) कपड़ा
वलीमुख (७) वानर	वसद्वज (३) अग्निमें	वस्त्य (न) घर
वलीक (७) धारकाद	हनुने के योग्य	वस्त्रयोनि (स) वस्त्रों
न के समीप की भीति	वस्त्रयनी (स) के नीमों	केवनाने का कारण
वल्क (न) वक्कल	वसति (स) राति घर	वस्त्रसा (स) नाड़ी
वलिघात (न) घोंड़ की भाति	वसती (स) तथा	वर्ह (न) मोर पंख
वल्कीक (७) नम्रादि	वस्त्र (७) मोल	वह (७) बैल का कंधा
वल्की (स) वीराण	वस्त्र (न) कपड़ा	वहिर्द्वार (न) फाटक
वल्कल (३) पारा	वस्त्र (७) अतुल्य विशेष	वहिर्द्वार (न) नेत्र बाला
वल्कल (स) मंजरी	वसा (स) चर्वी	वहिस्रदा वहिर (अ)
वल्कल (३) सोईदार	वसु (७) दमारा देवता	वाहर
वल्ली (स) लता-बेली	गञ्जा-अगस्त्य-ध	वर्हि पुष्प (न) कुकरो </td
वल्कर (३) स्तरवमांस	न (न) रत्न (न) देवभे	बहु (३) अधिक
वल्कज (७) बहु) वैद	द-आग-किरण	बहुकर (३) माडू
वश (७) इच्छा	वसुक (७) आक-	बहुगर्ह्य (३) निंदित
वशकिमा (स) वशीकन	सामर (न)	बहुगर्ह्यवान्-कू (३)
वशा (स) हथिना-स्त्री	वसुदेव (७) कृष्णपिता	अवश्यक कहने वाला
वशकौ	वसुधा (स) धरती	बहुपाद् (७) वागद
वशिक (३) अन्य-रीता	वसुंधरा (स) तथा	बहुप्रद (३) अतिदानी
वशिर (७) छोटो पीपरि	वसुमती (स) तथा	बहुमूल्य (न) दुशाला
वजपीपर- समुद्रनोन (न)	वस्त्र (७) वकरा	बहुरूप (७) रत्न
वश्य (३) वशी	वस्ति (७) स) मूलस्थ	बहुल (३) अधिक
वषट् (अ) देवतो और	न-पेडू-वस्त्रका किनारा	आग (७) सितवर्ण (३)

वहुला (स) गवडी इलाय	वान्च (स) सरस्वती	वाउव्य (न) ब्राह्मणों
ऋतिका (वहु) गौ	वाचंयम (९) मुनि	का समूह
वहुलीकृत (३) विना भुसी	वाचक (९) शब्द	वाढ (न) अतिशय -
का अन्न	वाचस्पति (९) गुरु	प्रतिज्ञा - अत्यर्थ
वहुवारक (३) लभेरा	वाचाट (३) तथा	वाण (९) तीर
वहुविधि (३) नाना भांति	वाचाल (३) अवाच्य	वाणप्रस्थ (९) ब्रह्मचा
वहुसुता (स) सतावारे	का कहने वाला	वाणि (स) वीनना
वहुस्मृति (स) वहुत बच्चे	वाचिक (न) दूत का क	वाणिनी (स) दूती - न
देने वाली गौ	वाचोयुक्तिपटु (३) नैया	चने वाली
वह्नि (९) आग - आग्ने	यिक	वाणिज (९) साहूका
यदिशा का स्वामी, चीता	वाज (९) शरपक्ष	वाणिज्य (न) खेती
वह्नि शिरव (न) कुसुम	वाजपेय (न) यज्ञ भेद	वनियांपन
वा (अ) उष्मा - विकल्प	वाजि (९) पक्षी - घोड़ा	वाणी (स) सरस्वती
तुल्य - निश्चय	वाण	वात (९) पवन
वाकुची (स) बकुची	वाजिदंतक (९) अडू	वातक (९) पटसन
वाक्पति (३) बड़ा बोलनेवा	वाजि (९) घोड़ा	वातकी (३) बार्वाला
वाक्य (न) सुवर्तति डंतके	वाजिशाला (स) घुड़	वातप्रमी (९) मृगभेद
पद समूह	वाच्छा (स) मनोरथ	वातपाथ (९) ठोंक
वागीश (३) बड़ा बोलने -	वाटी (३) वगीचा	वातमृदा (९) मृगभेद
वागुरा (स) जाल	वाद्यालक (९) खरहू	वातरोगी (३) बार्वाक
वागुरिक (९) जालिक	वाडव (९) बडवान -	वातायन (न) कुरो
वाग्मी (३) नैयायिक	ल-अग्नि - ब्राह्मण	वातायु (९) मृदा
वाडभुरव (न) आरंभ	घेड़ियों का समूह (३)	वातल (९) वायु

समूह-वायुकासहनेवा	स्त्री	(१३) वार्ता (३) रोगरहित-
वात्सक (न) बछड़ों का स	वामी (स) घोड़ी	लघु-आसार (न)
मूह विस्त्र	वायदंड (७) जुलाहे	वार्ता (स) वात-वेग
वादर (३) कपास से बना	वायस (७) काग	जीविका
वादित्र (न) वाजे का भेद	वायसाएति (७) उल्ल	वार्ताकी (स) वेगान
वाद्य (न) तथा	वायसी (स) काकजंघा	वार्तावह (७) सदे-
वान (३) फल	वायसोली (स) काको	सिया / कासमूह
वानप्रस्थ (७) महुआ	वायु (७) पवन	वार्त्तिक (न) बुजोपो
वानर (७) बंदर	वायुसारि-ख (७)	वार्त्तुषि (३) व्याज
वानस्पत्य (७) वनस्पति	आग	खानेवाला
पुष्पसेफल आवे	वार (न) पानी	वार्त्तुषिका (३) तथा
वैनायुज (७) वानायुदेश	वार (७) समूह-अव	वार्षिक (न) चिराय
वानीर (७) वेत	वारण (७) हाथी	तेकाफल वात्राय
वानेय (न) मोथा	वारणनुसा (स) केला	माण / काफल
वापी (स) वावड़ी	वारसरव्या (स) वेष्या	वार्हत (न) भटकटोरी
वाप्प (न) कूट	वारही (स) विलाईकंद	वालतरा (न) नवीन
वाम (३) वामांवा, सुंदर	वारि (न) जल	घास / नाभूषण
वामदेव (७) शिव	वारिद (७) मेघ	वालपाश्या (स) वे-
वामन (७) दक्षिण दिशा	वारिपणी (स) पुरइन	वाल्य (न) लडकपन
कास्वामी - छोरा (३)	वारिप्रवाह (७) करना	वारी (स) राजबंधन
वामलूर (७) वल्मीक	वारिवाह (७) मेघ	घरवाशाला
वामलोचना (स) स्त्री	वारुणी (स) मदिरा	वालमृषिका (स)
वामा (स) अच्छे अंवाकी	पश्चिम दिशा	छोरी चूही

वाला (स) कन्या / क	काशब्द	वाहुज (७) शस्त्री
वालिश (३) मूर्ध-वाल	वासित (३) सुगंधित	वाहुदा (स) अर्जुन
वालुक (न) एलुआ	वासिता (स) स्त्री-	वाहुबल (न) वारव
वालक (३) घासआदि	हथिनी	वाहुपुडा (न) युद्धभेद
कावनावस्त्र	वासुकि (७) नगर	वाहुल (७) कार्तिक
वावदूक (३) बहुभाषी	वासुदेव (७) विष्णु	वाल्हिका (७) बाल्ही
वाशित (न) पक्षियोंका	वास्त (स) कन्या	कदेशकाघोडा
शब्द / स्त्र-वाफ	वास्तु (७) नीच	वाल्हीक (न) कुंकुम
वाष्प (७) ऊष्म-आँ	वास्तक (न) वधुआ	केसर-हींग-काव-
वाष्पिका (स) हींगकी	वास्तोष्पति (७) इंद्र	लकाघोडा (७)
पत्ती	वाहा (७) घोडा, तोल	विंशति (अ) एकव
वासर (७) कवहरी	वाहद्विषत (७) भैंसा	चन-बीस
वासक (७) अडूसा	वाहन (न) सवारी	विकंकत (७) हींस
वासगृह (न) घरकावीच	वाहस (७) अजगर	विकच (३) फूला
वासुंती (स) माधवीलता	वाहित्य (न) हाथीके	हुआफूल
वास्त्र (३) कंबलादिसे	ललाटकानीचेका	विकर्तन (७) सूर्य
ढकारथ / सुकाचूरी	भावा	विकलांग (७) विक
वासयोग (७) सुगंधव	वाहिनी (स) सेना	लांगवाला
वासर (७) दिन	गाराकी सेनासे ३ गुनी	विकसा (स) मजीठ
वासब (७) इंद्र	सेनावाला-नदी	विकसित (३) फूलित
वासस्वावास (न) वस्त्र	वाहिनीपति (७) सेना	विकस्वर (३) फूलने
वासिका (स) अडूसा	कास्वामी	वाला / कावदलना
वा शित (न) पक्षियों	वाहु (७) स) भुजा	विकार (७) प्रकृति

विकासी (३) पूछनेवा	शेषभोजन	विटपिन् (७) वृक्ष
विकिर (७) बहरी	विघ्न (७) विगाड़	विदूरवदिर (७) दुर्गंधि
विकीरण (७) आक	विघ्नरज (७) गहड़	काकत्था आर
विकुर्वीश (३) हर्षित	विचक्षण (७) पंडित	विद्वर (७) गांवकासु
विकृत (३) डर-रोबी	विचयन (न) छूटना	विड (न) खारीनोन
विहारी (स) विरुद्धाला	विचर्चिका (स) राज	विडंगा (न) वायुविडं
विक्रम (७) अतिपाकम	विचारण (स) विचार	विडाल (७) विलार
क्रांति	विचारित (३) विचारण	विडौजस (७) इंद्र
विक्रय (७) वेचना	या	वितंडा (स) वादभेद
विक्रयिका (७) वेचनेवा	विचिकित्सा (स) सदेह	वितथ (न) असत्य
विक्रांत (७) शूरवीर	विच्छंदक (७) गृहभेद	वितरण (न) दान
विक्रिया (स) विरुद्धकल	विच्छाय (न) छाया	वितर्दि (स) वेदी
विक्रेता (७) वेचनेवाला	विजन (३) एकान्त	वितस्ति (७) विलांद
विक्रेय (३) लेनेकीवस्तु	विजय (७) जीत/जन	विताना (न) चंदोवा
विक्रव (३) मात्रमंडा	विजिल (३) यनीलेयं	यज्ञ-विस्तार-तुच्छ
विक्षाव (७) वृद्धिक	विज्ञ (३) ज्ञाता	(३) मन्द (३)
विगत (३) विनातेज	विज्ञात (३) प्रसिद्ध	वितुन्न (न) विसावपरा
विगतार्तवा (स) विना	विज्ञान (न) शिल्पशा	वितुन्नक (७) मृमिआं
रजकीस्त्री	स्त्रमेवद्धि	विला-धनियां (३)
विग्र (७) मकरा	विट् (७) वनियां	वितृति (३)
विग्रह (७) शरीर-वैर	विटंक (७) कवृत्स्त्रा	वित्त (न) धन-प्रसि
युद्ध (७) विस्तार	विटप (७) शाखा-	ह (३) विचार (३)
विघस (७) श्राद्धका	तृणादिकागच्छा	विदर (७) फूटना

विदल(न) वांसकाव नापान	विद्वान्(७) पंडित विज्ञ(३)	बुध-गणेश-गुरु- विनाश(७) लोप
विदारक(७) गण्डहा	विद्वेष(७) वैर	विनाशोन्मुख(३) प-
विदारीगंध(स) काला गंगाफल	विधवा(स) रंडा विधा(स) मजदूरी-	काहुआ विनीत(७) सीरवाहु-
विदारीगंधा(स) सालप	विधान-प्रकार	आ-घोड़ा-नम्र(३)
विदिक्(स) दिशान्त्रोके	विधान(७) ब्रह्मा	विन्दु(२) जलकरण
वीचकाकोन	विधि(७) ब्रह्मा-भा-	जाननेवाला(३)
विदित(३) जाना	विध्य-प्रकार-विधान	विंदुजालक(३) गहा-
विदिश(न) दिशान्त्रो	विधिदर्शिन(७) य-	थीकीसंडकाजल
विदु(७) हाथीकेकुंभो	चदर्शक विद्वा	विन्ध्य(७) पर्वत
कावीच	विधु(७) विषण-चं	विन्न(३) पाया-वि-
विदुर(३) जाननेवाला	विधुत(३) त्यागा	चारा
विदुल(७) वेत	विधुतुद(७) राहु	विपक्ष(७) शत्रु
विद्व(३) छेदाहुआ	विधुर(न) बड़ावि-	विपंची(स) वीणा
विद्वकर्णी(स) पाठा	योग	विपण(७) देवना
विद्याधर(७) देवजाति	विधुवन(न) कांपना	विपरीण(७) स) इकान
विद्युत(स) विजली	विधूनन(न) तथा	बाजारकीगली
विद्विधि(स) व्याधिभेद	विधेय(३) आत्राका	विपति(स) विपति
विद्व(७) भागना	री ज्ञाकारी	विपथ(७) मार्ग
विदुत(३) पिघलाहुआ	विनयग्राही(३) आ-	विपद्(स) विपत्ति
विदुम(७) मृगा	विना(आ) वर्जन	विपर्यय(७) उल्टा
विदुमलता(स) पसार	विनायक(७) जिन	विपर्यास(७) तथा

विपश्चित् (७) पंडित	विवंध (७) मलभूज	विमातृज (७) सौते
विषादिका (स) विवाई	बंध	लाभाई नि
विषाश्रवा विषाशा (स)	विबुध (७) देवता	विमान (७) न) विमा
व्यासानदी	विभव (७) धन	विम्ब (७) न) प्रतिक्रिया
विपिन (न) वन	विभाकर (७) सूर्य	विंविका (स) कुंदुरु
विपल (३) ढेर	विभावरी (स) रात	वियत् (न) आकाश
विप्र (७) ब्राह्मण	विभावसु (७) सूर्य	वियङ्गा (स) आका
विप्रकार (७) अपकार	अग्नि ऐश्वर्य	शठंगा
विप्रकृत (३) निकालाग	विभूति (स) सिद्धि	वियम (७) संयम
या, निकालाहुआ	विभीतक (३) बहेड़	वियात (३) ढीठ
विप्रकृष्टक (३) डूर	विभूषण (न) गहना	वियाम (७) संयम
विप्रतीसार (७) पकृता-	विभ्रम (७) चंष्टा	विरजस्तमस् (७)
विप्रयोग (७) स्नेहतो उ	अलंकार- स्त्रि-	व्यासादिऋषि
ना आ	योंकारसविशेष	विरति (स) निरति
विप्रलब्धा (३) ठगाहु-	भ्रांति	विरल (३) विरला
विप्रलाम (७) गुलदा	विभ्राज् (३) आ-	विराज् (७) क्षत्री
कहना- आशाभंगाक	लंकारसेशोभित	विराव (७) शब्द
विप्रलंभ (७) स्नेहतो-	विमना (३) उदास	विराचि (७) ब्रह्मा
उना शुभवास्त्री	विमर्दन (न) मल	निष्पाप्ता (७) शिव
विप्रप्रिनिका (स) शुभा	विमल (३) जोख	विरोचन (७) सूर्य
विप्रस्तन (न) कमल	भावसेमैलाहो	चंद्र- आग
विलव (७) लूटना	विमला (स) सोया	विरोध (७) बैर
विलुप्त (स) जलकरा	काशाक	विरोधन (न) वि-

विरोधोक्ति(स)उल्टा	विवाह(७)व्याह	विशालतन्त्र(७)सप्त
कहना	विविक्त(३)एकांत-	परणी
विल(न)पोलमात्र-वि-	पवित्र म्कार	विशाला(स)सुंदर
नावनायीगुफा	विविध(३)नानाप्र-	विशेष(७)वाराण
विलक्ष(३)विस्मयी	विवेक(७)विचार	विशिरवा(स)भीतर
विलक्षण(न)विनाका	विव्वेक(७)स्त्रियों	कामार्थ कि
रणस्थिति	कासविशेष	विशेवक(७)तिल
विलम्बित(न)देर	विष(७)वनियां	विश्व(७)विश्व
विलम्ब(७)अतिदल	विशंकर(३)फैला	विश्वारूपीप्रार्थना
विलाप(७)रोना	विशद(७)उजला	विश्वारान(न)दान
विलास(७)स्त्रियोंका	विशार(७)मार	विश्रव(७)अतिप्रसि
एसविशेष म्कार	विशल्या(स)गिले	दु
विलीन(३)पिथलाहु-	य-हलौ-दंतीरु	विश्रुत(३)प्रसिद्ध
विलेपन(न)तिलक	विश्रसन(न)कार	विश्र(७)कारदेवता
विलेपी(स)तलपसी	विश्रख(७)स्वा	१२ सैंठि(सन)स्व(३)
विलेपय(७)सर्पमात्र	विकारिक	विश्वकटु(७)शिकारी
विल्व(७)वेल	विश्रान्ता(स)न(स)कुत्ता	
विवध(७)ध्यानादि-	विश्रय(७)सेनेका-	विश्रयगर्भा(७)सूर्य
विवर्न(पोलमात्र	ला छीठ	देवतोंकाराजा
विवर्ण(७)नीच	विश्रद(३)गंडित	विश्वकेतु(७)अनि
विवश(३)प्रमाणसन्	विशाल(३)चड़ा	रुद्ध
विवस्वत(७)सूर्य-देव	विश्रल्ला(स)बल	विश्वभेषज(न)सैंठ
विवाद(७)कठाड़ा	कीचौडाई	विश्वंभर(७)विष्णु

विश्वंभार (स) धरती	विबुध (न) समरात्रि	विश्वद्राड (३) विश्वमें
विश्वसूज (७) प्रह्ला	दिन	चलेनेवाला
विश्वस्ता (स) विधवा	विहिर (७) पक्षी	विस (न) कमलककड़ी
विश्वा (स) अतीस	विष्ट (न) जगत्	विसकठिका (स) वगले-
विश्वास (७) विश्वास	विष्टर (७) गृह-मुष्टि	काभेद
विष (न) गु) गारल-	कापरिमाण-पीठा	विसप्रस्तन (न) कमल
विष्टा (स) जल (न)	आदि आसन	विसम्बाद (७) आशाभं
विषधर (७) सर्प	विष्टरप्रवस (७) विष्ट	गक
विषमच्छद (७) सप्तप	विष्टि (स) भोजना	विसर (७) समूह
विषय (७) देश-प्रयो	विष्टा (स) गू	विसर्जन (न) दान-त्य
जन-जिसका जो-	विष्टगु (७) विष्टगु	विसर्पण (न) पावका
ज्ञात-शब्द-स्पर्श	विष्टगुक्रांता (स) भो ३	फैलाना
रूप-रस-गंध	विष्टगुपद (न) आका-	विसार (७) मच्छी
विषयिन् (न) इंद्रिय	विष्टगुपदी (स) गंगा	विसारी (३) जानेवाला
विषवैद्य (७) विषका	विष्टगुरथ (७) गरुड़	विसिनी (स) कमलनी
विद्य	विष्ट (७) विषदेनेके	विस्तृत (३) फैला
विद्या (स) अतीस	येषय	विस्तृत (३) जानेवाला
विषाक्त (न) विषके	विष्वक् (अ) चारो	विस्तृमर (३) तथा
वधेवारा	विष्वक्तेज (७) विष्टगु	विस्त (७) न) एतोल्लासोना
विषाणा (३) पशुओं	विष्वक्तेजप्रिया (स)	विस्तर (७) शब्दविस्तर
कासींवा-हथीकादंत	विलाईकंद	विस्तार (७) फैलाव
विषाणी (स) मेढांष्ट-	विष्वक्तेजा (स)	विस्तृत (३) फैला
गी	फूलप्रियंगु-कैकुनी	विस्त्रसा (७) बुढापा

विस्फार (७) धनुषकाश	वीजकोश (७) कनकला	वीरपत्नी (६) वीरकी
विस्फोट (७) फोड़ा	वीजपूर (७) विजोरनी	स्त्री पानकरना
विस्मय (७) आश्चर्य	वृ. रजुतेरेवत	वीरपाण (न) मद-
विस्मयान्वित (३) अवर्ज	बीजाकृत (३) बोयेफि	वीरभायी (स) वीर
विस्मृत (३) भूला	बीज्य (७) कुलीन	पुरुषकी स्त्री
विस्त्र (न) विनापका मांस	वीणा (स) राजविशेष	वीरमान (स) वीरकी
वीरगंध	वीणादंड (७) वीणाराजे	वीरदंड (७) भिलास
विहंग (७) पक्षी	कादंड जिनेवाला	वीरप्रसन्न (न) भया
विहंग (७) पक्षी	वीणावाद (७) वीणाव	वीरराभूमि
विहंगिका (स) बहंगी	वीतस (७) फंदा	वीरस्त्र (स) वीरमत्ता
विहसित (न) मध्यमहास	वीत (न) हाथी बाघोड़ा	वीरहा (७) नष्टाभि
विहस्त (३) व्याकुल	वीतिहोत्र (७) आग	वीरध (स) फैलीलता
विहायित (न) दान	वीधी (स) पंक्ति, मार्ग	वीर्य (७) नावल-उ
विहायस् (न) आकाश	वीध (३) स्वभावसेपवित्र	वीरघ (७) ध्याना-
विहायस (७) आकाश	वीनाह (७) कुयेकाचौ-	दि- मार्ग
विहार (७) खेलनेमें	खटा क्रूर (३)	उध (७) जड़
पांवसे चलना	वीभत्स (७) रसविशेष	उधित (३) जानागवा
विहूल (३) मात्राभंग	वीर (७) रसविशेष-	वुन (प्रत्यय) वायसा
वीकाश (७) एकांत प्र-	प्रसर	वृंहित (न) हाथियों
काश	वीरण (न) गाँडर	कागर्जन
वीचि (७-स) लहर	वीरतर (न) गाँडर	रुक (७) भेड़िया
बीज (न) कारण, वीर्य	वीरतरु (७) अर्जुनरुक्ष	रुकधूप (७) रुक्दा

रुधूप	सदान्वारऔरवेदाभ्या	रुंद(न)समूह
रुका(३)कराहुआ	सकाफल	रुंदभेद(७)गणभेद
रुक्ष(७)पेड़	रुजंत(७)वार्ता,प्रक	रुंदारक(७)देवता
रुक्षभेदी(७)वस्तुला	रुगाआदि-अभिप्राय	मनोत्र(३)श्रेष्ठ(३)
रुक्षरुहा(स)अमरवेलि	संपूर्ण	रुंदिर(३)अतिशय
रुन्दा ^{का बाग} ^{मंत्रीवावेषया}	रुत्रहन(७)इंद्र	मुख्य
रुक्षवाटिका(स)राज	रुत्रा(७)अंधकार-	रुश्रन(७)रेती
रुक्षादन(७)वस्तुला	शत्रु-दैत्य ^{हृ}	रुश्रिक(७)केंचुआ
रुक्षादनी(स)अमर वे	रुथा(अ)निरर्थक	वीली,आठवींशशि
लि-वन्दा	रुद्ध(न)शिलाजीत	रुष(७)प्राप,आड-
रुक्षाम्भ(न)चूक	बूढ़ा-पंडित	सा-ककड़ाभृंगी
रुज(७)गोत्रोंकाधर	रुद्धत्व(न)बुढ़ापा	वैल-फोता-चूहा
मार्गी-समूह	रुद्धदारुक(७)विधार	श्रेष्ठ-सुकन
रुजिन(न)पाप-टेठा	रुद्धप्रवस(७)इंद्र	रुषणा(७)फूता
(३)केश(७)आ	रुद्धसंघ(७)बुढ़ापों	रुषदंशक(७)विलार
रुत(७)वराणकियाहु-	कासमूह	रुषध्वजा(७)शिव
रुति(स)जीविका, व	रुद्धा(स)बूढ़ीस्त्री	रुषन(७)इंद्र
रदान,कौशिकीनदी	रुद्धि(स)बूढ़ी	रुषभ(७)वैल
रुत(३)गोल,वागा-	रुद्धिजीविका(स)व्या	रुषल(७)मूढ़
वर्णकिये श्लोक(न)	रुद्धोक्ष(७)बूढ़ावैल	रुषस्पाना(स)भेषुन
त्वरितानाभूतकाल	रुद्धाजीव(३)अज	चाहनेवाली
(३)बूढ़(३)	रुगदाक	रुषा(स)भूसरी
रुत्ताध्ययनर्द्धि(स)	रुत(न)गुच्छ	रुषाकषायी(स)

लक्ष्मी- पार्वती	वेत्रवती (स) जेतवनदी	वेण्याजनसमाश्रय
वृषाकपि (७) शिव-विष्णु	वेद (७) ज्ञुति	(७) वेण्याकाधर
वृषी (स) ऋषिआसन	वेदना (३) अनुभवज्ञा	वेष्टित (३) नदीआ-
वृष्टि (स) वर्षा	वेदी (७) यज्ञभूमि	दिसेधिराहुआ
वृष्टि (७) भेड़ा	वेदिका (स) वेदी	वेसवर (७) सायाका
वृहत् (३) वड़ा	वेध (७) छेदना	मसाला
वृहत्तिका (स) दुपड़ा	वेधनिका (स) यर्मा	वेहत् (स) विनासम
वृहती (स) भटकराई	वेधमुख्यक (७) कचूर	यवैलकेपासजाने
वृंदभेदेविपुलावृंद	वेधा (७) ब्रह्मा, विष्णु	वालीगो
वृहत्कुक्षि (७) वड़ीकोख	वेधित (३) छेदाहुआ	वै (अ) पादश्रृंग-
वाला	विपथ (७) कांपना	वैकक्षक (न) जने-
वृहद्गु (७) आभा	वेमन (७) न) जुलाहेको	ऊकेसमानछाती
वृहस्पति (७) गुरु	वेला (स) समुद्रकील	परातिरखीलटकी
वेठा (७) प्रवाह-दलसे	हर-समय-मर्यादा	माला
वेठी (७) शीघ्रवालका	वेल्ल (७) न) वायुविंडा	वैकुण्ठ (७) विष्णु
वेणी (स) वेणी	वेल्लज (न) मिस्त्र	वैजनन (७) जन्म
वेणी (स) देवताड़, बंदा	वेल्लित (३) टेढा, कंफा	मास
वेण (७) वांस	वेण (७) वेण्याधर-आ	वैजयंत (७) इंदुका
वेणुधम (७) वांसरीवाद	लंकारकीशेभा	वैजयंतिक (७)
वेत्तन (न) मज्जूरी	वेणंत (७) कोरासरी	ध्वजधारक
वेतस (७) वेत	वेणम (न) घर	वैजयंतिका (स)
वेतस्वत् (३) बहुतेवेतो	वेणमभू (स) घरकी	र वांसनचद्व
वेताल (७) भूत	वेण्या (स) रंडी	वैजयंती (स) पताका

वैज्ञानिक (३) ज्ञाता	वैमानेय (७) सौतेला भाई	व्यजन (न) पंरवा
वैराग्य (न) वैराग्यफल	मिसेमड़ा	व्यंजक (७) अभिप्रा
वैराग्यिक (७) वीसुरी	वैयाघ्र (३) व्याघ्रकेच	व्यप्रकाशक
वज्रनेवाला	वैर (न) विरोध	व्यंजन (न) विन्ह
वैराग्य (७) वीराग्य	वैरनिर्घातन (न) वैरमि	मूछ-डाढी-गिला
वैराग्य (न) हार्थीकेहाँ	वैरगुद्धि (स) तथा	करना-अंग
कनेकादंड	वैरी (७) शत्रु	व्यंडक (७) एरंड
वैतरणी (स) नरकनरी	वैवधिक (७) संदेश	व्यत्यय (७) उलटा
वैतसिक (७) कसाई	वैवस्वत (७) यमराज	व्यत्यास (७) तथा
वैतनिक (७) मज्जर	वैशारद (७) वैशारद	व्यथा (स) पीडा
वैतालिक (७) स्तुतिआ	मास- रई	व्यध (७) छेदना
वैसंगजोंको जमानेवा	वैश्य (७) वनिर्याँ	व्यघ्र (७) छेदना
वैदेहक (७) साहकार	वैश्रवण (७) कुवेर	व्यध्व (७) कुमार्ग
वैद्वज्जी और वैश्यसे	वैश्वानर (७) आग	व्यय (७) रक्च
उत्पन्न	वैसारिण (७) मछली	व्यलीक (न) पीडा
वैदेही (स) बड़ी पीपर	बोल (७) गंधारस	व्यवधा (स) ढापना
वैद्य (३) वैद	वैषट् (अ) देवताके	व्यवहार (७) किगड़ा
वैद्यमात (स) अडूसा	हवनमें - बोलते हैं	व्यवाय (७) मैथुन
वैधात्र (७) सनकुमार	व्यक्त (३) पाठित-प्र	व्यसन (न) दुःख-
वैधेय (३) मूर्ख	काशित	नाश - कामदेवसे
वैनेतेय (७) गरुड	व्यक्ति (स) स्वरूप	उत्पन्नदोष-कोप
वैनीतक (७) परंप	व्यग्र (३) द्विविधा	से उत्पन्न दोष
राकावाहन	आकुल	व्यसनार्त (३) कष्टित

व्यस्त(३)आकुल	कीपवन	ब्यूह(७)समूह-ग
व्याकुल(३)तथा	व्यापाद(७)परद्रोह	ढबांधना
व्याकोष(३)फूला	व्याप्य(न)कूट	ब्यूहपार्श्व(७)किले
हुआपुष्प	व्याम(७)फैलाहाथ	कार्पाश
व्याघ्र(७)सिंह-छे	व्यापन(३)अतिशय	व्योकार(७)तुहार
ष्टार्थकवाचक	व्याल(७)सर्प-शठ	व्योमकेश(७)शिव
व्याघ्रनख(२)न-	(३)भारनेवालाजंतु	व्योम(न)आकाश
खनामंथद्वय	व्यालभ्राह्म(७)सर्प	व्योमयान(न)हिमान
व्याघ्रपाद(७)हंस	पकड़नेवाला	व्योम(न)सिंह,मिर्च
व्याघ्रपुच्छ(७)अंड	व्याहत(३)वरणाकि	पीपर
व्याघ्राट(७)लबा	याहुआ	व्रज(७)समूह
व्याघ्री(स)भटकधर्मा	व्यास(७)विस्तार	व्रज्या(स)यात्रा
व्याज(७)छल	व्याहार(७)बोलना	व्रण(७)घाव
व्याउ(७)सर्प-	व्युत्थान(न)तीरस्	व्रत(७)नियम
पशु-पक्षी,व्याघ्र	कार-विह्वलचरण	व्रतति(स)वेलि,बढ़ाई
व्याउखध(न)न-	व्युष्टि(स)कल-हं	व्रताध्यायनर्हि(स)
खनामंथद्वय	पदा	सदाचारऔरवेदा
व्याध(७)व्याधा	ब्यूह(३)छोड़ाहु-	व्यासकाफल
व्याधि(७)कूट,रोग	आ-मिलाहुआ	व्रतिन(७)यज्ञाध्यक्ष
व्याधिघात(७)	सेनाविशेष	व्रद्ध(७)सूर्य
अमलतास	ब्यूहकंकट(३)मंत्रा	व्रध्वन(७)रेती
व्याधित(३)रेती	दिसेरक्षित	व्रात(७)समूह
व्यान(७)शरीर	व्युत्ति(स)वीनना	व्रात्य(७)असंस्कारी

समूह	शक्तिधर (७) स्वामिका	शंढ (७) हिजरा / न
ग्रीडा (स) लज्जा	र्तिक / काबाधनेवाला	शरापुष्पिका (स) स
ग्रीहि (७) सगरी	शक्तिहेतिक (७) बरके	शरासूत्र (न) सुतरी
ग्रीहिभेद (७) सवांन्न	शत्रु (३) प्रियक्ता	शतकोटि (७) वज्र
ग्रीहेय (३) धनकारवेत	शक्र (७) इंद्र-कुरा	शतदु (स) सतलज
पा णि	शक्रधनुस् (न) इंद्रध	शतपत्र (न) कमल
शकट (७) गाढा, ल	उष	शतपत्रक (७) कठ-
शकल (७) रवंड	शक्रपादस (७) देवदर	फोराजीव / स्वच्छ
शकली (७) मट्टली	शक्रपुष्पी (स) हालां	शतपदी (स) कान-
शकुन (७) पक्षी	शक्रपुष्पिका (स) प्रथा	शतपर्व (७) वांस
शकुंत (७) पक्षी	शंकर (७) शिव	शतपर्विका (स) वच
शकुन्ति (७) पक्षी	शंकु (७) जलजीव-	इव - घास
शकुल (७) मट्टली / व	शारवापत्ररहितपेड़	शतपुष्पा (स) सौंफ
शकुलाक्षक (७) श्वेतदू	फरकादक्ष	शतप्रास (७) कनेल
शकुलादनी (स) कुटुकी	शंख (७) संख्या - ल	शतमनुष्य (७) इंद्र दि
शकुलार्भक (७) गलफ-	लाटकीहड्डी - शंख	शतमान (न) तोलभे
टीमट्टली	शंखनरव (७) छेरा	शतमूली (स) सतावर
शकुल (न) विष्ट	शंख / हिली	शतपष्टिक (७) १००
शकुलकरि (७) वट्टडा	शंखनी (स) शंखा	लडकाहार / व
शक्ति (स) प्रभाव-उ-	शचि (स) इंद्राणी	शतवीर्या (स) श्वेतदू
साह-मंत्रज-पराक्र	शचीपति (७) इंद्र	शतवेधिन (७) अमल
मी-वट्टी-सामर्थ्य	शटी (स) कचूर	वेनी
	शठ (३) कपटी	शतहृदा (स) विजली

शतंग (७) लड़ाई का रथ	शमी (स) फली	तिक्त	नेवाला
शतावरी (स) सतावरी	शमीधान्य (न) फलीवा	शरा (न) घर-रक्षा कर	
शत्रु (७) पड़ोसी राजा	शमीर (७) खोटा फूँड	शरद् (स) ऋतु-वर्ष	
वैरी-शत्रु	शम्भ (७) बज्र	शरभ (७) मृगभेद	
शनैश्चर (७) गुरुविशेष	शम्भु (७) शिव-नर	शरव्य (न) निशाना	
शनैस् (अ) धीरे	शम्बर (न) जल, मृगभेद	शराभ्यास (७) वारा	
शय्य (७) सौभाग्य	शम्बरी (७) कामदेव	शान्दलानारीखना	
शयन (न) सौभाग्य	शम्बरी (स) मूसली	शगरि (स) वनतीतर	
शफ (न) राय	शम्बल (७) रंग	शगरु (३) हत्या	
शफरी (स) पुष्पेयमक	शम्बूक (७) साघोंघा	शगरव (७) नासर दा	
शबरालय (७) जंगलि-	शंभली (स) कुटनीस्त्री	शगरवती (स) नदी	
योंकागांव	शम्पा (स) विजली, हल	शगरसन (न) धनुष	
शब्द (७) विषय-वाक्कीशैल	शय (७) हाथ	शरीर (न) अंग	
शम् (अ) आनंद	शयु (७) अजगर सर्प	शरीरिन् (७) जीव	
शब्दग्रह (७) कान	शयन (न) सोना-विक्रे	शर्करा (स) बालूयुक्त	
शब्दग्राम (७) समूह	ना	देश-मिश्री-पत्थर	
शब्दन (३) शब्दकर्ता	शयनीय (न) विक्रेता	खंड-मीठा	
शम (७) शान्ति	शय्यालु (३) सोनेवाला	शर्करावत् (३) कंकड	
शमथ (७) शान्ति	शयित (३) सोयाहुआ	युक्तदेश	
शमन (७) यमराज-य	शय्या (स) खाट	शर्करिल (३) बालूयु	
शमनस्वसा (स) यमुना	शर (७) साकंडा-वारा	क्तदेश	
शमल (न) विष्टा	शरजन्मा (७) स्वामिका	शर्वरी (स) रात	
शमित (३) मिटजानेवा-		शर्मन् (न) हर्ष	

शाल (न) सेही जीवका रोम	शाम्पत (न) बार-बार-सहार्थक-साथ-नि	शकडुनि (७) दोहू मलका धारक
शालम (७) टीडी [ह]	रंतर	शकसिंह (७) तथा
शालल (न) सेही जीव	शध्या (न) गन्वीन घास	शारवा (स) लता
शालली (स) तथा	शस्त (न) कल्याण	शाखान्नवार (न) उपनगर
शालदु (३) पीला फल	स्तुतिकिया हुआ [ह]	शाखाम्बर (७) बंदर
शाल्क (न) खंडु वकला	शस्त्र (न) आयुध-लो	शारिवन (७) वृक्ष
शाल्य (७) मेन फल-	शस्त्रक (न) लोहा [ह]	शाखिच (७) मनिहार
सेही जीव फर (७)	शस्त्रमार्ज (७) शिखर	शालक (७) सारी
शालकी (स) सालिव	शस्त्राजीव (७) शस्त्र	शाटी (७) सारी
मिष्ठी	धारी	शाम्य (न) कपट
शव (७) निजीव	शस्त्री (स) कुरी	शाण (७) कसौरी
शवर (७) मेक्षभेद	शस्य (न) फल	शांडिल्य (७) देल
शकल (७) पीला	शस्यमंजरी (स) वाली	शात (न) हर्ष तीर बाह
शबली (स) चित्रवि	शस्यशरक (न) बालि	शातकुंभ (न) सौना
चित्रगाय	केऊपरकातीकुर [ह]	शान्नव (७) शत्रु शा
शश (७) भृगुभेद	शस्यसम्बर (७) शाल	शाद (७) कीचड़ बालत
शशधर (७) चंद्रमा	शाक (न) तर्कारी	शादहरित (३) हरी घास / श
शशलोमन (न) रव	शाकट (७) गाढीका	शाडुल (३) हरी घास कादे
रगोशकारेण / क्षी	लेजाने बालावैल	शांत (३) नाशप्राप्त
शशगदन (७) वाजप	शाकुनिक (७) बिड़ीमा	शांति (स) शांति
शशोर्गा (न) रत्नखो	शक्तीक (७) बरकीकर	शाम्चरी (स) इंद्रजाल
शकारेण	दार	शार (७) पवन, कर्बुवरीण

शाद(३) अतिनयाहु-अ	शालालि(४३) सेमर	जाला-किरण,
अधीर	शालालि(४३) सेमर	शे. के. चंदी
शादी(स) सप्तपर्णी-	शालालि(४३) सेमर	शिर. म. (५) आग
लपीपरि	शालक(५) बछा	शिर. म. (५) आग
शारिफल(न३) कैरड	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शारिवा(स) शालक	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शार्कर(३) कंकडयुक्त	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शार्दि(३) विषाड	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शार्दिल(५) शिर-अध	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
र्यक हिंसक	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शार्किर(न३) वडा जंघात	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शाल(५) मच्छी घेर-	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
रक्षभेद धारका	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शाला(स) सभा-स्क	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालावृक(५) वंदर-	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
स्यार-कुत्ता	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालि(५) साठी	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालीन(३) सत्तनत	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालक(न३) धूरि-म	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
रंद-फूलेंकातल	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालर(५) मेडक	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
शालेय(५) रेंक-धा	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग
नकमेवत(३)	शालर(५) लोच	शिर. म. (५) आग

दुष्टचर्म महादेव	रिवरीकाधर	शीकर (७) जलकरा
शिफा (स) घुस्नीजड़	शिलिन (७) चितेरा	फुहार
शिफाकंद (७) न) कमल	शिव (न) काल्यारग	शीघ्र (न) शीघ्र
कीजड़	शिव (स) पार्वती-हर	शीत (न) ठंड-ठंडप-
शिला (न) घुस्नीचेरी	शिव (स) भूआंवला	शीत (२) वेत, लमे
शिर (स) (न) रोप	सिचार	रा
शिरास्य (७) घुस्नीरोम	शिवक (७) रवूटा	शीतक (७) मंद
शिरास्य (७) शिरस	शिवकली (७) गुन्ना	शीतलीरु (७) वेला
शिराधि (स) गला	शिविका (स) पालकी	शीतल (३) ठंड-पटस
शिरोरत्न (न) चोरीकी	शिविय (न) सेनास्थान	शीतशिव (७) सौफ
शिरोरुह (७) बाल	शिशिर (३) ठंड, ऋतु	शीधु (७) मदिरा
शिरोस्त्रि (न) रोपड़ी	विशेष (७) न)	शीर्ष (न) शिर
शिल (न) शिला	शिशिपा (स) सीसों	शीर्षक (न) रोप
शिला (स) चौरदरकेनी	शिशु (७) वच्चा-कंरसा	शीर्षवेद (३) शिर
चिकीशिला-पत्थर	वच्चा	कारनेके योग्य
शिलाजनु (न) शिला	शिशुक (७) शिशुमार	शीर्षाथ (७) रोप
जीत	जलजीव	शील (न) मुहचरित
शिली (स) क्रेटेकीडे	शिशुल (३) लड़कपन	स्वभाव-यश
शिलीमुख (७) भोग	शिशुमार (७) ल लजी	शुक (न) कुकरेंधा-
वाण	शिशु (७) लिंवा	शुल (७) पक्षभेद
शिलोच्च (७) पहाड़	शिविदन (३) पूरामात	ऊजला
शिल्य (न) कारीबारी	शिवि (स) आजा	शुकनाश (७) आल
शिव्यशाला (स) का	शिव (स) विद्यार्थी	शुक्ति (स) शीपी-क

कूटन-खड्ग(३)निष्ठुर(३)	शुभांशु(७)चंद्रमा	शृलाकत(३)शूल
शुक्र(७)आग-शुक्रमा	शुल्क(७)घटपदेना	परभुजा नांस
ज्येष्ठमास-वीर्य(न)	शुल्य(न)तामां,रल्ली	शूलिर(७)शिव
शुक्रशिथि(७)असुर	शुश्रूषा(स)सेवा	शूल्य(३)शूलपर
शुद्ध(स)शोक	शुषि(स)पेलमात्र	शुनामांस
शुनि(७)आग-आयाह	शुभिर(३)वशीकरण	शृगाल(७)स्वार
मास-उजला-शृंगारस	वाजा,केरु,हरितकु	शृंगल(३)बांकी
मंत्री-धर्मादिपरीक्षाक-	शुषिरा(स)पत्तार	हाथीकीसांकर
रेसैंशुद्धचित्त-पकि	शुभमांस(७)लड्डा	शृंगलत(७)ऊँद
(३)सितवर्ण(३)	शुष्कर(७)आग-पा	केकेदेवशेकाठ
शुंठी(स)सौंठि	कमी(न)र-दंश	मेंकंधेहुये
शुंडापान(न)मदिरपी	शुक्र(७)न)चिकनातीकु	शृंग(न)पहाड़की
शुद्धंत(७)रनिवास-र	शुक्र कीट(७)कैचुआ	चोरी,जीरा(७)प्र
जधानी	शुक्रधान्य(न)वालि	शुता(७)ख
शुनक(७)कुता	शुकर(७)गौंकासुआ	शृंगवेर(न)अदर
शुनी(स)कुतिका	शुक्राशिमि(स)कौंच	शृंगारक(न)चौराहा
शुभंय(३)शुभशुक्र	शुद्ध(७)शुद्ध	शृंगार(७)सविशेष
शुभ(न)कल्याण	शुद्धा(स)शुद्धकील्ली	शृंगीनो-णी(स)लौ
शुभाजित(३)शुभशुक्र	शुल्य(३)रीता	शृंगी(स)विशेषम
शुभ(७)उजला-मदिर	शूर(७)वीर	च्यकीमच्छी-
३)शुल्ल(३)	शूरार(७)जिगीकंद	अतीस-ककडा
शुभंती(स)वायव्यदि	शूर्य(७)न)सपुकाज	शृंगी(न)गहना
गजकील्ली	शूल(७)न)रोम,आयुध	शृंगीकमक(७)

शत(३) धी-विका	शेषित(न) तेज	शौद्रोदनि(७) बौद्ध
फकवान	शोण(७) लालकमल	शौरि(७) विष्णु, शनि
कीमाला	शोननदी	शौर्य(न) पराक्रमी
शोरार(७) शिरवापर	शे राक(७) अरल	शौल्विक(७) ठठेर
शेफसी(न) लिंग	शोणारल(न) पद्म	शौक्ल(३) मांसादा
शेफालिका(स) हर	गमणि	नेवाला काटपकना
शृंगार-फालसा	शोणित(न) लोह	प्रचोत(७) धी-आदि
शेमुखी(स) बुद्धि	शेथ(७) स्तूजन	श्मसान(न) मरघट
शेलु(७) लमेरा	शेथघी(स) विसर	श्मश्रु(न) डाढी (३)
शेनाधि(७) भांडार	फरा	श्याम(७) काला, पलाश
शेष(७) नागेश्वर	शोधनी(स) बहारी	काला(३)
शेष्ट(७) नयाविद्या	शोधित(३) विनाहृन्ना	श्यामल(७) काला
धी	अन-मलरीहत	श्यामा(स) फूलप्रियंगु
शेद्वीक(७) चिदि	शोक(७) स्तूजन	ककुनी, कालानिसेत-
शेल(७) पहाड़	शेभन(३) सुंदर	कालातिधार-श्यामल
शेलालिन(७) नट	शेभा(स) सुंदरता	ता-सतावर-रात
शेलूषा(७) कल, नट	शेभांजन(७) सैजना	श्यामाक(७) सामक
शेलय(न) शिलाजीत	शेथ(७) क्यूरीरोडा	श्याल(७) स्त्रीकाभाई
शेक्ल(७) सिवार	शोक(न) तोताकासमूह	श्याव(७) वंदरवर्णि
शेदलिनी(स) नदी	शोकिकेय(७) विषभेद	श्रेत(७) उज्जला
शेवाल(न) नदी	शैउ(३) मतवाला	श्रेयन(७) दाजपक्षी
शैशव(न) लड़कपन	शैडिक(७) कलार	श्रेयनाक(७) सरि वन
शोक(७) सोन्व	शैडी(स) मड़ीपीपरि	अरल
शेविष्केश(७) आग		

श्रद्धा (स) आदर-विश्वास	श्रीफल (७) वेल	श्रीणी (स) कमर
स-आकांक्षा	श्रीफली (स) नील	श्रीन (न) कान
श्रद्धालु (स) गर्भिणी	श्रीमान् (७) तिलक-ल	श्रीत्रिय (७) वेराध्या
की-अभिलाष-श्रद्धा	श्रीन (३२) लक्ष्मीवान्	श्रीयद् (अ) देवतो-श्री
वान् (३२)	श्रीवत्सलांशु (७) विष्णु	रपितरो-केलियेहवि
अग्रयण (७) आश्रय	श्रीवास (७) देवदारुधूप	दान
अग्रयण (७) कान	श्रीवेष्ट (७) तथा	श्रीदण (३) घोड़ा
अग्रिवेष्टा (स) धनिष्ठा	श्रीसंज्ञ (न) लोभा/उ	श्रीष (७) मिलाप
आराण (स) लक्ष्मी	श्रीहस्तिनी (स) हाथीशुं	श्रीष्णा (३) कफ
आहु (न) पितृकर्म	श्रुत (न) शास्त्र-मुना	श्रीष्णा (७) कफ
अहिदेव (७) भयभराज	हुआ	श्रीष्णाल (३) कफी
आय (७) आश्रय	श्रुति (स) वेद-कान	श्रीष्णातक (७) लभे
आवण (७) साधनमास	श्रुवत् (७) स) श्रुवा	श्रीलोक (७) चंद्र-यश
आवणिक (७) साधन	श्रीणी (स) पंक्ति-जा	कीर्ति
श्री (स) लक्ष्मी, संपत्ति	तिसमूह (७) स) श्रु	श्रीयस् (न) क-
श्रीकंठ (७) शिव	श्रीयस् (न) श्रेष्ठ-पुराण	श्रीयस् (७) श्रेष्ठ
श्रीधन (७) बुध	श्रीयसी (स) हर्ष, पादर	श्रीयस् (७) कुत्ता
श्रीद (७) कुवेर	गजपीपरवाकोटीपी	श्रीयस् (स) न) कुत्तो
श्रीपति (७) विष्णु	पर	कीरान
श्रीपरी (न) आरणी, कम	श्रीयान् (३) श्रेष्ठ	श्रीयस् (७) चंडाल
श्रीपरीक्षा (स) कायफ	श्रीष्ठ (३) समम	श्रीयस् (न) केर
ल	श्रीरा (७) पंगुला	श्रीयस् (७) भूजन
श्रीपरी (स) रवभारी	श्रीणिफलक (न) कफ	श्रीयस् (स) पराधीन

नसुर (७) ससुर	षडग्रंथा (स) वच	करनेके योग्य
श्वसुरौ (७) सासुससुर	षडग्रंथिका (स) कन्न	संग्रह (७) इकट्ठकान्
श्वसुर्य (७) देवर-साला	रवा-आवां हलदी	संग्राह (७) युद्ध
श्वसू (स) सासु	षड्ग्र (७) गानिकाख	संग्राह (७) लकीमूह
श्वसू श्वसुरौ (७) सासु	षडानन (७) स्वामिका	मुठी बांधना
श्वस (अ) आगेकादिन	तिक्	संज्ञपन (न) भाएहुआ
श्वसन (७) पवन-मैन	षडिका (३) वरखेत	संज्ञा (स) बुद्धि-नाम
फल	जिसमें ६० दिनमें	हाथ आदिसे अर्थवता
सही जीव	अन्न उत्पन्न हो	ना-ज्ञान बाला
श्वविधवा श्ववित (७)	षाणमातुर (७) स्वामि	संज्ञ (७) मिली जांच
श्वित्र (न) श्वेत कोठ	षंड (७) कमलों का	संज्ञ (७) जलना
श्वेत (७) उजला-चंदी	समूह	संज्ञ (न) उड़ना
(न) द्वीप विशेष (न)	स	संज्ञ (७) भक्षना
श्वेतगरुड (७) हंस	संक्रंदन (७) इंद्र	संज्ञ (७) भक्षना
श्वेतमरिच (न) सेतमरि	संक्राम (७) कोटकी	संज्ञ (३) फूलित
श्वेतारक्त (७) पाटल	संक्षेपण (न) संक्षेप	संज्ञ (स) बुराई
श्वेतसुरसा (स) श्वेतफू	संख्या (न) लड़ाई	संज्ञ (३) अन्न जो भु
लकाहार शृंगार	संख्या (स) विचार-	दकियागमा हो
ष	श्रिंती	संपत (७) स) युद्ध, वंधु
षंड (७) सांड	संख्यात (३) गिनाहु	संयम (७) संयम
षट्कर्मन् (७) षट्कर्म	संख्यावत् वा संख्या	संयाम (७) संयम
षट्पद (७) भोरा	वार् (७) पंडित	संयुग (७) युद्ध
षडभिज्ञ (७) जिन-व	संख्येय (७) संख्या	संयोजित (३) मिलाया
षडग्रंथ (७) कंजा		

संराव (७) शब्द	संस्तर (७) कुशशय्या	सकृत् (अ) साथ
संलाप (७) परस्पर कह	दि-यज्ञ	एकवार
संन्यास (न) दुपष्ट	संस्तव (७) परिचय	सकृत्प्रज (७) कान
संश्लेष (७) अतियोग	संस्ताव (७) यज्ञमें	सकृत्फला (७) शमी
संशय (७) संदेह	संस्तोत्र (७) स्तुतिभूमि	सकृत् (न) साधन
संशयापन्नमानस (३)	संस्त्याव (७) समुदाय	संस्त (७) मित्र
संशयी	संस्त्यादिदेवाहरकदेश	संस्ती (स) सहेली
संश्रव (७) स्वीकार	संस्था (स) मर्यादा	संस्त्य (स) मित्रता
संश्रुत (३) अंगीकृत	संस्थान (न) चौराहा	संस्त्य (७) सगा भाई
संश्लेष (७) लिपटना	संस्थित (३) अतक	संस्तोत्र (७) गोती भाई
संस्तक (३) मिला	संस्पर्श (स) चकवत	संस्धि (स) साथवान
संसद (स) सभा	संस्फोट (७) युद्ध	संकुट (३) संकट
संसारण (न) राजमार्ग	संहत (३) बड़मिलापी	संकुर (७) कूडाकरकट
जीवोंका जन्मादि-वि	संहतजानुक (७) मि	संकर्षण (७) कलदेव
नारोकसेनाकागमन	लीजांघबाला	संकलित (३) जुडाहु
नगरमार्ग	संहतल (७) बांयेदांये	आ कर्म
संसिद्धि (स) स्वभाव	हाथकासेल	संकुल (७) मानस
संस्कार (७) गंधादिधा	संहति (स) समूह	संकु-सुक (३) चंचल
राग सिंहीन	संहनन (न) अंग	संकुश (३) सहा
संस्कारहीन (७) संस्त	संहार (७) नरकभेद	संकुली (७) वासि-
संस्कृत (३) वनयेहुये	संहति (स) गाय	कर संकुल (३)
पदोंकेअर्थ-शास्त्रके	संकल (३) सब	व्याप्त (३) अमुद्ध
लक्षणोंसे युक्त	संकुल (न) असंभवक	संकुल (३) संकुल

सङ्केच (१) कुंकुमकेसर	(२) साधु (३) विद्यावान्	सद (स. न) सभा
सङ्ग (७) मेल	(३) श्रेष्ठ (३) पूजित (३)	सदस्य (७) यज्ञका
संगत (१) ठीक कहना	सतत (१) लगातार	देवनेवाला
संगम (७) मेल	सतीर्थ (७) एक युक्तके	सदा (३) सवदिन
संगर (७) प्रतिज्ञा-युद्ध-	पासपठनेवाला	सदागति (७) पवन
सत्यभाषी-विपत्ति	सतीलक (७) मरर	सदातन (३) नित्य
सङ्गीर्ण (३) अंगीकृत	सत्तम (३) श्रेष्ठ	सदानीरा (स) करतो
सङ्ग (३) जोड़ा हुआ	सत्य (७) अच्युत भाषी	यानदी
संघ (७) जंतु समूह	सत्य (१) संच, सौमंद	सदाय (७) कन्यादान
संघात (७) समूह	सत्यंकार (७) वयानादे-	नें जो वस्तु दी जाय
संख्य (७) समूह	सत्यवचस (७) ऋषि	सदस (३) सभाज
सचिव (७) मंत्री-सहाय	सत्याकृति (स) वयाना	सदृश (३) तथा
सज्जवाल (१) कीचड़	सत्यानृत (१) वनियापन	सदृक् (३) गुल्फ
युक्त रक्षित	सत्यापन (१) वयाना	सदेश (३) पास
सज्ज (३) मंत्रादिसे	सत्र (१) ठाकना-यज्ञ	सद्गन् (१) घर
सज्जन (७) कुलीन	सदादान-वन	सद्यस् (अ) तत्काल
पहरा (१) रक्षा	सत्रा (अ) साध	सध्रच्चासध्रड्
सज्जना (स) हाथीका	सत्रिन् (७) मोदी	(३) साधकाजनेवाला
संचारिका (स) दूती	सत्त्व (१) सतो गुण-द्रव्य	सनत्कुमार (७) ऋषि
संजकन (१) चौक	वार्यकी अधिकता-	सना (अ) नित्य
सरा (स) जरा	प्राण-जंतु (७) न	सनातन (३) नित्य
सरासूत्र (१) सुतरी	सत्वर (१) शीघ्र	सनाभि (७) भाई
सत् (७) पंडित-सत्य	सदन (१) घर	सनि (स) विनय

सनिष्टेव (न) शूकसहित	सन्ध्या (स) सांझ	सप्ततंतु (७) यज्ञ
बोल	संधि (७) मेल	सप्तपार्श्व (७) सतपदी
सनीड (३) पास	संधिनी (स) शाभनतो	सप्तर्षि (७) ऋषि
संतत (न) लगातार	सन्नकडु (७) चिरेँजी	सप्तला (स) सोया
संतति (स) वंश	सन्नद्र (३) मंजारीसे	सप्तर्षिस (७) आठ
संतप्त (३) तपाहुआ	सित्तुमारलेकेयोग्य	सप्तपत्र (७) सूर्य
संतमस (न) सर्वव्यापी	सन्नय (७) सेनाकेपी	सहि (७) घोड़ा
अंधेरा विंश	छेरहनेवालीसेना -	सभर्तका (स) सुहृद
संतान (७) कल्पवृक्ष -	समूह	सभा (स) कचहरी - गो
संताप (७) जलना	सन्निकर्षण (न) परोस	सभा (स) सभामें बैठनेवाले
संतापित (३) तपाहुआ	सनि (स) विनय	सभाजन (न) आनंदी
संदान (न) रबूरा	सन्निकर्षण (३) समीप	सभासद (७) सभामें
संदानित (३) बंधा	सन्निधि (७) परोस	बैठनेवाला
संदाव (७) भागना	सन्निवेश (७) अच्छर	सभास्तार (७) तथा
संदित (३) बंधा	स्थान	सभ्य (७) तथा, सज्जन
संदेशवाच (७) स) दू	सपत्न (७) वैरी	सभ (न) फूल, समान (३)
तकाकहना	सपदि (अ) शीघ्र	समग्र (३) सब
संदेशाहर (७) दूत	सपर्या (स) पूजा	समं (अ) साथ
संदेह (७) संशय	सपिंड (७) भाईबंधु	समंगा (स) मज्जीठ
संदेह (७) समूह	सपीति (स) साथपीने	समज (७) पशुओंका
सन्धा (स) प्रतिज्ञा	वाला	समूह
सन्धान (न) मदिरा	सप्तकी (स) छिरियोंकी	समज्या (स) सभा
कावनाना	कंधनी	संजसा (न) न्याय

समधिक (३) अधिक	समा (स) वर्ष	योग्य
समनस् (३) पंडित	समांसमीना (स) प्रति	समासार्थ (स) समस्या
समंततः (अ) चोरे चोर	वर्षवच्चादेनेवालीगो	समाहार (७) बटोरना
समंतदुग्धा (स) मेंहुड	समाकर्षिन् (स) बड़ी	समाहित (३) अंगीकृत
समंतभद्र (७) जिन्, बुध	इरजनेवालागंध	समाहति (स) संग्रह
समन्वितलय (७) तुल्य	समायात (७) युद्ध	समाह्वय (७) जीवोंकी
समम् (३) सब	समाज (७) औरोंका	वाजी
समय (७) समय-सौह	समूह, मनुष्योंका गुंड	समिक (७) फड़राज
आचार-काल-सिद्धंत	समाज्ञा (स) यश	समित (स) युद्ध
अब्ध-भाषा	समाधि (७) स्वीकार	समिति (स) सभा
समया (अ) समीप-म	समाधान-अवाक्	युद्ध-संग
समर (७) युद्ध	नियम	समिध (स) ईंधन
समर्थ (३) शक्तिमान-	समान (७) शरीरकी	समीक (न) लड़ाई
संबंधार्थ-स्ति	पवन, तुल्य (३) पंडि	समीप (३) पास
समर्थन (न) युक्तायुक्त	त-सदृश-मुख्य	समीर (७) पवन
समईका (३) बटनेवाला	एक (३) भाई	समीरण (७) पवन-
समर्थ्याद (३) पास	समानोदर्य (७) संग	दोनामरुआ ना
समवर्तिन् (७) यमराज	समालंभ (७) तिलक	समुच्चय (७) बटोर
समवाय (७) समूह	करना	समुच्चय (७) विरोध
समष्टि (स) गुरुद्वी	समष्टत (७) गुरुसे	ऊंचाई
समस्तन (न) संक्षेप	इहस्थाश्रमआदिके	समुज्जित (३) त्या-
समस्त (३) सब	लिये आश्रय देनेवाला	समुत्तिज (७) अकु
समस्या (स) हराकाना	समासाद्य (३) पानेके	लानी सेना

समुदत्त (३) कूप आदिसे निकालना	युद्ध-उत्तरकाल	वर्ष
समुदय (७) समूह	सम्पाक (७) अमलता	संवत्सर (७) वर्ष
समुदाय (७) समूह-युद्ध (७न)	समुष्टक (७) डिब्बा	संवदन (न) वशीकरण
समुद्रक (७) डिब्बा	संप्रति (अ) अब	संवर्त (७) प्रलय
समुद्रत (३) अन्यायी	सम्प्रदाय (७) उत्तमो	संवर्तिका (७) कमला
समुद्रराण (न) उगला-अन-उरवाइडारना	पदेश	दिवेनवीनपत्ते
समुद्र (७) सिंधु	संप्रधारणा (स) यु-	सम्बसथ (७) गोंव
समुद्रांता (स) जवासा	कायुक्तपरीक्षण	सम्बहन (७) अंगीमान
कपास-पिंडरकशाक	संप्रहार (७न) युद्ध	सम्बित (अ) वर्ष
समुन्दन (न) गिलाकर	संवाहक (३) दोवार	सम्बिद् (स) बुद्धि-स्वी
समुन्न (३) गीला	जुतेरेवेत	कार ज्ञान-संभाषण
समुन्नद (३) मूर्ख	संवाध (३) संकट	क्रियाकार-युद्ध-नाम
समुह (७) यज्ञानि	सम्भेद (७) मुहाना	अर्थात्संज्ञा
कास्थान	सम्भ्रम (७) दौड़, वेग	संविदित (३) अंगीकृत
समूह (७) मृगभेद	सम्भद (७) हर्ष	संवीक्षण (न) दूँवना
समूह (७) मुंड	सम्भूर्चन (न) सर्व	संवीत (३) नदी आदि
समृद्ध (३) भरापूरा	व्याप्त	सेधिरा
समृद्धि (स) वढना	सम्यक् (न) सत्य	संवेग (७) दौड़ादौड़
सम्पति (स) लहली	संभ्राज्जवा संभ्राट् (७)	सम्भेदा (७) अनुभव
सम्पराय (७) दुःख	राजस्तययज्ञेष्टीश्री	ज्ञान
	रमंडलेश्वरकाराजा	संलाप (७) परस्परकहना
	वा संवराजोंकाराजा	सम्भेश (७) सोना
	सम्भक्दा सम्भद (अ)	साक (७न) मंदिराभ

सरघा (स) मधुमकरवी	सर्ज (७) कोरें, शाल	सर्वलिङ्गिन् (७) पारवंदी
सरट (७) गिरगट	सर्जक (७) विजैसार	सर्ववेदस (७) सर्वस्व
सरणा (स) अन्तःशरीरेलि	सर्जस (७) राल	नामदक्षिणधन
सरणि (स) मार्ग	सर्जिकाक्षर (७) सार्ज	सर्वसन्नहन (न) सेना
सरानि (७) स) मुठी	सर्प (७) संप, चलना	कीतय्यारी
सरमा (स) कुतिया	सर्पराज (७) नमोभवर	सर्वाणी (स) पार्वती
सरल (७) वृक्ष विशेष, उ	सर्पिस्वासर्पि (न) छत्र	सर्वानुभूति (स) निसेत
सरलद्रव (७) देवदारुभूष	सर्वसहा (स) पृथ्वी	सर्वन्निमोजी (३) सब
तारपीनतेल	सर्व (७) शिव-सब	कालखानेवाला
सरला (स) निसेत	सर्वज्ञ (७) जिन बुध-	सर्वान्जीन (३) सर्वभक्षी
सरस (न) बड़ासरोवर	शिव	सर्वाभिसार (७) सेनाकी
सरसीरुह (न) कमल	सर्वतसर (अ) चोरेओ	तय्यारी / ताबलंबी
सरसी (स) बड़ासरोवर	सर्वतोभद्र (७) नीव	सर्वाथसिद्ध (७) दाइता
सरस्ववासरस्वान् (७)	सर्वतोभद्रा (स) खभीरी	सर्वैध (७) सेनाकीतय्यारी
समुद्र-न्द द्वी	सर्वतोमुख (न) जल	सर्षप (७) भरसों
सरस्वती (स) वाणी-न	सर्वदा (अ) सबदिन	सलिल (न) जल
सरगव (७) न) सरवा	सर्वधरावह (७) सब	सब (७) यज्ञ
सरित् (स) नदी	विक्रकालेजनेवाला	सवन (न) यज्ञकीओ
सरित्पाति (७) समुद्र	वैल	घाधियोंकाकूटना
सरीसृप (७) सर्पमात्र	सर्वधुरीण (७) तथा	सवयस (७) समवय
सर्ग (७) स्वभाव-त्याग	सर्वमोला (स) पार्वती	प्रिय-समआयु
निश्चय-अध्याय-स	सर्वस (७) राल	सक्ति (७) सूर्य
ष्टि	सर्वला (स) गुर्ज	सविध (३) पास

सवेश (३) पास	लवेती	सादिन (९) सारधी
सव्य (३) वामांग	सहस्रानु (९) सूर्य	साधन (३) सारण-म
सव्येष्ट (९) रथवन्	सहस्राक्ष (९) इंद्र	रेकासंस्कार-गति-
सब्रह्मचरिन् (९) सपत्नी	सहस्रिन् (स) सहस्र	द्रव्य-धनदेना, अ-
सह (न) पराक्रमी	सेनबाला	र्थकीसिद्धि-उपाय
सह (अ) साथ	सह (स) धीकुमार-	पीछे जाना
सहकार (३) सुगंधाला	वनजंगमामौढी	साधारण (३) समान
सहचरी (३) सहचरी	सहाय (९) सहायक	सामान्य रहित
यावासा	सहायता (स) सहार्थ	साधित (३) अहंकार
सहज (९) समाभार्थ	सहिष्णु (३) सहनशील	साधित (३) अतिशय
सहधर्मिणी (स) स्त्री	सांघानिक (९) मल्ल	यवहुत
सहन (३) सहनशील	सांयुगीन (९) नर्मकुश	साधीयसवासाधीया
सहभोजन (न) साथरवाना	ल	न (३) अतिशयसाधु
सहस्रसह (३) अगहन	सांशयिक (३) संशयी	अतिशयवाढ
बल (न)	साकं (अ) साथ	साधु (९) सज्जन, सुंद
सहसा (अ) अकस्मात्	साक्षात् (अ) प्रत्यक्ष	(३) मरणीय (३)
सहस्य (९) पौष	समार (९) समुद्र	साधुवाहिन् (९) सी
सहस्रदंष्ट्र (९) बहुदाँ	साचि (अ) टेढा	वाहुआघोडा
तवालीमछली	सातला (स) सोया	साध्य (९) १२ गणदिव
सहस्रपत्र (न) कमल	साति (स) अंत, दान	साध्वस (न) डर
सहस्रवीर्या (स) दूब	सातिसार (३) बहुतह	साध्वी (स) पतिव्रता
सहस्रवेधि (न) हींग	नेवाला	सानु (९) न) पर्वततट
सहस्रवेधिन् (९) अम-	सादिक (३) शरीर और	सान्त्व (न) अतिमधु

रकहना (मिलाप)	(न) श्रेष्ठ (३)	साहस (न) दंड
सान्द्रष्टिक (न) तुल्यफल	सारंग (५) पपीहा-	साहस्र (५) सहस्रसेना
सान्द्रस्निग्ध (३) मेघ	हरिण, विचित्ररंग (३)	कांत-हजारेका समूह (न)
चिकना	सारथि (५) रथवान्	सिंह (५) पशु विशेष
सान्द्र (३) सघन	सारमेय (५) कुत्ता	सिंहनार (५) वीरेका गर्ज
सान्नाय्य (न) साकल्य	सारव (३) सरयू से उत्प	सिंहपुच्छी (स) नाम
साधुपदीन (न) मित्रता	सारस (न) कमल	विशेष सुंदर
सामधेनी (स) आघाज-	सारसज (न) स्त्रियों	सिंहसंहनन (५) अति
लानेकी ऋचा	कीकंधनी, घोड़ेकी	सिंहान् (५) लोहका
सामन्वासा (न) वेद	कमरपट्टी	मैल
सामाजिक (५) सभा में	सारसना (स) तथा	सिंहास्य (५) अडूसा
वैठनेवाला	सारिका (स) मैना	सिंही (स) अडूसा, वंगन
साम्राज्य (न) जाति-सा	सार्य (५) जंतु समूह	सिकता (स) बालू-वा-
धारण (३) दित	सार्यवाह (५) धनी	लूका स्थान स्थान
सामि (अ) आधा-निं	सार्द (३) गीला	सिकतामय (न) बालूका
सामुद्र (न) समुद्रनोज	सार्डू (अ) साथ	सिकतावर (३) तथा
साम्प्रायिक (न) लड़ाई	सर्वभौम (५) उत्तर	सिक्थक (न) मोम
साम्प्रतं (अ) युक्त, अब	दिशाका दिग्गज	सित (५) अचेत-बंधु (३)
साम्वत्सर (५) ज्योतिषी	महाराजाधिराज	समाप्त (३) अर्जुन-
सायं (अ) सां, संध्या	साल (५) कोरों	शुल्कपक्ष
सायक (५) तीर-खड्ग	सालपर्णी (स) औषध	सितकूत्रा (स) सोंफ
सार (५) दृक्षकातत्व	सास्ना (स) बैलकेग	सितशूक (५) जौ
वल-स्थिरांश, न्याय	लिकालटकाहुआ चर्म	सिताभ्र (५) कपूर

सिताम्भोज (न) श्रेष्ठकमल	सीम्य (अ) जुतेरेव	सुगत (अ) जिन, दुध
सिद्ध (अ) देवजाति, सिद्ध (अ) भोमन् (स) सीमा	सीमन्त (अ) वंधकेश	सुगहनादिति (अ) रट्टी
सिद्धार्थ (अ) उज्जलीसारां	सीमंतीनी (स) स्त्री	सुगंधा (अ) सनाय
सिद्धांत (अ) सिद्धांत	सीमा (स) स्त्री	सुगंधि (न) सुलुआ
सिद्धि (स) अट्टिचौषधी	सीर (अ) हल	सुगंधि (न) सुलुआ
सिध्मन् (न) सीपरोमा	सीराशि (अ) बलदेव	सुचरित्रा (स) पतिव-
सिध्मन्त (अ) सीपवाला	सीरन् (अ) सीना	सुचेलक (अ) शब्देता
सिध्मा (अ) पुष्पनक्षत्र	सीसक	सुत (अ) पुत्र-गजा
सिध्मा (स) अष्टमेद	सीहुड (अ) सीहुडवृक्ष	सुतयेणी (अ) गूसाली
सिनीवाली (स) वह्नामा	सु (अ) अतिशय, पूजन	सुता (स) पुत्री
वसन्तिस्मेचंद्रमादीरे	सुकंदक (अ) प्याज	सुतात्मजा (स) पोती
सिन्दुक (अ) स्माल	सुकरा (स) सीधीमौ	सुखन् (अ) यज्ञकोलि
सिंदुवार (अ) त - था	सुकल (अ) दाताभोक्ता	येस्मानकरेवाला
सिंदूर (न) सेंदुर	सुकुमार (अ) कोमल	सुदर्शन (अ) लक्ष्मी
सिंधु (अ) समुद्र-देशभे	सुकृत (न) पुराय	पतिकान्चक्र
द-नद्विशेष-सामा-	सुकृती (अ) भाग्यवान्	सुदूर (अ) अतिदूर
न्यनदी (स)	सुख (न) हर्ष	सुधर्मा (स) देवसभा
सिंधुज (न) सेंधा	सुखमा (स) श्रेष्ठा	सुधांशु (अ) चंद्रमा
सिंधुसंज्ञक (अ) मुहाना	सुखवर्चक (अ) सज्जी	सुधा (स) अमृत
सिम्बा (स) फली	सुखसंदेहा (स) दुहने	सुधी (अ) पंडित
सिरा (स) नाडी	सुशीलागौ	सुनासीर (अ) इंद्र
सिद्ध (अ) लोहवान		
सीता (स) कूंड		

सुनिवाराणक (स) विसावपा	सुरभि (प) वसंतकृत	सुवहा (स) फालसा
सुंदर (अ) शैभन	वडासुंय-गौ (स)	हरमंगार-सनाय
सुंदरी (स) स्त्री	सुरभी (स) सालिवमि	हंसपदी-सालिम
सुपथिन (प) अच्छासार्ग	सुरभि (प) देवकृषि	उज्ज्वली-एयसेन
सुपरी (प) गरुड	सुरलोक (प) सूर्य	सुषमा (स) शोभा
सुपर्वर (अ) देवता	सुरवर्त्मन (न) आका	सुषु (स) फरेला
सुपार्श्वक (प) गजहृद	सुसा (स) सनाय	कालाजीरा
सुपतीक (प) ईशानदिशा	सुरा (स) मंदिर	सुधिर (न) पोलभात्र
सुप्रेषाविशिरव (प) तींद्रज	सुरचार्य (प) वृहस्प	सुधीम (अ) वंठवाची
सुपलाय (अ) अच्छाकहक	सुरमंड (प) मंदिरका	सुधेय (अ) करोंदा
सुभासुत (अ) सुभासा	सुत (अ) सुभासा	सुधेयिका (स) काला
सुमिक्षा (स) आंकला	सुरलय (प) सुमेरुपर्व	निसोतवाति धारा
सुमर (अ) गौह	सुरप्रज (न) आहर	सुधु (अ) अतिशय
सुमना (स) चमेली	सुरी (स) गरई	प्रशंसा
सुमेरु (अ) पर्वतविशेष	सुवचन (न) अच्छावच	सुसंस्कृत (अ) घतप
सुमनस (अ) देवता, फूल	सुवर्णी (प) शैलभा	कादिपदार्थ
सुमेरु (अ) पर्वतविशेष	सौना (न)	सुसमा (अ) सुंदर
सुसु (अ) देवता	सुवर्णक (प) अमलता	सुहृद् (अ) मित्र
सुख्येष्ट (अ) ग्रहा	सुवल्ली (स) वाकुची	सुहृदय (अ) सीधा
सुरदीर्घिका (स) आकाश	सुवासिनी (स) कुक्यु	सूक्ष्म (अ) बोडा-
सुरद्वि (अ) असुर	वाविवाहिताजोपिताके	सिंहादेह
सुरभिभगा (स) गंगा	यराहती हो	सूचक (अ) चुगिल
सुरपति (अ) इंद्र	सुप्रता (स) सुशीलागौ	सूचि (स) सुई

सूट (३) रसेईदार	सूर्य (७) ग्रहविशेष	सेनाभारव (न) सेनापति
सह (७) रयबन-पारा	सूर्यतनया (स) यमुना	की सेना से ३ गुनी सेना
सह (७) रयबन-पारा	सूर्यसंभवा (७) अमा	वाला दार
वढई चर	सुक्किणी (न) होठोंका	सेनारक्षक (७) चौकी
सुत्तिकापुह (न) सौरिका	किनारा वा अवार	सेवक (७) नौकर
सुत्तिकापुह (७) जन्मजात	सुत्त (७) गुदा	सेन (न) सनीना
सुत्तान (७) चुर	सुत्त (७) हाथीसंभवा	सेवा (स) पराधीनी
सुत्ता (स) यज्ञोपवीत	सुत्तिका (स) लार	सेव्य (न) उसीर
सुत्त (न) सुत्त	सुत्ती (स) आर्ग	सेंहिकेय (७) राहु
सुत्तवेष्टन (न) नलीपर	सुत्तपरी (स) ७ तोल	सेकत (न) बालकास्थ
सुत्तमन (७) इंद	सुत्तार (७) मसुदे	सेतवाहिनी (स) नदी
सुत्त (७) यज्ञनुरसेन	सुत्त (स) निश्चित	सेनिक (७) चौकीदार
सुत्ता (स) घांटी	सुत्त	सेना (७) (७) (७)
सुत्त (७) पुत्र-पुत्री (स)	सेकपन (न) डोलची	सेंधव (७) घोड़ा सैधा
सुत्त (न) पारा और	सेन (न) तथा	सेन्या (७) सेना
चावचन	सेन (७) पुल वनापेड	सेरिक (७) हलवाह
सुत्त (३) उन्मत्त	सेना (स) सेना	सेरिंधी (स) निजवशी
सुत्तकार (३) खोखा	सेनावा (न) हाथी-घो	भूत और शिल्पकारिणी
सुत्त (७) सूर्य	डा-रथ-पैदल आदि	पघर रहने वाली स्त्री
सुत्त (३) सूर्य	सेनापति (७) हाथी	सेरिमा (७) भैंसा
सुत्त (७) सूर्यका	रथ ३ घोड़े १ दार	सेरियक (७) पिपावांसा
सुत्त (७) पंडित	का स्वामी	सेरि (३) अस्त्रायुक्त
सुत्ती (स) लोहे की मूर्ति	सेनानी (७) स्वामिकर्ति	सेर्य (७) सभाभाई

सोपल्लव (७) गृह	सेचंद्र	सौएष्टिक (७) विष्णो	स्तनित (७) मेघकाग-
प्रसाहुन्ना		सौवर्चल (७) सौंदर्यो	र्जन / चेडकाइठ
सोपान (७) सीढ़ी	हृ	सौविद (७) कुंचुकी	स्तम्ब (७) गुच्छा-
सोम (७) चंद्रमा	हृ	अर्थनरनवासकाह	स्तम्बकरि (७) सामा
सोमप (७) सोमरसपी	हृ	नेवालासेवक	न्यधान्य (कीखेती
सोमपीतिन (७) तथा		सौविदल्ल (७) तथा	स्तम्बपन (७) कारने
सोमराजी (स) वकुची		सौवीर (७) वेरकेफल	स्तम्ब (७) तथा
सोमवल्लक (७) श्वेतक तथा		कांजी - सुरमा	स्तम्बो (७) हाथी
कायफल		सौहित्य (७) अथवा	स्तम्ब (७) रंवा, मूर्वि
सोमवल्लरीवोसोमव-		संद (७) स्वामित्व	स्तम्बरोमन (७) मुञ्चर
ल्लिका (स) वकुची		स्तम्ब (७) कंधा-स-	स्तम्ब (७) स्तुति
सोमवल्ली (स) गिलोय		स्तम्ब - राजा	स्तम्ब (७) गुच्छा
सोमोद्भवा (स) तर्मदा		स्तम्बदेश (७) हाथी	स्तम्बित (३) गीला
सौगंधिक (७) श्वेतकम		स्तम्बणारवा (स) टहनी	स्तुत (३) स्तुतिकिया
ल-मुगंधतरु, गंधक (७)		स्तम्ब (३) चुआहु-	स्तुति (स) स्तव
सौचिक (७) दर्जी		स्तम्ब	स्तुतिपाठक (७) भाट
सौदामिनी (स) विजली		सवलन (७) गिरला	स्तुम (७) वकरा
सौध (७) राजग्रह		सवलित (७) दल	स्तुप (७) वरा, वरी
सौभागिनेय (७) सुभागा		स्तन (७) कुच	स्तेन (७) चोर
पञ्च देवता--		स्तनधयी (स) दूधपी	स्तेम (७) गीलाकरना
सौम्य (७) बुध-सुंदर		नेवालावच्चा	स्तेय (७) चोरी
सौमेय (७) वैल		स्तनपा (स) तथा	स्तेन्य (७) चोरी
सौमेयी (स) गौ		स्तनयितु (७) मेघ	स्तोक (३) थोड़ा

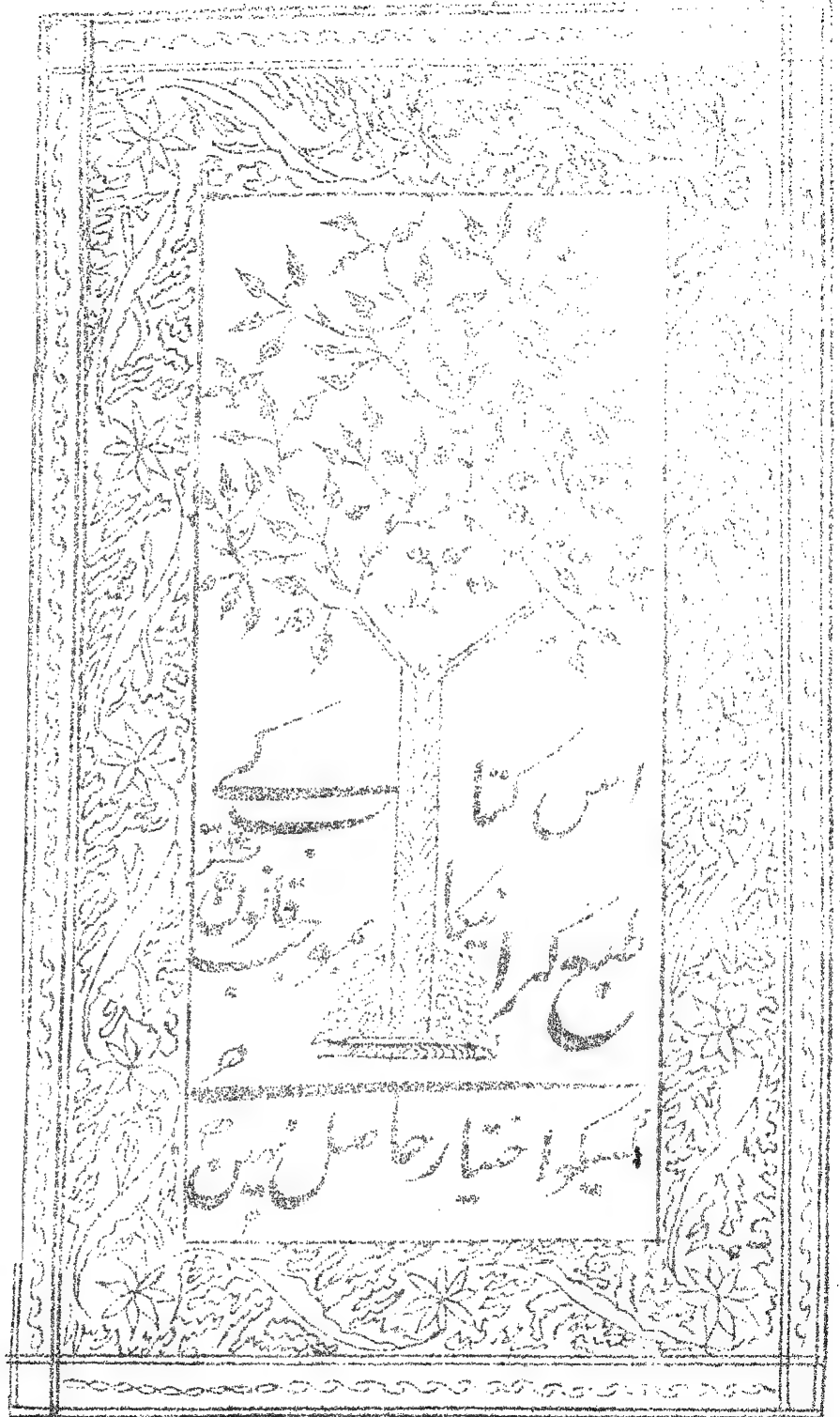
सोत्र (न) स्तुति	त्र	स्थापनी (स) पाठरि	स्थलोच्चय (७) असं
सोम (७) समूह-लो	लो	स्थास (न) पराक्रमी	पूर्ण-गजकी मध्यम
यज्ञ-दंड	दंड	स्थासक (७) ग्रामाध्य	गति (३) अतिस्थिर
स्त्री (स) नारी	स्त्री	क्ष/लवाथाली	स्थेयसवास्थेयान् (
स्त्री धर्मिणी (स) राज	राज	स्थाल (न) बड़ा था-	स्थेरोय (न) कुकुरीध
स्यंडिल (न) यज्ञका	का	स्थाली (स) धाली	स्थेरीवास्थेरीन् (७)
चैतर-भूमिशाथी (७)	भूमि	स्थाविर (३) वृक्ष	लट्ट-घोडा-खिचर
स्यंडिलशाथी (७) भूमि	भूमि	स्थाविर (न) बुढ़ा पा	स्त्रवे (७) कर्ना
शाथी		स्थासक (७) चंदना	स्नानक (७) वेदप्रको
स्थपति (७) वृहस्पति	दिलेपन	यस्थिर	प्राकरगुरुकी आश
यज्ञकाकर्त्ता-कारिगर		स्थास्तु (३) अतिश-	कापलनेवाला
स्थल (न) स्थल		स्थिति (स) मर्यादा-	स्नान (न) न्हान
स्थली (न) स्थल		आशन	स्नायु (स) नाड़ीभेद
स्थविर (७) वृद्धपुरुष		स्थिरतर (३) अतिस्थि	स्तिग्ध (७) समवय,
स्थविष्ठ (३) अतिशय-		स्थिर (स) पृथ्वी-सा-	प्रिय-चिकना (३)
मोटा		लपणी	स्नेही (३)
स्थाणु (७) शिव-च		स्थाणु (७) मेमर	स्तु (७) न) फलकात
क्षकावृद्ध, ठहरीवस्तु		स्थाण (स) खम्भा-	स्तुत (३) बहनाहुआ
स्थान (न) अवकाश		लोहेकी प्रतिमा	स्तुपा (स) पुत्रवृद्ध
स्थिति		स्थूल (३) मोटा जड़	स्तुह (स) सेंहुंड
स्थानीय (न) नगरी		स्थूलतत्त्व (३) अति	स्तुही (स) तथा
स्थाने (अ) पुत	पुत	यति दिनस्त्र	स्नेह (७) प्रेम-स्पर्
स्थापत्य (७) स्तवका	स्तवका	स्थूलशक (३) मो-	(७) चर-उत्साही

स्पर्श (७) विषय, संताप	स्मर (७) कामदेव	सुत (३) बहता हुआ
स्पर्शन (७) पवन, दान (न)	स्मरहर (७) शिव	सुव (७) यज्ञपात्र
स्पष्ट (३) शुद्ध संताप	स्मित (न) मंदहास	सुवा (स) मूर्वा
स्पृशी (स) भटकटाई	स्मृति (स) धर्मसंहिता	सुवारक्ष (७) हींस
स्पृष्टि (स) छूना	स्मरण	स्रोतस्त्रवास्त्रोत (७) न
स्पृक्का (स) शाक	स्यद (७) वेग	कर्ना, इंद्रिय (न) नदी
स्पृहा (स) मनोरथ	स्यंदन (७) तेंदुआ-ल	कावेग (न)
स्पृष्ट (७) संताप	स्यंदनारोह (७) रथी	स्रोतस्विनी (स) नदी
स्फारण (न) फरकना	स्यंदिनी (स) लार	स्रोतोत्जन (न) सुग्मा
स्फाति (स) वळती	स्यन्त (३) बहता हुआ	स्व (७) गोतीभाई
स्फिक् (स) स्त्रीकेकमर	स्थशा (७) हरकार	आत्मा-स्वसंबंधी (३)
स्फिर (३) अधिक	स्यूत (७) पैली-सतका	धन (७) न
स्फुट (३) फूलाफूल, स्पष्ट	विस्तारा हुआ	स्वच्छंद (३) स्वतंत्र
स्फुटन (न) फूटना	स्फुति (स) सीना	स्वजन (७) गोतीभाई
स्फुटन-रण (न) फरकना	स्त्रंसिक् (७) पिलुआ	स्वतंत्र (३) स्वच्छंद
स्फुर्ति (३) आगकेका	स्त्रज (स) शिक्कीमाला	स्वधा (अ) देवर्तो और
स्फूर्जक (७) तेंदुआ	स्त्रव (स) कर्ना	पितोकोहविदेना
स्फूर्जिक (७) तथा	स्त्रवदुर्भा (स) गर्भगिरि	स्वधिति (७-स) फासा
स्फूर्जधु (७) विजलीकी	स्त्रवंती (स) नदी	स्वन (७) शब्द
स्फेन (७) जलकाफेन	स्त्रष्ट (७) ब्रह्मा	स्वनित (३) वाजता हुआ
स्फेष्ठ (३) अतिशयबहुत	स्त्रस्त (३) टपका हुआ	स्वप्न (७) सोना
स्म (अ) पादपररण-भूत	स्माक् (अ) शीघ्रतार्थक	स्वप्नज्वा स्वप्नक् (३)
काल- अतीतकाल	सुच (७) सुवाकाभेद	सेनेवाला

विष्णु

हल्ला (स) मदिरा	हिमबालुक (७) खपर	हृद् (न) मन, हृदय
हालिक (७) हलवाहा	हिमसंहति (स) बड़ी ठंड	हृदय (न) मन - हृद्
हाव (७) श्रियों का समेद	हिमांशु (७) चंद्रमा	हृदय (न) मन - हृद्
हास (७) हँसी	हिमानी (स) नदी हिम	हृदय (न) मन - हृद्
हास्तिक (न) हाथियों का	हिममती (स) नदी	हृदय (न) मन - हृद्
हास्य (७) समेद - हँसी	हिरण्य (न) धन - सोने के	हृदय (न) मन - हृद्
हाहा (७) गंधर्वकानाम	रूपवाचने अन्वये - सोना	हृदय (न) मन - हृद्
हिंसा (स) मारना वा चोरी	हिसा यमार्थ (७) मृत्यु	हृदय (न) मन - हृद्
आदिके कर्म	हिरण्यरेतस (७) आरा	हृदय (न) मन - हृद्
हिंसा कर्म वा हिंसा कर्म	हिरण्यवाहु (७) नदी	हृदय (न) मन - हृद्
(न) हिंसा - मारना	हिंसा (न) वर्जनार्थक	हृदय (न) मन - हृद्
हिंस (३) हत्यारा	समीप लिखा	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हि (अ) हेतु - निश्चय	हिलोचिका (स) हि	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिका (स) स्वभेद हँसी	ही (अ) विस्मय	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिं (७) हीन	हीन (३) त्यागाहु आ	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिं निर्मया (स) निर्मल	हुतासूत्रिया (स) आरा	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिं गली (स) वेगान	की प्रिया	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिं गली (७) ईश्वर	हुतभुज (७) आरा	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिं गरी (७) समुद्र फेन	हुति (स) प्रकार ना	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिंताल (७) गुपारी का फल	हुम् (अ) वितर्क - परि	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिम (न) ठंड - ठंड पष्पीयी	प्रपन्न - तर्क	हिंसा (न) वर्जनार्थक
(३)	हुद् (७) गंधर्वकानाम	हिंसा (न) वर्जनार्थक
हिमवत (७) पर्वत	हृणीया (स) धिनाना	हिंसा (न) वर्जनार्थक

होगव (१) नागेश	हीवेर (न) नेत्रवाला-
हंला (स) गिर्योँकारसविशेष	हाऊवेर
ह्या (स) दोड़ेका शब्द	ह्रेया (स) बोलीघोड़ेकी
ह (अ) मन्त्रोपनायक	ह्लादिनी (स) मिश्री
हिम (न) मोना सिंहासन	शुभम्
हिमकी (स) पार्वती, हर्द, श्वेतवच	—
मकोय-सौनामकवी	सम्बत्
हियङ्गवीन (न) मकवन	१८३८
हात (१) मृदेवदवित, होमकरनेवाला	मार्गभास
होम (१) देवयज्ञ, महायज्ञ	में कृपी
हृद (१) बाहरा जलस्थान	सन
ह्रस्व (१) वामन-लघु	१८८१
ह्रस्व (१) छोटा	ईसवी
ह्रस्वमावेधुका (स) कंगी	
ह्रस्वमा (१) जीरा, बोना	
ह्लादिनी (१. न), वज्र, बिजली, नदी	
ही (स) लज्जा	
हीरा (१) लज्जित	
हीति (१) लज्जित	



३९ श्रीः श्री ३ म तत्सत श्रीहरिः

पूर्वाद्ध

सारस्वत प्रकाशिका

अर्थात्

सारस्वत के पूर्वाद्ध का भाषाटीका आर्यभाषा में

इसकी विलिखित भाषाटीका छोटे श्लोकों और लड़कियों
के लिये बनाए गए हैं न कि हित विद्यार्थियों और जो महामहाराज सार-
स्वत के पढ़कर भूले उन लोगों और नर्मल स्कूल और अन्य देशी
पाठशालाओं और सरकारी पाठशालाओं के विद्यार्थियों और
पाठकों के उपकार के लिये

श्री मत्परिडत नन्दलाल जी संस्कृत अध्यापक पाठशाला
गवर्नमेंट मुजफ्फरगंज और श्री मत्परिडत बटुकनाथ जी-
प्रयागवासी की सहायता से दीक्षित चक्रपाणि ने मुन्शी
मोतीलाल साहब बहडमास्टर नर्मल स्कूल प्रयाग की सम्मति से
बनाई

विज्ञापन

हे महामहाराज जो संस्कृत विद्या पढ़ने को रुचि और अभिलाषा रखते
हो तो इस सारस्वत के सूत्र और सूत्रों के पद विभक्ति सहित और
अर्थ उदाहरण सहित और शब्दों के रूप वचन आदि कण्ठकारी
मोल प्रतिपुस्तक का ८ आना है

विद्याविलास यंत्रालय में लाला मोतीलाल के प्रबंध से आगामी मंजूरी

सङ्केत

सूत्रों और परिभाषा और वार्त्तिक आदि के परिशिष्ट अंक आदि
दिये हैं वे जिस किमें और वचन आदि के निम्न हैं जैसे १२ इस
अंक से प्रथमादिभक्तिका एकवचन जाने और १२ इस अंक से प्र-
थमादिभक्तिका द्विवचन जाने और १३ इस अंक से प्रथमादिभ-
क्तिका बहुवचन जाने और २१ इस अंक से द्वितीयादिभक्तिका
एकवचन जाने ऐसे ही सप्तमीविभक्तिक के लोकेत जान लें

क्रि० से क्रियापद

५ मे अक्टूबर

5 से ही अ का लोप

। से प्रदर्शक

क० से रुदता

निवेदन

पहले यह विचार था कि सारस्वत के मूल सूर्यों का ही भा-
या तिलक किया जाय तो इस विचार के अनुसार बहुत बातें
रही जाती थीं इस कारण सारस्वत में जो परिभाषा और
वार्तिक आदि थीं उनको भी लिखकर भाषा तिलक का
दिया है और उनका कुछ भाग दिनारुति के कोष्ठ में

1940

22, 22, 22, 22, 22

52

अह उ न ह स म ज ष र क च य ए व ई अ न्नै अर्यात्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

531

101

१३०. १३१. १३२. १३३. १३४. १३५. १३६. १३७. १३८. १३९. १४०. १४१. १४२. १४३. १४४. १४५. १४६. १४७. १४८. १४९. १५०.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

एक मंत्रोच्चारण: जिसके उच्चारण में शक्ति होती है, सरस्वती को जन्म देती है।

जिसके उच्चारण में २ के स

जिसके उच्चारण में ३ के स-

मानसपरागिवहसुतहै

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

इनके और भी उदात्तादि भेद हैं उच्चरूप लभ्यमान उदात्तः

उत्तर है वह उदात्त है नीचा-

मुद्रांतः नीचे स्वर्णसे उच्चा एका काने में जो प्रमाण प्राप्त है वह है पहला मुद्रा-

सन्त है समवृत्त्या स्वरितः समवृत्तिरुच्चारणकालनवजाप्रमाणप्र-

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १३ ॥

हवह निहवहसकतुताह एएजात्रासिध्यशाला एध।
 धायः॥१॥ नैनेनैः नैनेनैः नैनेनैः

...सिंह ...

हृदयहृदय श्री गुरुदेव, का एतदस्वास्वाह उति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

द्वितीयः प्रश्नः—

चार्यमानवर्गी इत्यंश होय जैसे अकार प्रत्यय में ई और उद्
 आगम में उद् असुद् आदेश में उद् इत्यंश है यस्येत्संज्ञातस्य
 लोपः^{११} जिसकी इत्यंश होतिसका लोप होवे सिद्ध^{११} देदादामः^{११} आग-
 मजिनकी भांत आता है प्राचुवदादेशः^{११} आदेश शत्रुकी भांत आता है
 वर्गाविरोधो लोपः^{११} लोप प्रवह जो एक वर्ग का गण करने को रमि दू-
 से वर्ग का बाधक हो वर्गादिर्लोलोपः^{११} वर्ग का नदी रमि लोप कह-
 ता है प्रत्ययो^{११} प्रत्ययकानदी बना लुक् कहता है
 लोपं वारित^{११} हतोः संयोर्वाः^{११} लोपं हतोः आदि हस संयोः
 कहाता है ॥

कुचुटुतुपुवर्गाः^{११} (कु) ककार घट कर्क (कु) चक जल न चवर्ग
 (टु) टठ ड ठण टवर्ग (टु) त थ द ध न तवर्ग (पु) प फ ब भ म पवर्ग कह-
 ते हैं इस सूत्र में उकार स्वर पांचवां प्रत्यय हो के लिखे हुए मिलते हैं ॥

आदेशाब्जमिवाधुराः^{११} नामीके स्थान में उत्पन्न ओ और ए
 अर्थात् ऐ और औ अर्थात् ओ गुण कहते हैं चट, जट, काओ, लल
 काओल ईई का ऐ और उऊ का ओ गुण होता है ॥

औरै औ वृद्धिः^{११} आओर ओ ओर ऐ ओर औ वृद्धि कहते हैं ओ
 की ओ, नह नह की ओ, लल लल की ओल, ईई ऐ की ऐ, उऊ औ की औ,
 वृद्धि होती है ॥

अन्यत्परादिष्टः^{११} स्वतंत्र शब्दों का अंत का स्वर और हलंत शब्दों
 का हल के आदि का स्वर और हल की टि संज्ञा होय जैसे हल में ल में
 अ और मनस् में अस् की टि संज्ञा है ॥

अन्योत्पूर्व उपधाः^{११} शब्द के केवल अंत के अक्षर से पहला स्वर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

सादी. दत्तात्रेय सिद्धुन्ना गौरी + अत्र ह्यं नोऽप्यनुया

संस्कृत-भाषा-विभाग-प्रमुख-पद-परिचय-पत्रिका

गौरीजीन सिंह हुन्ना सिर इत्यनुवर्त्तते

पुनर्विचारार्थी विचारक, मंडीपट्टमोर निवासी

मनुष्य + अन्न ऐसा मिल रहे ॥

কেন্দ্রীয় সরকার

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमो नटवृत्त को प्रान्त नेय स्वर्ग के मे विजयिनि

2000

विषय: विज्ञान भाग - अर्थ - अर्थ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

मिः=सामिः ल+त्रौ=त्रौ॥ ३. नः

पञ्चमः पृष्ठः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ - नैऋतः

अथः वै + प्र = गोत्रे वै ।

मो+आदि

गो + आ = गवा.

आजिन् = मवाजिन्, पा + इन् = पविन्, छा + ए = गवे ॥

अद्वैतवर्णनमोक्षादौ वक्तव्यः गवादिशब्दोंके अन्वर्तिका

प्रत्याहारकेपरे एजंश्चित्रं, भवान्+तनोति=भवाँस्तनोति, भवान्+हृ

दयति=भवान्+स्+छादयति स्तोः श्रु० नश्चा० स्वरही० भवाँश्छादयति

^{११। १३। ११।} यदागमिस्तेदुणीभूत्वा तद्ग्रहणेनैव गृह्यते ^{अ० ११। ३१} जो ग्रहण होते हैं

वेतदुणीहोकरतिसकेहीग्रहणसेग्रहणहोतेहैं इसकारण ऊपरके उदा

हरणोंमेंसेतकअपदान्तहै यणान्+सि=यणांसे, पुम्+भ्यां=पुंभां

^{११। ११। अ०} शौचकृवाँ नकारान्तपदकेआगेचकू आगम विकल्पसेहोय श

केपरे भवान्+शरः=भवान्+च्+शरः चपाच्छुशः स्तो० स्वर०

भवाञ्छरः, भवाञ्शरः, ॥

^{१३। ५१} ह्रस्वः ^{११। ५१} ह्रस्वः ^{१३। ५१} ह्रस्वः ह्रस्वस्वरसेआगेपदान्तमेंऔरस्वरकेपरे

ङ्, एन, दोहोयं प्रत्यङ्+इदं=प्रत्यङ्ङिदं, सुगए+इह=

सुगसिह, एजन्+इदं=एजन्निदं ॥

^{११।} छः ^{१३। ५१} ह्रस्वस्वरसेआगे छू दोहोयं तव+च्छत्रं=तव+छू+छत्रं

^{५१। १३। ६३।} स्वसेचपाकसलां मसोंकेचपहोयं रदसप्रत्याहारकेपरे ॥

^{११। ३१} वर्योवर्ग्योरां सवर्गीः वर्गकाअक्षरअपनेवर्गकेअक्षरसेत

वर्णहोताहै ऊपरकेउदाहरणमें छूचर्वाकाहै इसलिये छू का

चहूआ स्वरही० तवच्छत्रं क्वचिदीर्घादपि वक्तव्यः कहीं

दीर्घस्वरसेआगेभी छू दोहोयं जैसे ह्री+छः=ह्रीछू छः रवसे

स्वर० ह्रीच्छः मले+छः=रवसे स्वर० मलेच्छः ॥

^{६१।} मौनुस्वारैः पदान्त मेंकाअनुस्वारहोय इसप्रत्याहारकेपरे ॥

तम्+हसति=तंहसति, पटुम्+वृथा=पटुवृथा ॥

^{१३। ५१। ६१। ६१।} जमायपेस्यवाँ अनुस्वारकाजमविकल्पसेहोय यप प्रत्या-

हारकेपरे औरजिसवर्गका यप हो उसवर्गका पांचवाँ अक्षरहै

य जैसे शां+तः=शान्तः, अं+ कितः=अङ्कितः, अं+चितः=अञ्चितः

तः, कुं+ठितः = कुण्ठितः, गुं+फितः = गुण्फितः, ॥

यवलापर यवलावा अक्षरारका निष्कल्पे यवलाकोशे यवला

होयं सं+यन्ता=संयन्ता, सं+दातः=संयन्ता, यं+लोकां=

यल्लोकं, तं + लोकं = तल्लोकं, ॥

११.७१
११ कृदासि वेद में अनुस्वार का ११ अक्षर है जो गुरु के परहेय

हं+सः=हश्ंसः तं+रविः तश्ंरविः सं+हिता=संश्हिता ॥

इति व्यञ्जनसंधिः. यत्तद्व्यञ्जनसंधिर्द्वि-अथ विसर्गसंधिर्नि-
गद्यते अथ विसर्गसंधिकहीजतीति ॥

विमर्जनीयस्य सः विमर्जनीयता सहोयस्त्वसकेपरे जैसे

कःतनेति=कस्तनेति, कः+त्वं=कस्त्वं,॥

७१. श्री। शायसेवा विसर्जनीयका विकल्पसे सहेय शायसेवा के पारे वा

शब्दनिरोधप्रसङ्गोद्देशेन कः+शते-कण्शते कः+यंत=कयं-

डः कः + साधुः = कस्ताधुः वाकः शेत, कः बंडः, कः साधुः रहे

कुष्माः ३ कः पौवा कवर्ग पवर्ग संबंधित विसर्जनीय काः क

॥ प्र विकल्पसे होयं स्वसकेपरे कः + करोति कः करोति विस०

कः करोति कः पठति = कः पठति वा कः पठति तद्ग्रहणः -

करपत्याश्चरदेवतयोः सुट् तलोपश्च चोरचौरदेवतावाच्य

हों तो कारपतिशब्दकेपरे तत् और वृहत् शब्दके ते कालोपहोय

औरकारणतेशब्दकेसुट्-आगमहोय उ, ट् उच्चारण-औरटित्के

लियेये जाते रहे टि^{५१}त्वा^{५२}दा^{५३}दा^{५४} टित्वसे आदिमें आणाम होता है

तत्+करः=तत्करः, बृहत्+पतिः=बृहस्पतिः,॥

^{६१.११.१३} अहोरात्रिभु पदांत में अहनशब्दकी विसर्जनीयकार होय और रात्रि आदि गणके परे न होय जैसे अहः+पतिः = अहर्पतिः राद्य० जलतुं० अहर्पतिः अहः गणः = अहर्गणः रात्रि आदि गण हवै रात्रि, राजन्य, रजनी, रत्न, रत्नव, रावण, रज, रमण, रूपरथंतर, इन शब्दों के परे विसर्जनीयकारेफ न होय जैसे अहः+रात्रं हवे उओ अहोरात्रं ऐसे ही और भी जाने ॥ कः+अर्थः

^{५१.११.११} अतीत्युः अकार से परे विसर्जनीयका उ होय अत के परे तपरक उओ कोर्यः देशः+अयं उओ० एवे० एरही० देशोऽयम् ॥

^{५१.११.११} हवे अ से परे विसर्जनीयका उ होय हवे प्रत्याहार के परे जैसे कः गतः=कोगतः देवः याति=देवो याति मनः+रथः=मनोरथः ॥

^{५१.११.११} आदवलोपश्च अकार से परे विसर्जनीयका लोपश्च होय अब के परे मनः+इति=मन इति लोपश्चिपुनर्नसंधिः लोपश्च करने में

फिर संधि न हो वाताः+वांति=वातावांति, देवाः+अत्र=देवाअत्र क्वदसितुं भवति लोपश्च करने में वेद में संधि होय देवाः+अत्र= देवाअत्र ॥

^{५१.११.११} स्वरैयत्वंवा अकार से परे विसर्जनीयका ये विकल्प से होय स्वर के परे कः+इह=कयिह आदवे० कइह, देवाः+अत्र=देवायत्र देवाअत्र ॥

^{५१.११.११} भोस भोस अघोस् शब्दों से परे विसर्जनीयका लोपश्च होय अब के परे भोः+एहि=भो एहि भोः नमस्ते=भोनमस्ते अघोः+याहि=अघोयाहि ॥

^{५१.११.११} नामि नो रः नामि संज्ञक से परे विसर्जनीयकारेफ होय अब के

परे अग्निः + अत्र = अग्निरत्र भानुः + इति = भानुइति

^{६१। २१। अ।} रेफप्रकृतिकस्य रेफवर्णवा रेफप्रकृति की विसर्जनीयकारेफहोय वि-
कल्पसे स्वयं के परे जैसे गीः + पतिः राद्य० गीर्ष्यतिः ॥

^{६१।} रः रेफसंवधिविसर्जनीयकारेफहोय अब के परे प्रातः + अत्र =

प्रातरत्र अंतः + गतः = अंतर्गतः पुनः + आगतः = पुनरागतः ॥

^{११। ११। ११।} रिलोप दीर्घा रेफके परे रेफकालोप होय और पूर्वस्वरका दीर्घ होय

पुनरु + रमते = पुनारमते श्रुक्तिरु + रूपात्मनाभाति = श्रुक्तीरूपात्म०

^{११। ११।} सैयद्दसे त एव और एव शब्द से परे विसर्जनीय कालोप होय हस

के परे सः + चरति = सचरति सः + गतः = सगतः एयः + हसति = एयहसति

^{११। ११। ११।} वाचिन्नामिन्नोप्यवलोपप्र कहीं नामिसे परे भी विसर्जनीय का

लोपप्रहोय अब के परे भूमिः + आददे = भूमिआददे वेदमें भूम्याददे

सैयः सिद्धरूप अगे के प्रत्येक में आया है सैयदाशरधीरामः सो

यह दाशरधीराम है सैयराजा युधिष्ठिरः सो यह राजा युधिष्ठिर है

^{११। ११। ११।} सैयकर्णमहात्यागी सो यह कर्ण महात्यागी है सैयभीममहाव-

लः सो यह भीम महाबलवान है इनमें पादपूर्वमें लिये संधि की है

वेदके प्रयोगों की विशेषता कहते हैं यदुक्तलौकिकाय हतद्वदव-

^{११। ११। ११।} हुलं भवेत् जो सूत्र इस शास्त्र में प्रयोग सिद्धि करने के लिये कहा सो

वेद में बहुल अर्थात् कहीं होता है कहीं नहीं होता है इसका उदाहरण

देते हैं सैमा भूम्याददे सैयामित्यादीनामदुष्टता सः + इमां

आददे० अइए स्वरही० सैमां और भूमिः + आददे कचिन्ना० इयं

स्वरही० भूम्याददे और सा + उवां उओ स्वर० सोषां ऐसे प्रयो-

गों की वेद में अबुष्टता है अर्थात् दोष नहीं है कचित्प्रवृत्तिः

^{१०} कचिदप्रचलितः ^{११} कचिद्विभाषा ^{१२} कचिदन्यदेव ॥ विधेर्विधा
^{१३} नैवदुधा ^{१४} समीक्ष्य ^{१५} चतुर्विधं ^{१६} बाहुल्येनैव ^{१७} कचिदिति ॥ कहींसंधिकेनि-
 घेधमेंभी प्रवृत्तिअर्थात्संधिकीहैजैसे सेमां इससिद्धप्रयोगमें लो-
 पशुनफिर अइए लयकी प्रवृत्तिकीहै ॥१॥ कहींसंधिकेकरनेमें
 संधिकी अप्रवृत्तिअर्थात्संधिनहींकीजैसे भूमिः + आददे, में
 नामिनोरः सूत्रकीप्राप्तिहेती परंतु नहींकी ॥२॥ कहींविभाषाअ-
 र्थात् विकल्पहै जैसे देवैः देवभिः ॥३॥ कहींऔरहीहै जैसे भूमिः
 आददेमें विसर्जनयि कालोपकरनाऔरहीहै ॥४॥ इसप्रकारसे
 पंडित बहुधा बाहुल्यक विधिके विधानको देखकर ४ विधका
 कहते हैं वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चोपरो वर्णविकारना
 शौ ॥ धातोस्तदर्थान्तिशयेनयोगस्तदुच्यते पंचविधं निरुक्तम्
 वर्णका आगम १ वर्णविपर्यय २ और दो और वर्णविकार ३ और व-
 र्णनाश ४ और धातुकेतदर्थका अतिशययोग ५ यह पंचविधकानि
 श्रव्य व्याकरणके उदाहरणोंमें कहा है वर्णागमो गवेंद्रादौ सिंहदे-
 र्णविपर्ययः ॥ घोडेंद्रादौ विकारः स्याद्वर्णनाशः पृथ्वीदेरे ॥ गवें-
 द्रादिमें वर्णागम है सिंहमें वर्णविपर्यय है घोडश में वर्णविकार
 है पृथ्वीदेर में वर्णनाश है वर्णविकारनाशाभ्यां धातो रतिशये
 नयः ॥ योगः स उच्यते प्राज्ञैर्मयूरभ्रमरादिषु धातुके वर्णविकार
 नाशसे जो धातुकेतदर्थका अतिशयहोता है वह मयूर और भ्रमर
 आदिमें है इति विसर्गसंधिः यह विसर्गसंधिसमाप्ति हुई अथ
 विभक्तिर्विभाव्यते आगे विभक्तिकही जाती है सांदिधा सो
 दो प्रकारकी है स्यादि स्यादिविभक्तिः सि आदि और तिप् आदि

^{११}विभक्त्यंतं^{११}पदं^{११} विभक्तिजितके अंत में हो वह पद कहा जाता है जैसे एगम् और भवति तत्र^{११}स्यादि विभक्तिनामों से जो जयते पहले सि आदि विभक्ति नाम से जोड़ी जाती है ॥

अविभक्तिनामं^{११} विभक्तिसे रहित और धनु से बर्जित और अर्ध वान् जो शब्द रूप है वह नाम कहा जाता है सत्तद्धित समास प्रातिपदिक संज्ञक इति केचित्^{१३} कदंत और तद्धित और समास से सिद्ध शब्दों को कोई आचार्य प्रातिपदिक संज्ञक कहते हैं ॥

तस्मात्^{४१} सि^{११} औ^{३२} जस्^{३३} ११ अम्^{२१} औ^{२२} शस्^{२३} २१ शी^{३१} शम्^{३२} भिस्^{३३} ३१ डे^{४१} भ्यस्^{४२} ४१ डस्^{४३} ४१ सि^{४४} भ्यस्^{४५} ४१ डस्^{४६} ४१ औ^{४७} शस्^{४८} ४१ अम्^{४९} ४१ डि^{५१} औ^{५२} शस्^{५३} ५१ सुप्^{५४} ५१

ति सी नाम से परे सि आदि समास विभक्तियों होय प्रथम अकारांत पुल्लिङ्ग देव नाम से लाते विभक्तियों साधते हैं पहले प्रथमा विभक्ति के एक

वचन में देव + सि है इकार उच्चा^{११} तो देव + स् ऐसा स^{११} अव सौ विसतीः स^{११} र्की विसती होय पदांत में औ^{११} का लोप होय के परे औ^{११} धातु से कस के परे देवः प्रथमा के द्विवचन में देव + औ^{११} है औ^{११} औ^{११} औ^{११}

स्वर्ही^{११} देवौ^{११} प्रथमा के बहुवचन में देव + जस्^{११} है जकार स्थितः ज्ञायां लोपः^{११} जकार का इत् संज्ञा में लोप होय स्वर्गी^{११} स्वा^{११} श्वो^{११} देवः^{११}

अकाराज्जसो^{११} सुक्^{११} क्वचिद्वक्तव्यः^{११} अ से परे जस् के कहीं

असुक् वक्तव्य है तो देव + जस् + असुक् हुआ उक्^{११} उच्चा^{११} जमी जसी सूत्र के विशेषणार्थ है स्वर्गी^{११} स्वर्ही^{११} लो^{११} देवः^{११} प्राथमा^{११} द्वितीया^{११}

द्वितीया के एक वचन में देव + अम्^{११} है ॥

अम्प्राप्तास्य^{११} समान से उत्तर अम्प्राप्तास्य के अकार लोप होय द्वितीया के द्विवचन में देव + औ^{११} है औ^{११} औ^{११} औ^{११} स्वर्ही^{११} देवौ^{११} द्वितीया

याके बहुवचनमें देव+शस् है शकरो^{११}नुबंधः श अनुबंध है लोप
होगया तो देव+असरहा अम्मा० देव+स् रहा ॥

मौनः पुंसः पुल्लिंग समानसे उत्तर शस् के स का न होय फिर
प्राप्ति शस् के पोर पूर्वस्व का दीर्घ होय देवान् प्रत्यय लोपे प्रत्यय
लक्षणा नैयाति प्रत्यय के लोप में प्रत्यय का लक्षण नहीं जाता है ॥

यदादेशास्त द्वैवति जो आदेश है सो तिस ही की भांत होता है ॥

तृतीया के एक वचन में देव+रा है ट् अनुबंध है लोप होगया तो
देव+आ रहा प्रत्यय लोपे प्र० यहाँ आ रा के स्थान में जाने ॥

देव आ से पोर ट् इन होय अइए स्वर० स्त्रो० देवैन तृतीया के द्वि-
वचन में देव+भ्याम् है ॥

अदि अकार का होय भ के पोर देवाभ्याम् तृतीया के बहु० देव+भिस

देव आ से पोर भिस के भे का आ होय अइए एऐ स्वर ही स्त्रो०
देवै चतुर्थी के एक वचन में देव+डे है इति कार्यार्थ है लोप हो

गया है तो देव+ए रहा ॥

दे० रक् अ से पोर अक् का आगम डे के होय कित्वा० क् कित्वा० एअय
सर्वो० स्वर० देवाय चतुर्थी के द्विवचन में देव+भ्याम् है अदि

देवाभ्याम् चतुर्थी के बहुवचन में देव+भ्यस् है ॥

एस्मि बहुत्वे अकार होय बहुवचन में सभ के पोर स्त्रो० देवभ्यः
पंचमी के एक वचन में देव+इसि है ॥

इसिरत् अकार से पोर इसि अत् होय तपरक० सर्वो० देवान्

पंचमी के द्विवचन में देव+भ्याम् है अदि देवाभ्याम् पंचमी के व-
हुवचन में देव+भ्यस् है एस्मि० स्त्रो० देवैः षष्ठी के वचन में देव+इस्